

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह आठवें भाग के

खर्च का व्यौरा

कागज २९११ रीम, फी रीम ४३१	१२६८॥)
छपाई फार्म ४९ फी, प्रति फार्म १३१	६३७)
जिल्द बँधाई ॥) एक प्रति	३००)
	<hr/>
	२२०५॥)

विषयसूची बनाने, प्रमाण ग्रन्थों से मिलान करने तथा प्रेस कॉपी, प्रूफ सशोधन आदि का खर्च

२७००)

४९०५॥)

कागज, वाइन्डिंग क्लार्क, कार्डबोर्ड, रोलर कम्पोजिशन तथा प्रेस की अन्य वस्तुओं के भाव बढ़ जाने और कम्पोज एवं छपाई खर्च कुछ अधिक लगने के कारण ऊपर लिखे हिसाब से एक प्रति की लागत कीमत ८) रूपये से अधिक पड़ी है। फिर भी ज्ञानप्रचार की दृष्टि से पुस्तक की कीमत केवल २) दो रूपया ही रखी गई है। शेष सारा खर्च श्री अग्रचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर ने अपनी ओर से लगाया है।

नोट—श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सभी भागों की कीमत लागत से बहुत ही कम रखी गई है। इसलिए इन पर कमीशन नहीं दिया जाता। श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था की तरफ से जैन धर्म संबंधी अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाकर देखिये। पुस्तक मँगाने वाले सज्जनों को अपना पता, पोष्ट आफिस और रेल्वे स्टेशन का नाम साफ साफ लिखना चाहिए। पुस्तक बी. पी. से भेजी जाती है।

पुस्तक मिलने का पता:—

(१) पुस्तक प्रकाशन समिति

(२) अग्रचन्द भैरोदान सेठिया

वूलन प्रेस विल्डिङ्ग्स

जैन पारमार्थिक संस्था

बीकानेर (राजपूताना)

Agarchand Bhairudan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner.

दो शब्द

श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के सातवें भाग के प्रकाशित होने के करीब तेरह महीनों के पश्चात् यह आठवाँ भाग पाठकों की सेवा में उपस्थित करते हुए हमें बड़े हर्ष और सन्तोष का अनुभव हो रहा है। आठवें भाग के साथ यह ग्रन्थ समाप्त हो रहा है। निरंतर छ वर्षों के परिश्रम से श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के ये आठ भाग तैयार हुए हैं। छः वर्ष पूर्व सोचे एव स्वीकार किये हुए कार्य को पूरा कर आज हम अपने को भारमुक्त भत एव हल्का अनुभव कर रहे हैं।

यह आठवाँ भाग पहले के सात भागों का विषय कोष है। इस भाग में सातों भागों में आये हुए विषयों की विस्तृत सूची अक्षरादिक्रम से दी गई है। सात भागों के बोल जिन आगम एव सिद्धान्त ग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं उन प्रमाणभूत ग्रन्थों का उल्लेख भी इस सूची में किया गया है। प्रमाणभूत ग्रन्थों का पूरा नाम देने से इसका बहुत अधिक विस्तार हो जाता अतएव यहाँ उनका निर्देश संकेत रूप से किया गया है। संकर्तों के खनामों के लिये प्रमाण ग्रन्थों की संकेत सूची पृथक् दी गई है और उसमें ग्रन्थों के पूरे नाम तथा ग्रन्थ कर्त्ताओं के नाम, प्रकाशन का स्थान और समय आदि दिये गये हैं।

इस अनुक्रमणिका में पाठकों की जिज्ञासा का ख्याल कर एक ही बोल दो चार तरह से बदल कर दिया गया है एव बोल के अन्तर्गत भेद प्रभेदों का भी इसमें समावेश किया गया है। सूची तैयार करते समय यह भी ख्याल रखा गया है कि सख्या विशेष एवं विषय विशेष के बोल लगातार एक साथ आ जायें। इसी तरह गाथाएँ और कथाएँ भी पास पास रखी गई हैं। शास्त्र विशेष के जितने अव्ययनां कथ्य इन भागों में आये हैं वे भी एक साथ दिये गये हैं। इस प्रकार पाठकों की सुविधा का ख्याल कर हमने यह अनुक्रमणिका बहुत विस्तृत बनाई है। इस अनुक्रमणिका को तैयार करते समय सातों भागों का प्रमाण ग्रन्थों से, जिनसे कि इन भागों में बोल लिये गये हैं, भी मिलान किया गया है और सातों भागों के बोलों के प्रमाणों में जहाँ कहीं कमी या त्रुटि थी वह इस अनुक्रमणिका में यथासंभव ठीक कर दी गई है। यही कारण है कि इसे तैयार करने में इतना समय लगा है और सभित्ति को इसके लिये पर्याप्त परिश्रम उठाना पड़ा है। सहृदय पाठकों से यह भी निवेदन है कि इस विषय सूची से सात भागों में दिये हुए प्रमाण में कुछ भिन्नता हो तो वे विषयसूची के अनुसार भागों में सुधार कर लें।

जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के सात भागों में कौनसा विषय किस भाग में कहाँ पर है ? पाठकगण इस विषय सूची की सहायता से सुगमतापूर्वक इसका पता लगा सकेंगे तथा साथ में प्रमाण ग्रन्थ होने से शका अथवा विशेष जिज्ञासा होने पर पाठक उन ग्रन्थों को देखकर आत्मसन्तोष कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त यह विषयकोष जैन पारिभाषिक

शब्दों के लिये जैन कोष का काम भी देगा और पाठक केवल इसी की सहायता से कौनसा विषय किस ग्रन्थ में कहाँ पर है? सहज ही जान सकेंगे।

जैन सिद्धान्त बोल सग्रह कोई मौलिक रचना नहीं है। प्राकृत, संस्कृत भाषा के सिद्धान्त ग्रन्थों में से चुने हुए विषय सरल हिन्दी भाषा में आवश्यक व्याख्या एवं विवेचन के साथ इन भागों में दिये गये हैं। अतएव हम उन सभी ग्रन्थकारों के, जिनके ग्रन्थों से हमने बोलसग्रह में बोल लिये हैं, अत्यन्त ऋणी हैं। यदि हमारे अनुवाद, व्याख्या अथवा विवेचन में उन ग्रन्थकारों के आशय से कहीं खलना हुई हो तो हम उनसे क्षमा याचना करते हैं। पाठकगण से भी हमारा यह निवेदन है कि यदि उन्हें हमारे इस प्रकाशन में कोई त्रुटि या कमी प्रतीत हो तो हमें अवश्य सूचित करें ताकि हम आगामी संस्करण में उचित सुधार कर सकें। उनकी इस कृपा के लिए हम उनके कृतज्ञ रहेंगे।

इस आठवें भाग के छपाने में श्री प० हनुमान प्रसाद जी शर्मा शास्त्री ने अथर्वसाय-पूर्वक बड़ा परिश्रम उठाया है अतएव हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। अन्त में इस ग्रन्थ के लेखन, सकलन, सशोधन प्रकाशन आदि में हमें प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन जिन महाभारतियों की सहायता प्राप्त हुई है उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित हुए हम अपना यह वक्तव्य समाप्त करते हैं।

पुस्तक प्रकाशन समिति
ऊन प्रेस बिल्डिंग्स, बीकानेर।

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर

पुस्तक प्रकाशन समिति

अध्यक्ष—श्री दानवीर सेठ भैरोदानजी सेठिया।

मंत्री—श्री जेठमलजी सेठिया।

उपमंत्री—श्री माणकचन्दजी सेठिया।

लेखक मण्डल

श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री एम.ए., शास्त्राचार्य, न्यायतीर्थ, वेदान्तवारिधि।

श्री रोशनलाल जैन बी. ए., एलएल. बी., न्यायतीर्थ, काव्यतीर्थ,

सिद्धान्ततीर्थ, विशारद।

श्री श्यामलाल जैन एम.ए., न्यायतीर्थ, विशारद।

श्री घेवरचन्द्र बाँठिया 'वीरपुत्र' न्यायतीर्थ, व्याकरणतीर्थ,

सिद्धान्तशास्त्री।



भैरोंदान सेठिया

जन्म सं० १९२३ विजया दशमी
फोटो सं० १९६३ अक्षय तृतीया

— — — — —
— — — — —
— — — — —



श्रीमान् धर्मभूषण दानवीर
सेठ भैरोंदानजी सेठिया
की
संक्षिप्त जीवनी

दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया का जन्म जैन वीसा ओस-
वांल कुल में विक्रम संवत् १६३३ विजयादशमी के दिन हुआ। आप
के पिता का नाम श्री धर्मचन्दजी था। आप चार भाई थे। श्री
प्रतापमल्लजी और अजरचन्दजी आप से बड़े और हजारीमल्लजी
आप से छोटे थे। आप दो वर्ष के ही थे कि आपके पिता का स्वर्ग-
वास हो गया। सात वर्ष की अवस्था में वीकानेर में बड़े उपाश्रय
में साधुजी नामक यति के समीप आपकी शिक्षा का आरम्भ हुआ।
दो वर्ष यहाँ पढ़ कर विक्रम सं० १६३२ में आपने कलकत्ते की यात्रा
की। वहाँ से लौटकर आप वीकानेर के समीप शिववाड़ी गांव में

रहे । मन्दिर, उद्यान और सरोवर से यह गाँव सुहावना है । उस समय राज्य की विशेष कृपादृष्टि होने से यहाँ का व्यापार बढ़ा चढ़ा था । यहाँ सदा बाजार में मेला सा लगा रहता था । यहाँ आप अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री प्रतापमलजी के पास व्यापार का काम सीखने लगे । स० १६३६ में आपने वम्बई की यात्रा की । वहाँ आपने बड़े भाई श्री अग्रचन्दजी के पास रह कर आपने वहीखाता जमा खर्च आदि व्यापारिक शिक्षा के साथ अंग्रेजी, गुजराती, आदि भाषाएं सीखीं । शिक्षा के साथ आपने यहाँ व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त किया । यहीं आपकी शिक्षा समाप्त नहीं होती । नवीन ज्ञान सीखने की लगन आपको जीवन भर रही और आज भी है । ज्ञान सीखने के प्रत्येक अवसर से आपने सदा लाभ उठाया है । दूसरे को पढ़ाने और सिखाने में भी आप सदा दिलचस्पी लेते रहे हैं । कई व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय का काम सिखा कर आपने उन्हें सफल व्यापारी बनाया है । आपने अपनी संस्था से भी कई सुयोग्य व्यक्ति तैयार किये हैं एवं उन्हें ऊँची से ऊँची शिक्षा दिलाई है ।

संवत् १६४० में आप देश आये । इसी वर्ष आप का विवाह हुआ । कुछ समय देश में ठहर कर संवत् १६४१ में आप पुनः वम्बई पधारे । यहाँ आकर आप एक फर्म में, जिसमें चालानी का काम होता था, मुनीम के पद पर नियुक्त हुए । आपके बड़े भाई श्री अग्रचन्दजी इस फर्म के साभ्नीदार थे ।

वम्बई में सात वर्ष रहकर सं० १६४८ में आप कलकत्ते गये और वहाँ आपने अपनी संचित पूँजी से मनिहारी और रंग की दूकान खोली और गोली सूता का कारखाना शुरू किया । सफल व्यापारी में व्यापारिक ज्ञान, अनुभव, समय की सूझ, साहस, अध्यवसाय, परिश्रमशीलता, ईमानदारी, वचन की दृढ़ता, नम्रता

तथा स्वभाव की मधुरता आदि जो गुण होने चाहिये वे सभी आप में विद्यमान थे। इसलिये थोड़े ही समय में आपका व्यापार चमक उठा। धीरे धीरे आपने प्रयत्न करके भारत से बाहर बेल्जियम, स्विज़रलैंड और बर्लिन आदि के रंग के कारखानों की तथा गबलॉन्ज (Gablonz) आष्ट्रिया के मनिहारी के कारखानों की सोल एजेन्सियाँ प्राप्त कर लीं। फलतः आपको अधिक लाभ होने लगा और काम भी विस्तृत हो गया। इसी समय आपके बड़े भाई श्री अग्र-चन्द्रजी भी आपकी फर्म में सम्मिलित हो गये। अब फर्म का नाम 'ए. सी. वी. सेठिया एन्ड कम्पनी' रखा गया। कार्य के विस्तृत हो जाने से आपने कर्मचारियों को बढ़ाया। फर्म की व्यवस्था के लिये आपने एक अंग्रेज को असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर नियुक्त किया और पत्र व्यवहार के लिये एक वकील को रखा। कर्मचारियों के साथ आपका व्यवहार स्वामी-सेवक का नहीं किन्तु परिवार के सदस्य का सा रहा है। आप कर्मचारियों से काम लेना खूब जानते हैं और उन्हें सब तरह निभाते भी हैं। उक्त अंग्रेज आपके पास २७ वर्ष रहा और वकील बाबू आज भी आपके सुपुत्र श्री जेटमलजी साहब की फर्म में हैं।

आप स्वभाव से ही कर्मठ और लगन वाले हैं। आपने कार्य करना ही सीखा है, विश्राम तो आपने जाना ही नहीं। जिस कार्य को आपने हाथ में लिया, उसे पूरा किये बिना आपने कभी नहीं छोड़ा। व्यापारिक जीवन में ऐसी सफलता पाकर भी आपने विश्राम नहीं लिया। आप और आगे बढ़ना चाहते थे। फलस्वरूप आपने हावड़ा में 'डी सेठिया कलर एन्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड' नामक रंग का कारखाना खोला। यह कारखाना भारतवर्ष में रंग का सर्वप्रथम कारखाना था। कारखाने से तैयार होने वाले सामान की खपत के लिये आपने भारत के प्रमुख नगरों—कल-

कत्ता, वम्बई, मद्रास, कराची, कानपुर, देहली, अमृतसर और अहमदाबाद में अपनी फर्म की शाखाएं खोलीं । इसके सिवा जापान के ओसाका नगर में भी आपने ऑफिस खोला ।

यहाँ यह बता देना भी अप्रासंगिक न होगा कि कारखाने और ऑफिस में विभिन्नकार्यों पर कुशल व्यक्तियों के नियुक्त होने पर भी आप आवश्यकता पर छोटे से बड़े सभी काम निस्संकोच भाव से कर लेते थे । गुरु से अन्त तक सभी कामों की जानकारी आप रखते थे । सर्वथा लोगों पर आपका कार्य निर्भर रहे यह आपको कतई पसन्द न था । यही कारण है कि रंगों के विश्लेषण के फॉर्मूले सीखने के लिये आपने एक जर्मन विशेषज्ञ को केवल दैनिक पाँच मिनिट के लिये ३००) मासिक पर नियुक्त किया एवं उसके लिये आपने निजी प्रयोगशाला स्थापित की ।

संवत् १९५७ में एक पुत्री (वसन्तकंवर) और दो पुत्रों (श्री जेटमलजी और पानमलजी) को छोड़कर आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया । आपकी पत्नी धर्मात्मा और गृहकार्य में बड़ी दक्ष थीं । इसी कारण आप गृह-व्यवस्था की चिन्ता से सदा मुक्त रहे एवं अपनी सभी शक्तियाँ व्यापार व्यवसाय में लगा सके थे । पहली धर्मपत्नी के स्वर्गवास होने पर आपका दूसरा विवाह हुआ । कर्तव्यनिष्ठ सेठियाजी का उस समय व्यापार-व्यवसाय की ओर ही विशेष ध्यान था । आप कुशलतापूर्वक व्यापार व्यवसाय में लगे रहे और उत्तरोत्तर सन्नति करने लगे । सं० १९७१ (सन् १९१४) के गत महायुद्ध में आपको रंग के कारखाने से आशातीत लाभ हुआ ।

संवत् १९६५ में आप एक भयंकर बीमारी से ग्रस्त हो गये । इस समय आप कलकत्ते थे । वहाँ के प्रसिद्ध डॉक्टर और वैद्यों का इलाज हुआ पर आपको कोई लाभ न पहुँचा । अन्त में आपने

2-11

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner
श्री अगरचंद भैरौदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था,
संस्था-भवन, बीकानेर



अज्ञानं तमसां पतिं विदलयन् सत्यार्थमुद्भासयन् ।
भ्रान्तान् सत्पथ दर्शनेन सुखदे मार्गे सदा स्थापयन् ॥
ज्ञानालोकविकासनेन सततं भूलोकमालोकयन् ।
श्रीमद्भैरवदानमान पदवी पीठः सदा राजताम् ॥

कलकत्ता के प्रसिद्ध होमियोपैथिक डॉक्टर प्रतापचन्द्र मजूमदार से इलाज करवाया और आप स्वस्थ हुए। इसी समय से आपको होमियोपैथी चिकित्सा-पद्धति में अपूर्व विश्वास हो गया। आपकी जिज्ञासा बढ़ी और उक्त डॉक्टर के सुयोग्य पुत्र डॉक्टर जतीन्द्रनाथ के पास आपने होमियोपैथी का अभ्यास किया एवं इसमें प्रवीणता प्राप्त की। तभी से आप होमियोपैथी साहित्य देखते रहे हैं एवं जनता में अमूल्य दवा वितरण करते रहे हैं। वर्षों के अनुभव ने आपको इस प्रणाली का विशेषज्ञ बना दिया है।

सेठ साहेब ने केवल धन कमाना ही नहीं सीखा पर आप

विक्रमसंवत् १९६६ तदनुसार सन् १९१३ ई. में सेठ साहेब ने वीकानेर नगर में किंग एडवर्ड मेमोरियल रोड पर एक दूकान बी. सेठिया एन्ड सन्स के नाम से खोली। नाना प्रकार के फैंसी बढ़िया सामान और नई नई फैशन की चीजों के लिये यह वीकानेर की प्रसिद्ध दूकान है। यहाँ से सेठ, साहूकार, रईस और ऑफिसर लोग सामान खरीदते हैं। इसे सफलता पूर्वक चला कर सेठ साहेब ने यह दूकान अपने द्वितीयपुत्र श्री पानमलजी को दे दी। दूकान के पीछे उमसे जुड़ी हुई हवेली है। सेठ साहेब ने पानमलजी को दूकान और हवेली का पूरा मालिक बना दिया है और तारीख १४-१०-१९३० ई. को इन्हीं के नाम पर राज्य से इस जायदाद का पट्टा बनवा दिया है। पानमलजी ने आसपास और जमीन खरीद कर इस जायदाद को बढ़ाया है और काफी लागत लगा कर दूकान को दुबारा बनाया है जो कि नई फैशन का दुर्गमजिला विशाल भवन है। अभी पानमलजी और उनके पुत्र कुन्दनमलजी इस दूकान को बी. सेठिया एन्ड सन्स के नाम से ही चला रहे हैं।

सेठिया जैन पारमार्थिक संस्थाओं के विभिन्न विभागों द्वारा पिछले वाईस वर्षों में, समाज में शिक्षा एवं धर्म प्रचार के जो महत्वपूर्ण कार्य हुए वे समाज के सामने हैं।

सं० १९७६ में आपके पुत्र उदयचन्द्रजी का असामयिक देहान्त होगया। इस घटना से आप अत्यन्त प्रभावित हुए। व्यापार व्यवसाय से आपका मन हट गया। अतएव कलकत्ते का विरतृत व्यापार समेट कर आप वीकानेर पधार गये। आपने पारमार्थिक संस्थाओं का कार्य हाथ में लिया और अपनी सारी शक्तियाँ संस्थाओं की उन्नति में लगा दीं। धार्मिक ज्ञानवृद्धि का भी आपने यह अच्छा सुयोग समझा। आपने थोकड़े, बोल और स्तवनों का स्वयं संग्रह किया और उन्हें प्रकाशित कराया। इसके सिवा आपने संस्कृत, प्राकृत, अर्द्धमागधी, आगम, न्याय, धर्मशास्त्र, हिन्दी, नीति और कानून विषयक पुस्तकों भी प्रकाशित कीं। इस वृद्धावस्था में भी आपने निरन्तर सं० १९६६ से पाँच वर्ष तक अथक परिश्रम कर अपूर्व लगन के साथ जैनसिद्धान्त बोल संग्रह के आठ भाग, सोलह सती और आर्हत प्रवचन ग्रन्थ तैयार करा प्रकाशित कराये हैं। आपकी ज्ञानपिपासा एवं ज्ञान प्रचार की भावना के फलस्वरूप संस्था से १०७ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

आपकी दानवीरता एवं समाज तथा धर्म की सेवा का सम्मान कर सन् १९२६ में अखिल भारतवर्षीय श्रीश्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स के कार्यकर्त्ताओं ने आपको कॉन्फरन्स के वम्बई में होने वाले सप्तम अधिवेशन का सभापति चुना। कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन बड़ा शानदार और सफल हुआ। आपकी दानशीलता के प्रभाव से उस अधिवेशन में एक लाख से अधिक फंड इकट्ठा हुआ।

समाज और धर्म की सेवा के साथ आपने वीकानेर नगर और राज्य की भी सेवा की। लगभग दश वर्ष तक आप वीकानेर म्यूनिसि-

पल बोर्ड के कमिश्नर रहे। सन् १९२६ में सबसे पहले जनता में से आप ही सर्व सम्मति से बोर्ड के वाइस प्रेसिडेन्ट चुने गये। सन् १९-३१ में राज्य ने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया। लगभग सवा दो वर्ष तक आप बेंच ऑफ ऑनरेरी मजिस्ट्रेट्स में कार्य करते रहे। आपके फैसल किये हुए मामलों की प्रायः अपीलें हुई ही नहीं, यदि दो एक हुई भी तो अपीलेट कोर्ट में भी आप ही की राय बहाल रही। इससे आपकी नीर-क्षीर विवेकिनी न्यायबुद्धि का सहज ही अन्दाज हो जाता है। सन् १९३८ में म्यूनिसिपल बोर्ड की ओर से आप बीकानेर लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य चुने गये। निस्स्वार्थभाव से बीकानेर की जनता की सेवा कर आप उसके कितने विश्वस्त एवं प्रिय बन गये, यह इससे स्पष्ट है।

सन् १९३० में संयोगवश सेठियाजी को पुनः व्यवसायक्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा। बीकानेर में बिजली की शक्ति से चलने वाला ऊन की गाँठें बाँधने का एक प्रेस बिकाउ था। योग्य कार्यकर्त्ताओं के अभाव से वह बन्द पड़ा था। प्रेस के मालिक उसे चला न सके थे। क्रियात्मक शिक्षा देकर अपने पुत्रों को व्यापार-व्यवसाय में कुशल बनाने के उद्देश्य से आपने उक्त प्रेस खरीद लिया। राज्य ने आपको रियासत भर के लिये प्रेस की मोनोपोली दी। आपने प्रेस को एवं बीकानेर के ऊन के व्यापार को उन्नति देने का निश्चय किया। प्रेस के अहाते में आपने इमारतें, गोदाम और मकानात बनवाये और व्यापारियों के लिये सभी सहूलियतें प्रस्तुत कीं। आपने कमीशन पर व्यापारियों का खरीद फरोख्त का काम भुगताना, आर्डर सलाई एवं यहाँ से सीधा विलायत में माल चढ़ाने का काम शुरू किया। माल पर पेशगी रकम देकर भी आपने व्यापारियों को प्रोत्साहित किया। आपने प्रयत्न करके व्यापारियों के हक में राज्य एवं बीकानेर स्टेट रेल्वे से सुविधाएँ प्राप्त कीं। सभी प्रकार की सुवि-

धाओं के होने से वीकानेर राज्य एवं बाहर के व्यापारी यहाँ काफी तादाद में आने लगे। उन का कारबार करने वाली बड़ी बड़ी कम्पनियाँ भी यहाँ अपने कर्मचारी रखने लगीं। इस प्रकार उत्तरोत्तर प्रेस का काम बढ़ने लगा। सन् १९३४ में आपने उन के फॉटों से उन निकालने के लिये ऊल वरिंग फेक्टरी (Wool Buring Factory) खरीदी। राज्य ने इसके लिये भी आपके इक में मोनोपोली स्वीकृत की। इस प्रकार कुछ ही वर्षों में आपकी लगन और परिश्रम ने आपके संकल्प को कार्य रूप में परिणत कर दिया। आज उन प्रेस सन् १९३० के उन प्रेस से कुछ और ही है। यहाँ सैंकड़ों मजदूर लगते हैं और हजारों मन उन का व्यापार होता है। हजारों गाँठें बँधती हैं और विलायत भेजी जाती हैं। प्रेस की साख ने लिवरपूल के मार्केट को भी प्रभावित कर रखा है। प्रेस के मार्केट वाली गाँठें वहाँ अपेक्षाकृत ऊँचे भाव में विक्रती हैं।

सेठ सा० की धार्मिकता एवं परोपकार-भावना के फलस्वरूप उन प्रेस में भी गाय गोधों के घास एवं कबूतरों के चुगे के लिये, होमियोपैथिक एवं आयुर्वेदिक औषधियों के लिये तथा साधारण सहायता आदि के लिये पृथक् पृथक् फंड कायम किये हुए हैं और सभी में अलग अलग रकम जमा कराई हुई है। रकम के व्याज की आब से उपरोक्त सभी कार्य नियमित रूप से चल रहे हैं। उन प्रेस के आदतिये भी गाय गोधों के घास एवं कबूतरों के चुगे के लिये लागा देते हैं।

इस प्रकार उन प्रेस को सब भौति समृद्धत कर सेठ साहेब ने उसे अपने सुयोग्य पुत्र श्री लहरचंदजी, जुगराजजी, और ज्ञानपालजी के हाथ सौंप दिया है एवं आप व्यापार व्यवसाय से सर्वथा निवृत्त हो धर्मध्यान में संलग्न हैं। पिछले पाँच वर्षों से धार्मिक साहित्य पढ़ना, सुनना और तैयार करवाना ही आपका कार्यक्रम रहा है।

परिवार की दृष्टि से सेठ सा० जैसे भाग्यशाली विरले ही मिलते हैं। आप के पाँच पुत्र हैं। सभी शिक्षित, संस्कृत एवं व्यापारकुशल हैं। सभी जुदे किये हुए हैं एवं जुदे २ व्यापार व्यवसाय में लगे हुए हैं। पाँचों पुत्र सेठजी के आज्ञानुवर्ती हैं एवं सभी भाइयों में परस्पर सराहनीय प्रेम है। यही नहीं आपके छः पौत्र, दो प्रपौत्र, दो पौत्री और दो प्रपौत्री हैं। सेठजी के दो पुत्रियों में से छोटी पुत्री मौजूद है एवं तीन दोहिते और पाँच दोहितियाँ हैं।

सेठजी सफल व्यापारी, समाज और राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त, बड़े परिवार के नेता एवं सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप दानवीर और परोपकारपरायण हैं। धर्म और परोपकार के कार्यों में आपने उदारता के साथ धन ही नहीं बहाया किन्तु तन और मन का योग भी आपने दिया है। बचपन में माता और बड़ी बहिनों से धार्मिक संस्कार प्राप्त करने वाले एवं धर्मस्थान में शिक्षा का श्रीगणेश करने वाले सेठ साहेब की प्रवृत्ति सांसारिक कार्यों के बीच रहते हुए भी सदा धार्मिक रही है। सांसारिक वैभव में जलकमलवत् निर्लिप्त रह कर आपने नाम से ही नहीं, कर्म से भी धर्मचन्द का पुत्र होना सिद्ध किया है। आपने बचपन में ही श्री हुक्मीचन्द जी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री केवलचन्द जी महाराज से धर्म श्रद्धा ग्रहण की थी। आप गुणों के ही पुजारी हैं। पंच महाव्रतधारी निर्मल आचारवाले सभी साधु आपके लिये पूज्य हैं। आपने अपने जीवन में कभी चाय, भंग, तमाखू या अफीम का सेवन नहीं किया। सात व्यसनों का आपके त्याग है तथा रात्रिभोजन का भी आपके नियम है। आपने श्रावक के वारह व्रत धारण किये हैं और जीवन के पिछले वर्षों में आपने शीलव्रत भी धारण किया है। ग्रहण किये हुए त्याग प्रत्याख्यान आप दृढता के साथ पालन करते रहे हैं।

आपकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि आप स्वनिर्मित हैं। आप सदा स्वावलम्बी, साहसी, अध्यवसायशील एवं कर्मठ रहे हैं। सभी प्रकार से सम्पन्न होकर भी आप सर्वथा निरभिमान हैं। 'सादा जीवन और उच्च विचार' इस महान् सिद्धान्त को आपने जीवन में कार्य रूप दिया है। आपका चरित्र पवित्र एवं अनुकरणीय है। आप में परमहंसों का सा त्याग, साधुओं का सा कर्मसंन्यास और वीरों की सी कर्मनिष्ठा है। आपने क्या नहीं किया और क्या नहीं पाया परन्तु सांसारिक विभूति के मोह बन्धन में आपने अपने को कभी नहीं बाँधा। आपके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर जैन गुरुकुल शिक्षण संघ, व्यावर ने आपको 'धर्म भूषण' की उपाधि से विभूषित किया है। यह उपाधि सब तरह से आप जैसे महापुरुष को शोभा देती है। हमारी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आप चिरायु हों।

बीकानेर (राजपूताना)
भाद्रवा सुद ७ वि० सं० २००१
ता० २६-७-४४ ई०

रोशनलाल जैन
बी.ए., एल एल. बी.,
न्याय-काव्य-सिद्धान्ततीर्थ, विशारद.

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी का वंश

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी के चार पुत्र और पाँच पुत्रियाँ हुईं। उनके नाम—श्रीप्रतापचन्दजी, श्रीअगरचन्दजी, श्रीभैरोंदानजी, श्रीहजारीमलजी, चॉदाबाई, घमाबाई, पन्नीबाई, मीराबाई और टुगीबाई। श्रीमान् प्रतापचन्दजी के तीन पुत्रियाँ और तीन पुत्र हुए। उनके नाम—तरखुवाई, सुगनीबाई, मानबाई। सुगनचन्दजी, हीरालालजी, चनणमलजी। इन तीनों के कोई सतान न हुई। इन तीनों का तरुणावस्था में ही स्वर्गवास होगया। श्रीमान् चनणामलजी की धर्मपत्नी अभी मौजूद है। उन्होंने श्रीमान् जेठमलजी सेठिया के ज्येष्ठ पुत्र श्री माणकचन्दजी को गोद लिया।

श्रीमान् अगरचन्दजी के कोई सन्तान न हुई। उन्होंने अपने लघुभ्राता श्रीमान् भैरोंदानजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री जेठमलजी को गोद लिया।

श्रीमान् भैरोंदानजी के ६ पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। वे इस प्रकार हैं—१ वसंतकुंवर, २ जेठमलजी, ३ पानमलजी, ४ लहरचन्दजी, ५ उदयचन्दजी, ६ जुगराजजी, ७ ज्ञानपालजी, ८ और मोहिनीबाई। संवत् १६६६ मिति काती सुदह को वसन्तकुंवर बाई का स्वर्गवास हो गया। उनके दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं।

श्रीमान् जेठमलजी के चार पुत्र और एक पुत्री हुईं। उनके नाम—माणकचन्दजी, केशरीचन्दजी, मोहनलाल, जसकरण और स्वर्णलता। १६६४ में केवल आठ वर्ष की अवस्था में ही जसकरण का स्वर्गवास हो गया। श्री माणकचन्दजी के इस समय एक पुत्र कुष्ठमकुमार और एक पुत्री आशालता है।

श्रीमान् पानमलजी के इस समय एक पुत्र श्रीकुन्दनमलजी (भवरलालजी) है । कुन्दनमलजी के एक पुत्र रचिकुमार और एक पुत्री लीला है ।

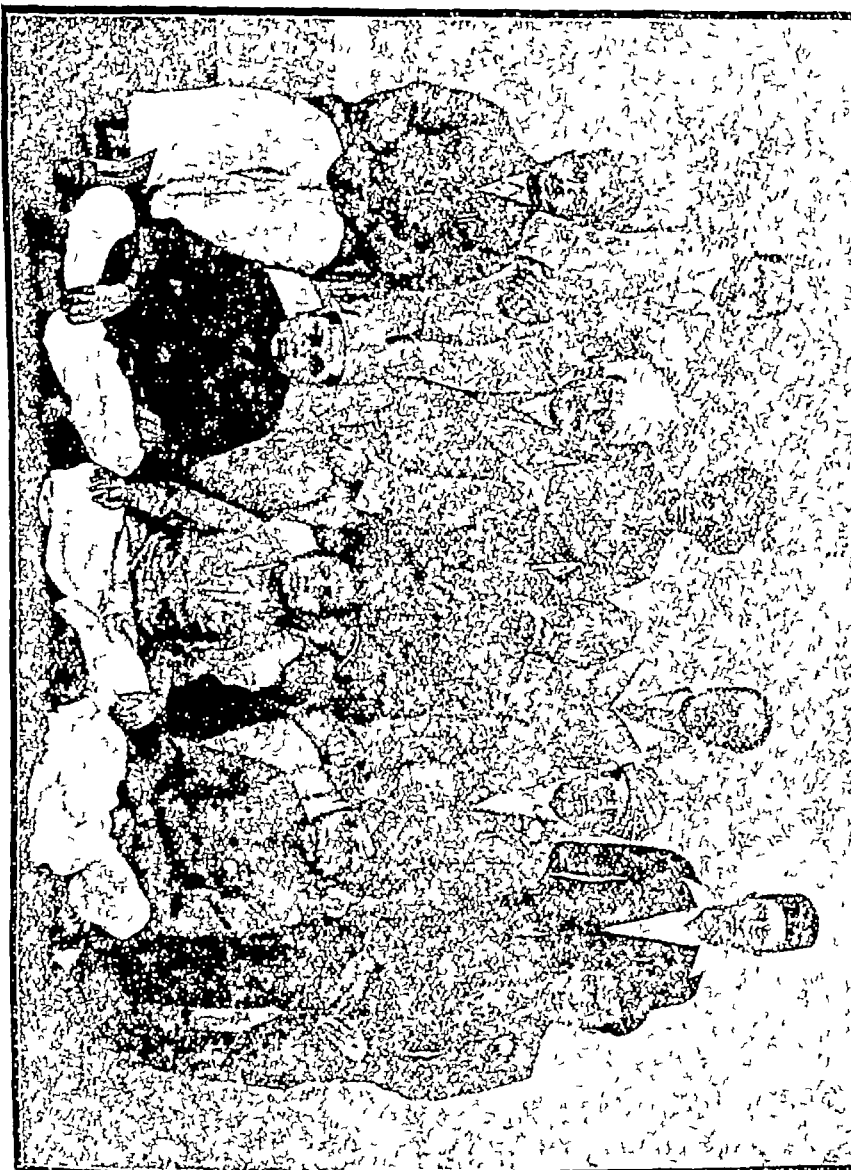
श्रीमान् लहरचन्दजी के इस समय एक पुत्र श्रीखेमचन्दजी और एक पुत्री चित्ररेखा है ।

संवत् १९७६ में श्रीमान् उदयचन्दजी का केवल १५ वर्ष की अवस्था में ही स्वर्गवास हो याग । उनके स्वर्गवास के पश्चात् करीब १६ महीनों के बाद उनकी धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास हो गया

श्रीमान् जुगराजजी के इस समय एक पुत्र श्रीचेतनकुमार है । बाबू ज्ञानपालजी अभी अविवाहित है ।

मोहिनीबाई के इस समय एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं ।

श्रीमान् भैरोंदानजी से छोटे भाई श्रीमान् हजारीमलजी थे । उनका स्वर्गवास युवावस्था में ही हो गया । उनकी धर्मपत्नी श्री रत्नकुंवरजी को वचपन से ही धर्म के प्रति विशेष रुचि एवं प्रेम था । संवत् १९३६ में केवल छः वर्ष की अवस्था में आपने रतलाम में पूज्यश्री उदयसागरजी महाराज के पास सम्यक्त्व ग्रहण की थी । पति का स्वर्गवास हो जाने पर धर्म के प्रति आपकी रुचि और भी तीव्र हो गई । आपको संसार की असारता का अनुभव हुआ और वैराग्य भावना जागृत होगई । संवत् १९६५ में समस्त सांसारिक वैभवों का त्याग कर श्रीमज्जैनाचार्य पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज के पास श्रीरंगूजी महाराज की सम्प्रदाय में श्रीमैनाजी महाराज की नेत्राय में पूर्ण वैराग्य के साथ दीक्षा अंगीकार की । ३६ साल हुए आप पूर्ण उत्साह के साथ संयम का पालन करती हुई आत्म कल्याण की साधना में अग्रसर हो रही हैं ।



१

२

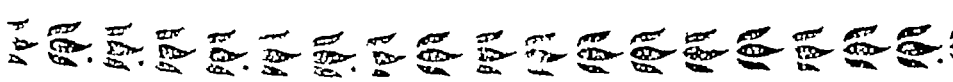
३

१ पक्ति—

माणिकचन्द, केशरीचन्द, जुगारज, कुनणमल

२

लहरचन्द, जेठमल, भैरोंदानजी, पानमल ज्ञानपाल



की पढ़ाई चलती रही है। एफ. ए. परीक्षा में कुल १२ छात्र प्रविष्ट हुए थे जिनमें ८ उत्तीर्ण हुए। मैट्रिक परीक्षा में ३० छात्रों में २७ पास हुए। इस वर्ष कालेज में बी. ए. कक्षा नहीं रखी गई किन्तु आगामी सेशन से पुनः बी. ए. कक्षा खोल दी जायगी।

कन्या पाठशाला

इस पाठशाला में पूर्ववत् पहली से लेकर चौथी तक चार कक्षाएं चलती रही हैं। इन कक्षाओं में कन्याओं को हिन्दी, गणित, स्वास्थ्य, धर्म, भूगोल, वाणिक्या, सिलाई और कशीदा आदि विषयों का ज्ञान कराया जाता रहा है। छात्राओं की साल भर में संख्या ७० और ८० के बीच में रही।

समाज सेवा विभाग

इस विभाग द्वारा समाज सेवा सबंधी सभी प्रकार के कार्य किये जाते रहे हैं। इनमें श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था के आय व्यय का हिसाब रखना तथा ग्राम्य पाठशालाओं के संचालन की देखरेख एवं प्रबंध का कार्य होता रहा है।

इस विभाग द्वारा संत मुनिराजों एवं महापतियों के विहारादि सबंधी पत्रव्यवहार और दीक्षार्थी भाई बहनों के लिये भण्डोपकरण का प्रबंध भी होता रहा है।

इस विभाग द्वारा इस वर्ष ४२३॥॥ मूल्य की सम्या द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भिन्न भिन्न संस्थाओं और व्यक्तियों को भेंट स्वरूप दी गई हैं। इसके अतिरिक्त विना मूल्य की १०२ पुस्तकें भी इस विभाग द्वारा भेंट दी गईं।

प्रिन्टिंग प्रेस (छापाखाना)

इस विभाग में इस वर्ष मेठिया ग्रन्थमाला की १०५ से १०७ तक की नवीन पुस्तकों का मुद्रण हुआ। युद्ध जन्य कठिनाइयों के कारण इस साल प्रेस का काम मंद गति से चला। कर्मचारियों तथा कागज की कमी के कारण केवल नीचे लिखी पुस्तकें छप सकीं। समय को देखते हुए यह भी सतोषजनक ही है। (१) आर्हतप्रवचन (२) श्रीप्रतिकमणसूत्र मूल ७ वीं आवृत्ति (३) श्री सामायिकसूत्र मार्थ ५ वीं आवृत्ति (४) श्री जैन-सिद्धान्त बोल सग्रह सातवां भाग (५) श्रीमान् सेठ भैरोंदानजी सा सेठिया की सच्चिप्त जीवनी (६) हिन्दी बाल शिक्षा दूसरी प्राइमर। अभी श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के आठवें भाग की छपाई हो रही है।

ग्रन्थालय और वाचनालय

इस वर्ष भिन्न भिन्न भाषाओं की कुल ३१० नई पुस्तकें ग्रन्थालय में आईं। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक और त्रैमासिक पत्र पत्रिकाएँ इस वर्ष भी आती रही हैं और उन्हें वाचनालय में रखा जाता रहा है। इस वर्ष १२७ सदस्यों ने ३३६३ पुस्तकें पढ़ने के लिए पुस्तकालय से लीं तथा वाचनालय से लाभ उठाया।

ग्रन्थालय में इस समय हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, अंग्रेजी, पत्राकार, हस्तलिखित आदि कुल मिलाकर ६६०६ पुस्तकें संगृहीत हैं। विवरण नीचे लिखे अनुसार है -

हिन्दी	३६८१	आयुर्वेद (वैद्यक)	५२
कोष और व्याकरण	१२७	ज्योतिष शास्त्र	२०
इतिहास और पुरातत्त्व	१४५	विविध	२३
दर्शन और विज्ञान	१४६	<i>पुस्तकें</i>	१४१
धर्म और नीति	१३७३	अंग्रेजी	१६८०
साहित्य और समालोचना	२५६	Works of reference	170
काव्य और नाटक	४४२	History and	
उपन्यास और कहानी	३८४	Geography	213
जीवन चरित्र	१२२	Theology, Philosophy	
राजनीति और अर्थशास्त्र	१३७	and Logic	287
ज्योतिष और गणित	३७	Law & Jurisprudence	83
स्वास्थ्य और चिकित्सा	१८७	Literature	264
भूगोल और यात्राविवरण	३४	Fiction	225
कानून	८४	Politics & Civics	8
बाल साहित्य	२१३	Business & Economics	45
विविध	२६४	Science and art of	
<i>पुस्तकें</i>	४१६२	medicine	157
संस्कृत	६४३	Science & mathematics	56
कोष और व्याकरण	१६५	Biography & auto-	
साहित्य, काव्य, नाटक, चरित्र } और कथा }	२३५	biography	109
आर्ष ग्रन्थ	१३४	Industrial science	50
दर्शन शास्त्र	६६	Art of teaching	13
धर्म शास्त्र और नीति	१८४	जर्मन, फ्रेंच आदि	१०३
स्तुति स्तोत्रादि	३१	पत्राकार शास्त्र एवं ग्रन्थ	५३०
		हस्तलिखित ग्रन्थ	१२३८
		<i>गुजराती</i>	११६१

ग्रंथ निर्माण विभाग

इस साल छापाखाना विभाग में छपने वाले समस्त ग्रन्थों का संशोधन इसी विभाग के कर्मचारियों द्वारा हुआ। श्रीश्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था की दश वर्षीय

रिपोर्ट लिखी तथा सशोधित की गई । श्री जैनसिद्धान्त बोल संग्रह के आठवें भाग की पांडुलिपि तैयार की गई और आवश्यक सशोधन परिवर्तन कर प्रेसकापी तैयार की गई ।

सन् १९४४ के आय-व्यय का संक्षिप्त विवरण

- | | |
|---|--|
| १६६०३॥१) कलकते के मकानों के किराये | ११६८५॥१) श्रीसेठिया जैन पारमार्थिक संस्था में खर्च हुए |
| के मास वारह के | |
| १७८२॥३) व्याज | ६३७॥१) मेठिया प्रिंटिंग प्रेस में |
| २०१) श्रीमान् लहरचदजी सेठिया से प्राप्त हुए शास्त्र तथा दीचो-करणदि में खर्च करने के लिये | ४५) 'बोर्डिंग खाते' खर्च हुए |
| १०१) श्रीमगनवाई स्वर्गीय धर्मपत्नी जेठमलजी मेठिया से प्राप्त हुए शास्त्र तथा दीचोपकरणादि में खर्च करने के लिये | १००१) महायता में दिये श्री स्थानकवामी जैन लाय-व्हेरी श्रीनगर काश्मीरको |
| ५२००) श्रीमान् सेठ भैरोदानजी सा सेठिया से प्राप्त हुए | ५१) श्रीमहावीर जैन लायव्हेरी श्रीरायसिंहनगर में दिये |
| २०००) छात्रवृत्ति देने के लिये | १२८॥१) विविध खुदरा सहायता में दिये |
| २०००) बोर्डिंग के लिये | ३४४६) विद्यालय में वेतन के |
| १२००) सहायता मे देने के लिये | १७३६॥१) बाल पाठशाला में |
| | ८८८॥१) कन्या पाठशाला में |
| | १२७५॥१) सेठिया नाइट कालेज |
| | ५५२॥१) हेड ऑफिस में खर्च हुए |
| | ७४७) मेठिया लायव्हेरी में पुस्तक व समाचारपत्र आदि में |
| | ७४॥१) खर्च विजली तथा पखे का |
| | १२६७) कर्मचारियों को महगाई भत्ते के दिये |
| | ५०॥१) परचुरण खर्च |
| | ८४॥१) मकानों की मरम्मत में |
| ७०७४) कलकते के मकानों का ता० २१ सितम्बर १९४४ को नया डीड ऑफ ट्रस्ट बनवाया उसमें म्याम्प, रजिस्ट्री व एटर्नी की फीस के खर्च हुए | |

संस्था की कलकत्ता स्थित स्थावर संपत्ति

का

नवीन ट्रस्ट नामा

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के संस्थापक महोदयों ने संस्था के स्थायित्व के लिये कलकत्ते और वीकानेर में स्थावरसंपत्ति प्रदान कर कलकत्ता और वीकानेर में उसकी लिखापट्टी कर दी थी। कलकत्ते की संपत्ति के अलग अलग तीन डीड्स ब्राफ सेटलमेन्ट रजिस्टर्ड कराये गये थे। किन्तु उनमें कुछ कमी महसूस कर संस्थापक महोदयों ने उन्हें रद्द कर दिया एवं संस्था के स्थायित्व के लिये उनके बदले ता० २१ सितम्बर १९४४ तदनुसार मिति आसोज सुदी ६ सं० २००१ शनिवार को नीचे लिखी संपत्ति का नया डीड ब्राफ ट्रस्ट बनाकर उसकी सवरजिस्ट्रार कलकत्ता के दफतर में रजिस्ट्री करा दी। उक्त नवीन डीड ब्राफ ट्रस्ट के अनुसार सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के वर्तमान में निम्नलिखित तीन ट्रस्टी हैं —

१ श्रीमान् दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया

२ „ बाबू जेठमलजी सेठिया

३ „ „ माणकचंदजी सेठिया

उक्त डीड के अनुसार ट्रस्टियों की संख्या ६ तक हो सकेगी। ट्रस्ट कमेटी के अधीन संस्था की व्यवस्था के लिये जनरल कमेटी, प्रबन्धकारिणी कमेटी तथा आवश्यकतानुसार अन्य सब कमेटियां स्थापित की जायेंगी एवं यथासमय उनके लिये नियम उपनियम निर्धारित किये जायेंगे।

कलकत्ते की स्थायी संपत्ति

१. मकान न १६०-१६०।१ पुराना चीना बाजार

२. मकान न. ३,४,७,९,११ और १३ क्रोस स्ट्रीट (मूंगापट्टी) तथा न १२३ और १२४ मनोहरदास स्ट्रीट

३. मकान न ६ जेकशनलेन तथा १११, ११२, ११३, ११४ और ११५ केनिंग स्ट्रीट का दो तिहाई हिस्सा

नोट—उक्त जेकसनलेन और केनिंग स्ट्रीट का एक तिहाई हिस्सा श्रीमान् बाबू जेठमलजी सा सेठिया ने संस्था को दिया वह नवीन ट्रस्ट डीड में है और एक तिहाई हिस्सा ता १६ ७-४० को संस्था ने खरीदा है। इस प्रकार इस मकान में संस्था का दो तिहाई हिस्सा है और एक तिहाई हिस्सा श्रीमान् गोविन्दरामजी भीखणचन्दजी मनसाली का है।

कलकत्ते की उक्त स्थावर संपत्ति के सिवा वीकानेर नगर में संस्था की नीचे लिखी स्थावर संपत्ति है—

वीकानेर की स्थावर संपत्ति

१--मोहल्ला मरोटियों का विशाल भवन (जिममें आगे तीन मंजिला मकान है और पीछे की तरफ दो मंजिला मकान है) आगे पीछे के चौक, छप्परे और वाड़ा सहित। यह भवन कोटडी के नाम से प्रसिद्ध है। यह मकान मस्था के संस्थापकोंने, सवर, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषत्र, दया करने और साधु साध्वियों के ठहरने के लिये (यदि वे ठहरना चाहें तो) तथा मुनि महाराज एव महासतियोंके व्याख्यान के लिये एवं इसी प्रकार के अन्य धार्मिक कार्योंके लिये दिया है। इसकी रजिस्ट्री स. १६८० में ता ३० नवम्बर १६२३ को हुई। तभी से इस कोटडी की सारसभालसस्था कर रही है। सस्था ने इसकी मरम्मत कराई है, इसमें छप्पर वगैरह बनवाने में लागत लगाई है और सस्थापकों ने इस मकान का नया खत वीकानेर राज्य में श्री अग्रचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता २६-४-४१ का है। नम्बर मिसल १७ तारीख मरजुमा १३-१२-३८ ई० नाम तहसील मालमडी नम्बर ३०३ है। इस खत के अनुसार इम मकान की कुल दरगज ३००५॥३॥ है।

नोट--इस भवन में पहली मंजिल में दरवाजे के दोनों तरफ के दोनों दीवानखाने और उनके नीचे के दोनों तनवर मस्था में नहीं दिये हुए है। ये दोनों अग्रचन्दजी भैरोदानजी सेठिया के निजी है और इनका खत उनके नाम का अलग बना हुआ है। दीवानखानोंकी कुल दरगज २२८॥ है। दीवानखानों के ऊपरकी मंजिल सस्थाकी है।

२--मोहल्ला मरोटियों का दूसरा दो मंजिला विशाल भवन (चौक और वाड़ा सहित)। यह भवन सेठिया लायवेरी के नाम से प्रसिद्ध है। सस्थापक महोदयों ने यह भवन सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के लिये दिया है। अभी इस भवन में सेठिया ग्रन्थालय, कन्या-पाठशाला, बालपाठशाला, नाइट कॉलेज आदि सस्था के विभाग हैं। इसकी रजिस्ट्री वीकानेर में स १६८० में ता २८ नवम्बर १६२३ को हुई। सस्थापकों ने इस मकान का नया खत वीकानेर राज्य से श्री अग्रचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता २६-४-४१ का है। नम्बर मिसल १७ तारीख मरजुमा १३-१२-३८ ई नाम तहसील मालमडी नम्बर ३०५ है। इस खत के अनुसार इस मकान की दरगज १३६३॥१॥ है। ता २८ नवम्बर १६२३ की रजिस्ट्री के बाद सस्था को प्राप्त जमीन तथा एक वाड़ा भी नये खत में शामिल है।

नोट--इस भवन में कन्यापाठशाला के वर्तमान मकान के नीचे का तहखाना (जिसकी दरगज १३६ है) तथा तीन बाड़ों में से दो बाड़े १६१॥३॥ दरगज के संस्था में नहीं दिये हुए है। यह तहखाना तथा दोनों बाड़े अग्रचन्दजी भैरोदानजी सेठिया के निजी है। तहखाने और दोनों बाड़ों के दो खत उनके नाम अलग बने हुए हैं।

३-मकान एक उगूण दरवाजे का चौकी समेत, जिसकी दरगज ३३६।॥३ है और जो ठठारों की गली में वाके है, मोती, भोलु व गोलु ठठारा से स १६७६ माह वदी ६ ता १५ जनवरी सन् १६२० ई को खरीदा और उस पर लागत लगाकर दो मजिले आसरे इमारत बनवाये इसके बाद वि स २००१ मिति प्रथम चैतवदी ६ ता ५ मार्च १६४५ को संस्थापक महोदय ने संस्था के हक में दानपत्र लिख दिया और तहसील मालमडी में रजिस्ट्री करादी । संस्था के नाम इस मकान का पट्टा बनाने क लिये भी राज्य में दरखास्त कर दी गई है । इस मकान के आसे पामे इस प्रकार है- मकान में प्रवेश करते ही दाहिनी ओर धन्ना ठठारा (पिलहाल जीवणजी महाराज) का घर है, बाई ओर हजारी ठठारे का घर है, पीछे के तरफ आशुनाई का मकान है और सामने गली है ।

नोट-उक्त कलकत्ता एव वीकानेर दोनों जगह की स्थावर सपत्ति एक ही सस्था (सेठियाजैन पारमार्थिकसस्था) की है । अत. उनकी सुव्यवस्था क लिये यह आवश्यक है कि कलकते और वीकानेर की उक्त सपत्ति की देखभाल एक ही ट्रस्ट कमेटी के अधीन हो और एक से नियमों के अधीन उनका नियन्त्रण हो । अतएव सस्थापक महोदयों का विचार है कि कोटडी और सेठिया लायब्रेरी के मकान की, वीकानेर राज्य में कराई हुई ता २८व ३० नवम्बर १६२३ की रजिस्ट्रियों को अपने सुरक्षित अधिकारके अनुसार रद्दकर संस्था की वीकानेर की सपत्ति के नये ट्रस्टडीड बनाये जायें और उनकी वीकानेर राज्य में रजिस्ट्री करा दी जाय ।

सेठिया जैन ग्रन्थमाला का प्रकाशन

सेठिया जैन ग्रन्थमाला से श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के आठभाग, सोलहसती, आर्हत प्रवचन, जैन सिद्धान्त कौमुदी, अर्द्धमागधी धालु रूपावली, कर्तव्यकौमुदी, सक्ति-सग्रह, उपदेशशतक, सुखविपाक सार्थ, मांगलिक स्तवन सग्रह प्रथम द्वितीय भाग, गुणविलास, गणधरवाद के तीन भाग, सच्चित्त कानून सग्रह, प्रकरण थोकड़ा सग्रह, प्रस्तार रत्नावली, पचीस बोल का थोकड़ा, लघुदंडक का थोकड़ा, सामायिक तथा प्रतिक्रमण सूत्र मूल और सार्थ इत्यादि कुल १०८ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । विशेष विवरण के लिए सस्था का सूचीपत्र मगाकर देखिये । आर्डर आन पर पुस्तकें वी पी द्वाग भेजी जायेंगी ।

पता:- अग्रचन्द भैरोंदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था
वीकानेर (राजपूताना)

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner

प्रमाण ग्रन्थों को संकेत सूची

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
अत.	अतगडदसा-अतकृद्दशा सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका सस्कृत	टीकाकार-अभयदेवसूरि वि. स १०७२-११३५	आगमोदय समिति वीर स २४४६
अणु.	अणुत्तरोववाई-अनुत्तरोपपत्तिक सूत्र सटीक, मूल प्राकृत, टीका सस्कृत	टीकाकार-अभयदेव सूरि वि. स १०७२-११३५	आगमोदय समिति वीर स २४४६
अनु	अनुयोगद्वार सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका सस्कृत	टीकाकार-मलधार गच्छीय श्री हेमचन्द्र सूरि	आगमोदय समिति वीर स २४५०
अभि. वि	अभिधान चिन्तामणि सस्कृत-कोष	श्री हेमचन्द्राचार्य वि. स ११४५-१२२६	लालचन्द्र नदलाल वकील, श्री मुक्तिकमल जैन मोहनमाला कोठीपोल, वड़ोदा, वीर स २४५१
अभि रा	अभिधान राजेन्द्र कोष (सात भाग) प्राकृत से सस्कृत	श्री विजय राजेन्द्र सूरि वि. स १८८३-१९६३	श्री जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस रत्लाम, वीर स २४४०-२४५१
अर्द्ध मा	अर्द्धमागधी कोष (पाँच भाग) प्राकृत से हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज, वि. स १९३६-६८ वैशाल	श्री श्वेत् स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स बम्बई, वीर स २४४६-२४६४

(२१)

ग्रन्थ कर्ता और उसका काल

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल

अष्टक प्रकरण, संस्कृत
वृत्ति (वि. सं. १०८०)
भागमसार, मूल गुजराती, हिन्दी
प्रनुवाद, वि स १७७६
भाचाराग सूत्र सटीक, मूल प्राकृत
टीका संस्कृत वि सं ६३३
आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक,
प्राकृत, दस पङ्क्ता में दूसरी पङ्क्ता
आलापवद्धति, संस्कृत

हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी)

श्रुतिका-जिनेश्वरसूरि

श्रीमद्देवचन्द्रजी महाराज

वि १८ वीं १९ वीं शताब्दी

टीकाकार-शीखाभाचार्य

धी देवसेनसूरि, वि १० वीं शताब्दी

निर्युक्तिकार-भद्रबाहुस्वामी

(वीर की पहली दूसरी शताब्दी)

टीकाकार-मलयगिरि

निर्युक्तिकार-श्रीभद्रबाहुस्वामी

(वीर की पहली दूसरी शताब्दी)

टीकाकार-हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी)

प्रकाशन का स्थान व समय

श्री मनसुखभाई पोखार, ब्रह्ममदावाद

श्री अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला, बड़ा

उपाश्रय वीकानेर, वीर स २४४८

भागमोदय समिति, वीर स २४४२

भागमोदय समिति, वीर स २४५३

माणिकचंद्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला

कम्बई, वीर स २४४६

भागमोदय समिति

वीर स २४५४

भागमोदय समिति

वीर स २४४३-२४४४

भा. द. दि.

भाष्यरथक हरिभक्षीय टिप्पण, संस्कृत

मलधार गच्छीय श्री वेमचन्द्रसुरि

आ. वि.

आध्यात्मिक विकासक्रम, गुजराती

प मुखलालजी गधवी (विद्यमान)

उत्तराध्ययन सूत्र (दो विभाग) सटीक

मूल और नियुक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत

निर्युक्तिकार-श्रीभ्रवाहुस्वामी

उत्तराध्ययन सूत्र सटीक, मूल प्राकृत,

टीका संस्कृत वि. सं. १५४४

टीकाकार श्री शान्त्याचार्य (११वीं शताब्दी)

सर्वार्थ सिद्धि टीका

टीकाकार-श्रीबमल सयमोपाध्याय

उत्तराध्ययन सूत्र हस्तलिखित

(सोलहवीं शताब्दी)

उत्त (ह)

उपासकदेशांग सूत्र सटीक

उपा. (अं.)

उपासकदेशांग सूत्र (अंग्रेजी अनुवाद)

उपासकदेशांग सूत्र इस्तस्किस्थित

टीकाकार-अभयदेवसुरि

उपासकदेशांग सूत्र संस्कृत

(वि. सं. १०७२-११३५)

उपासकदेशांग सूत्र इस्तस्किस्थित

अनुवादक-ए एफ. रडोल्फ हान्ले

उपा. द

उप.

उपवाई (मौपपमतिक) सूत्र

मूल प्राकृत, टीका, संस्कृत

टीकाकार-अभयदेवसुरि

अपि मडल वृत्ति मूल-प्राकृत,

(वि. सं. १०७२-११३५)

टीका-संस्कृत, अनुवाद-गुजराती

धर्मधोपसुरि, टीकाकार-युभवर्द्धनगर्गी

अनुवादक-शास्त्री हरिशंकर कालीदास

अपि

देवचष लालभाई जैन पुस्तकोद्धार

फंड वम्बई, वीर सं. २४४६

एस जे शाह, मादलपुर अहमदाबाद, वि. सं. १६८६

देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार

फंड, वम्बई, वीर सं. २४४२

विजय धर्म लक्ष्मी ज्ञान मंदिर

वेल्लनगज, आगरा

वीर सं. २४४६-२४५१

श्री सेठिया जैन ग्रन्थालय वीकानेर

आगमोदय समिति

वीर सं. २४४६

विश्लोथिका इन्डिका कलकत्ता, सन १६८० ई.

अनूप संस्कृत लायवेरी, (बीरनर का प्राचीन

पुस्तक भंडार) वीकानेर

आगमोदय समिति, वीर सं. २४४२

श्री जैन विद्याशाला डोशीवाइली पोल

अहमदाबाद, वि. सं. १६५८

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल

० ओषधनिर्गुक्ति, सूत्र-प्राकृत,

३ टीका संस्कृत । । । । ।

ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल

निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहुस्वामी

(वीर की पहली दूसरी शताब्दी)

टीकाकार श्री द्रोणाचार्य(ग्यारहवीं शताब्दी)

११ कर्तव्यकौमुदी दूसरा भाग संस्कृत,

भाषानुवाद सहित (विम २६८०)

२-२ (१) कर्मपथ छि (कर्म प्रकृति) मटीक,

टीकाकार उपाध्याय श्रीयशोविजयजी

अनुवादक पं. चहुलाल नानचद

३ का गुजराती अनुवाद

(१) कर्म ग्रन्थ भाषा १५४५

टीका-संस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित

(२) कर्म ग्रन्थ भाषा ५-६

मूल प्राकृत-टीका संस्कृत

कल्प सूत्र मटीक, मूल प्राकृत, सुबोधिका

टीका संस्कृत

प्रकाशन का स्थान और समय

आगमोदय समिति

वीर स २४४५

श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया वीकानेर

वीर स २४५१

श्री जैन-धर्म प्रसारक सभा भावनगर

वीर स २४४३

श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मडल

पादरा (गुजरात), वीर स १६७६

श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मडल

श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मडल

श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मडल

श्री आत्मानन्द सभा, भावनगर

वीर स २४६६

देवचद लालभाई जैन

पुस्तकोद्धार फड, बम्बई

वीर स २४४६

(१७ वीं १८ वीं शताब्दी)

(२४)

कारण.	कारण सेवाद, हिन्दी वीर स २४६५	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी (वि. स १९३६-१९६८ वैशाख)	हीरालाल सुगनचद जैन नया बाजार अजमेर वीर स २४६५
चेत्र.	चेत्रलोक प्रकाश, संस्कृत गुजराती अनुवाद सहित	उपाध्याय श्री विनय विजयजी [१७वीं १८वीं शताब्दी] अनुवादक-श्रावक हीरालाल हंसराज	श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर वीर स २४४२
गच्छा.	गच्छाचार पयन्ना प्राकृत		भागमोदय समिति, वीर स २४६३
गीता	श्रीमद्भगवद्गीता [संस्कृत] साधारण भाषा टीका सहित		गीता प्रेस, गोरखपुर वि सं २००१
गुण	गुणस्थान क्रमरोह [संस्कृत का हिन्दी अनुवाद] वि सं १४४७	मूल-रत्नशेखरसूरी अनुवादक-श्री तिलकविजयजी पजाबी	भात्म तिलक ग्रन्थ सोसायटी रतनपोल, अहमदाबाद, वीर स २४४५
गुण. थो	चौदह गुणस्थान का थोकड़ा, हिन्दी		भैरोदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर वीर स २४५५
गो कु	गौतम कुलक-शाकृत	गौतम मुनि	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर, वीर सं २४५४
च.	चतुर्भावना पाठमाला मूल संस्कृत, व्याख्या-हिन्दी	मूल-शतावधानी श्रीरत्नचन्द्रजी स्वामी (वि स १९३६-१९६८ वैशाख) व्याख्या धर्मोपदेश श्री फूलचंदजी महाराज	रत्नलाल अर्हदास जैन सोनीपत वीर सं २४५५
चन्दन	चन्दनवाला (मती वसुमती) हिन्दी	पूज्य श्रीजवाहरलालजी महाराज के व्याख्यान (वि स १९३२-२००० आपाठशुभला ८)	श्री हितेश्चक्रावक मडल रतलाम वीर स २४६२

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
चन्द्र.	चन्द्रप्रज्ञप्ति मूल-प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	अनुवादक मुनि श्री अमोलखण्डकिजी महाराज (वि स १९३४-)	राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जौहरी महेन्द्रगढ़, वीर स २४४५
छ	छन्दोमञ्जरी, संस्कृत टीका तथा अनुवाद सहित	वैद्य महामहोपाध्याय श्रीमद्गंगादास टीकाकार और } श्रीगुरुनाथ विद्यानिधि अनुवादक } भटाचार्य	श्री जानकीनाथ काव्यतीर्थ, संस्कृत विद्यालय निवेदितालिन कलकत्ता, १३३२ वज्रानन्द
ज	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (दो भाग) मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत (विक्रमस १६५०)	टीकाकार-उपाध्याय श्रीशान्तिचन्द्रगणी	देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर सं २४४६
जी	जीवाजीवाभिसम सूत्र मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत	टीकाकार- श्रीमलयगिरि	देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर स २४४५
जे	जैन तत्त्वादर्श, हिन्दी पूर्वाह्न और उत्तरार्द्ध	श्री विजयानन्दसूरीश्वर (श्री आत्मारामजी महाराज)	श्री आत्मानन्द जैन महासभा अम्बाला, वीर सं २४६२
जे प्र	जैन ग्रन्थावली, हिन्दी	पं. गोपालदासजी बैरैया	श्रीरवेताम्बर जैन कॉन्फरन्स बम्बई, वीर स २४५३
जे. प्र	जैन सिद्धान्त प्रवेशिका-हिन्दी	टीकाकार-श्रीअभयदेवपुरि	जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, वि. स १९८१
ज्ञा.	ज्ञातार्थ कथा (शायाथम्मकहा) मूल-प्राकृत टीका संस्कृत (वि स ११२०) ज्ञानार्थ, संस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	(वि स १०७२-११३५) मूलकर्ता-श्रीशुभचन्द्राचार्य [नवीं शताब्दी] अनुवादक प पशालालजी वाकलीवाल	श्री आगमोदय समिति वीर स २४४५ परमश्रुत प्रभावक मडल, बम्बई वीर सं. २४३३
ज्ञान.			

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
ठा.	ठाण्णाग सूत्र [स्थानागसूत्र] दो भाग मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत वि.स. ११२० [वि.स. १०७२-११३५]	टीकाकार श्री अभयदेवसुरि वाचकमुख्य श्री उमास्वामि विवेचक-पं. सुखलोलजी [विविमान]	आगमोदय समिति वीर सं २४४५-४६ मोतीलालबाधाजी पूना, वीर सं २४६२ गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद, वि.सं १९८५ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर सं. २४४३
तत्त्वार्थ	सभाष्य तत्त्वार्थाधिगम सूत्र, संस्कृत		
तत्त्वार्थ [सु]	तत्त्वार्थ सूत्र, गुजराती [दो भाग]		
तन्दुल.	तन्दुलवेयालय पद्मगणा, प्राकृत (दमपद्मगणा में से पाचवीं पद्मगणा)		
त्रिलोक.	त्रिलोकसार, प्राकृत, टीका सहित	श्रीनेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती टीकाकार-श्री माधवचन्द्र हेमचन्द्राचार्य [वि स ११४५-१२२९]	माणिक्यचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति हीराबाग गिरगाव बम्बई, वीर सं. २४४४ जैनधर्म प्रचारक सभा भावनगर
त्रिप	त्रिपटि शलाकापुरुष चरित्र गुजराती अनुवाद भाग ४		
द.प	दस पद्मगणा [प्रकीर्णक] प्राकृत		
दशा.	दशवैकालिक सूत्र, मूल और निर्युक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत	मूलकर्ता-शय्यभवस्वामी [वीर की प्रथम शताब्दी] निर्युक्तिकार-भद्रबाहुस्वामी [वीर की पहली दूसरी शताब्दी] टीकाकार-हरिभद्रसूरि [द्विती शताब्दी] अनुवादक-उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज [विद्यमान]	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर सं २४४४
दशा	दशाश्रुतस्कंध दशाभाषान्तर सहित मूल प्राकृत		जैन शास्त्रमाला कार्यालय, सैदमिश्रा बाजार लाहौर, वीर सं. २४६२

द्रव्यानुयोग तर्कणा-संस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित	मुनि भोजसागरजी [सोलहवीं शताब्दी] अनुवादक-प ठाकुरदत्त शर्मा व्याकरणाचार्य	परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, वीर स २४३२
द्रव्यलोक प्रकाश, संस्कृत	विनयविजयजीमहाराज (१७वीं १८वीं शताब्दी)	पं हीरालाल हसरान, जामनगर
गुजराती अनुवाद सहित	अनुवादक-प हीरालाल हसरान	वीर स २४४५
द्रव्यसंग्रह, प्राकृत, हिन्दी टीका सहित	श्री नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती हिन्दी टीकाकार-बाबू सूरजभानु वकील	श्री जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय हीराबाग गिरगाव बम्बई, वीर स २४५३
धर्मसंग्रह, संस्कृत [वि स १७३१]	उपाध्याय श्री मानविजयजी	देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई वीर स २४५१
धर्मविन्दुप्रकरण, संस्कृत	हरिभद्रसूरि (कृती शताब्दी) वृत्तिकार-मुनि चंद्राचार्य (वि. १२वीं शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४५०
धर्मसूत्रप्रकरण [वि स १२७१]	श्री शान्तिसूरि	आत्मानन्द जैन सभा भावनगर, वीर स २४५२
नदीसूत्र मटीक	देववाचक-क्षमाश्रमण [वीरकी १०वीं शताब्दी]	आगमोदय समिति, वि. स. १६८०
मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत	टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि	माणिक्यद्विगेम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति बम्बई, वीर स. २४४६
नयचक्र, प्राकृत	श्री देवसेनसूरि (वि दसवीं शताब्दी)	आत्मनवीर सभा भावनगर, वीर स २४४४
नयप्रदीप, संस्कृत	श्री यशोविजय गणी [१७वीं १८वीं शताब्दी]	आत्मवीर सभा भावनगर, वीर स. २४४५
नयोपदेश संस्कृत	श्री यशोविजय गणी [१७वीं १८वीं शताब्दी]	

संकेत

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल

नवतत्त्व, मूल-प्राकृत हिन्दी

प्रकाशन का स्थान और समय

भाषानुवाद सहित

श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मंडल देह

नवपद प्रकरण वृहद्वृत्ति

मूलकर्त्ता-देवगुप्तसूरि

वीर सं. २४४२

मूल-प्राकृत [वि सं १०७३]

टीकाकार-यशोदेव उपाध्याय

देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई

टीका संस्कृत वि सं ११६५]

वीर सं. २४६३

निर

निरयावलिकासूत्र, मूल-प्राकृत

टीकाकार-श्रीचन्द्रसूरि

भागमोदय समिति

निशी

निशीयपुत्र, मूल प्राकृत

अनुवादक-श्रीअमोलखम्बिषिजी महाराज

वीर सं २४४८

हिन्दी अनुवाद सहित

[वि सं १६३४-

राजा बहादुर लाला सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी

न्याय

न्यायमूल वात्स्यायनभाष्य

सूत्रकार-महर्षिगौतम, भाष्यकर-वात्स्यायनमुनि

महेन्द्रगढ़, वीर सं २४४५

तथा वृत्ति सहित संस्कृत

वृत्तिकार-विश्वनाथ न्याय पंचानन भट्टाचार्य

जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस

न्याय को

न्यायकोष, संस्कृत

बनारस, सन् १६२० ई

न्यायदर्शनम् (न्यायसूत्रम्)

गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल लुकरिपो बम्बई, सन् १८६३ ई.

संस्कृतभाष्य तथा वृत्तिसहित

सूत्रकार-महर्षिगौतम, भाष्यकर-वात्स्यायनमुनि

जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस

न्याय दी.

न्यायदीपिका, संस्कृत हिन्दी

बनारस, सन् १६२० ई.

अनुवाद सहित

श्रीधर्मसूरण यति (सन् १६०० ई)

श्रीजैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई,

अनुवादक-पं खड्गचंद्रजी

वीर सं. २४३६

न्यायप्रदीप, हिन्दी	साहित्यरत्न दरबारीलाल न्यायतीर्थ(विद्यमान)	साहित्यरत्न कार्यालय बुधिलीबाग तारदेव बम्बई, वि स १९८६
पद्मवणा (प्रज्ञापना)	टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति वीर सं २४४४
मूल-प्राकृत-टीका संस्कृत पंचसमह (चार भाग)	मूलकर्ता-श्रीचन्द्रर्षि महत्तर	श्रावक हीराक्षाल हसराल जामनगर, वि स १९६६
मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत पंच प्रतिक्रमण	टीकाकार-आचार्यश्री मलयगिरि	श्री जैनश्वेताम्बर मिश्र मडल लायवैरी, घी वालों का रास्ता जयपुर, वीर स २४६४
पंच वस्तुक स्वोपहृति	श्रीहरिभद्रसूरि [वि ङ्गडी शताब्दी]	देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोदर फड बम्बई, वीर स २४५३
संस्कृत, मूल-प्राकृत	श्री हरिभद्रसूरि [वि ङ्गडी शताब्दी]	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वीर स २४३९
पंचायक, मूल प्राकृत,	टीका-श्रीअभयदेवसूरि[वि १०७२-११३५]	श्रीभैरोदान जेठमल सेठिया वीकानेर, वीरस. २४६१
टीका-संस्कृत	मूलकार-योगीन्द्रदेव,	श्री परमश्रुतप्रभावक मडल मंवेरी वाजार बम्बई,
पचीस बोल का थोकड़ा	टीकाकार-ब्रह्मदेव[सोलहवीं शताब्दी]	वीर स. २४४२
परमात्म प्रकाश,	भाषा टीकाकार-पंडित दौलतरामजी श्री पिपलाचार्य	श्री जानकीनाथ शर्मा संस्कृत विद्यालय निवेदिता लेन कलकत्ता
मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत		
भाषा अनुवाद सहित		
पिपलसूत्र(पिपलच्छन्द		
सूत्रम्)संस्कृत(पंचमावृत्ति)		

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
पिं नि.	पिण्डनिर्गुक्ति, मूल प्राकृत,	श्री भद्रबाहुस्वामी	श्री देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकालय
पिं वि.	टीका-संस्कृत	टीकाकार-श्रीमल्लभसूरि	फड बम्बई, वीर स २४४४
पी ५	पिण्डविशुद्धि, मूल-प्राकृत,	मूल श्रीजिनवह्मसूरि	आचार्य श्रीमद् विजयदानसूरीधरजी जैन
पुरुषा.	टीका-संस्कृत [वि स ११५८]	टीकाकार-श्रीचन्द्रसूरि	ग्रन्थमाला सुरत, वीर स २४६५
प्र.	पीस एण्ड परसेनेलिटी	प्रोफेसर जगदीश मित्र	लाहोर
प्रतिमा.	पुरुषार्थ दिग्दर्शन (हिन्दी)	श्रीविजय धर्मसूरि	अनूपचन्द्र नरसिंहदास, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला
प्रमी.	प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार, संस्कृत	श्रीवादिदेवसूरि (वि स ११४३-१२२६)	हेरिसरोड भावनगर, सन् १९२२ ई
प्र	रत्नाकरवतारिका टीका सहित	टीकाकार-रत्नप्रभसूरि (वि १३ वीं शताब्दी)	दुर्बचन्द्र भूराभाई धर्मान्युदय प्रेस
	प्रतिमाशतकलुबुद्धिसहित	न्यायविशारद न्यायाचार्य श्रीयशोविजयजी	वनासस, वीरसं २४३७
	मूल प्राकृत	(वि १७वीं १८वीं शताब्दी), वृत्तिकार-श्रीभावसूरि	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर,
	प्रमाणमीमांसा, संस्कृत	श्री हेमचन्द्राचार्य	वीर स २४४१
	स्वोपज्ञ वृत्ति सहित	[वि म ११४६-१२२६]	मोतीलाल लाभाजी १६६ भवानीपेट पूना,
	प्रकरण रत्नाकर (चार भाग)		वीर सं २४५२
	संस्कृत, प्राकृत तथा भाषा के		भीमशी माणिक चम्बई
	अनेक ग्रन्थों का संग्रह		[वि म १६३२ १६६८]

प्रव	प्रवचन सारोद्धार, मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत (वि स. १२४८) प्रशस्तपाद भाष्य	मूलकर्ता-श्रीनेमिचन्द्रसूरी (वि वारहवीं शताब्दी) टीकाकार-सिद्धसेनसूरीश्वर (वि तेरहवीं शताब्दी)	श्रीदेवचन्द्र लालभाई बेन पुस्तकालय फंड बम्बई, वीर स २४४८
प्रशस्त			भ्रागमोदय समिति, वीर स २४४५
प्रश्न	प्रश्नव्याकरण सूत्र, मूल प्राकृत, टीका-संस्कृत	टीकाकार-श्री अभयदेवसुरी (वि स १०७२-११३५) उपाध्याय श्री ज्ञानाकल्याण गणी	सेठ फकीरचन्द घेलाभाई सूरत, (वि स १९७३)
प्रश्नो	प्रश्नोत्तर सार्धशतक (वि स १८५१)		सेठ भैरोंदाजी जेठमलजी सेठिया वीकानेर, वीर स २४५०
प्रस.	प्रकरण समग्र दूसरा भाग हिन्दी (२७ शोकडोंका समग्र)	समग्रकार-मुनिश्रीउत्तमचन्द्रजी स्वामी (वि स १९१०-१९७६) श्री हेमचन्द्राचार्य	श्री मोतीलाल लाघाजी १६६ भवानी पेठ पूना, सन् १९२८ई.
प्रा	प्राकृत व्याकरण, संस्कृत		श्री जैन धात्मानन्द सभा भावनगर, वीर स २४५६-२४६५
वृ	बृहत्कल्पसूत्रनिर्मुक्तिभाष्य वृत्ति सहित, मूल, निर्मुक्तिप्रौर्भाष्य प्राकृत, वृत्ति-संस्कृत [पाच भाग प्रकाशित]	मूल एव निर्मुक्तकर्ता-भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी), भाष्यकार-सघनास गणी ज्ञानाश्रमण, वृत्तिकार-मलयगिरि तथा जेमकीर्ति	
वृ (ज्झ)	श्रीवृहत्कल्प सूत्र, मूल-प्राकृत गुजराती शब्दार्थ भावार्थ सहित	आचार्य, सम्पादक मुनि चतुराधिजयजी पुण्यविजयजी भाषाकर्ता- डा जीवराज घेलाभाई दोशी.	डा जीवराज घेलाभाई दोशी ब्रह्मदावाद, वि स १९७१
वृ हो.	वृहत्सोडा चक्र		गर्ग एन्ड कम्पनी खारी बावली देहली

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
जन्म.	ब्रह्मसूत्र शास्त्रभाष्य, भामती, वेदान्त कल्पतरु और कल्पतरु परिमल सहित, सस्कृत	भाष्यकार-श्रीशंकराचार्य, भामतीटीका-वाचस्पतिमिश्र वेदान्त कल्पतरु-श्री असलानन्द सरस्वती कल्पतरु परिमल श्री भृष्य दीक्षित	दुकारामजावजी सेठबम्बई, सन् १९१७ ई
भ	भगवती (व्याख्याप्रज्ञप्ति) मूत्र सटीक, मूल प्राकृत-टीका सस्कृत (वि स ११२८) भाग ३	टीकाकार-श्रीभ्रमयदेवसूरि (वि स १०७२-११३५)	श्री आगमोदय समिति, वीर सं २४४४-२४४७
भारत	भरतेश्वरवाहुवलि वृत्ति(दोभाग) मूल-प्राकृत, वृत्ति-सस्कृत	वृत्तिकार शुभशील गणी (१५वीं १६ वीं शताब्दी)	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धारफंड बम्बई, वीर सं. २४५८-२४६२
भावना	भावनाशतरु, मूल भावार्थ और विवेचन सहित, मूल-संस्कृत भावार्थ और विवेचन-गुजराती	शतावधानी श्री रत्नचर्दजी महाराज [वि.स १९३६-१९९८]	चंद्रावनवास दर्याल कोट वाजार गेटबम्बई, वीर सं २४४७
यो	योगशास्त्र स्वोपह विवरण सहित, सस्कृत	श्री हेमचन्द्रानार्य (वि स ११४५-१२२६)	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वीर सं २४५२
योग	योगदर्शन, सस्कृत, भाष्य तथा व्याख्या सहित	सुवकार-महासुनिपातञ्जलि, भाष्यकार-महर्षि कृष्ण द्वैपायन, व्याख्याकार-श्रीमद् वाचस्पति मिश्र	एच डी गुप्ता एन्ड सन्स, चौखम्बा संस्कृत बुकडिपो बनारस, सन् १९११ ई
रत्ना	रत्नाकरावतारिका(प्रमाणनय तत्वालोकांत कारकीटीका)संस्कृत	श्री रत्नप्रभासुरि (वि तेरहवीं शताब्दी)	दर्पचन्द्र भुराभाई धर्मास्त्युदय प्रेस बनारस, वीर सं. २४३७

रा	राजप्ररनीय सूत्र सटीक मूल-प्राकृत, टीका-सस्कृत	टीकाकार-श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति वीर स २४५१
राज.	सती राजमती, हिन्दी	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहवके व्याख्यानों में से	श्री हितैच्छु श्रावक मडल रतलाम, वीर स २४६३
रायो	राजयोग, गुजराती (दो भाग)	स्वामी विवेकानन्द (सन् १८६३-१९०२ ई)	डाब्याभाई रामचन्द्र महेता ग्रहमदावाद, सन् १९२१ ई
लोक	लोकप्रकाश, सस्कृत गुजराती अनुवाद	उपाध्याय विनयविजयजी [१७वीं १८वीं शताब्दी] अनुवादक श्रावक हीरालाल हसराज	प श्रावक हीरालाल हसराज जामनगर, वि स १९६७
वि	विपाकसूत्र सटीक मूल-प्राकृत, टीका-सस्कृत	टीकाकार-श्रीअभयदेवसूरि [वि स १०७२-११३५]	आगमोदय समिति वीर स २४४६
विशे	विशेषावश्यक भाष्य, प्राकृत टीका-सस्कृत, (वि स ११७५)	भाष्यकर्ता श्रीजिनभद्रगणि जमाश्रमण टीकाकार-मलधारि श्रीहेमचन्द्रसूरि	हृष्यचंद्र भूराभाई बनारस, वीर स. २४४१
विहर	विहरमान एकविंशति		
वेदान्त	वेदान्त परिभाषा		
व्यव	व्यवहार मूल, मूल-प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	हिन्दी अनुवादक-श्रीअमोलकश्रुषिजी (वि स १९३४-	राजाबहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाय जौदरी महेन्द्रगढ़, वीर स. २४४५

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
व्यव. घृ.	व्यवहार चूलिका(हस्तलिखित) टन्वार्थ (वि.स. १६४४ पौष सुदी १५ शनिवार की लिखी हुई)	निर्युक्तिकार श्रीभद्रबाहुस्वामी	श्री सेठिया जैनशास्त्र भंडार बीकानेर
व्यव. भा.	व्यवहार भाष्य निर्युक्ति विवरण सहित, मूल, निर्युक्ति और भाष्य-प्राकृत, टीका-संस्कृत (दस भाग)	दीकाकार-श्रीमलयगिरि	वकील केरावलाल प्रेमचंद अहमदाबाद, वि.स. १९८२-८४
शा.	शान्त्युधारस, प्रथम द्वितीय भाग मूल-संस्कृत, विवेचन गुजराती [वि.स. १७२३]	मूलकर्ता-उपाध्यायश्रीविनयविजयजी विवेचक-मोतीचंद गिरधरालाल कापडिया	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वि.स. १९६४-६५
शास्त्र	शास्त्र दीपिका, व्याख्या सहित संस्कृत	सर्वत्र स्वतन्त्र श्रीमत्पर्य्य सारथि मिश्र व्याख्याकार-श्री रामकृष्ण, श्रीतोमनाथ	बुकाराम जावजी मिश्र निर्णयसागर प्रेस २३ कोल भाटलेन बम्बई, सन् १९१५ ई.
शिक्षा.	श्रावक के चार शिक्षान्त	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहव के व्याख्यानों के आधार पर	श्री हितेच्छु श्रावक मंडल रतलाम, वीर स २४४३
श्राद्ध.	श्राद्धविधि प्रकरण स्वोपज्ञयति युक्त [वि.स. १६०६]	श्री रत्नशेखरसूरि (वि.स. १४६७-१६१७)	श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर वीर स २४४३
श्राद्ध प्रति.	श्राद्ध प्रतिक्रमण(वन्दितु सूत्र) मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत	टीकाकार-श्री रत्नशेखरसूरि (वि.स. १४६७-१६१७)	देवचंद्रलालभाई जैन पुस्तकालय फड म्केरी वाज बम्बई, वीर स २४४६

श्रा. प्र.	श्रावक प्रज्ञप्ति, मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत	मूलकर्ता-वाचकमुख्य श्रीउमास्वामि टीकाकार-श्रीहरिभद्रसूरि [छठी शताब्दी]	ज्ञान प्रसारक मंडल, बम्बई, वि.स. १९६१
श्रा प्रति	श्रावक प्रतिरूपण [हिन्दी और प्राकृत]	"	श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीरस २४६६
षड्भाषा- संगीत.	षड्भाषावन्दित्रा, संस्कृत संगीतशास्त्र	प लक्ष्मीधर	राजकीय ग्रन्थमाला बम्बई, सन् १९१६ ई.
सप्त.	सप्तमगीतरंगिणी, संस्कृत	मूलकर्ता-श्री विमलदास	श्री परमश्रुत प्रभाक मडल बम्बई, वीर सं २४४२
सप्त.	हिन्दी अनुवाद सहित	अनुवादक-ठाकुरप्रसाद शर्मा	आगमोदय समिति, वीर स. २४४४
सप्त.	समवायाग सूत्र सटीक, मूत्र-प्राकृत टीका-संस्कृत [वि.स. ११२०]	टीकाकार श्रीअभयदेवसूरि (वि स. १०७२-११२५)	श्री जैन प्रतिधि सेवा समिति सोनगढ काठियावाड, [वि. सं १९६७]
सप्त.	समयसार, आत्मख्याति टीका तथा गुजराती अनुवाद सहित	श्री कुन्दकुन्दाचार्य [वि पहली शताब्दी] टीकाकार-अमृतवन्द्राचार्य [वि. १०वीं शताब्दी]	
सम्पत्ति.	सम्पत्ति तर्क प्रकरण, मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत [पांच भाग]	अनुवादक-हिम्मतलाल जेठालाल शाह मूलकर्ता-आचार्य श्रीसिद्धसेन दिवाकर [पहली शताब्दी] टीकाकार-श्री अभयदेवसूरि	गुजरात पुरातत्त्व मंदिर ब्रह्मदाबाद, वि. स. १९८०
सरले वि	सरले पिंगल, हिन्दी वि. सं १९७४	सम्पादक-प. सुखलाल वेचरदास (विद्यमान) श्री पुस्तकालय विद्यार्थी, विशारद, श्री लक्ष्मीधर शुक्ल, विशारद	हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग, वि सं. १९८४

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
सर्वेद	सर्वे दर्शन सप्रह, सस्कृत	श्री माधवाचार्य	जीवानन्द विद्यासागर मद्राचार्य कलाकला, सन् १८८६ ई.
स. श.	सप्ततियत स्थान प्रकरण [सत्तरिसय ठाणावृत्ति]	मूलकर्ता श्री सोमलिलकसुरि	श्री जैत आत्मानन्द सभा भावनगर वीर स. २४४५
सांख्य.	मूल-प्राकृत (वि स १३८७) टीका-सस्कृत (वि स १६७०)	टीकाकार-श्री देवविजय	नवलकिशोर प्रेस लखनऊ, सन् १८८८ ई
साधु प्र.	सांख्यतत्त्व कौमुदी, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित साधु प्रतिकरण सूत्र	श्री ईश्वरकृष्ण	श्री भैरोदानजी जेठमलजी सेठिया वीकानेर, वीर सं. २४४६
सि	सिद्धान्त कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित	तुकाराम, जावजी बम्बई
सि. सु.	सिद्धान्त मुक्तावलि	श्री विश्वनाथ पंचानन मद्राचार्य	पाण्डुरंग जावजी निर्णयसागर प्रेस कोलभाट लेन बम्बई, सन् १२६४ ई.
सूय.	सूयगडाग(सूयकृताग)मूत्र,मूल- प्राकृत,टीका सस्कृत वि सं. ६३३	टीकाकार-श्री शीलाभाचार्य (वि दसवीं शताब्दी)	श्री आगमोदय समिति, वीर स २४४३
सूर्य.	सूर्यप्रज्ञप्ति सटीक, मूल-प्राकृत टीका-सस्कृत	टीकाकार-भाचार्य श्री मलयगिरि	श्री आगमोदय समिति, वीर स. २४४५

(३७)

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
सेन.	सेनप्रश्न (प्रश्नरत्नाकराभिध. श्री सेन प्रश्न) सस्कृत (वि. १७ वीं शताब्दी)	सम्रहकर्त्ता-श्रीशुभविजय गणी (विजयसेन सूरि को पूछे हुए प्रश्नों के उत्तरों का संग्रह)	श्रीदेवचन्द खालभाई जैन पुस्तकालय फंड बम्बई, वौर स २४४५
स्या	स्याद्वादमञ्जरी, सस्कृत (वि स १३४६)	श्री मल्लिसेनसूरि	श्री मोतीलाल लाधाजी १६१ भवानी पेठ पूना, वीर स २४५२
दूठ	दृष्टयोगदीपिका, गुजराती	मूख-स्वात्मराम योगीन्द्र, भाषाटीका-वेदान्त कविहीरालाल जादवराय बुच	महादेव रामचन्द्र जागुहे बुकसेलर प्रण दरवाजा ग्रहमदाबा वि स १६७१
दि. फि.	(द्विष्ट्री ऑफ)इडियन फिलॉसोफी, दो भाग, अंग्रेजी	डा एस राधाकृष्णन	मेक्सिमलिन कम्पनी, सन् १६३१ई
हीर	हीर प्रश्न (प्रश्नोत्तर समुच्चय) सस्कृत	सम्रहकर्त्ता-कीर्तिविजय गणी(वि १७वीं शताब्दी) (श्री हीरविजयसूरि को पूछे गये प्रश्नों के उत्तरों का संग्रह)	जेसंगलाल छोटालाल सुतरीया ग्रहमदाबाद, (श्रीहंसविजय जैन लायब्रेरी) वीर स २४४६

अध्ययनादि के संकेत

संकेत	पुरा नाम	किस किस ग्रन्थ में है:—
अ०	अध्ययन	आवश्यक, आचाराग, उत्तराध्ययन, उपासकदशा, हाताधर्मकथा, दशवैकालिक, विपाकसूत्र, सूयगडाग, अन्तगहदशासूत्र, अणुत्तरोववाई आदि
अधि	अधिकार	धर्मसंग्रह
अध्या	अध्याय	तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यानुयोग तर्कणा
आ.	आह्निक	प्रमाणमीमासा, न्यायसूत्र
उ.	उद्देशा	सूयगडाग, भगवती, निशीथसूत्र, बृहत्कल्पसूत्र, व्यवहारसूत्र, टाण्णागसूत्र, आचारांग सूत्र
उल्ला	उल्लास	सनप्रश्न
का.	कारिका	स्याद्वादमञ्जरी
काड.	काण्ड	सम्पत्ति तर्क
गा.	गाथा	आगमों में तथा व्यवहारभाष्य, विशेषान्तर्यरुभाष्य हरिभदीयावश्यक, मलयगिरि आवश्यक, परमात्मप्रकाश
चू	चूलिका	आचारागसूत्र, दशवैकालिकसूत्र
टी.	टीका	
द.	दशा	दशाश्रुतस्कन्धदशा
द्वा.	द्वार	प्रवचनमारोद्धार पचसग्रह, पचवस्तुक, प्रश्नव्याकरणसूत्र (आश्रवद्वार और संवरद्वार), नवपद प्रकरण

निर्धुक्ति	आचारंग, सुयगडाग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवरयक, भ्यवहारसूत्र, भ्रोगनिर्धुक्ति, पिण्डनिर्धुक्ति
पद	पत्रव्याससूत्र
पर्व	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र
परिच्छेद	रत्नाकरावतारिका
प्रकरण	ज्ञानाणव
प्रकाश	योगशास्त्र, हीरप्रसन, श्राद्धविधिप्रकरण
प्रतिपत्ति	जीवाजीवाभिगम
प्राप्त	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
प्राप्तप्राप्त	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
भाग	कर्मप्रस्थ, कर्तव्यकौमुदी
वर्ग	निरयावलिका, भ्रयुत्तरोक्वाई, अन्तगडदशा
वक्षस्कार	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
विवरण	पंचाशक
शतक	भगवती
श्लोक	
श्रुतस्कन्ध	श्राचारागसूत्र, सुयगडागसूत्र
सर्ग	
सूत्र	ठाण्णांगसूत्र, समवायांगसूत्र, तत्त्वार्थसूत्र, रत्नाकरावतारिका



श्री जैन सिद्धान्त बाल संग्रह

आठवाँ भाग

जैन सिद्धान्त बाल संग्रह के सात भागों का विषय कोष

मंगलाचरण

आसाढे धवलाइ छट्टि चवणं चित्तस्स तेरस्सिए ।
सुद्धाए जणणं सुकिण्ह दसमी, दिक्खा य मग्गस्सिरे ॥
जस्सासी वइसाह सुद्ध दसमी, णाणं जणाणंदणं ।
सुक्खो कत्ति अमावसाइ तमहं, वंदामि वीरं जिणं ॥

भावार्थ—आषाढ़ सुदी छठ को देवलोक से चव कर चैत सुदी त्रयोदशी को जिसने जन्म धारण किया, मगसिरवदी दशमी को जिसने लोक-कल्याण के लिये दीक्षा अङ्गीकार की, वैशाख सुदी दशमी को जिसे लोक को आनन्द देने वाला पूर्ण ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ एवं अन्त में कार्तिक मास की अमावस्या के दिन जिस का निर्वाण हुआ ऐसे श्री वीर भगवान् को मैं वन्दना करता हूँ ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अंक की कथा औत्प- त्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७४	न० सू० २७ गा० ६६ टी०
अंग पन्द्रह मोक्ष के	८५०	५	१२१	पंच व० गा० १४६, १६३
१ अंग प्रविष्ट श्रुत	८२२	५	१०	न.सू ४५, विशेष गा ४५०-४२
अंग प्रविष्ट श्रुतज्ञान	१६	१	१३	न सू ४५, टा.२ उ १ सू ७१
अंग बाह्य श्रुत	८२२	५	१०	न सू ४४ विशेष गा ४५०-५२
अंग बाह्य श्रुतज्ञान	१६	१	१३	न सू ४४, टा, २ उ १ सू ७१
अंग सूत्र ग्यारह	७७६	४	६६	
२ अंगार दोष	३३०	१	३३६	ध अग्नि. ३ ग्लो. २३ टी पृ. ४५, पि नि गा ६४५-६०, उत्त अ २४ गा १२ टी.
अंगुल के तीन भेद	११८	१	८३	अनु सू. १३३
अंगुष्ठ संकेत पञ्चक्रवाण	५८६	३	४३	आव.ह अ ६ नि गा १४७८, प्रव द्वा ४ गा २००
अंजूकुमारी की कथा	६१०	६	५०	वि अ. १०
३ अक्षण्डयक	३५६	१	३७३	टा ५ उ १ सू. ३६६
अकम्पितस्वामी गणधर की नरक विषयक शंका और समाधान	७७५	४	५२	विशे.गा. १८८५ से १६०४
अकर्मभूमि के तीस भेद	६५७	६	३०७	पत्र. प १ सू. ३७
अकर्मभूमिज	७१	१	५१	टा. ३ उ. १ सू. १३०, पत्र प. १ सू ३७, जी. प्रति ३ सू १०७
अकर्मभूमि द्वः जम्बू- द्वीप की	४३५	२	४१	टा. ६ उ ३ सू. ५२२

विषय	बाल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ अकर्मशास्नातक	३७१	१ ३८६	ठा ५ उ ३ सू ४४५, भ श २५ उ ६ सू ७५१
२ अकस्माद्भय अकाममरण	५३३	२ २६८	ठा ७ उ ३ सू ५४६, सम ७
अकाममरणीय अध्ययन की बत्तीस गाथाएँ	५३	१ ३१	उत्त अ ५ गा २
अकारण दोष (आहार का दोष)	६७२	७ ४६	उत्त अ. ५
अकाल (काल का भेद)	४३१	२ ३८	विशे. गा २७०८ से २७१०
अकिंचनत्व (परिग्रह त्याग	६६१	३ २३४	नव. गा. २३, सम. १०, शा. भा. १ प्रक ८ (सवरभावना)
३ अकृत्स्ना आरोपणा अक्रियावादी आठ	३२६	१ ३३५	ठा. ५ उ. २ सू ४३३, सम २८
अक्रियावादी की व्याख्या और उसके चौरासी भेद	५६१	३ ६०	ठा. ८ उ. ३ सू ६०७
अक्षर का क्या अर्थ है?	१६१	१ १४५	भ.श ३० उ. १ सू. ८२४ टी, आंचा अ. १ उ. १ सू. ३ टी, सूय० अ० १२
अक्षर श्रुत	६१८	६ १३८	वृ गा. ७२ से ७५, न. सू० १, ४३ टी. पृ. ६३, २०१
अक्षर श्रुत	८२२	५ ३	न सू० ३६, विशे० गा० ४५५-५००, कर्म भा. १ गा ६
अक्षर श्रुत	६०१	६ ३	कर्म भा. १ गा० ७

विषय	शूल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अक्षरश्रुत के तीन भेद	८२२	५	६	न. सू. ३६, विशेष. गा. ४६४-४६६, कर्म भा. १ गा. १
अक्षरसमास श्रुत	६०१	६	३	कर्म. भा. १ गा. ७
अक्षीण महानसी लब्धि	६५४	६	२६७	प्रव. द्वा. २७० गा. १४६४
१ अगमिक श्रुत	८२२	५	१०	न. सू. ४४, विशेष. गा. ४४६
अगार चारित्र धर्म	२०	१	१५	ठा. २ उ० १ सू० ७२
अगुरुलघुत्वगुण	४२५	२	१६, २४	आगम. द्रव्य. त. मध्या ११ श्लो. ४
२ अगुरुलघु परिणाम	७५०	३	४३४	ठा. १० उ० ३ सू० ७१३, पत्र प. १३ सू० १८४
अग्नि कुमार देवों के दस अधिपति	७३५	३	४१८	म. गा. ३ उ० सू० १६६
अग्निभूति गणधर की कर्म	७७५	४	३१	विशे. गा. १६०६ १६४४
विषयक शंका समाधान				
३ अग्रवीज	४६६	२	६६	दश. अ. ४ सू. १
अघाती कर्म	२७	१	१६	कर्म. गा. १ टी. पृ. १०
अघाती प्रकृतियाँ	८०६	४	३५०	कर्म. भा. १ गा. १४
अचक्षुदर्शन	१६६	१	१५७	ठा. ४ उ० ४ सू० ३६५, कर्म. भा. ४ गा. १२
अचक्षुदर्शन अनाकारो-पयोग	७८६	४	२६६	पत्र. प. १६ सू० ३१२
४ अक्षरम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८५	ठा. ५ उ० ३ सू० ४४५

१ श्रुतज्ञान का भेद । २ अजीवपरिणाम का भेद । ३ वादर वनस्पतिकाय का भेद । ४ निर्ग्रन्थ का भेद ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अचलभ्राता गणधर की पुण्य पाप विषयक शङ्का और उसका समाधान	७७५	४	५४	विशेष-गा० १६०५ से १६४८
अचित्त योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ ग्रन्था २ सू ३३, ठा० ३ उ० १ सू० १४०
अचित्त वायु के पाँच प्रकार	४१३	१	४३८	ठा० ५ उ० ३ सू० ४४४
१ अचियत्तोपघान	६६८	३	२५७	ठा० १० उ० ३ सू० ७३८
२ अचेल कल्प	६६२	३	२३४	पचा० १७ गा० ११, १२, १३
अचौर्य पर पाँच गाथाएं	६६४	७	१७६	
अचौर्य महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१६	१	३२६	आव ह अ ४ पृ ६५८, प्रव द्वा ७२ गा. ६३८, सम २५ आचा श्रु २. चू. ३ अ० २४ सू १७६, घ अधि ३ श्लो. ४५ टी. पृ० १२५
अचौर्याणुव्रत	३००	१	२८६	आव ह. अ. ६ पृ ८२१ ठा ५. उ. १ सू ३८६, उपा अ १ सू ६, घ. अधि. २ श्लो० २७ पृ ६०
अचौर्याणुव्रत (स्थूल अद- त्तादान विरमण व्रत) के पाँच अतिचार	३०३	१	२६६	उपा. अ० १ सू ७, आव ह अ. ६, पृ. ८२१ घ. अधि १ श्लो० ४५ पृ १०२
३ अच्छविस्नातक	३७१	१	३८६	ठा ५. उ ३ सू. ४४५, भ. श २५ उ. ६ सू ७५१

१ समय की घात करने वाला एक दोष । २ साधु के कल्प का एक भेद ।

३ स्नातक निर्ग्रन्थ का एक भेद ।

विषय	बाल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अच्छेद्य तीन	७३	१	५३	टा० ३ उ० २ सू० १२६
अच्छेरे (आश्चर्य) दस	६८१	३	२७६	टा १० उ. ३ सू. ७७७, प्रव. द्वा० १३८ गा. ८८५-८८८
अजीर्ण कितने प्रकार का है	१८	६	१५७	प्रज्ञो०
अजीव अरूपी के दस भेद	७५१	३	४३४	पत्र० प० १ सू० ३, जी० प्रति० १ सू० ४
अजीव के चौदह भेद	८२७	५	१६	पत्र० प० १ सू० ३, ४
अजीव के छः संस्थान	४६६	२	६६	म ज २५ उ ३ सू ७०८, पत्र प १ सू ४, जी प्रति १
अजीव तत्त्व के पाँच सौ साठ भेद	६३३	३	१८१	पत्र० प० १ सू० ३, ४, उत० अ० ३६ गा० ४-४६
अजीव परिणाम दस	७५०	३	४२६	पत्र. प १३ सू १८०, टा १० उ ३ सू ७१३
अजीव मिश्रिता सत्यामृषा भाषा	६६६	३	३७१	टा १० उ ३ सू ७४१, पत्र प ११ सू १६५, ध अघि ३ ज्ञो० ४१ टी०पृ ११२
अजीवाधिकरण	५०	१	३०	तत्त्वार्थ० अध्या० ६ सू०८
१ अज्ञात चरक	३५३	१	३६८	टा ५ उ १ सू ३६६
अज्ञानवादी की व्याख्या और उसके ६७ भेद	१६१	१	१४६	म श ३० उ १ सू ८४ टी, आचा. अ १ उ १ सू. ३ टी, सूय अ १२
अठईस गुण अनुयोग देने वाले के	६५२	६	२८६	वृ नि गा. १४१ मे २४४
अठईस नक्षत्र	६५३	६	२८८	ज वन. ७ सू १५५, सम २७

विषय	बाल भाग पृष्ठ	प्रमाण
अठारह प्रकृतियों मोह- नीय कर्म की	६५१ ६ २८४	वर्म. भा १ गा. १३-२२, सम० २८
अठारह भेद मतिज्ञान के	६५० ६ २८३	सम २८, कर्म भा १ गा ४-५
अठारह लब्धियाँ	६५४ ६ २८६	प्रव. द्वा २७० गा. १४६२- १५०८
अठारह कल्प साधु के	८६० ५ ४०२	दश अर्ध गा. ७ से ६८, सम० १८
अठारह गाथा चूलक निर्ग- थीय अध्ययन की	८६७ ५ ४१६	उत्त अ ६
अठारह गाथा दशवैका लिक प्रथम चूलिका की	८६८ ५ ४२०	दश वृ १
अठारह दोष दो प्रकार से जो अरिदन्त में नहीं होते	८८७ ५ ३६७	प्रव द्वा ४१ गा ४५१ ५२, स. श द्वा ६६ गा १६१-१६२
अठारह दोष पौषध के	८६४ ५ ४१०	शिक्षा०
अठारह द्वार गतागत के	८८८ ५ ३६८	पत्र प ६ के आधार से
अठारह पापस्थानक	८६५ ५ ४१२	ठा १ सू ४८, प्रव द्वा. २३७ गा. १३५१-१३५३, भ श. १ उ ६, भ. श १२ उ ५, सू ४५०, दशा. द. ६
अठारह पुरुष दीक्षा के अयोग्य	८६१ ५ ४०६	प्रव द्वा १०७ गा. ७६०-६१ ध अधि ३ श्लो ७८ टी पृ. ३
अठारह प्रकार का ब्रह्मचर्य	८६२ ५ ४१०	सम १८, प्रव द्वा १६८ गा. १०६१
अठारह प्रकार की चोर की प्रभृति	८६६ ५ ४१५	प्रश्न. अधर्मद्वार ३ सू १२टी.

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अठारह भेद अब्रह्मचर्य के	८६३	५	४१०	भाव ह अ ४ पृ ६५२
अठारह लिपियाँ	८८६	५	४०१	पत्र प १ सू ३७, सम १८
१ अड़तालीस ग्लान प्रति चारी	७६७	४	२६७	प्रव द्वा ७१ गा ६२६, नवपद सल्लेखना अधिकार गा० १२६
अड़तालीस भेद तिर्यञ्च के	१००१	७	२६५	पन्न प १ सू १०-३६
अड़तालीस भेद ध्यान के	१००२	७	२६६	उव सू २०
अड़तीस गाथाएँ सूयगढांग सूत्र के ग्यारहवें अध्याय की	६८५	७	१३६	सूय अ ११
अढ़ाई द्वीप में चन्द्र सूर्यादि ज्योतिषी देवों की संख्या	७६६	४	३०२	सूर्य प्रा १६ सू १००
अणुत्तरोववाई सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७६	४	२०२	
अणुव्रत पाँच	३००	१	२८८	भाव ह अ ६ पृ ८१७ में ८-६, ठा ५ सू ३८६, उपा. अ. १, ध अधि २ श्लो २३-२६
अणुव्रत पाँच	४६७	२	२००	
२ अतथाज्ञानानुयोग अतिक्रम	७१८	३	३६५	ठा. १० उ ३ सू ७२७ पि नि गा १८२, ध अधि ३ श्लो ५३ टी. पृ. १३६
अतिचार	२४४	१	२२१	पि नि गा. १८२, ध. अधि ३. श्लो ५३ टी पृ १३६

१ रोगी साधु की सेवा करने वाला साधु ।

२ द्रव्यानुयोग का भेद-वस्तु के अर्थस्वरूप का व्याख्यान ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अतिचार चौदह ज्ञान के	८२४	५	१४	भाव. ह. अ ४ पृ ७३०
अतिचार निन्नाणवे	४६७	२	२०१	
अतिचार पाँच समकित के	२८५	१	२६५	उपा अ १ सू ७, भाव ह अ ६ पृ ८१०
अतिचारभावक के बारह	३०१-	१	२६०-	उपा अ.१ सू ७, भाव ह.
व्रतों के	३१२		३१४	अ ६ पृ ८१७-८३६, ध. अधि २श्लो ४३-६८ पृ. १००
१ अतिथिवनीपक	३७३	१	३८८	ठा ५ उ ३ सू ४५४
अतिथि संविभाग व्रत	१८६	१	१४१	पचा १ गा. ३१ ३२, भाव. ह अ. ६ पृ ८३६
अतिथि संविभाग व्रत के	३१२	१	३१३	उपा अ. १ सू ७, भाव. ह अ ६ पृ ८३६
पाँच अतिचार				
अतिथि संविभाग व्रत	७६४	४	२८४	भागम.
निश्चय और व्यवहार से				
अतिमुक्त (एवंता) कुमार	७७६	४	१६८	अत व ६ अ. १५
की कथा				
अतिव्याप्ति	१२०	१	८५	न्यायदी प्रका १
अतिव्याप्ति दोष	७२२	३	४०८	ठा १० उ ३ सू ४४२गी.
अतिशय चौतीस अरिहंत	६७७	७	६८	सम ३४, सश द्वा. ६७
देव के				
अतिशय पाँच आचार्य	३४२	१	३५३	ठा ५ उ. २ सू ४३८
उपाध्याय के				

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
अतिशय पैतीस अरिहन्त देव की वाणी के	६७६ ७ ७१	सम. ३५ टी., रासू. ४ टी., उव सू. १० टी.
अतीर्थङ्कर सिद्ध	८४६ ५ ११७	पत्र प. १ सू. ७
अतीर्थ सिद्ध	८४६ ५ ११७	पत्र प. १ सू. ७
अदत्तादान(चोरी)विरति	६६४ ७ १७६	
पर पाँच गाथाएं		
अदत्तादान विरमण रूप तीसरे महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१६ १ ३२६	आव ह भ ४ पृ. ६५८, प्रव. द्वा. ७२ गा. ६३८, सम २५, आचा. श्रु. २ चू. ३ भ. २४, प्र. अधि ३ श्लो ४५ टी. पृ. १२५
अदत्तादान विरमण व्रत	७६४ ४ २८१	भागम.
निश्चय और व्यवहार से		
अद्धाद्धामिश्रिता सत्यामृषा	६६६ ३ ३७१	ठा. १० उ ३ सू. ७४१, पत्र. प. ११ सू. १६५, घ. अधि. ३ श्लो. ४१ टी. पृ. १२२
अद्धा पञ्चखाण के दस भेद	७०५ ३ ३७६	प्रव द्वा. ४ गा. २०१-२०२, पचा ५ गा. ८-११, आव. ३ नि. गा. १५६७
अद्धा पल्योपम (सूक्ष्म, व्यवहारिक)	१०८ १ ७६	अनु. सू. १२८, प्रव द्वा. १५८ गा. १०२४-१०२५
अद्धामिश्रिता सत्यामृषा	६६६ ३ ३७१	ठा. १० उ. ३ सू. ७४१, पत्र. प. ११ सू. १६५, घ. अधि ३ श्लो. ४१ टी. पृ. १२२
अद्धा सागरोपम	१०६ १ ७८	अनु सू. १२८, प्रव द्वा. १५६ गा. १०२६-१०३०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अद्भुत रस	६३६	३	२०८	अनु सू. १२६ गा. ६८-६९
अधर प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो प्रका ५ श्लो ६,
अधर्मदान	७६८	३	४५२	ठा १० उ ३ सू ७४५
अधर्म, द्रव्य	४२४	२	३	आगम उक्त. अ ३६ गा. ५
अधर्मास्तिकाय के प्रभेद	२७७	१	२५५	ठा ५ उ ३ सू. ४४१
अधिक तिथि वाले पर्व	४३४	२	४१	ठा ६ उ ३ सू ५२४, चन्द्र. प्रा १२
अधिक दोष	७२३	३	४१२	ठा १० उ ३ सू ७४३
अधिकरण के भेद	५०	१	२६	तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ८
अधोलोक	६५	१	४६	लोक भा. २ स १२, अ श ११ उ १० सू ४२०
अध्ययन तेईस सूर्यगर्हांगके	६२४	६	१७३	सूर्य, सम २३
१ अध्यवपूरक दोष	८६५	५	१६४	प्रव. द्वा. ६७ गा ५६६, ध अधि. ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पिं. नि गा ६३, पिं वि गा. ४ पंचा १३ गा. ६
अध्रुवचन्धिनी प्रकृतियाँ	८०६	४	३३७	कर्म भा. ५ गा ३ से ४
अध्रुवसत्ताक प्रकृतियाँ	८०६	४	३४३	कर्म भा ५ गा. ८-१२
अध्रुवोदया प्रकृतियाँ	८०६	४	३४१	कर्म भा ५ गा ७
२ अनक्षर श्रुत	८२२	५	४	नसू ३६, विशेषा ५०१-५०३
अनगार चारित्र धर्म	२०	१	१५	ठा २ उ. १ सू ७२
३ अनध्यवसाय	१२१	१	८६	रत्ना. परि १ सू १३-१४, न्याय प्र अध्या. ३
अननुगामी श्रवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६ उ ३ सू ५२६, न सू ६ से १६

१ आहार का दोष २. श्रुतज्ञान का एक भेद ३ वह ज्ञान, जिसमें वस्तु के स्वरूप का निश्चय नहीं होता ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अननुबन्धी प्रतिलेखना	४४८	२ ५३	ठा. ६ उ. ३ सू. ४०३, उक्त. अ. २६ गा. २५
अननुयोग के दृष्टान्त बारह	७८०	४ २३८	आव. ह. अ. १ गा. १३३, १३४, वृ. नि. गा. १७१, १७२
अनन्त आठ	६२०	३ १४७	अनु सू. १०६
अनन्तक दस	७८०	३ ४०३	ठा. १० उ. ३ सू. ७३१
अनन्तक पाँच	४१७	१ ४४१	ठा. ४ उ. ३ सू. ४६२
अनन्तक पाँच	४१८	१ ४४२	ठा. ४ उ. ३ सू. ४६२
अनन्त छह	४८८	२ १००	अनु सू. १४६ टी. प्रव. द्वा. २४६ गा. १४०४
अनन्त जीविकवनस्पति	७०	१ ५१	ठा. ३ उ. १ सू. १४१
अनन्तमिश्रितासत्यामृषा	६६६	३ ३७१	ठा. १० उ. ३ सू. ७८१, पत्र प. ११ सू. १६५, ध. अधि. ३ लो. ४१ टी. पृ. १०२
अनन्तरागत सिद्धों के अल्पबहुत्व के तेनीस बोल	६७६	७ ६६	न सू. २० टी. पृ. १२४
१ अनन्तरागम	८३	१ ६१	अनु सू. १४४
अनन्त संसारी	८	१ ६	आतुर. गा. ४२, ठा. २ उ. २ सू. ७६
अनन्तानुबन्धी कषाय	१५८	१ ११८	पत्र प. १८ सू. १८८, ठा. ४ सू. २०६, कर्म. गा. १ गा. १७, १८
अनभीप्सित साध्य धर्म	५४६	२ २६२	रत्ना परि. ६ सू. ४६
विशेषण पक्षाभास अनर्तित प्रतिलेखना	४४८	२ ५३	ठा. ६ उ. ३ सू. ४०३, उक्त. अ. २६ गा. २५

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनर्थ दण्ड	३६	१	२३	ठा २ उ. १ सू ६६
अनर्थदण्ड विरमण व्रत	१२८(क)	१	६१	आत्र ह अ ६ पृ. ८२६
अनर्थ दण्ड विरमण व्रत के पाँच अतिचार	३०८	१	३०७	उपा अ १सू७, आवह अ ६ पृ८२६, प्रवद्वा ६ गा २८२
अनर्थदण्ड विरमण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८३	आगम
अनवकांक्षाप्रत्ययाक्रिया	२६५	१	२८१	ठा २ उ. १ सू ६०, ठा ५ उ. २ सू ४१६, आव. ह अ ४ पृ ६१४
अनवस्था दोष	५६४	३	१०३	प्र मी अध्या १ आ. १ सू ३३
अनशन	४७६	२	८५	उत्त अ ३० गा ८, ठा ६ उ ३ सू ५११, उवसू १६, प्रवद्वा ६ गा. २७०,
अनशन इत्वरिक के छः भेद	४७७	२	८७	उत्त अ ३० गा. १०-११, भ श २५ उ ७ सू ८०२
अनशन के दो भेद और उनके प्रभेद	६३३	३	१८५	उज सू १६, भ ग. २५ उ ७ सू ८०२
अनाचार	२४४	१	२२१	पि नि. गा. १८२, ध अधि ३ श्लो ५३ टी पृ १३६
अनाचीर्ण वाचन साधुके	१००७	७	२७२	दरा अ ३
अनात्मभूत लक्षण	६२	१	४३	न्याय दी प्रका १
अनात्मवान् के लिये अहितकर स्थान छः	४५८	२	६१	ठा ६ उ. ३ सू ४६६
अनाथता की पन्द्रह गाथाएं	८५४	५	१३०	उत्त अ. २० गा ३८-४२
अनाथीमुनि-अशरण भा.	८१२	४	३७६	उत्त अ २०
अनाथी मुनि की कथा	८५४	५	१३०	उत्त. अ. २०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनादि श्रुत	८२२	५	८	नंसू १३, विशेष गा. ५३७-५४८
अनादि सिद्धान्त नाम	७१६	३	३६८	अनु सू १३०
अनानुपूर्वी	११६	१	८४	अनु सू ६६, ६७, ६८
अनावाध सुख	७६६	३	४५५	ठा १० उ ३ सू ७३७
अनाभिग्राहिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध.अधि २ श्लो २२ टी पृ ३६, कर्म भा. ४ गा ५१
अनाभोग आगार	४८३	२	६७	आव ह अ ६ पृ ५८२, प्रव द्वा ४ गा २०३ टी.
अनाभोग निवर्तित क्रोध	१६४	१	१२४	ठा ४ उ. १ सू २४६
अनाभोग प्रत्यया क्रिया	२६५	१	२८१	ठा २ उ १ सू ६०, ठा ५ उ २ सू ४१६, आव ह. अ ४ पृ ६१३
अनाभोग वकुश	३६८	१	३८३	ठा ५ उ ३ सू ४४५
अनाभोगिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध.अधि २ श्लो २२ टी. पृ. ३६, कर्म. भा ४ गा ५१
अनासक्ति पर नौ गाथाएं	६६४	७	२०५	
अनाहारक	८	१	७	ठा २ उ २ सू. ७६
अनित्यंस्थ संस्थान	४६६	२	६६	भ श २५ उ ३ सू ७२४,
अनित्य भावना	८१२	४	३५६	गा भा १ प्रक १, भावना, ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा. ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू ७
अनिदानता	७६३	३	४४४	ठा १० उ ३ सू ७५८
अनियट्टि (अनिवृत्ति)	८४७	५	८०	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
वादर सम्पराय गुणस्थान				
अनिवृत्तिकरण	७८	१	५७	आव स गा. १०६-७ टी, आगम., विशे. गा १२०२-१८, प्रव. द्वा २२४ गा १३०२ टी, कर्म भा २ गा. २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ अनिसृष्ट दोष	८६५	५	१६४	प्रथ द्वाद७ गा ५६६, ध अधि. ३ श्लो २२टी पृ ३८, पि नि गा. ६३, पि वि गा. ४, पंचा, १३ गा. ६
२ अनिह्रवाचार	५६८	३	६	ध अधि १ श्लो. १६ टी पृ १८
३ अनीक	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ, अध्या ४ सू ४
अनुकम्पा	२८३	१	२६४	ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ४३
अनुकम्पादान	७६८	३	४५०	ठा १० उ ३ सू ७४५
अनुकम्पा प्रत्यनीक	४४५	२	५०	म. श ८ उ ८ सू ३३६
अनुगामी अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६ उ ३ सू ५२६, नं सू ६-१०
अनुनट भेद	७५०	३	४३३	ठा १० उ ३ सू ७१३ टी, पत्र. प १३ सू १८२
अनुत्तर दस केवली के	६५५	३	२२३	ठा १० उ ३ सू ७६३
अनुत्तर पाँच केवली के	३७६	१	३६१	ठा ५ उ १ सू ४१०
अनुत्तर विमान पाँच	३६६	१	४२०	पत्र प १ सू ३८, म. श १४ उ ७ सू ५२६
अनुत्तर विमान में उत्पन्न जीव क्या नरक तिर्यञ्च के भव करता है?	६८३	७	११२	पत्र. प १५ उ २ टी. पृ ३१६
अनुत्तर विमानवासी देव शंका होने पर किसे पूछते हैं और कहाँ से?	६८३	७	१०३	म श ५ उ ४ सू १६६
अनुत्पन्न उपकरणोत्पादनता विनय	२३५	१	२१६	दशा द ४

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनुपशान्त क्रोध	१६४	१	१२४	ठा ४ उ १ सू २४६
अनुपालनाशुद्ध प्रत्या- ख्यान	३२८	१	३३७	भाव ह अ. ६ पृ. ८४६, ठा ५ उ ३ सू ४६६
१ अनुपेक्षा	३८१	१	३६८	ठा ५ उ ३ सू ४६५
अनुपेक्षा(भावना)वारह	८१२	४	३५५	शा.भा. १-२, भावना, ज्ञानपत्र २, प्रथ द्वा ६७ गा. ५७२-५७३, तत्त्वार्थ अख्या ६ सू ७
अनुभागनाम निधत्तायु	४७३	२	८०	मश ६७८ सू २५० टी ठा ६ उ ३ सू ५३६ टी
अनुभाग वन्ध	२४७	१	२३२	ठा ४ उ २ सू २६६, कर्म भा १ गा २
अनुभाव(फल)आठकर्मके	५६०	३	४३	पत्र प २३ सू २६२
अनुभाषण शुद्ध प्रत्या- ख्यान	३२८	१	३३७	ठा ५ उ ३ सू ४६६, भाव ह अ ६ पृ ८०७
अनुमान	३७६	१	३६५	रत्ना. परि ३ सू १०
अनुमाननिराकृतवस्तुदोष	७२३	३	४११	ठा १० उ. ३ सू ७७३ टी
अनुमाननिराकृत साध्य	५४६	२	२६१	रत्ना. परि ६ सू १२
धर्म विशेषण पक्षाभास				
अनुमान प्रमाण	२०२	१	१६०	मश. ५ उ ४ सू १६३, अनुसू १४४
अनुयोग के चार द्वार	२०८	१	१८५	अनु. सू. ५६
अनुयोग के चार भेद	२११	१	१६०	दश. नि. गा ३ पृ. ३
अनुयोग के चार भेद	४२७	२	२६	अनु सू. ५६
अनुयोग के सात निक्षेप	५२६	२	२६२	विशे. गा. १३८५ मे १३६२
अनुयोग देने वाले के	६५२	६	२८६	वृ. नि. गा २४१-२४४
अठाईस गुण				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
अनुयोग द्वार सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	२०४	१	१७६	
अनुयोग श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा १ गा ७
अनुयोग समास श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा १ गा. ७
अनुस्रोतचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५ उ ३ सू ८५३
अनुस्रोतचारी मच्छ	४१०	१	४३६	ठा ५ उ.३ सू. ४५३
अनृद्धिप्राप्त आर्य के भेद	६५३	३	२१६	पत्र. प १ सू ३७
अनेकरूपधुना प्रमाद- प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ २६ गा २७
अनेकवादी	५६१	३	६१	ठा ८ उ ३ सू. ६०७
अनेक सिद्ध	८४६	५	१२०	पत्र प १ सू ७
अनेकान्तवाद पर आठ दोष और उनका वारण	५६४	३	१०२	प्रभी अध्या. १ आ १ सू. ३३टी
अनैकान्तिक हेत्वाभास	७२२	३	४१०	ठा. १० उ ३ सू ७८३ टी
अन्तःशल्य मरण	८७६	५	३८३	सम १७, प्रव. द्वा. १५७ गा. १००६
अन्तक्रियाएं चार	२५४	१	२३७	ठा ४ उ. १ सू. २३५
अन्तगददसांग सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७६	४	१६१	
अन्तचरक	३५२	१	३६७	ठा. ५ उ १ सू. ३६६
अन्तचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५ उ. ३ सू ४५३
अन्तचारी मच्छ	४१०	१	४३६	ठा ५ उ. ३ सू ४५३
अन्तरद्वीप छप्पन	१०११	७	२७७	पत्र प १ सू. ३७ टी, प्रव. द्वा. २६२ गा. १४२०-१४२१, जी. प्रति ३ सू. १०८-११२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अन्तर द्वीपिक	७१	१	५२	टा उउ १ नू १३०, पत्र. १ १ नू ३७ जी प्रति ३ सू १०७
अन्तर नरकों का	५६०	२	३४१	भ. ग १८ उ ८ सू ४०७
अन्तरात्मा	१२५	१	८६	पममा गा १४
अन्तराय कर्म और	५६०	३	८१	कर्म भा १ गा. ४२, पत्र प २३
चसके भेद				सू २६३-२६४, तत्त्वार्थ, ३०८, ८
अन्तराय कर्मका अनुभाव	५६०	३	८२	पत्र प २३ सू. २६२
अन्तराय कर्म के पाँच	३८८	१	४१०	कर्म भा. १ गा ४२, पत्र.
भेद व्याख्या सहित				प २३ सू २६३
अन्तराय कर्म के बन्ध	५६०	३	८३	भ. ग ८ उ ६ सू. ३५१
के कारण				
अन्ताहार	३५६	१	३७१	टा० ४ उ० १ सू ३६६
अन्तोसल्ल मरण	७६८	४	२६६	भ. श २ उ १ सू. ६१
अन्त्यकाश्यप(महावीर)	७७०	४	६	जल विद्या वोल्यूम १ न. १
१ अन्न इलायचरक	३५३	१	३६८	टा ४. उ १ सू ३६६
अन्नपुण्य	६२७	३	१७२	टा. ६ उ ३ सू ६७६
अन्यत्व भावना	८१२	४	३६४, ३८२	शा भा १ प्रक ४, भावना, ज्ञान प्रक. २, प्रवद्रा. ६७ गा. ४७२, तत्त्वार्थ अध्या. ८ सू ७.
अन्यलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र. प. १ सू. ७
अपनी ओर से किसी	६८३	७	१३१	गच्छा. अधि. २. टी. मूय. अ ६
को भय न देना ही क्या				गा २३ टी.
अभयदान का अर्थ है?				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अपर सामान्य	५६	१	४१	रत्ना परि ७ सू १६
अपरावर्तमान प्रकृतियों	८०६	४	३५१	कर्म भा ५ गा १८
अपरिग्रह पर ग्यारहगाथाएं	६६४	७	१८१	
अपरिग्रह महाव्रत की	३२१	१	३२६	आवह अ ४ पृ ६६८, प्रव. द्वा ७२
पाँच भावनाएं				गा ६४०, सम २५, आचा श्रु २ चू ३ अ २४, ध अधि ३ श्लो. ४५ टी
अपरिणय दोष	६६३	३	२४७	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, पिं. नि
(आहार का दोष)				गा ५२०, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ४१, पचा १३ गा २६
अपरिश्रावीस्नातकनिर्ग्रन्थ	३७१	१	३८७	अ ५ सू ४४५, भ. श. २५ उ ६ सू ७५१
अपर्यवसित धृत	८२२	५	८	न सू ४३, विशेष. गा ५३७ से ५४८
अपर्याप्तक जीव	८	१	६	ठा २ उ २ सू ७६
अपवर्तना करण	५६२	३	६५	कम्म गा. २
अपवर्तनीय आयुधिष-	५६०	३	६७	तत्त्वार्थ अख्या. २ सू ५२, ठा २
यक शका समाधान				उ. ३ सू. ८५ टी.
अपवाद (विशेष नियम)	४०	१	२५	वृ. नि गा ३१६, स्या. का ११ टी
अपवाद सूत्र	७७८	४	२३६	वृ उ १ नि. गा १२२१
अपश्चिम मारणान्तिकी	३१३	१	३१४	उपा अ १ सू. ७, ध अधि २
संलेखना के ५ अतिचार				श्लो ६६ टी पृ. २३१
अपाय विचय धर्मध्यान	२२०	१	२०२	ठा. ४ उ. १ सू २४७,
अपायापगमातिशय	१२६ (ख)	१	६६	स्या. का १ टी
१ अपार्श्वस्थता	७६३	३	४४५	ठा १० उ ३ सू ७५८
२ अपूर्वकरण	७८	१	५६	आव म गा १०६-१०७ टी., विशे गा १२०२ से १२१८, प्रव द्वा. २२४ गा १३०२ टी., कर्म. भा. २ गा २ व्याख्या, आगम.

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अपूर्वकरणगुणस्थान	८४७	५ ८०	कर्म. भा २ गा २ व्याख्या
अपूर्वस्थिति बन्ध	८४७	५ ७६	कर्म. भा २ गा २ व्याख्या
अपौद्गलिक सम्यक्त्व	१०	१ १०	प्रव ज्ञा १४६ गा ६४२ टी
अपकाय	४६२	२ ६४	ठा ६३ ३सू ४८०, दन अ ४, कर्म भा ४ गा १०
अप्यारंभा आदि- श्रावकों के विशेषण	८६०	५ १४४	उवस ४१, मयधु २अ २सू ३६
अप्रतिपत्ति दोष	५६४	३ १०४	प्रमी अथ्या १आ १ सू. ३३ टी
अप्रतिपाती अवधिज्ञान	४२८	२ २८	ठा ६३ ३सू ४२६, न सू १६
अप्रतिबद्धयथालन्दिक	५२२	२ २६०	विशे गा ७
अप्रत्याख्यानानवरण कपाय	१५८	१ ११६	पत्र. प. १४ सू ११८, ठा ४ उ १ सू २४६, कर्म. भा १ गा १७-१८
अप्रत्याख्यानिकी क्रिया	२६३	१ २७८	ठा २३ १सू ६०, ठा. ५ उ २ सू. ४१६, पत्र प २२ सू २८४ ठा ५ उ ३ सू ४४५
अप्रथम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१ ३८५	कर्म भा २ गा २
अप्रमत्तसयत गुणस्थान	८४७	५ ७६	ध अधि ३श्लो २३टी, पृ. ६५.
अप्रमाण दोष	३३०	१ ३३६	पि नि गा. ६४१-६६४
अप्रमाद प्रतिलेखनाद्यः	४४८	२ ५२	ठा ६ उ. ३ सू ६०३, उत अ २६ गा. २६
अप्रशस्तकाय विनय के सात भेद	५०४	२ २३३	मश २५ उ ७ सू. ८०२, ठा. ७ उ. ३ सू ६८६, उव सू. २०
अप्रशस्त मनविनय के वारह भेद	७६१	४ २७५	उव. सू २०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अप्रशस्त मन विनय के सात भेद	५००	२	२३१	भ ग २५उ. ७सू. ८०२, ठा ७उ. ३ सू ५८५, उव सू २०
अप्रशस्त वचन छः	४५६	२	६२	ठा ६उ ३सू ५२७, प्रव. द्वा. २३६ गा १३११, वृ(जी) उ ६
अप्रशस्त वचन विनय के सात भेद	५०२	२	२३२	भ ग २५उ ७सू ८०२, ठा ७उ ३ सू ५८५
१ अमावृतक	३५६	१	३७३	ठा ५उ १ सू ३६६
अवद्धिक निह्वन का मत	५६१	२	३८४	विशेष गा २५०६ से २५४६
अब्रह्मचर्य का स्वरूप	४६७	२	१६७	
अब्रह्मचर्यके अठारह भेद	८६३	५	४१०	आव ह अ ४ पृ ६५२
अभगसेन चोर की कथा	६१०	६	३७	वि अ ३
अभयकुमार की कथा	६१५	६	७४	नमू २७गा ७२, आव ह गा. ६४६
पारिणामिकी बुद्धि पर				
अभवसिद्धिक(अभव्यजीव)८	१	७		ठा २उ. २सू ७६, आप्र गा ६७
अभव्य और मोक्ष	४२४	२	६	आगम
अभव्य जीव ऊपर कहाँ तक उत्पन्न होते हैं?	६८३	७	११३	प्रव द्वा १६० गा १०१६टी, म श १ उ २
अभव्या परिपद(अच्छेरा)	६८१	३	२७६	ठा १०उ ३सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा. ८८५
अभिगम पाँच	६२४	३	१६७	भ ग २ उ. ३ सू १०६
अभिगम पाँच श्रावक के	३१४	१	३१५	भ.श. २ उ ५ सू १०६
अभिगम रुचि	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा २३
अभिग्रह पञ्चक्रवाण	७०५	३	३८१	प्रव द्वा ४गा. २०२, पचा ५गा १०, आव ह अ ६ नि गा १५६७

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अभिमान के वारह नाम	७६०	४	२७५	भग १२ उ ५ सू ४४६
अभिवर्धित संवत्सर	४००	१	४२६	ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव. द्वा १४२ गा ६०१
अभिवर्धित संवत्सर	४००	१	४२८	ग. ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा १४२ गा ६०१
अभिपैक सभा	३६७	१	४२१	ठा ५ उ ३ सू. ४७२
अभिहृत दोष (आहार का दोष)	८६५	५	१६३	प्रव द्वा ६७गा ५६६, घ अघि ३ श्लो २० टी पृ ३८, पिं नि गा ६३, पिं वि गा ४, प्रचा, १३गा. ६
अमात्य(मंत्री)की पारि- णामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	८५	त्रिप पर्व ६, नसू २७गा ७०, आव. ह गा ६४६
अमात्य पुत्र की पारिणा- मिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	६०	नसू २७गा ७३, उत्त अ १३टी. आव ह गा ६४०
अमायाविता(सरलता)	७६३	३	४४५	ठा १० उ ३ सू ७५८
अमावस्या वारह	८०१	४	३०३	सूर्य. प्रा १० प्रा. प्रा ६ सू ३८
अमूढदृष्टि दर्शनाचार	५६६	३	८	पत्र, प. १ सू ३७टी. गा १२८, उत्त अ २८ गा ३१
अमोसली प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा ६ उ. ३ सू ५०३, उत्त अ. २६ गा २५
अयोगी केवली गुणस्थान	८४७	५	८६	कर्म भा. २ गा २ व्याख्या
अयोग्य अठारह पुरुष दीक्षा के	८६१	५	४०६	प्रव. द्वा १०७गा ७६०-७६१, घ, अघि ३ श्लो. ७८ टी.
अयोग्य स्त्रियां वीम दीक्षा के	८६१	५	४०६	प्रव द्वा. १०८गा. ७६२, घ अघि ३ श्लो ७८टी पृ ३
अरसाहार	३५६	१	३७१	ठा ५ उ. १ सू ३६६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
अरिहन्त	२७४	१	२५२	भ. मगलाचरण	
अरिहन्त	"	४३८	२	४५	ठा. ई. उ. ३ सू. ४६१, पन्न. प. १ सू. ३७
अरिहन्त देव की वाणी के पैंतीस अतिशय	६७६	७	७१	सम ३५ टी, रा सु ४ टी, उव सू. १० टी	
अरिहन्त देव के चौतीस अतिशय	६७७	७	६८	सम ३४, स श द्वा ६७	
अरिहन्त भगवान के अष्ट महाप्रातिहार्य	७८२	४	२६०	सम ३४, म. श. द्वा. ६६	
अरिहन्त भगवान् के चार मूलातिशय	१२६(ख)	१	६६	स्या का. १ टी.	
अरिहन्त भगवान् के चारह गुण	७८२	४	२६०	सम ३४, स श. द्वा ६६ स्या का १ टी.	
अरिहन्त भगवान् बें नहीं पाये जाने वाले अठारह दोष दो प्रकार से	८८७	५	३६७	प्रव द्वा ४१ गा. ४४१-४४२, स. श द्वा ६६ गा १६१-१६२	
अरिहन्त मंगलकारी, लोकोत्तम और शरण रूप है	१२६(क)	१	६४	भाव. ह. अ ४ पृ. ५६६	
अरूपी	६०	१	४२	तत्त्वार्थ. अभ्या. ५ सू. ३	
अरूपी अजीव के तीस भेद	६३३	३	१८१	आगम., पचीस बोल का थोकडा, पन्न. प. १ सू. ३, उक्त, अ. ३६ गा. ४-६	
अरूपी अजीव के दस भेद	७५१	३	४३४	पन्न. प. १ सू. १, सु. जी. प्रति १ सू. ४	
अर्जुनमाली (निर्जरा भावना)	८१२	४	३८६	अंत. व ई अ. ३	
अर्जुनमाली की कथा	७७६	४	१६६	अंत व ई अ ३	
अर्थ कथा	६७	१	६६	ठा ३३. ३ सू. १८६	

विषय	वांल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अर्थक्रिया छः द्रव्यों की	४२५	२	१८	आगम
अर्थ दण्ड	३६	१	२३	टा २ उ १ सू ६६
अर्थधर पुरुष	८४	१	६२	टा ३ उ ३ सू १६३
अर्थ योनि तीन	१२६	१	६०	टा ३ उ ३ सू १८५ टी
अर्थशास्त्र की कथा	६४६	६	२८०	नं सू २७ गा ६५ टी
औत्पत्तिकी बुद्धि पर				
अर्थश्रुत धर्म	१६	१	१५	टा २ उ १ सू. ७२
अर्थागम	८३	१	६०	अनु सू १४४
अर्थाचार	५६८	३	६	ध अधि १ ग्लो १६टी पृ १८
अर्थाधिकार	४२७	२	२६	अनु सू ७०
अर्थावग्रह	५८	१	४०	न सू. २८, कर्म. भा १ गा ४
अर्थावग्रह के छः भेद	४२६	२	२८	न सू ३०, टा ६ उ ३ सू ५२५, तत्त्वार्थ अध्या. १
अर्द्धपर्यङ्का	३५८	१	३७२	टा ५ उ १ सू ३६६टी, टा ५ उ १ सू ६००
अर्द्धपेटा गोचरी	४४६	२	५१	टा ६ सू ५१४, उक्त अ. ३० गा १६, प्रव द्वा ६७ गा ७४५, ध अधि ३ ग्लो. २२ टी पृ. ३७
अर्धचक्रवाल श्रेणी	५४४	२	२८४	टा ७ उ ३ सू. ५८९, म. श २५ उ ३ सू ७३०
अर्धनाराच संहनन	४७०	२	७०	पत्रप २३ सू २६३, टा ६ उ ३ सू ४६४, कर्म भा. १ गा. ३८ टा. १० उ ३ सू ७२७
अर्पितानर्पितानुयोग	७१८	३	३६३	टा ५ उ ३ सू ४७२
अलङ्कारिका सभा	३६७	१	४२२	टा. ६ उ. ३ सू ५२७, प्रव द्वा. २३५
अल्पीक वचन	४६६	२	६२	गा १३२१, घृ. (जी.) उ ६

विषय	बौले भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अलोकाकाश	३४	१ २३	म.श. उ. १ सू. ७४
अल्पआयु के तीन कारण	१०५	१ ७४	म.श. उ. १ सू. १२६, म.श. ६ उ. ६ सू. २०४
अल्पबहुत्व स्थावर जीवों	६६५	७ २५२	म.श. १६ उ. ३ सू. ६६१
की अवगाहना की			
अल्पबहुत्व के तेती सबोले	६७६	७ ६६	म.श. उ. २ सू. २०४, म.श. १६ उ. ३ सू. ६६१
अनन्तरागम सिद्धों के			
अल्पबहुत्व चार संज्ञाओं	१४७	१ १०७	प.प्र. प. ८ सू. १४८
का चार गतियों में			
अल्पबहुत्व छःकाय का	४६४	२ ६५	जी. प्रति. २ सू. ६२, प.प्र. प. ३ सू. १४८
अल्पबहुत्व जीव के	८२५	५ १८	जी. प्रति. ४ सू. २२६, प्र. सं. भा. २ प.प्र. प. ३ सू. ३, १५, १६
चौदह भेदों का			
अल्पबहुत्व वेदों का	५६६	३ १०६	जी. प्रति. ३ सू. ६३, म.श. ६ उ. ६ सू. २६०, म.श. ६ उ. ३ सू. ६३६
अवगाहनानाम निधत्तायु	४७३	२ ८०	म.श. ६ उ. ६ सू. २६०, म.श. ६ उ. ३ सू. ६३६
अवगाहना नारकी	५६०	२ ३१६	जी. प्रति. ३ सू. ८६, प्र. व. द्वा. १७६ गां १०७७-१०८०
जीवों की			
अवग्रह	२००	१ १५८	म.श. उ. ४ सू. ३६४
अवग्रह के दो भेद	५८	१ ४०	न. सू. २८, कर्म. भा. १ गां ४-५
अवग्रह के दो भेद	४२६	२ २८	न. सू. २८, तत्त्वार्थ. अध्या. १
अवग्रह ज्ञानके बारह भेद	७८७	४ २६६	म.श. उ. ३ सू. ६१० टी. विशे. गां ३०७, तत्त्वार्थ अध्या. १ सू. १६
अवग्रह पाँच	३३४	१ ३४४	म.श. १६ उ. २ सू. ६६७, प्र. व. द्वा. ८५ गां. ६८१, प्राचा. श्रु. २. चू. १ म. ७ उ. २ सू. १६२

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अवग्रह प्रतिमापंसात	५१८	२	२४८	आचा धु २३ १अ ७३ २सू १६
अवधिज्ञान	३७५	१	३६१	ठा ५ उ ३सू ४६३, कर्म मा १ गा ४, न. सू १
अवधिज्ञान और मनः पर्यय ज्ञान में क्या अन्तर है	६१८	६	१३७	भ श १३ ३टी, तत्त्वार्थ अध्या. १ सू. २६
अवधिज्ञान के भेद	१३	१	११	ठा. २३. १ सू ७१
अवधिज्ञान के छः भेद	४२८	२	२७	ठा ६ उ ३सू ४२६, नं सू ६ सं १५
अवधिज्ञान दर्शन मद	७०३	३	३७४	ठा १० उ. ३ सू ७१०, अ ८ ठ ३ सू. ६०६
अवधिज्ञान नारकी जीवों का	५६०	२	३२३	जी प्रति ३म ८८ प्रव० द्वा १७६ गा १०=८
अवधिज्ञान के चलित होने के पाँच बोल	३७७	१	३६२	ठा० ५ उ० १ सू० ३६४
अवधिज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पत्र० प० २६ सू० ३१२
अवधिज्ञान से मनः पर्यय ज्ञान अलग क्यों कहा गया?	६१८	६	१३७	भ श १ उ ३ टी, तत्त्वार्थ. अध्या. १ सू २६
अवधि ज्ञानावरणीय	३७८	१	३६४	ठा ५ उ. ३ सू ४६४, कर्म. भा १ गा ६
अवधिज्ञानी जिन	७४	१	५३	ठा० ३ उ० ४ सू० २२०
अवधिदर्शन	१६६	१	१५८	ठा ४ उ ४सू ३६४, कर्म. भा. ४ गा. १२
अवधिदर्शन अना-कारोपयोग	७८६	४	२६६	पत्र० प० २६ सू० ३१२
अवधिमरण	८७६	५	३८२	सम. १७, प्रव. द्वा. १६ गा १००६
अवधिलिच्छि	८५४	६	२६१	प्रव. द्वा. २७० गा. १४६२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अवन्दनीय साधु पाँच	३४७	१	३५७	भाव ह अ ३ नि गा ११०७-८ पृ ५ १६ प्रव द्वा २ गा. १०३-२३
अवयव से नाम	७१६	३	३६८	अनु सू १३०
अवलित प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा ६ उ. ३ सू ५०३, उत अ. २६ गा २५
अवसन्न साधु	३४७	१	३५८	भाव ह अ. ३ नि गा ११०७-८ पृ ५ १६ प्रव द्वा. २ गा १०६-८
अवसर आदि नौ बातों का जानकार होना साधु के लिये आवश्यक है	६४१	३	२१२	आचा श्रु १ अ २ उ ५ सू ८८
अवसर्पिणी	३३	१	२२	ठा० २३० १ सू० ७४
अवसर्पिणी काल के छः आरे	४३०	२	२६	ज व न्न २, अ ६ उ ३ सू ४६२, भ श ७ उ. ६ सू २८७-२८८
अवस्था दस	६७८	३	२६७	ठा १० उ ३ सू ७७२
अवान्तर सामान्य	५६	१	४१	रत्ना परि. ७ सू १६
अवाय	२००	१	१५६	ठा ४ उ ४ सू ३६४
अविनीत के चौदह लक्षण	८३५	५	३०	उत्त. अ. ११ गा. ६-६
अविरत सम्यग्दृष्टि गुण	८४७	५	७४	कर्म भा २ गा, २
अविरति आश्रव	२८६	१	२६८	ठा ५ उ. २ सू. ४१८, सम. ५
अविरुद्धानुपलब्धि हेतु के सात भेद	५५६	२	२६८	रत्ना. परि ३ सू ६५-१०२
अविरुद्धोपलब्धि रूप हेतु के छः भेद	४६५	२	१०४	रत्ना. परि. ३ सू. ६८-८२
अवैदिक दर्शनों की सत्रह बातों से परस्पर तुलना	४६७	२	२२३	

विषय	बाल भाग	पृष्ठ	प्रमाण-	
अव्यक्त दृष्टि नामक तीसरे निहव का मत	५६१	२	३५६	द्वि. गा. २३५६-२३८८
अव्यक्त स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४५	भग. १६३६ सू. ६७७
अव्यवस्था दोष	५६४	३	१०४	प्र.मी. अध्या. १ आ. १ सु. ३३
अव्यवहार राशि	६	१	८	आगम०
अव्यवहार राशि	४२५	२	२१	आगम०
अव्याप्ति	१२०	१	८४	न्याय दी. प्रका. १
अव्याप्ति दोष	७२२	३	४०८	ठा. १० उ. ३ सू. ७४३ टी.
अशक्य बोल छः	४६०	२	१०१	ठा. ६ उ. ३ सू. ४७६
अशवल स्नातक	३७१	१	३८६	ठा. ६ उ. ३ सू. ४४६, भ. शा. २५ उ. ६ सू. ७६१
‘अशरण’ पर दस गाथाएं ६६४ ७ २२२				
अशरण भावना	८१२	४	३५८, ३७६	शा. भा. १ प्रक. २, भावना, ज्ञान. प्रक. २, प्रव. द्वा. ६७ गा. ६७२, तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू. ७
अशुचि भावना	८१२	४	३६५, ३८४	शा. भा. १ प्रक. ६, भावना, ज्ञान. प्रक. २, प्रव. द्वा. ६७ गा. ६७२, तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू. ७, १
अशुभ दीर्घायु के ३ कारण	१०६	१	७४	ठा. ३ उ. १ सू. १२५
अशुभ नाम कर्म चौदह प्रकार से भोगा जाता है	८३६	५	३३	पत्र प. २३ सु. २६२
अशुभ भावना पाँच	४०१	१	४२८	प्रव. द्वा. ७३ गा. ६४१, उत. ६६ गा. २६१-२६४
१ अश्लोक भय	५३३	२	२६८	ठा. ७ उ. ३ सू. ४४६, मम.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अश्वमित्र नामक चौथा निहव और उसका मत	५६१	२	३२८	विशे गा २३८६-२४२३।
अश्वों का दृष्टान्त-ज्ञाता धर्म कथाका १७वाँ अध्ययन	६००	५	४६६	
अष्ट महाप्रातिहार्य अरि-हन्त भगवान् के	७२२	४	२६०	सम. ३४, स श द्वा ६७
२ अष्टशत सिद्ध आश्चर्य	६८१	३	२६०	ठा १०३३ सू ७७७, प्रव. द्वा १३८ गा ८८६
अष्ट स्पर्शी	६१	१	४२	भ.श. १२३. ४ सू. ४५०
असईजण गोमणया कर्मादान ८६०	५	१४६		उपा अ १ सू ७ भ.श ८ उ ४ सू ३३०, आवह अ. ६ पृ. ८३६
असंक्लेश दस	७१५	३	३८६	ठा १०३.३ सू ७३६
असंख्यातजीविक वनस्पति ७०	१	५१		ठा.३ उ. १ सू १४१
असंख्येय के नौ भेद	६१६	३	१४६	अनु सू. १४६ टी
असङ्गिश्रुत	८२२	५	६	नसू. ४०, विशेषे गा ५०४ से ५२६
असङ्गी	८	१	६	ठा २ उ २ सू ७६
असंभव	१२०	१	८५	न्याय. दी प्रका. १
असंभव दोष	७२२	३	४०८	न्याय. दी. प्रका १, रत्ना. परि. १ सू २ टी
असंयत	६६	१	५०	भ. श ६ उ. ३ सू २३७
असंयतपूजा आश्चर्य (अच्छेरा) ६८१	३	२६०		ठा १० उ ३. सू ७७७, प्रव. द्वा १३८ गा. ८८६
अमंयती अचिरति कोपामुक ६८३	७	१३०		भ ग ८ उ ६ सू ३३२
या अपामुक आहार देने से				

विषय	खोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
एकान्त पाप होना भगवती में किम अपेक्षा से कहा है?				
असंयम पाँच	२६७	१	२८३	टा. ५ उ. २ सू. ४०६ ४३०
असंवर (आश्रव) दस	७११	३	३८६	टा. १० उ. ३ सू. ७०६
१ असंवृत बकुश	३६८	१	३८३	टा. ५ उ. ३ सू. ४४५
असंस्कृत अ०की१३गाथाएं८१६	४	४०६	उत्त अ. ४	
असज्ज्हाय चौतीस	६६८	७	३५	टा ४ उ २ सू २८५ टा. १० उ. ३
अगज्ज्हाय वतीस	६६८	७	२८	सू. ७१४, प्रव द्वा २६८ गा १४६०-१४७१, व्यव. भाष्य उ. ७ गा. २६६-३१६, आव ६ अ ४ गा. १३२१ म १३६०
असत्य का स्वरूप	४६७	२	१६६	
असत्य भाषा	२६६	१	२४६	पत्र प. ११. सू. १६१
असत्यवचन के चार प्रकार	२७०	१	२४६	दश अ. ४ सू ४ टी.
असत्य वचन दस	७००	३	३७१	टा १० उ. ३ सू. ७४१, पत्र. प ११ सू. १६५, व. अधि. ३ खो ४१ टी. पृ १२२
असत्यामृषा भाषा	२६६	१	२४६	पत्र. प ११ सू. १६१
असत्यामृषा (व्यवहार)	७८८	४	२७२	पत्र प ११ सू. १६६
भाषा के बारह भेद				
असमाधि के बीस स्थान	६०६	६	२१	मम. २०, दशा. द १ पत्र प २३ सू. २६३, कर्म भा १
असानावेदनीय	५१	१	३०	गा १२ व्याख्या जी प्रति. ३३१ सू १११
असिकर्म	७२	१	५२	तन्दु सू १४-१५ पृ. ४०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
असिद्ध हेत्वाभास	७२२	३	४०६	ठा १० उ. ३ सू. ७४३ टी.
असुरकुमारोंकेदसअधिपति	७३१	३	४१७	म. श. ३ उ. ८ सू. १६६
अस्तिकाय के पाँच भेद	२७७	१	२५४	ठा ५ उ ३ सू. ४४१
अस्तिकाय धर्म	७६	१	५४	ठा ३ उ ३ सू १८८
अस्तिकाय धर्म	६६२	३	३६२	ठा १० उ ३ सू. ७६०
अस्तिकाय पाँच	२७६	१	२५३	उत्त अ. २८ गा. ७-१२, डा. ५ उ ३ सू १४१
अस्तित्व गुण	४२५	२	१६	आगम द्रव्य त अध्या. ११ श्लो २
अस्ति सुख	७६६	३	४५४	ठा १० उ. ३ सू ७३७
अस्वाध्यायआन्तर्निक्षेपदस	६६०	३	३५६	ठा १० उ ३ सू ७१४, प्रव द्वा २६८ गा १४६०-७१, व्यव. भाष्य उ ७
अस्वाध्यायऔदात्तिकदस	६६१	३	३५८	ठा १० उ ३ सू ७१४
अस्वाध्याय का सर्वैया	*	५	४७५	
अस्वाध्याय चौतीस	६६८	७	३५	ठा. ४ उ २ सू. २८६, ठा. १० उ ३ सू ७१४, प्रव द्वा. २६८ गा. १४६०-१४७१ व्यव भाष्य उ ७ गा २६६-३१८, आव ह अ ४ गा १३२१ से १३६०
अस्वाध्याय त्तीस	६६८	७	२८	
अहंकार के दस कारण	७०३	३	३७४	ठा १० उ ३ सू. ७१०, ठा ८ उ ३ सू. ६०६
अहिंसा अणुव्रत	३००	१	२८८	आव ह अ. ६ पृ ८१७, ठा ५ उ १ सू ३८६, उपा अ. १ सू ६, प्र. अधि. २ श्लो. २६ पृ. ६७
अहिंसा अणुव्रत (स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत)	३०१	१	२६०	भाव ह अ ६ पृ ८१८, उपा अ १ सू. ७, ध अधि. २ श्लो ४३ पृ १००
के पाँच अतिचार				
अहिंसा और कायरता	४६७	२	१६३	

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अहिंसा की व्यावहारिकता	४६७	२	१६५	
अहिंसा(दया)पर	१७गाथा	६४४	७	१६७
अहिंसा भगवती की उपमा	६२२	३	१५०	प्रश्न. सवरद्वार १ सू. =२
अहिंसा भगवती के साठ नाम	६२२	३	१५१	प्रश्न सवरद्वार १ सू. २१
अहिंसा महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१७	१	३२४	भाव ह अ ४ पृ ६४८, प्रव द्वा. ७२ गा ६३६, सम २६, आचा शु. २ चु ३ अ २४ सू. १७६, ध अ वि ३ श्री ४४ टी पृ १२६
अहिंसावाद	४६७	२	२१०	
अहोरात्रिकी ग्यारहवीं भिक्षुपद्धिमा	७६५	४	२६०	मम १२, म अ २३ १ सू ६३ टी. दशों द ७
अर्हल्लव्धि	६५४	६	२६४	प्रव द्वा. २७० गा १००६

आ

आँवले का दृष्टान्त पारि- णामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११३	न सू २७ गा ७४, भाव ह गा ६५१
आउंटण पसारण आगार	५८७	३	४१	भाव ह अ ६ पृ ८४२, प्रव द्वा ४ गा. २०३
आउर पञ्चक्वाणपइण्णा	६८६	३	३५३	द प.
आकाश	३४	१	२२	ठा २ उ. १ सू ७४
आकाश के सत्ताईस नाम	६४८	६	२४१	म अ. २० उ. २ सू. ६६६
आकाश द्रव्य	४२४	२	३	आगम, बत अ. ३६ गा. ६
आकाश सम्बन्धी दस अस्वाध्याय	६६०	३	३५६	ठा. १० उ ३ सू ७१४, प्रव द्वा. २६८ गा १४५० से ७१६ व्यव भाष्य उ. ७
आकाशास्तिकाय के भेद	२७७	१	२५५	ठा ५ उ ३ सू ४६१
आक्रान्त वायु	४१३	१	४३८	ठा. ५ उ ३ सू ४६६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
आक्षेपणी कथा की व्याख्या और भेद	१५४	१	११२	ठा ४ उ.२ सू.२=०, दशा.अ ३ निगा १६४-१६५
व्याख्यायिका निःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा १० उ ३ सू. ७४१, पत्र प ११ सू. १६५, अ. अधि. ३५ को ४, १ टी. ६ पृ १२२
आगति नारकी जीवों की आगम	५६०	२	३२७	प्रव. द्वा १८२, गा १०६ १-६३
आगम की व्याख्या, भेद	८३	१	६०	रत्ना. परि ४ सू १, २, अनु सू १४४
आगम निराकृत साध्य धर्म विशेषण पक्षाभास	५४६	२	२६१	रत्ना परि ६ सू ४३
आगम पैतालीस	६६७	७	२६०	जै अ., अमि रा भा १ प्रस्तावना
आगम प्रमाण	२०२	१	१६१	अग ५ उ ४ सू १६३, अनु सू १४४
आगम बत्तीस	६६६	७	२१	
आगम व्यवहार	३६३	१	३७५	ठा ५ उ २ सू ६२, १, अ श ८ उ ८ सू ३४०
आगम व्यवहार के प्रकार	३६३	१	३७५	ठा ५ उ २ सू ४२, १, अ श ८ उ ८ सू ३४०
आगामी उत्सर्पिणी के वारह चक्रवर्ती	७८४	४	२६५	सम १५६
आगामी उत्सर्पिणी के सात कुलकर	५११	२	२३६	ठा. ७ उ ३ सू ५५६, सम १५६
आगामी चौबीस तीर्थंकर	६३१	६	१६७	सम १५८, प्रव. द्वा ७ गा ३०० से ३०२
ऐरवत क्षेत्र के आगामी चौबीस तीर्थंकर	६३०	६	१६६	सम १५८, प्रव. द्वा ७ गा २६३-२६४
भरत क्षेत्र के				

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आगार आठ आयबिलके ५८८	३	४१		भाव ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १ गा. २०४
आगार आठ एकाशनके ५८७	३	४७		भाव ह. अ. ६ पृ. ८०, प्रव. दा. १ गा. २०४
आगार छः पोरिसके ५८३	२	६७		भाव. ह. अ. ६ पृ. ८०, प्रव. दा. ४ गा. २०३
आगार छः समकितके ५५५	२	५८		उपा. अ. १ सू. ८, भा. वा. ह. १ अ. ५ पृ. १०, ध. अधि. ० श्लो. ५ भा. ६
आगार नौ निव्विगई पञ्चकवाण के	६२६	३	१७४	भाव. ह. अ. ६ पृ. ८५, प्रव. दा. ४ गा. २०४
आगार बारह तथा चार कायत्सिग के	८०७	४	३१६	भाव. ह. अ. ६ पृ. ८५, प्रव. दा. ४ गा. २०४
आगार सात एगट्टाण (एक स्थान) के	५१७	२	२४७	भाव. ह. अ. ६ पृ. ८५, प्रव. दा. ४ गा. २०४
आगार ७ दी पोरिस के	५१६	२	२४७	भाव. ह. अ. ६ पृ. ८५, प्रव. दा. ४ गा. २०३
आचारम्लिक (आयबिलिण)	३५५	१	३७०	भा. ५ उ. १ सू. ३६
आचार पाँच	३२४	१	३३२	भा. ५ उ. २ सू. ३३, ध. अधि. ३ श्लो. ४४ पृ. १४०
आचार प्रकल्प के पाँचभेद	३२५	१	३३३	भा. ५ उ. २ सू. ४३
आचार विनय के चारभेद	३३६	१	३१४	दशा. वि. ४
आचार समाधि के चारभेद	५५३	२	२६४	दश. अ. ६ उ. ४
आचार सम्पदा	५७४	३	१२	दशा. वि. ४ उ. ३ सू. ६०
आचारांग सूत्र का विषय	७७६	४	६७	
आचारांग सूत्र के नवों के चौथे उ० की १७ गांथाएँ	८७८	५	३८६	आचा. सू. १ अ. ६ उ. ४

विषय **बाल भाग पृष्ठ** **प्रमाण**

- १. आचारांगसूत्र के नवें अंके ८७८ ५ ४८४ आचा. सु. १ अ. ६ उ. ४
- २. चौथे उ० की ७ मूल गाथाएं
आचारांगसूत्र के नवें अंके ८७४ ५ ४८२ आचा. सु. १ अ. ६ उ. २
- ३. दूसरे उ० की सोलह गाथाएं
आचारांगसूत्र नवें अंके ८७४ ५ ४८१
दूसरे उ० की १६ मूल गाथाएं ४ ६ २० आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- ४. आचारांगसूत्र के नवें अंके ८२२ ६ १४६ आचा. सु. १ अ. ६ उ. १
- ५. के पहले उ० की तीस गत १ ७ २० आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- ६. आचारांगसूत्र प्रथम श्रुत-१००५ ७ २७१ आचा. सु. १ अ. ६ उ. १
- ७. स्कन्ध के इकावन उद्देश ६ ६ ६ १ आचा. सु. १ अ. ६ उ. १
- ८. आचार्य ० ० २७४ ० १ २५२ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- ९. आचार्य उपाध्याय के गण ३४४ १ ३५५ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- १०. में पाँच कलह स्थान
आचार्य उपाध्याय के गण ३४३ १ ३५४ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- ११. से निकलने के पाँच कारण ६ ० २ ३ आचा. सु. १ अ. ६ उ. १
- १२. आचार्य उपाध्याय के १४ ३४२ १ ३५३ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- १३. विशिष्ट पाँच अतिशय
आचार्य उपाध्याय के सात ५ १४ २ २४२ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- १४. संग्रह स्थान ५ ३ ६ २ ४ आचा. सु. १ अ. ६ उ. १
- १५. आचार्य की ऋद्धि के ३ भेद १ ० २ १ ७ १ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- १६. आचार्य के छः कर्तव्य ४ ५ १ २ ५ ५ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- १७. आचार्य के छत्तीस गुण ६ ८ २ ७ ६ ४ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- १८. आचार्य के तीन भेद १ ० ३ ६ ७ २ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- १९. आचार्य के पाँच प्रकार ३ ४ १ १ ३ ५ २ आ. सु. १ अ. ६ उ. १
- २०. आचार्य पदवी ५ १ ३ २ २ ३ ६ आ. सु. १ अ. ६ उ. १

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आच्छेद्य दोष	८६५	५	१६३	प्रव द्वा ६७ गा ५६६, प. अ. वि. ३ श्लो. २२टी पृ ३८ पि नि गा. ६३, पि पि गा ४, पचा. १३ गा ६
आजीव दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७ गा ५६७, प. अ. वि. ३ श्लो. २२टी पृ ४०, पि नि गा ४०० पि पि गा ४८, पचा १३ गा १८
आजीवक के १२ श्रमणापा० ७६३	४	२७६		भ. अ. उ. ३ स ३३०
आजीविक श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ६४ गा १०३१
आज्ञापनिकी या आनायनी २६५	१	२८०		ठा २ उ १ सू ६०, ठा ४ उ २ सू ४१६, आव. ह. अ. ४ पृ ६१३
(आणवणिया) क्रिया				
आज्ञा रुचि	६६३	३	३६३	उत्त. अ. २८ गा २०
आज्ञाविषय धर्मध्यान-	२२०	१	२०१	ठा ४ उ १ सू. ० १११
आज्ञा व्यवहार	३६३	१	३७६	ठा ४ उ. १ सू ४३१, भ. अ. उ. ८ सू ३४०
आठ अक्रियावादी	५६१	३	६०	ठा. ८ उ ३ सू. ६०७
आठ भनन्त	६२०	३	१४७	अनु सू १४६
आठ आगार आयम्बित्त के ५८८	३	४१		आव. ह. अ. ६ पृ ८६, प्रव. द्वा. ४ गा. ००४
आठ आगार एकाशन के ५८७	३	४०		आव. ह. अ. ६ पृ ८५ प्रव द्वा ४ गा ३०३ भ. अ. १२ उ. १० सू ४६७
आठ आत्मा	५६३	३	६५	ठा. ८ उ ३ सू. ६११
आठ आयुर्वेद	६००	३	११३	आवा. अ. ६ उ. ४ सू. १६४
आठ उपदेश योग्य बातें	५८५	३	३६	प्रण. नेत्र द्वा १ सू. २०
आठ उपमा अहिंसा की	६२२	३	१५०	नं पीठिका गा. ४-१७
आठ उपमा सच की	६२३	३	१५६	
आठ करण	५६२	३	६४	कम्म. गा. २

विषय	बोल भाग	सूत्र	प्रमाण
आठ कर्म	५६०	३ ४३	विशेषे गा १६०६-१६४४, तत्त्वार्थ अध्या ८, कर्म भा. १, भ श ८३ ६सू ३५१, भूश १ उ ४, उक्त अ ३३, पत्र ५२३, द्रव्यालो. स १०
आठ कर्मों का ज्ञय करने वाले महात्मा यहाँ की स्थिति पूरी करके कहाँ उत्पन्न होते हैं?	६८३	७ ११७	उव सू ४१
आठ कर्मों की स्थिति	५६०	३ ४३-६०	पत्र ५२३ सू २६४, तत्त्वार्थ, अध्या ६सू १५२, उक्त अ. ३३
आठ कर्मों के अलुभाव	५६०	३ ४३-६०	पत्र ५२३ सू २६२
आठ कर्मों के बन्ध के कारण	५६०	३ ४३-६०	भ०श० ८ उ०६ सू० ३५१
आठ कर्मों के भेद प्रभेद	५६०	३ ४३-६०	पत्र ०५२३ सू ३६३, उक्त अ. ३३ कर्म भा १, तत्त्वार्थ अध्या ६सू ५-१४
आठ कारण भूट बोलने के	५८२	३ ३७	साधु प्र महाव्रत २
आठ कृष्ण रात्रि	६१६	३ १३३	ठा ८३ सू ६२३, भ. श. ६ उ सू २४२, प्रव द्वा २, ६७ गा १४४१ मे १४४४
आठ गण	५६६	३ १०८	पिगल, कृ. . . .
*आठ गणधर पार्ष्वनाथ के	५६५	३ ३	ठा ८ उ ३ सू. ६१७, सम. ८

ठायाम सूत्र एव समवायाग सूत्र के मूल पाठ में भगवान् पार्ष्वनाथ के आठ गणधर वतलाये हैं किन्तु हरिमद्रीयावरयक गाथा २६६ से २६६ में, प्रवचन, सारोद्धार द्वार १५ में तथा स्तरिमय ठायी वृत्ति द्वार १११ में भगवान् पार्ष्वनाथ के दस गणधर होना वतलाया है। ठायाम और समवायाग के टीकाकार श्री अभयदेवमूरि ने भी टीका में दस गणधर का होना माना है। मूल पाठ में दी हुई आठ की संख्या का सामंजस्य करने के लिये उन्होंने टीका में यह सुझाया किया है कि अन्य आयु होने के कारण सूत्रकार ने दो गणधरों की विवक्षा न कर आठ ही गणधर वतलाये हैं।

विषय	खोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आठ गणि सम्पदा	५७४	३ ११	दशा. द. ४, ठा. ८३ सू. ६०१
आठ गुण आलोचना करने वाले के	५७६	३ १६	ठा. ८३ सू. ६०४, म. रा. २४ उ. ७ सू. ७६६
आठ गुण आलोचना देने वाले साधु के	५७५	३ १५	ठा. ८३ सू. ६०४, म. रा. २४
आठ गुण शिखाशील के	५८४	३ ३८	उत्त. म. ११ गा. ४०५
आठ गुण सिद्ध भगवान् के	५६७	३ ४०	अनु. सू. १३६, पृ. ११५, सू. ३१ प्रव. द्वा. ३६ गा. १४६, ३-६४
आठ गुण साधु और सोने के	५७१	३ ६	पचा. १४ गा. ३२-३४
आठ ज्ञानाचार	५६८	३ ५	ध. अधि. ११ ग्लो. १६ टी. १८
आठ तरह के संकेत	५८६	३ ४२	आव. द. म. ६ नि. गा. १४७
पञ्चखाण में			प्रव. द्वा. ४ गा. ३००
आठ तृण वनस्पतिकाय	६१२	३ १२६	ठा. ८३ सू. ६१३
आठ त्रस	६१०	३ १२७	दशा. म. ४ गा. ८ उ. ३ सू. ६६६
आठ दर्शन	५६८	३ १०६	ठा. ८३ सू. ६१८
आठ दर्शनाचार	५६६	३ ६	पत्र. प. १ सू. ३ गा. १२८, उत्त. म. २८ गा. ३१
आठ दोष अने कान्तवाद पर	५६४	३ १०२	प्र. मी. अध्या. १ गा. १ सू. ३३
आठ दोष चित्त के	६०३	३ १२०	कि. भा. २ ग्लो. १६०-१६१
आठ दोष साधुको वर्जनीय	५८३	३ ३८	उत्त. म. २४ गा. ६
आठ नाम ईपत्प्राग्भारा के	६०६	३ १२६	पत्र. प. २ सू. ४४, ठा. ८३ सू. ६४४
आठ पुद्गल परावर्तन	६१८	३ १३६	कर्म. भा. १ गा. ८६-८८
आठ पृथ्वियाँ	६०८	३ १२६	ठा. ८३ सू. ६४५
आठ प्रकार से वेद का	५६६	३ १०६	जी. प्रति. २ सू. ६२
अन्य बहुत्व			

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आठ प्रभावक	५७२	३ १०	प्रव. द्वा १४८ गा. ६३४
आठ प्रमाद	५८०	३ ३६	प्रव. द्वा २०७ गा. १२०७
आठ प्रवचन माता	५७०	३ ८	उल. अ. २४. गा १, सम. ८
आठ प्रायश्चित्त	५८१	३ ३७	ठा. ८ उ. ३ सू. ३०६
आठ वार्ते छद्मस्थ नहीं देख सकता	६०२	३ १२०	ठा. ८ उ. ३ सू. ६१०
आठ भेद गन्धर्व के	६१३	३ १२६	उव. सू. २४, पत्र. पं. २१ सू. ४७
आठ भेद प्रतिक्रमण के	५७६	३ २२१	आव. ह. अ. ४ नि. गा. १२३ सू. ४४२
आठ मद	७०३	३ ३७४	ठा. ८ उ. ३ सू. ६०६, ठा. १० उ. ३ सू. ७१०
आठ महाग्रह	६०४	३ १२१	ठा. ८ उ. ३ सू. ६१२
आठ महानिमित्त	६०५	३ १२१	ठा. ८ उ. ३ सू. ६०८, प्रव. द्वा २४७ गा. १४०६ सू. १४०६
आठ मांगलिक पदार्थ	५६४	३ ३	उव. सू. ४ टी., रा सू. १४
आठ योगांग	६०१	३ ११४	यो., रा यी
आठ योनि संग्रह	६१०	३ १२७	दश. अ. ४, ठा. ८ उ. ३ सू. २६४
आठ राजा भगवान् महावीर के पास दीक्षित हुए	५६६	३ ३	ठा. ८ उ. ३ सू. ६२१
आठ रुचक प्रदेश	६०७	३ १२५	आवा. श्रु. १ म. १ उ. १ टी. नि. गा. ४२, आगम, भ. श. ८ उ. ६ सू. ३४० टी., ठा. ८ उ. ३ सू. ६२४
आठ लोकस्थिति	६२१	३ १४८	भ. श. १ उ. ६, ठा. ८ उ. ३ सू. ६००
आठ लौकान्तिक देव	६१५	३ १३२	भ. ग. ६ उ. ६ सू. ४४३, ठा. ८ उ. ३ सू. ६२३
और उनके विमान			
आठ वचन विभक्तियाँ	५६५	३ १०५	ठा. ८ उ. ३ सू. ६०६, अनु. सू. १२८ सि. कारक प्रकरण

विषय	बौल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
आठ वर्गणा	६१७	३	१३४	शि. गा. ६३१ से ६३७
आठ व्यन्तर देव	६१४	३	१३०	ठा. उ. उ. ३ सू. ६५४, जी. प्रति ३ सू. १२१, पत्र प. २ सू. ४७-४९, पत्र. प. ४ सू. १००
आठ संख्या प्रमाण	६१६	३	१४१	अनु. सू. १४६
आठ संयम	५७३	३	११	तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू. ६१
आठ. संपदा	५७४	३	११	दशा. द. ४, ठा. उ. उ. ३ सू. ६०१
आठ मूर्क्षम	६११	३	१२८	ठा. उ. उ. ३ सू. ६१५, दशा. अ. उ. गा. १५
आठ स्थान एकलविहार	५८६	३	३६	ठा. उ. उ. ३ सू. ५६४
प्रतिमा के				
आठ स्थान माया की	५७७	३	१६	ठा. उ. उ. ३ सू. ५६७
आलोच्यणा करने के				
आठ स्थान माया की	५७८	३	१८	ठा. उ. उ. ३ सू. ५६७
आलोच्यणा न करने के				
आठ स्थानों की प्राप्ति	६०६	३	१२४	ठा. उ. उ. ३ सू. ६४६
और रक्षा केलिये प्रयत्न				
करना चाहिये				
आठ स्पर्श	५६७	३	१०८	ठा. उ. उ. ३ सू. ५६६, पत्र. प. २ सू. २६
आढ्यत्व सुग्व	७६६	३	४५४	ठा. १० उ. ३ सू. ७३७
आगत और प्रागत	८०८	४	३२३	पत्र प. २ सू. ५३
देवलोक का वर्णन				
आतापक	३५६	१	३७३	ठा. ५ उ. १ सू. ३६६
आत्मकृत दोष	७२३	३	४१२	ठा. १० उ. ३ सू. ७४३
आत्मचिन्तन पर चार	६६४	७	२४८	
गाथाएं				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
आत्मदमन के विषय में सोलह गाथाएं	६६४	७	२०७	
आत्मभूत लक्षण	६२	१	४३	न्याय. दी प्रका. १
आत्म रक्षक देव	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ ग्रन्था. ४ सू ४
आत्मवादी	१६२	१	१४६	आचा श्रु १ अ. १३ १ सू ६
आत्मसंवेदनीय उपसर्ग के चार प्रकार	२४३	१	२२०	ठा ४३ ४ सू ३६ १, सूय. श्रु १ अ ३ उ १ नि गा ४८
आत्मा	१	१	२	ठा. १ उ १ सू २
आत्मांगुल की व्याख्या	११८	१	८३	अनु सू. १३३
आत्मा के विषयमें गण-धर इन्द्रभूति की शका और उसका समाधान	७७५	४	२४	विशे गा १६ ४६ से १६०६
आत्मा के आठ भेद	५६३	३	६५	भश १२ उ १० सू. ४६७
आत्मा के आठ भेदों का पारस्परिक सम्बन्ध	५६३	३	६५	भश १२ उ १० सू ४६७
१ आत्मागम	८३	१	६१	अनु सू. १४४
आत्मा तीन	१२५	१	८६	परमा गा. १३-१६
आत्मा पर छः गाथाएं	६६४	७	१५६	
आत्यन्तिक मरण	८७६	५	३८३	सम १७, प्रव द्वा १६ ७ गा १००६
आदानपद नाम	७१६	३	३६६	अनु सू. १३०
आदान भंडमात्र निक्षेपणा समिति	३२३	१	३३१	सम. ६, ठा ६ उ ३ सू. ४५७, ध अधि ३ श्लो ४७ टी. पृ १३०, उक्त अ २४ गा ३

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ आदान भय	५३३	२	२६८	ठा.७उ ३.सू.१४६, मम ७
आदित्यप्रमाण संवत्सर	४००	१	४२६	ठा ५उ ३सू.४६०, प्रव द्वा १४२ गा ६००
आदित्य संवत्सर	४००	१	४२७	ठा ५उ ३सू.४६०, प्रवद्वा १४२ गा. ६०१
आधा कर्म	७६०	३	४४३	आचा अ २उ १नि. गा. १८३
आधा कर्म दोष	८६५	५	१६१	प्रव द्वा.६७गा ५६५, अचि ३ श्लो २२टी.पु. ३८, पि नि गा ६२, पि त्रि गा. ३, पंचा १३ गा ५
आधार	४८	१	२८	विशे गा. १४०६
आधिकारणिकी क्रिया	२६२	१	२७७	ठा २ उ १ सू.६०, ठा ५ उ ० सू.४१६, पत्र.प २२ सू. २७६
आधिगमिक सम्यक्त्व	१०	१	१०	ठा २उ १सू.७०, पत्र.प १ सू ३७, तत्त्वार्थ अध्या. १ सू ३
आधेय	४८	१	२८	विशे गा १४०६
आध्यात्मिक विकासक्रम तथा दूसरे दर्शन	८४७	५	६३	आ वि.
आनन्द श्रावक	६८५	३	२६५	उपा अ. १
आनन्द श्रावक की बार्डिस	६८५	३	२६७	उपा अ १ सू ७
बोल्लोकीमर्यादासातवेंव्रतमें				
आनन्दश्रावककेअधिकार	६८५	३	४५७	उपा (अ), उपा (ह.)
में आये हुए 'चेइय' शब्द पर टिप्पण				
आनन्दश्रावककेअधिकार	४५५	२	५८	उपा अ. १ सू ८
में सम्यक्त्व के छः आगार				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आनन्द श्रावकके अधिकार	६८५	३	३०३	उपा अ. १ सू ८
में सम्यक्त्व के छः आगार				
आनन्द श्रावक के वारह	६८५	३	२६५	उपा अ १ सू ६-७
व्रत और अतिचार				
आनुगमिक व्यवसाय	८५	१	६२	ठा ३ उ ३ सू. १८५
आनुपूर्वी	४२७	२	२६	अनु. सू ७०
आनुपूर्वी	*	६	क	
आनुपूर्वी कंठस्थ गुणने की	*	६	ग	
सरल विधि				
आनुपूर्वी दस	७१७	३	३६०	अनु. सू. ७१-११६
आपृच्छना समाचारी	६६४	३	२५०	भ.श.२ उ.७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४६, उत्त. अ. २६ गा २, प्रव द्वा १०१ गा. ७६०
आप्त की व्याख्या	३७६	१	३६६	रत्ना परि. ४ सू ४
आभिग्रहिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध अधि. २ श्लो. २२ टी पृ. ३६, कर्म भा ४ गा ६१
आभिनिबोधिक ज्ञान	१५	१	१२	पत्र. प. २६ सू. ३१२, ठा. २ उ. १ सू ७१
आभिनिबोधिक ज्ञान	३७५	१	३६०	ठा. ५ उ. ३ सू ४६३, न सू १, कर्म. भा. १ गा. ४
आभिनिबोधिक ज्ञान के	६५०	६	२८३	सम. २८, कर्म भा. १ गा. ४, ५
अठारह भेद				
आभिनिबोधिक साकारोप	७८६	४	२६७	पत्र. प. २६ सू ३१२
आभिनिवेशिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	कर्म. भा. ४ गा. ५१, ध अधि २ श्लो. २२ टी पृ ३६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ आभियोगिक देव	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू. ४
आभियोगिकी भावना	१४१	१	१०४	उत्त अ ३६ गा २६२
आभियोगिकी भावना के पाँच प्रकार	४०४	१	४३१	उत्त अ. ३६ गा २६२, प्रव. द्वा. ७३ गा. ६४४
आभोग निवर्तित क्रोध	१६४	१	१२३	अ ४ उ १ सू २४६
२ आभोग वकुश	३६८	१	३८३	ठा ४ उ ३ सू ४४४
आभ्यन्तर तप के छः भेद	४७८	२	८६	उत्त सू २०, उत्त अ ३० गा ३०, प्रव द्वा. ६ गा. २७१, ठा ६ उ ३ सू. ४११
आभ्यन्तरपरिग्रहके १४ भेद	८४०	५	३३	वृ उ. १ गा. ८३१
आमशौपथि लब्धि	६५४	६	२६०	प्रव द्वा २७० गा. १४६२
३ आमनायार्थ वाचकाचार्य	३४१	१	३५२	ध.अधि ३१लो ४६टी पृ. १२८
आयंविल के आठ आगार	५८८	३	४१	भाव. ह. अ ६ पृ. ८४६, प्रव द्वा ४ गा २०४
आयंविल पञ्चखाण	७०५	३	३७६	प्रव द्वा. ४ गा २०६, भाव ह अ. ६ पृ ८४६, पत्रा ५ गा. ६
आयंविल वर्द्धमान तप	६८६	३	३४६	अत. व ८ अ १०
४ आयत संस्थान	४६६	२	६६	भ न २४ उ ३ सू ७०४, पत्र. प. १ सू ४
आयुर्कर्म और उसके भेद	५६०	३	६५	कर्म. भा १ गा. २३. पत्रप २३ सू २६३, तत्त्वार्थ अध्या ८ सू ११
आयुर्कर्म का ४ अनुभाव	५६०	३	६५	पत्र. प २३ सू २६२
आयुर्कर्म के बंध के कारण	५६०	३	६५	भ. ग. = उ. ६ सू. ३४१

१ दान क समान सेवा करने वाले देव । २ गरीब और उपकरण की विभूषा करने वाला मातु । ३ उत्तम और अपवाद रूप आमनाय का अर्थ करने वाला आचार्य । ४ दहे सरीखा लम्बा आकार

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आयुकी व्याख्या और भेद	३०	१ २१	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू. ५२, भ. श २० उ. १० सू. ६८५
आयु के दो प्रकार	५६०	३ ६६	तत्त्वार्थ (सु) अध्या २ सू ५२,
आयु परिणाम नौ	६३६	३ २०४	ठा ६ उ ३ सू. ६८६
आयु बन्ध छः प्रकार का	४७३	२ ७६	भ श ६ उ ८ सू. २५०, ठा. ६ उ. ३ सू ५३६
आयुबन्ध नैरयिकों का	५६०	२ ३४१	भ श ३० उ. १ सू. ८२५
आयु भेद सात	५३१	२ २६६	ठा. ७ उ ३ सू ५६१
आयुर्वेद आठ	६००	३ ११३	ठा ८ उ ३ सू. ६११
आरंभ	४६	१ २६	ठा० २ उ० १ सू० ६४
आरंभ	६४	१ ६७	ठा० ३ उ० १ सू० १२४
आरंभ परिग्रह को छोड़ने	४६	१ २६	ठा. २ उ १ सू. ६५
पर ११ बोलों की प्राप्ति			
आरंभ परिग्रह छोड़े बिना	७७३	४ १७	ठा २ उ. १ सू ६४
११ बातों की प्राप्ति नहीं होती			
धारण और अच्युत	८०८	४ ३२३	पत्र० प० २ सू० ५३
देवलोक का वर्णन			
आरभटा प्रतिलेखना	४४६	२ ५३	ठा. ६ उ. ३ सू. ५०३, उक्त. अ. २६ गा. २६
आरम्भिकी क्रिया	२६३	१ २७८	ठा. २ उ. १ सू. ६०, ठा. ५ उ २ सू ४१६, पत्र प २२ सू २८४
आराधना तीन	८६	१ ६२	ठा ३ उ ४ सू. १६५
आरे छः अवसर्पिणी	४३०	२ २६	जं. वक्त. २ सू १६-३६, ठा ६ उ ३ सू ४६२, भ. श. ७ उ. ६
काल के			सू २८७-२८८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भारे छः उत्सर्पिणी काल के	४३१	२	३५	जवज २ सू. ३७-४०, ठा १३३ सू. ४६२, विशेषे गा २७०८-१०
आरोग्य सुख	७६६	३	४५३	ठा. १० उ. ३ सू० ७३७
आरोपणा प्रायश्चित्त	३२५	१	३३४	ठा ५ उ २ सू ४३३
आरोपणा के पाँच भेद	३२६	१	३३४	ठा ५ उ. २ सू. ४३३, सम २८
आरोपणा प्रायश्चित्त २४५ (ख)	१	२२३		ठा ४ उ १ सू. २६३
आर्जव	३५०	१	३६५	ठा ५ उ १ सू. ३६६, प्रव द्वा ६६ गा ६६४, ध. अधि ३ ओ. ४६ टी पृ १२७
आर्जव	६६१	३	२३३	मव गा २३, सम. १०, गा. भा. १ प्रक. ८
आर्त्तध्यान	२१५	१	१६४	ठा ४ उ. १ सू २४७, सम ४, दग अ १ नि. गा ४८ टी
आर्त्तध्यान के चार प्रकार	२१६	१	१६६	ठा ६ उ १ सू २४७, मान ह. अ ४ ध्यानशतक गा ६-६ पृ ५८४
आर्त्तध्यान के चार लिंग	२१७	१	१६८	ठा ४ उ. १ सू. २४७, भाग २६ उ ७ सू ८०३, प्राव. ह. अ. ४ ध्यानशतक गा. १५ पृ. ६८७
आर्य (ऋद्धि प्राप्त) के छः भेद	४३८	२	४२	ठा ६ उ ३ सू ४६१, पत्र प. १ सू ३५
आर्य (अऋद्धि प्राप्त) के छः भेद	६५३	३	२१६	पत्र प १ सू ३७
आर्य के चारह भेद	५८५	४	२६६	पृ उ. १ नि गा ३२६३
आर्य क्षेत्र साढ़े पचीस	६४२	६	२२३	प्रतद्वा २७५ गा. १५८७-१६६
आर्यगद्ग निहव का मत	५६१	२	३६६	पत्र प १ सू. ३७, पृ. उ १ नि. गा. ३२६३ विशे. गा. २४२६-२४५०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आर्याषाढ़ाचार्यकीकथा ८२१	४	४६६		नवपद गा १८टी. (सम्यक्त्वद्वार)
सम्यक्त्व के स्थिरीकरण				
नामक आचार के लिये				
आलोचना करने योग्य	६७०	३	२५८	म श २५ उ ७ सू. ७६६,
साधु के दस गुण				ठा १० उ ३ सू. ७३३
आलोचना के दस दोष	६७२	३	२५६	म. श. २५ उ. ७ सू. ७६६,
				ठा १० उ ३ सू. ७३३
आलोचना देने योग्य	६७१	३	२५६	म. श. २५ उ. ७ सू. ७६६,
साधु के दस गुण				ठा १० उ. ३ सू. ७३३
आलोचना पर ८ गाथाएं ६६४	७	२४६		
आलोचना करने योग्य	६७०	३	२५८	म श २५ उ ७ सू ७६६,
साधु के दस गुण				ठा १० उ ३ सू ७३३
आलोचना करने वाले के	५७६	३	१६	ठा ८ उ ३ सू ६०४, म. श. २५
आठ गुण				उ. ७ सू. ७६६
आलोचना देने वाले साधु ५७५	३	१५		ठा ८ उ. ३ सू ६०४, म. श. २५
के आठ गुण				उ ७ सू ७६६
आलोचना माया की करने	५७७	३	१६	ठा ८ उ ३ सू ६०७
के आठ स्थान				
आलोचना माया की न	५७८	३	१८	ठा ८ उ ३ सू ६०७
करने के आठ स्थान				
आवलिक्रा	५५१	२	२६२	जं. वक्त २ सू १८
आवश्यक के छः भेद	४७६	२	६०	भाव. द.
आवश्यक के छः भेदों का	४७६	२	६३	भाव. द.
पारस्परिक सम्बन्ध				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आवश्यक के दस नाम	६८७	३	३५०	विशे.गा.८७२-८७६, अनुसू २८
आवश्यककी(आवस्सिया)समाचारी	६६४	३	२५०	म.श.२५३ उ.सू.८०१, डा. १०३३ सू. ७४६, उ.अ. २६ गा. २, प्रव. द्वा. १०१ गा. ७६०
आविर्भाव	४४	१	२७	न्याय को.
आवीचि मरण	८७६	५	३८२	सम. १७, प्रव. द्वा. १४७ गा. १००६
आशंसा प्रयोग दस	६६७	३	२५३	डा. १० उ. ३ सू. ७४६
आशातनाएं तेतीस	६७५	७	६१	सम. ३३, दशा. द. ३, प्राव. ह. म. ४ पृ. ७२६
आशीविष लब्धि	६५४	६	२६३	प्रव. द्वा. २७० गा. १४६३
आश्चर्य (अच्छेरा) दस	६८१	३	२७६	डा. १० उ. ३. सू. ७७७, प्रव. द्वा. १३८ गा. ८८४-८८६
आभव और संवर	४६७	२	२०५	
आश्रव के वयालीस भेद	६६२	७	१४६	नव. गा. १६
आश्रव के वीस भेद	६०७	६	२५	सम. ६, प्रध. नि. गा. २ पृ. ३, डा. ५ उ. २ सू. ४१८, ४२७, डा. १० उ. ३ सू. ७०६
आश्रव, क्रिया, वेदना और निर्जरा के १६ भांगे	८६८	५	१६८	म. श. १६ उ. ४ सू. ६४८
आश्रव तत्त्व के वीस और ६३३ वयालीस भेद		३	१८३	नव. गा. १६, सम. ४, प्रध. नि. गा. २ पृ. ३ टी., डा. ५ उ. २ सू. ४१८, ४२७ डा. १० उ. ३ सू. ७०६
आश्रव द्वार प्रतिक्रमण	३२६	१	३३८	डा. ५ उ. ३ सू. ४६७, प्राव. ह. म. ४ गा. १२४०-१२४१
आश्रव पाँच	२८६	१	२६८	डा. ५ उ. २ सू. ४१८, सम. ६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आश्रव भावना	८१२	४	३६७	शा भ. १ प्रक. ७, भावना, ज्ञान- प्रक. २, प्रव. ० द्वा. ६७ गा. ५७२, तत्त्वार्थ. अध्या. ६ सू. ७ यो, रा. यो.
आसन और उसके प्रकार	६०१	३	११५	हठ, पी. प.,
आसन प्राणायाम के	५५६	२	३०४	उत्त. प्र. ३६ गा. २६४
आसुरी भावना	१४१	१	१०४	उत्त. प्र. ३६ गा. २६४, प्रव. द्वा. ७३ गा. ६४५
आसुरी भावना के ५ भेद	४०५	१	४३१	ध. अधि. २ श्लो. २२ टी पृ ४३
आस्तिक्य	२८३	१	२६४	ठा. २ उ. २ सू. ७६
आहारक	८	१	७	पत्र. प. २८ व. २
आहारक अनाहारक के तेरह द्वार	८१७	४	३६८	भ. श. २५ उ. १ सू. ७१६, द्रव्य. लो. स. ३ पृ ३५८, कर्म. भा. ४ गा. २४
आहारक काययोग	५४७	२	२८७	कर्म. भा ४ गा. १४
आहारक मार्गणा के भेद	८४६	५	६३	भ. श. २५ उ. १ सू. ७१६, द्रव्य. लो. स. ३ पृ ३५८, कर्म. भा ४ गा. २४
आहारक मिश्र काययोग	५४७	२	२८७	प्रव. द्वा. २७० गा. १४६४
आहारक लब्धि	६५४	६	२६६	पत्र. प. २१ सू. २६७, ठा ५
आहारक शरीर	३८६	१	४१४	उ. १ सू. ३६५, कर्म. भा. १ गा. ३३ कर्म. भा. १ गा. ३५, प्रव. द्वा. २१६ गा. १२७२
आहारक शरीर बन्धन नाम कर्म	३६०	१	४१६	पत्र. प २६ सू. ३३१, ठा ७
आहारक समुद्घात	५४८	२	२८६	उ ३ सू. ५८६, प्रव. द्वा. २३१ गा. १३११, द्रव्य लो. स. ३ पृ. १२४

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
आहार की गवेषणा के सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७गा. ५६७-५६८, ध. मधि. २ श्लो २२टी. पृ. ४०, पि नि. गा. ४०८-४०९, पि. वि. गा. ५८-५९, पचा १३गा १८-१९
आहार की गवेषणा के सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	प्रव. द्वा. ६७गा. ५६५-५६६, ध. मधि ३श्लो २२टी पृ. ३८, पिं नि. गा. ६२-६३, पि वि गा. ३-४, पंचा. १३ गा. ५-६
आहार के छः कारण	३३०	१	३४०	उत्त म. २६गा. ३०, ध मधि. ३ श्लो. २३टी. पृ. ५६, पिं. नि. गा ६६२
आहार करने के (साधुके) छः कारण	४८४	२	६८	पिं. नि. गा. ६६२, उत्त, म. २६ गा. ३२
आहार के ४७ दोष	१०००	७	२६५	पिं. नि. गा. ६६६
आहार तिर्यंच का	२६१	१	२४५	टा. ४ उ. ३ सू ३४०
आहार त्यागने के (साधु ४८५ के) छः कारण	४८५	२	६६	पि. नि गा ६६६, उत्त. म २६ गा ३४
आहार देवता का	२६३	१	२४६	टा० ४ उ० ३ सू ३४०
आहार नरक का	२६०	१	२४४	टा ४ उ ३ सू ३४०
आहार नारकी जीवोंका	५६०	२	३४०	म श १४ उ ६ सू ५१६
आहार पर्याप्ति	४७२	२	७७	पत्र. प १सू १२टी, म. ग. ३ उ १ सू १३०, प्रव. द्वा. २३२ गा १३१७, कर्म भा. १ गा ४६
आहार मनुष्य का	२६२	१	२४५	टा. ४ उ. ३ सू. ३४०
आहार संज्ञा	१४२	१	१०५	टा. ४ उ. ४ सू. ३४६, प्रव. द्वा १४५ गा. ६२३

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाणा
आहार संज्ञा	७१२ ३ ३८६	ठा १०३ ३ सू. ७५२, भग ७ उ ८ सू. २६६
आहार संज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४३ १ १०५	ठा ४ उ. ४ सू. ३५६, प्रव. द्वा १४५ गा ६२३ टी
आहार के ४२ दोष	६६० ७ १४६	पिं. नि गा. ६६६
इ		
इंगाल कर्म कर्मादान	८६० ५ १४४	उपा.अ १ सू. ७, भ श ८ उ ५ सू. ३३०, आव. ह अ ६ पृ. ८२८
इंगिनी मरण	८७६ ५ ३८४	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा १००७
इकतालीस प्रकृतियाँ	६८६ ७ १४६	कर्म भा ६ गा ५४-५५
उदीरणा विना उदय में आती हैं		
इकतीस उपमा साधु की	६६२ ७ ४	प्रग्न धर्मद्वार ५ सू. २६, उव. सू. १७
इकतीस गाथाएं सूयग-	६६३ ७ ८	सूय अ ४ उ १
हांग अ० ४ उ० १ की		
इकतीस गुण सिद्ध	६६१ ७ २	उत्त अ ३१ गा २०टी, प्रव द्वा २७६ गा १५६३-१५६४,
भगवान् के दो प्रकार से		सम ३१, आव ह अ ४ पृ. ६६२, आचा शु १ अ ५ उ ६ सू. १७०
इकावन उद्देशे आचा-	१००५ ७ २७१	सम ५१
रांग प्रथम श्रुत स्कन्धके		
इक्कीस कारणों से विद्य-	६१४ ६ ७१	विशे. गा. १६८३ टी.
मान पदार्थ नहीं जाना जाता		
इक्कीस गाथा उत्तराध्ययन	६१७ ६ १३०	उत्त अ. ३१
के इकतीसवें अध्ययन की		

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
इक्कीस गाथादशवैकालिक	६१६	६	१२६	दश अ. १०
के सभिकवु अध्ययन की				
इक्कीस गुण श्रावक के	६११	६	६१	प्रव द्वा २३६गा १३६६-६८, घ अघि १ श्लो. २० पृ २८ नं सू. २७ गा. ७१-७४ टी, प्राव ह गा ६४८ से ६४९
इक्कीस दृष्टान्त पारिणा-	६१५	६	७३	
मिकी बुद्धि के				
इक्कीस प्रकार का धोवण	६१२	६	६३	प्राचा शु २ अ १ उ. ७८ सू. ४१, ४३, पिं निगा १८-२१, दश अ. ५ उ. १ गा. ७५-७६
पानी				
इक्कीस प्रश्नोत्तर	६१८	६	१३३	
इक्कीस शबल दोष	६१३	६	६८	दशा द २, मम २१
इक्कीस श्रावक के गुण	६११	६	६१	प्रव द्वा. २३६गा १३६६-६८, घ अघि १ श्लो. २० पृ २८ भ श २५३ उ सू ८०१, डा १० उ ३ सू ७४६, उत अ २६ गा ३ प्रव. द्वा १०१ गा ७६०
इच्छाकार समाचारी	६६४	३	२४६	प्राव द्वा अ ६ पृ ८२५, डा ५ उ १ सू ३८६, उपा अ. १ सू ६, घ अघि २ श्लो २६ पृ ६७ न सू २७ गा ६५ टी.
इच्छापरिमाण व्रत	३००	१	२६०	
इच्छामहं की कथा औत्पत्ति	८४६	६	२८१	
की बुद्धि पर				
१ इच्छालोभिक	४४४	२	४८	डा ६ उ. ३ सू १०६, पृ (जी.) उ ६
इत्वरिक अनशन के छः भेद	४७७	२	८७	उत अ ३० गा ६ नं ११
इन्द्र	७२६	३	४१५	तत्तार्थ. अन्व्या. ४ सू १

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
इन्द्रभूति गणधर की जीव विषयक शंका-समाधान	७७५	४ २४	विशे. गा १५४६मे १६०४
इन्द्रस्थान की पाँच सभाएं	३६७	१ ४२१	ठा ५ उ ३ सू. ४७२
१ इन्द्र स्थावरकाय	४१२	१ ४३८	ठा. ५ उ १ सू. ३६३
इन्द्रिय का स्वरूप और उसके पाँच भेद	३६२	१ ४१८	पत्र प १५ सू १६१, ठा ५ उ ३ सू ४४३ टी, जै प्र.
इन्द्रिय की व्याख्या और भेद	२३	१ १७	पत्र प १५ उ १ सू १६१ टी, तत्त्वार्थ अध्या २ सू १६
इन्द्रिय परिणाम	७४६	३ ४२६	ठा सू ७१३, पत्र प १३ सू. १८२
इन्द्रिय पर्याप्ति	४७२	२ ७७	पत्र प १ सू १२ टी, भ श ३ उ १ सू १३०, कर्म भा १ गा ४६, प्रव द्वा २३२ गा १३१७
इन्द्रियमार्गणा और भेद	८४६	५ ५७	कर्म भा ४ गा १०
इन्द्रियां प्राण्यकारी चार	२१४	१ १६३	ठा. ४ उ ३ सू ३३६, रत्ना परि २ सू ५ टी.
इन्द्रियों का विषयपरिमाण	३६४	१ ४१६	पत्र प १५ उ १ सू १६५
इन्द्रियों के तेईस विषय और २४० विकार	६२६	६ १७५	ठा सू ४७, ३६०, ४४३, ५६६, पत्र प २३ उ २ सू २६३, पबोल १२, तत्त्वार्थ अध्या. २ सू. २१
इन्द्रियों के दो सौ चालीस विकार	६२६	६ १७५	ठा सू ४७, ३६०, ४४३, ५६६, पत्र.प. २३ उ २ सू २६३, पबोल १२, तत्त्वार्थ अध्या २ सू २१
इन्द्रियों के संस्थान	३६३	१ ४१६	पत्र प. १५ उ १ सू १६१, ठा. ५ उ. ३ सू ४४३ टी
इहलोक भय	५३३	२ २६८	ठा ७ उ ३ सू ५४६, सम. ७

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
------	---------------	--------

ई

ईर्यापथिक कर्म	७६० ३ ४४२	आचा अ. २३ १ति गा १=३
ईर्यापथिकी क्रिया	२६६ १ ३८३	ठा २ उ. १सू. ६०, ठा. ५ उ २ सू. ४१६, आच. ह अ. ४ पृ. ६१८
ईर्यासमिति	३२३ १ ३३१	सम ६, ठा. ६ उ. ३ सू. ४६५, उत्त. अ २४ गा २, ध अधि ३ श्लो ४७ टी पृ १३०
ईर्यासमिति की चार यतना	१८१ १ १३६	उत्त. अ २४ गा ६-८
ईर्यासमिति के चार कारण	१८१ १ १३५	उत्त. अ २४ गा. ४-८
ईशान देवलोक का वर्णन	८०८ ४ ३२०	पत्र. प. २ सू. ६३
ईपत्प्राग्भारा(सिद्धि) का स्वरूप	६०८ ३ १२६	ठा ८ उ ३ सू. ६८८, पत्र प २ सू. ५४, उत्त. अ. ३६ गा ४६ मे ६२
ईपत्प्राग्भारा पृथ्वी के आठ नाम	६०६ ३ १२६	पत्र प २ सू. ५४, ठा ८ उ ३ सू. ६४८
ईपत्प्राग्भारा पृथ्वी के चारह नाम	८१० ४ ३५२	सम. १२
ईहा (मतिज्ञान का भेद)	२०० १ १५८	ठा. ४ उ ४ सू. ३६४

उ

उक्खित्तविवेगेणं-आगार	५८८ ३ ४२	आच ह अ ६ पृ ८६६, प्र. २ द्वा. ४ गा २०४
आयंशिल का उच्चार (मलपरीक्षा) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	८४६ ६ २६४	न. सू. २७ गा. ६३ टी

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उच्चारपरिस्रवणखेलसिघाण	३२३	१ ३३१	सम ५, उक्त अ २४ गा. २,
जल्लपरिस्थापनिका समिति			ठा. ५ उ ३ सू ४५७, ध. अधि ३ श्लो. ४७टी. पृ १३०
उच्छ्वाससंकेत पञ्चखवाण	५८६	३ ४३	भाव ह अ. ६ नि गा. १५७८, प्रव. द्वा. ४ गा. २००
उज्जिभक्तकुमार की कथा	६१०	६ ३४	वि. अ २
उत्कटुका	३५८	१ ३७३	ठा. ५ उ. १ सू. ३६६ (टी.), ४००
उत्कटुकासनिक	३५७	१ ३७१	अ ५ उ. १ सू ३६६
उत्करिका भेद	७५०	३ ४३३	ठा १० उ. ३ सू. ७१३ टी., पञ्च प १३ सू १८५
उत्कालिक भ्रुत	८२२	५ ११	नं सू. ४४
उत्कीर्तनानुपूर्वी	७१७	३ ३६१	अनु. सू ७१
उत्तिप्तचरक	३५२	१ ३६७	ठा. ५ उ. १ सू. ३६६
उत्तम पुरुष चौपन	१००६	७ २७७	सम ६४
उत्तर गुण	५५	१ ३२	सूय. अ. १४ नि गा. १२६, पचा, ५ गा २ टी.
उत्तर प्राणायाम	५५६	२ ३०३	योग प्रका ५ श्लो ६
उत्तरमीमांसा दर्शन	४६७	२ १५४	
उत्तराध्ययनसूत्रके श्कीसर्वे	७८१	४ २५५	उक्त अ. २१ गा. १३-२६
अ० की अन्तिम १२ गाथाएं			
उत्तराध्ययनसूत्रके ग्यारहवें	८६३	५ १५५	उक्त अ ११ गा १५ से ३०
अ० की सोलह गाथाएं			
उत्तराध्ययनसूत्र के ग्यार-६७३	७ ५१	७ ५१	उक्त अ ११
हवें अ० की बत्तीस गाथाएं			

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उत्तराध्ययनसूत्र के चरण-	६१७	६	१३०	उत्त. म. ३१
विहिम्न० की २१ गाथाएं				
उत्तराध्ययन सूत्र के चौथे	८१६	४	४०६	उत्त. म. ४
अध्ययन की तेरह गाथाएं				
उत्तराध्ययन सूत्र के छठे	८६७	५	४१६	उत्त. म. ६
अध्ययन की १८ गाथाएं				
उत्तराध्ययन सूत्र के छठे	८६७	५	४८५	
अध्ययनकी १८मूलगाथाएं				
उत्तराध्ययन सूत्र के छत्तीस	२०४	१	१६३	
अ० का संक्षिप्त विषयवर्णन				
उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे	६०६	६	२६	उत्त. म. ३
अध्ययन की बीस गाथाएं				
उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें	६८४	७	१३३	उत्त. म. १०
अध्ययन की ३७ गाथाएं				
उत्तराध्ययनसूत्रकेपचीसवें	६६६	७	२५४	उत्त. म. २५
अ० की पैंतालीस गाथाएं				
उत्तराध्ययनसूत्रकेपन्द्रहवें	८६२	५	१५२	उत्त. म. १४
अ० की सोलह गाथाएं				
उत्तराध्ययनसूत्रकेपन्द्रहवें	८६२	५	४८०	
अ० की सोलह मूल गाथाएं				
उत्तराध्ययन सूत्रके पाँचवें	६७२	७	४६	उत्त. म. ६
अ० की बत्तीस गाथाएं				
उत्तराध्ययन सूत्र के बीसवें	८५४	५	१३५	उत्त. म. २० गा. ३८-४३
अ० की पन्द्रह गाथाएं				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाणा
उत्तराध्ययन सूत्र के चीसवें	८५४	५	४७७
अ० में से पन्द्रह मूल गाथाएं			
उत्पत्तिया बुद्धि	२०१	१	१५६ न.सू.२६,वा.४७४सू.३६४
उत्पत्तियाबुद्धि की २७कथा ६४६	६	२४२	क. सू. २७ गा. ६२-६५ टी.
उत्पन्न मिश्रिता सत्यामृषा भाषा	६६६	३	३७० वा. १० उ ३ सू. ७४१, पत्र प. ११ सू. १६५, घ. अधि ३ श्लो ४१टी पृ. १२२
उपन्न विगत मिश्रिता सत्यामृषा भाषा	६६६	३	३७० वा १० उ ३ सू ७४१, पत्र. प. ११ सू.१६५, घ. अधि ३ श्लो. ४१ टी पृ १२२
उत्पाद	६४	१	४५ तत्त्वार्थ. अध्या. ५ सू २६.
उत्पादना दोष सोलह आहार के	८६६	५	१६४ प्रव. द्वा ६७गा ५६७-५६८, घ. अधि ३ श्लो. २२टी.पृ ४०, पि नि गा. ४०८ ४०६,पचा. १३ गा १८-१६,पि.विगा ४८-४६
उत्पादनोपघात	६६८	३	२५४ वा १० उ.३ सू. ७२८
उत्पाद, व्यय, श्रौव्य रूप सत्त्व छहों द्रव्यों में	४२५	२	२२ आगम.
उत्सर्ग	४०	१	२५ घृगा ३१६, स्या. का ११टी.
उत्सर्ग सूत्र	७७८	४	२३६ घृ उ १ गा १२२१
उत्सर्पिणी काल	३३	१	२२ वा २ उ १ सू ७४
उत्सर्पिणी के छः आरे	४३१	२	३५ ज. वज २सू ३७-४०, वा ६ उ ३ सू. ४६२, विशेषे गा. २७०८-२७१०
उत्सेधांगुल	११८	१	८३ मनु. सू. १३३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उदधिकुमारोंकेदसअधिपति	७३७	३	४१६	भ सा ३ उ ८ सू १६६
उदय	२५३	१	२३७	कर्म. भा. २ गा. १ व्याख्या
उदयाधिकार कर्मप्रकृतियों	८४७	५	६४	कर्म. भा २ गा १३ से २२
का गुणस्थानों में				
उदायी राजा	६२४	३	१६३	ठा ६ उ. ३ सू ६६१
उदाहरण	३८०	१	३६७	न्याय दी. प्रका ३
उदितोदय राजा की पारि-	६१५	६	८१	न सू २७ गा. ७२, भाव ह
णामिकी बुद्धि की कथा				गा ६४६
उदीरणा	२५३	१	२३७	कर्म भा. २ गा १ व्याख्या
उदीरणाकरण	५६२	३	६५	कम्म. गा २
उदीरणाधिकार कर्म	८४७	५	६८	कर्म भा २ गा. २३-२४
प्रकृतियों का गुणस्थानों में				
उदीरणा बिना उदय में	६८६	७	१४६	कर्म भा ६ गा ४४-४५
आने वाली ४१ प्रकृतियां				
उद्दम दोष सोलह आहार के	८६५	५	१६१	प्रवद्वा ६७ गा ५६५-५६६, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पि नि. गा ६२-६३, पिं. वि गा. ३-४, पचा १३ गा. ५-६
उद्दमोपघात	६६८	३	२५४	ठा. १० उ ३ सू ७३८
१ उद्देशाचार्य	३४१	१	३५२	ध अधि ३ श्लो ६६ टी पृ १-८
उद्देशे इकावन आचारांग	१००५	७	२७१	सम ५१
प्रथम श्रुतस्कन्ध के				
उद्धार पल्योपम (सूक्ष्म,	१०८	१	७५	अनु. सु. १२८ प्रव द्वा. १५८
व्यावहारिक)				गा. १०१८ १०१९

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उद्धार सागरोपम	१०६	१ ७८	अनु सू १३८, प्रव द्वा १५६ गा १०२७-१०२८
उद्भिन्न दोष	८६५	५ १६३	प्रव द्वा ६७गा ५६६, अ अधि ३ श्लो. २२टी. पृ ३८, पि निगा ६३, पि वि गा ४, पचा १३ गा ६, कम्म गा २
उद्धर्तना करण	५६२	३ ६५	प्रव द्वा १८१गा १०८७-६०, पत्र० प २० सू २६३
उद्धर्तना नारकी जीवोंकी	५६०	२ ३२६	सम २६
उनचालीस कुल पर्वत	६८६	७ १४४	सूय. अ. ६
उनतीस गाथाएं महावीर-६५५	६	२६६	
स्तुति नामक सूयगडांग सूत्र के छठे अध्ययन की			
उनतीस पापश्रुत	६५६	६ ३०५	सम २६, उक्त. अ ३१गा १६ टी, आव ह अ ४ पृ ६६०
उनपचास भंग श्रावक के प्रत्याख्यान के	१००३	७ २६७	भ श ८ उ ५ सू ३२६
उनपचास भेद ७ स्वर्गों के	५४०	२ २७५	अनु सू. १२७ गा ५६, अ ७ उ ३ सू. ५५३
उन्नीसकथा ज्ञाताधर्मकथाकी	६००	५ ४२७	ज्ञा०
उन्नीस दोष कायोत्सर्ग के	८६६	५ ४२५	आव ह अ ५ गा १५४६-४७, प्रव द्वा ५ गा २४७-२६०, यो प्रमा ३ पृ २५०
उन्माद के छः बोल	४५७	२ ६०	अ ६ उ ३ सू ५०१
उन्मार्ग देशना	४०६	१ ४३३	उक्त. अ ३६ गा. २६५ टी, प्रव द्वा ७३ गा. ६४६
उपकरण १४ साधुओं के	८३३	५ २८	पंच, व गा ७७१-७७६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उपकरण द्रव्येन्द्रिय	२४	१	१७	तत्त्वार्थ. श्रव्या. २ सू. १७
उपकरण वक्रुश साधु	३६६	१	३८०	ठा ४ उ. ३ सू ४४४ टी, भ ग. २३ उ. ६ सू ७५१ टी.
उपकरणोत्पादनता विनय	२३५	१	२१६	दशा द ४
उपक्रमकीव्याख्या और भेद	४२७	२	२५	अनु सू. ७०
उपक्रमकीव्याख्या और भेद	२४६	१	२३४	ठा ४ उ. २ सू २६६
उपघात दस	६६८	३	२५४	ठा १० उ ३ सू. ७३८
उपघात निःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा. १० उ ३ सू. ७४१, पत्र. प. ११ सू. १६५, अग्रि ३ ग्लो ८१ टी. पृ १२२
उपदेश के योग्य आठ वार्ते	५८५	३	३६	आचा अ. ६ उ. ५ सू १६४
उपदेश राजमती का	७७१	४	१५	दग. अ. २
रहनेमि को				
उपदेश रुचि	६६३	३	३६२	उत्त अ २८ गा १६
उपदेश से सम्यक्त्व प्राप्ति	८२१	४	४३४	नवपद गा. १ ४ टी मय्यत्वा धिकार, ज्ञा अ १८
(चित्तातीपुत्र)				
१ उपधानाचार	५६८	३	६	ध. अग्रि १ ग्लो. १६ टी. पृ १८
उपनय	३८०	१	३६७	रत्ना परि. ३ सू ४६
उपनीत दोष	७२३	३	४१२	ठा १० उ. ३ सू ७४३
उपपात जन्म	६६	१	४७	तत्त्वार्थ. श्रव्या. २ सू ३०
उपपात सभा	३६७	१	४२१	ठा. ५ उ ३ सू. ४७२
२ उपवृंहण दर्शनाचार	५६६	३	८	पत्र. प १ सू ३७ गा १२८, उत्त. अ २८ गा. ३१

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उपभोग परिभोग परिमाण ६४३	६	२२५	उपा अ १ सू. ६, ध अधि २
व्रत में २६ बोलों की मर्यादा			श्लो ३४ टी पृ ८०, आ प्रति.
उपभोगपरिभोगपरिमाण १२८(क) १	१	६१	आव ह. अ ६ पृ ८२७
उपभोग परिभोग परिमाण ३०७ १	१	३०५	उपा अ १ सू. ७, प्रव द्वा. ६
व्रत के पाँच अतिचार			गा २८१
उपभोग परिभोग परिमाण ७६४ ४	४	२८३	आगम.
व्रत निश्चय और व्यवहार से			
उपभोगान्तराय	३८८ १	४११	कर्म भा. १ गा ५२, पत्र प. २३ सू. २६३
उपमा आठ अहिंसा की	६२२ ३	१५५	प्रश्न सवरद्वार १ सू २२
उपमाएं आठ संघ की	६२३ ३	१५६	न. पीठिका गा. ४-१७
उपमाएं इकतीस साधु की	६६२ ७	४	प्रश्न धर्मद्वार ५ सू २६, उव सू १७
उपमाएं बारह साधु की	८०५ ४	३०६	अनु. सू १५० गा. १३१
उपमा चार क्रोध की	१५६ १	१२०	{ टा. ४ उ. १ सू. २४६, ठा ४ उ २ सू २६३ टी, पत्र प १४ सू. १८८, कर्म. भा १ गा २०
उपमा चार मान की	१६० १	१२१	
उपमा चार माया की	१६१ १	१२१	
उपमा चार लोभ की	१६२ १	१२२	
उपमा दस संसारकी लक्षण ६७६	३	२६६	प्रश्न अधर्मद्वार ३ सू ११, उव सू २१
समुद्र से			
उपमान प्रमाण	२०२ १	१६१	अनु सू १४४. भ श ५ उ. ४ सू. १६३
उपमान संख्या के ४ प्रकार ६१६	३	१४२	अनु सू. १४६
उपमा बत्तीस शील की	६६४ ७	१५	प्रश्न. धर्मद्वार ४ सू २७
उपमा संख्या की व्याख्या २०३	१	१६१	अनु सू १६६ पृ २३१
और भेद			

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सम्बरदत्त कुमारकी कथा	६१०	६	४५	वि. अ. ७
उम्मीसे दोष	६६३	३	२४७	प्रव. द्वा. ६७ गा. ४६८ पृ १४८, पिं. नि. गा. ५२०, ध. अधि. ३ श्लो. २२टी पृ ४१, पचा १३ गा २६
उरपरिसर्प	४०६	१	४३६	पत्र. प १ सू ३६, उत्त अ ३६ गा १८०
उववाई (भौपपातिक) सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२१५	
उष्ण योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू ३३, ठा ३ उ १ सू १४०

ऊ

ऊनोदरी	४७६	२	८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा. ६ उ. ३ सू. ५११, उव. सू. १६, प्रव द्वा ६ गा २७०
ऊनोदरी के भेद	२१	१	१६	भ. श २५ उ. ७ सू. ८०२
ऊनोदरी तप के १४ भेद	६३३	३	१८६	उव सू. १६, भ श. २५ उ ७ सू ८०२
ऊर्ध्वता सामान्य	५६	१	४१	रत्ना. परि. ५ सू ५
ऊर्ध्व लोक	६५	१	४६	लोक भा. २ स. १२, भ. न. ११ उ १० सू ४२०

ऋ

ऋजुमति मनःपर्यष ज्ञान	१४	१	१२	ठा. २ उ १ सू ७१
ऋजुमति लब्धि	६५४	६	२६१	प्र. ठा २७० गा. १४६२
ऋजुसूत्र नय और उसके दो भेद	५६२	२	४१६	रत्ना परि. ७ सू २८, अनु सू. १५२ गा. १३८, अण्य. त अध्या. ६ श्लो. १४

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ऋज्वायता श्रेणी	५४४	२ २८३	ठा. ७ उ. ३ सू. ५८१, भ. सा. २५ उ ३ सू. ७३०
ऋतुएं छः	४३२	२ ४०	ठा. ६ उ ३ सू. ५२३ टी, वृ. हो.
ऋतुप्रमाण संवत्सर	४००	१ ४२६	ठा. ५ उ ३ सू. ४६०, प्रव. द्वि. १४२ गा. ६०१
ऋतु संवत्सर	४००	१ ४२७	
ऋद्धि के तीन भेद	६६	१ ७०	ठा. ३ उ ४ सू. २१४
ऋद्धि गौरव (गारव)	६८	१ ७०	ठा. ३ उ ४ सू. २१५
ऋद्धि प्राप्त आर्य के छः भेद	४३८	२ ४२	ठा. ६ उ १ सू. ४६१, पत्र प १ सू. ३७
ऋषभदेव का संक्षिप्त जीवन	८२०	४ ४१६	त्रि. ष. पर्व १
ऋषभदेव के अट्टाणवे पुत्र	८१२	४ ३८८	सूय. १ अ. २ उ १, त्रि. ष. पर्व १
(बोधिदुर्लभ भावना)			
ऋषभदेव भगवान् के १३ भव	८२०	४ ४०६	त्रि. ष. पर्व १
ऋषभनाराच संहनन	४७०	२ ७०	पत्र. प २३ सू. २६३, ठा. ६ उ ३ सू. ४६४, कर्म. भा. १ गा. ३८

ए

एक आत्मा	१	१ २	ठा. १ सू. २
एक गण से दूसरे गण में जाने के सात कारण	५१५	२ २४४	ठा. ७ उ ३ सू. ५८१
एक जम्बूद्वीप	४	१ २	ठा. १ सू. ५२, तत्त्वार्थ ग्रन्था ३
एकतः अनन्तक	४१८	१ ४४२	ठा. ५ उ ३ सू. ४६२
एकतः खा श्रेणी	५४४	२ २८३	ठा. ७ उ. ३ सू. ५८१, भ. सा. २५ उ ३ सू. ७३०
एकता और अनेकता का विचार छः द्रव्यों में	४२४	२ ७	आगम

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
एकतो वक्रा श्रेणी	५४४	२	२८३	ठा ७ उ ३ सू. ५८१, मज २६ उ ३ सू ७३०
एकत्व भावना	८१२	४	३६२, ३८१	शा भा. १ प्रक ४, भावना, ज्ञान प्रक. २, प्रव द्वा. ६७ गा ६७२, तत्त्वार्थ ग्रन्था. ६ सू ७
एकत्व वितर्क अविचारी शुक्लध्यान	२२५	१	२१०	श्राव ह अ ४ ध्यानगतकगा ७६-८०, ठा ४ उ १ सू २४७, ज्ञान प्रक ४२, क भा २ श्लो. २१४
एक दण्ड	३	१	२	ठा. १ सू ३
एक परमाणु	६	१	३	ठा. १ सू ४४
एक प्रदेश	५	१	३	ठा. १ सू. ४५
एकमासिकी भिक्षुपडिमा ७६५	४	२८५		मम. १२, म. श २ उ. १ सू ६३ टी, दशा द ७
एकगत्रिकी वारहवीं भिक्षु पडिमा	७६५	४	२६१	मम. १२, म. श. २ उ. १ सू. ६३ टी, दशा द ७
एकल विहार प्रतिमा के आठ स्थान (गुण)	५८६	३	३६	ठा ८ उ ३ सू ६६४
एकवादी	५६१	३	६०	ठा ८ उ. ३ सू ६०७
एक समकित	२	१	२	प्रव. द्वा १४६ गा ६४२, पंचा. १ गा ३, तत्त्वार्थ. ग्रन्था १ पत्र प १ सू ७ टी.
एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं ?	८४६	५	१२०	पत्र. प. १ सू. ७
एकामर्षा प्रमादप्रतिलेखना ५२१	२	२५१		उत्त अ २६ गा २७
एकार्थिक दोष	७२३	३	४११	ठा १० उ ३ सू ७४३

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
एकार्थिकानुयोग	७१८	३ ३६३	ठा १० उ. ३ सू. ७२७
एकासन के आठ आगार	५८७	३ ४०	आव ह अ ६ पृ ८६२, प्रव द्वा. ४ गा २०३
एकासन वियासण का पञ्चक्खाण	७०५	३ ३७८	प्रव द्वा ४ गा २०२-२०३ टी, पचा ६ गा ८, आव. ह. अ ६ पृ ८६२
एकेन्द्रियजीवों का समारंभ २६८ न करने से होने वाला पाँच प्रकार का संयम	१	२८५	ठा ४ उ २ सू ४२६, ४३०
एकेन्द्रिय जीवोंके समारंभ २६७ से होने वाला पाँच असंयम	१	२८४	ठा ४ उ २ सू ४२६ ४३०
एगहाण का पञ्चक्खाण	७०५	३ ३७८	प्रव द्वा ४ गा २०२, २०४ टी, आव ह. अ ६ पृ ८६३, पचा. ६ गा ६
एगहाण के सात आगार	५१७	२ २४७	आव ह अ ६ पृ ८६३, प्रव द्वा ४ गा २०४
एवंभूत नय	५६२	२ ४१८	अनु सू. १६२ गा १३६, रत्ता. परि. ७ सू ४०
एषणा समिति	३२३	१ ३३१	सम. ६, ठा ५ उ. ३ सू ४६७, उत्त अ. २४ गा. २, घ. अधि. ३ श्लो. ४७ टी पृ. १३०
एषणा समिति के भेद	६३	१ ६६	उत्त. अ २४ गा. ११-१२
एषणोपघात	६६८	३ २५४	ठा १० उ ३ सू. ७३८
ए			
ऐरवत क्षेत्र के आगामी चौबीस तीर्थंकर	६३१	६ १६७	सम १६८, प्रव द्वा. ७ गा. ३००-३०३

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा अंजूकुमारी की	६१०	६	५०	वि० अ० १०
कथा अतिमुक्त कुमार की	७७६	४	१६८	अत० व० ६ अ० १५
कथा अनाथी मुनि की	८५४	५	१३०	उत्त० अ० २०
कथा अभगसेन चोर की	६१०	६	३७	वि० अ० ३
कथा अभयकुमार की	६१५	६	७४	न० सू० २७ गा० ७२, आव० ह० नि० गा० ६४६
पारिणामिकी बुद्धि पर कथा अमात्य (मंत्रा) की	६१५	६	८५	त्रि० प० पर्व० ६, न० सू० २७ गा ७२, आव० ह० नि० गा० ६४६
पारिणामिकी बुद्धि पर कथा अमात्य पुत्र की	६१५	६	६०	उत्त० अ० १३ टी०, आव० ह० नि० गा० ६४०, न० सू० २७ गा० ७३
पारिणामिकी बुद्धि पर कथा अर्जुनमाला की	७७६	४	१६६	अत० व० ६ अ० ३
कथा अर्थशास्त्र की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२८०	न० सू० २७ गा० ६५ टी०
कथा अश्वों की	६००	५	४६६	ज्ञा० अ० १७
कथा अँवले की पारिणामिकी बुद्धि विषयक	६१५	६	११३	न० सू० २७ गा० ७४, आव० ह० नि० गा० ६५१
कथा आर्यापादु आचार्य की स्थिरीकरण पर	८२१	४	४६६	नवपद० मन्मथत्वाधिवार गा० १८ टी०
कथा इक्कीस पारिणामिकी बुद्धि की	६१५	६	७३	न० सू० २७ गा० ७१-७४, आव० ह० नि० गा० ६४८-६५१
कथा इच्छामहं की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२८१	न० सू० २७ गा० ६५ टी०
कथा उच्चार (मल परीक्षा) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६४	न० सू० २७ गा० ६३ टी०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा उज्ज्वल कुमार की	६१०	६	३४	वि० अ० २
कथा उदितोदय राजा की	६१५	६	८१	न० सू० २७ गा० ७२, आव०
पारिणामिकी बुद्धि पर				ह० नि० गा० ६४६
कथा उन्नीस ज्ञाताधर्म-	६००	५	४२७	
कथांग सूत्र की				
कथा उम्बरदत्त कुमारकी	६१०	६	४५	वि० अ० ७
कथा एर्वता कुमार की	७७६	४	१६८	अत व ६ अ १४
कथा कछुए और शृगालकी	६००	५	४३७	ज्ञा० अ० ४
कथा कमलामेला की भाव	७८०	४	२५०	आव० ह० नि० गा० १३४, वृ०
अननुयोग पर				नि० गा० १७२ पीटिका
कथा काक की औत्पत्ति-	६४६	६	२६३	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
की बुद्धि पर				
कथा काल सेठ की पारि-	६१५	६	७८	न० सू० २७ गा० ७२, आव०
णामिकी बुद्धि पर				ह० नि० गा० ६४६
कथा कुब्जा की क्षेत्र अन-	७८०	४	२३६	आव० ह० नि० गा० १३३,
नुयोग पर				वृ० नि० गा० १७१ पीटिका
कथा कुमार सेठ की पारि-	६१५	६	७६	न० सू० २७ गा० ७२, आव०
णामिकी बुद्धि पर				ह० नि० गा० ६४६
कथा कुशध्वज राजा की	४२१	४	४५५	नवपद गा० १८ टी० मन्म-
कांचा दोष पर				क्त्वाविकार
कथा कृष्ण की अपरकङ्का	६००	५	४६६	ज्ञा० अ० १६
गमन सम्बन्धी				
कथा कोंकणदारक की	७८०	४	२४८	आव० ह० नि० गा० १३४, वृ०
भाव अननुयोग पर				नि० गा० १७२ पीटिका

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा क्षपक की पारिणा- मिकी बुद्धि पर	६१५	६	८८	न० सू० २७ गा० ७३, आव० ह० नि० गा० ६५०
कथा जुल्लक की औत्पत्ति- की बुद्धि पर	६४६	६	२६७	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा खुड्ग(गेंडा)कीपारि- णामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११६	न० सू० २७ गा० ७४, आव० ह० नि० गा० ६५१
कथा खुड्ग(अंगूठी) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२५८	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा गजसुकुमार की कथा गर्हा पर	७७६	४	१६३	अत० व० ३ अ० ८ आव ह अ.४ नि गा.१२४२
कथा गाय और वछड़े की द्रव्य अननुयोग पर	७८०	४	२३६	आव.ह नि.गा १३३, वृ. गा. १७१ पीटिका०
कथा गेंडे की पारिणामि- की बुद्धि पर	६१५	६	११६	न सू. २७ गा. ७४, आव ह. नि० गा० ६५१
कथागोल्लक-लाखकीगोली- की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६६	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा ग्रामीण की वचन अननुयोग पर	७८०	४	२४२	आव. ह नि. गा. १३३, वृ. नि० गा० १७१ पीटिका
कथा घयण (भांड) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६५	न स. २७ गा. ६३ टी.
कथा चण्डकौशिक सर्प की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११४	त्रि. प. पर्व १०, न. स ३० गा. ७४, आव. ह. नि. गा ६५१
कथा चन्द्रमा की	६००	५	४५६	ज्ञा. अ १०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा चरणाहत की पारि- णामिकी बुद्धि पर	६१५	६ ११२	नं.सू.२७गा.७४,आव.ह नि. गा ६५१
कथा चाणक्य की पारि- णामिकी बुद्धि पर	६१५	६ ६४	न.सू.२७ गा ७३,आव.ह नि. गा. ६५०
कथा चारपुत्रवधुओं की	६००	५ ४४२	ज्ञा अ ७
कथा चिलातीपुत्र की उप- देश से सम्यक्त्व प्राप्ति पर	८२१	४ ४३४	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वा- विकार, ज्ञा अ. ८
कथा चेटक निधान की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २७६	न सू. २७ गा. ६५ टी.
कथा चौदह रोहक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २४३	न सू २७ गा ६४ टी.
कथा जिनदत्त और सागरदत्त की	६००	५ ४३६	ज्ञा अ. ३
कथा जिनदास कुमार की	६१०	६ ५६	वि अ १५
कथा जिनपाल जिनरत्नकी	६००	५ ४५३	ज्ञा. अ ६
कथा तीन	६७	१ ६६	ठा ३ उ ३ सू १८८
कथा तुम्हे की	६००	५ ४४१	ज्ञा अ ६
कथा तेतलीपुत्र की	६००	५ ४६२	ज्ञा अ. १४
कथा तेरह सम्यक्त्व की	८२१	४ ४२२	नवपद गा १८-१८
कथा दस दुःखविपाककी	६१०	६ २६५	वि अ १ मे १०
कथा दस सुख विपाककी	६१०	६ ५३	वि. अ ११ से २०
कथा दावद्रव वृत्त की	६००	५ ४५६	ज्ञा. अ. ११
कथा दुर्गन्धा की जुगुप्सा दोष पर	८२१	४ ४५८	नवपद. गा. १८ टी. नम्यक्त्वा- विकार

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा देवदत्ता रानी की	६१०	६	४७	वि. अ. ६
कथा देवी पुष्पवती की	६१५	६	८०	न. सू. २७ गा. ७२, भाव. ह. नि. गा. ६४६
पारिणामिकी बुद्धि पर				
कथा धनदत्त की पारि-	६१५	६	८३	न. सू. २७ गा. ७२, ज्ञा. अ. १८, भाव. ह. नि. गा. ६४६
णामिकी बुद्धि पर				
कथा धनपति कुमार की	६१०	६	५६	नि. अ. १६
कथा धन सार्थवाह की	८२१	४	४४६	नवपद. गा. १६टी सम्यक्त्वा-
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये				धिकार
कथा धन्नाकुमार की	७७६	४	२०४	अणु व. ३ अ. १
कथा धन्ना सार्थवाह और	६००	५	४३४	ज्ञा. अ. २
विजय चोर की				
कथा नकुल की भाव	७८०	४	२४६	भाव. ह. नि. गा. १३६, वृ. नि. गा. १७२ पीटिका
अननुयोग पर				
कथा नन्द मणियार की	८२१	४	४४४	नवपद. गा. १५, ज्ञा. अ. १३
कथा नन्द मणियार की	६००	५	४६०	ज्ञा. अ. १३
कथा नन्दी फल की	६००	५	४६४	ज्ञा. अ. १५
कथा नन्दीवर्धनकुमार की	६१०	६	४३	वि. अ. ६
कथा नन्दीपेण साधु की	६१५	६	८२	न. सू. २७ गा. ७२, भाव. ह. नि. गा. ६४६
पारिणामिकी बुद्धि पर				
कथा नाणक की औत्प-	६४६	६	२७५	न. सू. २७ गा. ६४ टी.
त्तिकी बुद्धि पर				
कथा निन्दा पर	५७६	३	२८	भाव. ह. अ. ४ नि. गा. १२४२
कथा निवृत्ति पर	५७६	३	२६	भाव. ह. अ. ४ नि. गा. १२४२

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाणा
कथा पट की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २६२	न सू. २७ गा. ६३ टी
कथा पणित की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २५६	न सू. २७ गा. ६३ टी
कथा पति की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २६६	न सू. २७ गा. ६३ टी
कथा परदेशी राजा की	७७७	४ २१७	रा
कथा परिहरणा पर	५७६	३ २४	आव.ह.अ.४नि. गा. १२८२
कथा पुंढरीक और कुंडरीक की	६००	५ ४७२	ज्ञा.अ. १६
कथा पुत्र की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २७१	न सू. २७ गा. ६३ टी.
कथा प्रतिक्रमण पर	५७६	३ २२	आव.ह.अ.४नि. गा. १२४२
कथा प्रतिचरण पर	५७६	३ २३	आव.ह.अ.४नि. गा. १२८२
कथा वधिरोल्लाप की वचन अननुयोग पर	७८०	४ २४१	आव.ह.नि. गा. १३३, वृ.नि. गा. १७१ पीठिका
कथा वारह अननुयोग की	७८०	४ २३८	आव.ह.नि. गा. १३२, १३८, वृ.नि. गा. १७१-१७२ पीठिका
कथा वीस विपाक सूत्र की	६१०	६ २६	वि
कथा बृहस्पतिदत्तकुमार की	६१०	६ ४१	वि.अ. ५
कथा भद्रनन्दीकुमार की	६१०	६ ५८	वि.अ. १२
कथा भद्रनन्दीकुमार की	६१०	६ ६०	वि.अ. १८
कथा भरतशिला की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २४३	न सू. २७ गा. ६४ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा भिक्षुकी की औत्प- त्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७६	न. सू. २७ गा. ६४ टी
कथा मणि की पारि- णामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११३	न. सू. २७ गा. ७६, भावद नि गा. ६६१
कथा मधुसिक्थ की औत्प- त्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७२	न. सू. २७ गा. ६४ टी
कथा मयूराण्ड और सार्थ वाह की शंका दोष के लिये	८२१	४	४५३	नवपद गा. १८ टी. सम्यक्त्वापि- कार, जा अ ३
कथामल्लिनाथभगवान् की	६००	५	४४४	जा अ ८
कथा महाचन्द्रकुमार की	६१०	६	६०	वि अ १६
कथा महाबलकुमार की	६१०	६	५६	वि. अ १७
कथा महेश्वरदत्त वणिक् की विचिकित्सादोष के लिये	४२१	४	४५६	नवपद गा. १८ टी. सम्यक्त्वा- विकार
कथा मार्गकी औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६७	न. सू. २७ गा. ६३ टी.
कथा मुद्रिका की औत्प- त्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७२	न. सू. २७ गा. ६४ टी
कथा मुनि की स्वाध्याय विषयक काल अननुयोग पर	७८०	४	२४०	आन. द. गा. १३३, वृ. नि गा १७१ पीठिका
कथा मृगापुत्र की	६१०	६	२६	वि अ १
कथा ज्ञेयकुमार की	६००	५	४२६	जा अ १
कथा राजमती रहनेमि की	७७१	४	१३	द. गा अ २ टी
कथा रोहक की औत्प- त्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२४३	न. सू. २७ गा. ६४ टी

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
कथा वज्रस्वामी की पारि- णामिकी बुद्धि पर	६१५	६	१०६	आवह गा ६५०, न सू २७ गा ७३
कथा वज्रस्वामी की वात्सल्य पर	८२१	४	४८१	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वा- धिकार
कथा वरदत्तकुमार की	६१०	६	६०	वि अ २०
कथा वारणा पर	५७६	३	२५	आवह अ ४ नि गा १२४२
कथा विष्णुकुमार की प्रभावना पर	८२१	४	४८५	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा वृत्त की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२५७	न सू २७ गा ६३ टी
कथा शकटकुमार की	६१०	६	३६	वि अ ४
कथा शतसहस्र की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२८२	न सू २७ गा ६५ टी
कथा शम्भ के साहस की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५२	आवह गा १३४, वृ नि गा १७२ पीठिका
कथा शरट (गिरगिट) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६२	न सू २७ गा ६३ टी
कथा शिक्षा की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७६	न सू २७ गा ६५ टी
कथा शुद्धि पर	५७६	३	३६	आवह अ ४ नि गा १२४२
कथा शैलक राजर्षि की	६००	५	४३८	ज्ञा. अ ४
कथा श्रावक भार्या की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	८४	न सू २७ गा ७२, आवह निगा. ६४६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा श्रावक भार्या की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४५	श्राव. ह. नि. गा. १३४, वृ. नि. गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेणिक की उपवृंहणा पर	८२१	४	४६५	नवपद गा. १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा श्रेणिक के कोप की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५३	श्राव. ह. नि. गा. १३४, वृ. नि. गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेयांस कुमार की सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये	८२१	४	४२३	नवपद. गा. १२८
कथा सती कुन्ती की	८७५	५	३४६	ज्ञा. अ. १६
कथा सती कौशल्या की	८७५	५	२६८	त्रि. प. पर्व ७
कथा सती चन्दनवाला (वसुमती) की	८७५	५	१६७	श्राव. ह. नि. गा. १२०-४२१ त्रि. प. पर्व १०, चन्दन
कथा सती दमयन्ती की	८७५	५	३५२	पंच प्र., भरत. गा. ८, त्रि. प. पर्व ८ सू. ३
कथा सती द्रौपदी की	८७५	५	२७५	ज्ञा. अ. १६, त्रि. प. पर्व ८
कथा सती पद्मावती की	८७५	५	३६६	श्राव. ह. नि. गा. १३११ भाष्य गा. २०४-२०६
कथा सती पुष्पचूला की	८७५	५	३६४	श्राव. ह. नि. गा. १२८६
कथा सती प्रभावती की	८७५	५	३६५	श्राव. ह. नि. गा. १२८४
कथा सती ब्राह्मी की	८७५	५	१८५	श्राव. ह. नि. गा. १६६, त्रि. प. पर्व १, २
कथा सती मृगावती की	८७५	५	३०३	श्राव. ह. नि. गा. १०४८, दश. अ. १ नि. गा. ७६
कथा सती राजमती की	८७५	५	२४६	दश. अ. २, त्रि. प. पर्व ८, उज. अ. २२, राज

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा सती शिवा की	८७५	५	३४६	आव ह नि गा १२८४, भरत. गा. १०
कथा सती सीता की	८७५	५	३२१	त्रि ष पर्व ७
कथा सती सुन्दरी की	८७५	५	१६०	आव ह नि गा १६६, ३४८, त्रि ष पर्व १, २
कथा सती सुभद्रा की	८७५	५	३४०	दश अ १ नि गा ७३-७४, भरत गा. ८
कथा सती सुलसा की	८७५	५	३१३	आव ह नि गा. १२८४, भरत गा. ८, डा ६ सू. ६६१ टी
कथा २७ औत्पत्तिकी बुद्धिकी ६४६	६	२४२		न सू. २७ गा ६२-६४ टी.
कथा सयहाल की पर- पाषह दोष पर	८२१	४	४६१	नवपद. गा १८ टी. सम्यक्त्वाधिकार
कथा साप्तपदिक व्रत की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आव ह नि गा १३४, वृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा सुंसुमा, चित्ताती पुत्रकी ६००	५	४७०		ज्ञा अ. १८
कथा सुजातकुमार की	६१०	६	५८	वि अ १३
कथा सुन्दरीनन्द की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	१०५	आव ह. नि गा ६४०, न. सू. २७ गा ७३
कथा सुवाहुकुमार की	६१०	६	५३	वि. अ ११
कथा सुबुद्धि मंत्री और जितशत्रु राजा की	६००	५	४५८	ज्ञा. अ १२
कथा सुवासव कुमार की	६१०	६	५०	वि अ १४
कथा ठ संठ (काल) की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	७८	न सू. २७ गा ७२, आव ह नि गा ६४६

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा श्रावक भार्या की भाव अननुयोग पर	७८०	४ २४५	आव. ह नि गा १३४, घृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेणिक की उपवृंहणा पर	८२१	४ ४६५	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा श्रेणिक के कोप की भाव अननुयोग पर	७८०	४ २५३	आव. ह. नि. गा. १३४, घृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेयांस कुमार की सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये	८२१	४ ४२३	नवपद गा १२८
कथा सती कुन्ती की	८७५	५ ३४६	ज्ञा अ. १६
कथा सती कौशल्या की	८७५	५ २६८	त्रि. प. पर्व ७
कथा सती चन्दनवाला (वसुमती) की	८७५	५ १६७	आव ह नि गा ६२०-६२१ त्रि प. पर्व १०, चन्दन
कथा सती दमयन्ती की	८७५	५ ३५२	पंच प्र, भरत गा. ८, त्रि प पर्व ८ सू. ३
कथा सती द्रौपदी की	८७५	५ २७५	ज्ञा अ. १६, त्रि प पर्व ८
कथा सती पद्मावती की	८७५	५ ३६६	आव ह नि गा १३११ भाष्यगा २०४-२०९
कथा सती पुष्पचूला की	८७५	५ ३६४	आव. ह. नि गा. १२८४
कथा सती प्रभावती की	८७५	५ ३६५	आव ह नि गा १२८४
कथा सती ब्राह्मी की	८७५	५ १८५	आव ह नि. गा. १६६, त्रि प पर्व १, २
कथा सती मृगावती की	८७५	५ ३०३	आव. ह नि गा १०४८, दश अ. १ नि गा. ७६
कथा सती राजपती की	८७५	५ २४६	दश. अ. २, त्रि प पर्व ८, उत अ २२, राज

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा सती शिवा की	८७५	५	३४६	आव ह नि गा १२८४, भरत. गा. १०
कथा सती सीता की	८७५	५	३२१	त्रि प पर्व ७
कथा सती सुन्दरी की	८७५	५	१६०	आव ह नि गा १६६, ३४८, त्रि प पर्व १, २
कथा सती सुभद्रा की	८७५	५	३४०	दश अ १ नि गा ७३-७४, भरत गा ८
कथा सती सुलसा की	८७५	५	३१३	आव ह नि गा १२८४, भरत गा ८, डा ६ सू ६६१ टी.
कथा २७ औत्पत्तिकी बुद्धि की ६४६	६	२४२		न सू २७ गा ६२ ६५ टी.
कथा सयडाल की पर- पापंड दोष पर	८२१	४	४६१	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा साप्तपदिक व्रत की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आव ह नि गा १३४, वृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा सुंसुमा, चित्ताती पुत्र की ६००	५	४७०		ज्ञा अ. १८
कथा सृजातकुमार की	६१०	६	५८	त्रि अ. १३
कथा सुन्दरीनन्द की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	१०५	आव ह नि गा ६५०, जं. सू. २७ गा. ७३
कथा सुवाहुकुमार की	६१०	६	५३	वि अ ११
कथा सुबुद्धि मंत्री और जितशत्रु राजा की	६००	५	४५८	ज्ञा अ. १२
कथा सुवासव कुमार की	६१०	६	५०	त्रि अ १४
कथा ठ संठ (काल) की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	७८	न सू. २७ गा ७२, आव ह नि गा ६४६

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा सौर्यदत्त की	६१०	६	४६	वि अ. ८
कथा स्तम्भ की औत्पत्तिकी	६४६	६	२६६	न. सू. २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर				
कथा स्तूप की पारिणामिकी	६१५	६	११७	उत्त (क)म १ टी, निर,
बुद्धि पर				न सू. २७ गा. ७४, आन ह नि. गा. ६५१
कथा स्त्री की औत्पत्तिकी	६४६	६	२६८	न. सू. २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर				
कथा स्थूलभद्र की	६१५	६	६५	आव ह गा. ६४०, न सू. २७
पारिणामिकी बुद्धि पर				गा. ७३
कथा हाथी की औत्पत्तिकी	६४६	६	२६४	न सू. २७ गा. ६३ टी.
बुद्धि पर				
कनकावलीतपयंत्रसहित	६८६	३	३३८	अत व. ८ अ. २
कन्दर्प	४०२	१	४२६	उत्त. अ. ३६ गा. २६१, प्रव द्वा. ७३ गा. ६४२
कन्दर्प भावना	१४१	१	१०४	उत्त. अ. ३६ गा. २६१
कन्दर्प भावना के पाँच	४०२	१	४२८	उत्त अ. ३६ गा. २६१, प्रव द्वा. ७३ गा. ६४२
प्रकार				
कप्पवडंसिया सूत्र का	३८४	१	४०१	निर.
संक्षिप्त विषय-घर्णन				
कप्पवडंसिया सूत्र के दस	७७७	४	२३३	
अध्ययनों का वर्णन				
कमलामेला का दृष्टान्त	७८०	४	२५०	आव ह नि. गा. १३५, घृ
भाव अननुयोग पर				नि. गा. १७२ पं.टिका

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कम्मिया (अभ्यास से उत्पन्न) बुद्धि	२०१	१ १५६	नेमू २६, ग. ४८.४ सू ३६४
कम्मिया बुद्धि के वारह दृष्टान्त	७६२	४ २७६	नसू २७ गा. ६७-६८, आबह नि गा. ६४७
करण आठ	५६२	३ ६४	कम्म गा २
करण की व्याख्या और उसके भेद	७८	१ ५५	आनम. गा १०६-१०७ टी विशेष. १२०२ से १२१८, प्रवद्वा. २२४ गा १३०२ टी., कर्म भा २ गा. २, आगम.
करण के तीन भेद	६४	१ ६७	ठा ३ उ १ सू १२४
करणसप्तति के सत्तर बोल	६३७	६ २१६	प्रवद्वा ६६-६७ गा. ५५२-५६६, ध अधि. ३ श्लो. ४७ पृ. १३०
करणानुयोग	७१८	३ ३६३	ठा. १० उ ३ सू ७२७
करिष्यति दान	७६८	३ ४५२	ठा १० उ ३ सू ७४५
करुण रस	६३६	३ २१०	अनु सू १२६ गा ७८-७९
करुणा भावना	२४६	१ २२७	भावना. (परिशिष्ट), क भा. २ श्लो ४६-४७, च.
कर्म अन्तराय के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५६०	३ ८१	पत्र प २३ सू. २६२-२६४, तत्त्वार्थ अध्या ८, कर्म भा गा ५२, भश ८ उ ६ सू. ३५
कर्म आठ	५६०	३ ४३	शि. गा १६०६-१६४४, तत्त्वार्थ अध्या ८ कर्म भा १, भ ग. ८ उ ६ सू. ३५१, भ ग १ उ ८, उत्त भ. ३ पत्र प २३, द्रव्यलो न १०

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कर्म आठ के क्षय से प्रकट होने वाले आठ गुण	५६७	३	४	अनु. सू. १२६, प्रव द्वा २७६ गा १५६३-१६६४, सम ३१
कर्म आयु के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५६०	३	६५	भ.श. उ. ६ सू. ३५१, पत्र प २३ सू. २६२-२६४, कर्म भा १ गा. २३, तत्त्वार्थ अध्या ८ विशे. गा. १८१३-१८१४, कर्म भा १ प्रस्तावना
कर्म और जीव का सम्बन्ध	५६०	३	५१	विशे. गा. १६३४-१६३६
कर्म और जीव का सम्बन्ध	५६०	३	४७	आव. र. गा. ८४१-८४२ पृ. ३४६
कर्मकाठिया तेरह	६८३	७	१२७	कर्म भा १ गा. १ तथा भूमिका
कर्म का लक्षण	५६०	३	४४	कर्म भा. २ गा. १ व्याख्या
कर्म की चार अवस्थाएं	२५३	१	२३७	विशे. गा १६२४-१६२८
कर्म की मूर्तता	५६०	३	४६	कर्म भा. १ गा १ व्याख्या
कर्म की व्याख्या और भेद	२७	१	१८	विशे. गा १६४२-१६४६
कर्म की शुभाशुभता	५६०	३	४६	विशे. गा १६११-१६१७.
कर्म की सिद्धि	५६०	३	४४	विशे. गा १६०६ मे १६४४
कर्म के विषय में गणधर	७७५	४	३१	आचा शु १ अ २ उ. १ टी. गा १८३-१८४
अग्निभूति का शंका समाधान				
कर्म के नामादि दस भेद	७६०	३	४४१	भ.श. उ. ६ सू. ३५१, पत्र प २३ सू. २६२-२६४, कर्म भा १ गा. ५२, तत्त्वार्थ अध्या ८
कर्म गोत्र के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५६०	३	७६	भ.श. उ. ६ सू. ३५१, पत्र प २३ सू. २६२-२६४, कर्म भा १ गा. ६, ४४, तत्त्वार्थ अध्या ८
कर्म ज्ञानावरणीय के भेद, अनुभाव, बन्ध के कारण	५६०	३	५५	

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कर्म तीन	७२ १ ५२	जी प्रति ३ उ १ सू १११, तन्दुल सू १४, १५ पृ ४०
कर्म दर्शनावरणीय के भेद, ५६० ३ ५६		कर्म भा १ गा १०-१२, ५४,
अनुभाव और बन्ध के कारण		भ. श. ८ उ ६ सू ३५१, पत्र प० २३ सू २६२-२६४,
कर्म नाम के भेद, अनु- ५६० ३ ६८		पत्र प. २३ सू २६२-२६४,
भाव और बन्ध के कारण		भ. श. ८ उ. ६ सू ३५१, जा भ ८ सू ६४, आव ह नि गा १७६-१८१, कर्म भा १ गा २३, २७, ३५ तत्त्वार्थ अध्या ८
कर्म प्रकृतियों का उदया- ८४७ ५ ६४		कर्म. भा २ गा १३-२२
धिकार गुणस्थानों में		
कर्म प्रकृतियों का उदीरणा- ८४७ ५ ६८		कर्म भा २ गा २३-२४
धिकार गुणस्थानों में		
कर्म प्रकृतियों का बन्धा- ८४७ ५ ८८		कर्म. भा २ गा ३-१२
धिकार गुणस्थानों में		
कर्म प्रकृतियों का लक्षा- ८४७ ५ ६६		कर्म भा २ गा २५-३४
धिकार गुणस्थानों में		
कर्म प्रकृतियों के वारह द्वार ८०६ ४ ३३६		कर्म. भा. ४ गा १-१६
कर्म बन्ध के कारण ५६० ३ ५२		कर्म भा १ भूमिका तथा ग. १ न्याख्या, टा. १ सू. ६६
कर्म भूमिज	७१ १ ५१	टा ३ उ १ सू १३०, पत्र प १ सू ३७, जी प्रति ३ सू १०७
कर्म भूमि पन्द्रह	८५८ ५ १४२	पत्र प १ सू ३७, भ. ग. २० ८. ८ सू ६७५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कर्ममाहनीय के भेद, अनु- भाव और बन्ध के कारण	५६०	३	६२	भ श ८३ ६ सू ३५१, पत्र. प २३ सू २६२-२६४, कर्म भा. १गा १३-२२, तत्त्वार्थ ग्रन्था ८
कर्मवाद	४६७	२	२१२	
कर्मवाद का मन्तव्य क्या आत्मा को पुरुषार्थ से विमुख नहीं करता ?	५६०	३	८६	
कर्मवाद का महत्त्व	५६०	३	८५	कर्म भा. १ भूमिका
कर्मवादी	१६२	१	१५०	आचा अ १ उ. १ सू ६
कर्मवेदनीय के भेद, अनु- भाव और बन्ध के कारण	५६०	३	६०	पत्र प २३ सू २६२-२६४, भ श. ८ उ. ६ सू. ३५१, भ श ७ उ ६ सू २८६, कर्म भा १गा. १३, तत्त्वार्थ ग्रन्था ८ विशेष गा. १=१७-१=२१, भ ज ६ उ. ३ सू २३५, म्याका २६
कर्म से छुटकारा और उसके उपाय	५६०	३	५३	उपा. अ. १ सू ७, भ. ज ८ उ. ५ सू ३३०, आव. ह अ. ६ पृ ८=२८
कर्मादान पन्द्रह	८६०	५	१४४	वृ. उ. १ नि गा ३=६३
कर्मार्य	७८५	४	२६६	कर्म भा १, पत्र. प २३ सू ७२३
कर्मों की उत्तरप्रकृतियों एक सौ अड़तालीस	६३३	३	१६७	
कर्मों की सकलता के विषय में पाँच गाथाएं	६६४	७	२१४	
कर्मों के क्रम की सार्थकता	५६०	३	८४	पत्र. प २३ सू २८=६६
कलाचार्य	१०३	१	७२	श सू ७७
कलासवर्ण संख्यान	७२१	३	४०४	दा. १० उ ३ सू ७६७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कल्प अठारह साधु के	८६०	५ ४०२	समे १८, दश अ ६ गा ८-६६
कल्प दस साधु के	६६२	३ २३४	पचा १७ गा. ६-४०
कल्पनीय ग्रामादि १६ स्थान ८६७	५	१६६	वृ उ. १ सू. ६
कल्पपलिमन्थु छः	४४४	२ ४७	ठा. ६ उ ३ सू ५२६, वृ (जी) उ ६
कल्प वीस	६०४	६ ६	वृ उ १
कल्पवृत्त के दस भेद	७५७	३ ४४०	सम १०, अ. १० उ ३ सू ७६६, प्रव द्वा १७१ गा १०६७-७०
कल्पवृत्त क्या सचित्त वनस्पति रूप और देवाधि- ष्ठित हैं?	६१८	६ १४०	आचाश्रु २ पीठिका, जी प्रति ३ सू. १११, ज वक्त २ सू २० टी., प्रव द्वा १७१, यो प्रका. ४ श्लो ६४
कल्प संख्यान	७२१	३ ४०६	ठा १० उ ३ सू ७४७
कल्पस्थिति छः	४४३	२ ४५	ठा ३ उ ४ सू २०६, ठा ६ उ ३ सू ६३०, वृ (जी) उ ६
कल्पातीत	५७	१ ४०	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू १८
कल्पोपपन्न देव के इन्द्र दस ७४१	३ ४२०		ठा १० उ ३ सू ७६६
कल्पोपपन्न देव वारह	८०८	४ ३१८	पन्न प २, ४, ६, जी. प्रति ३ सू २०७-२२३, तत्त्वार्थ, अध्या ४
कल्याणक प्रतीर्थङ्कर देव के २७५	१ २५३		पचा ६ गा. ३०-३१, दशा द ८
कपाय आश्रव	२८६	१ २६६	ठा ५ उ २ सू ४१८, सम ५
कपाय की ऐहिक हानियाँ १६६	१ १२५		दश अ. ८ गा ३८
कपाय की व्याख्या और भेद	१५८	१ ११७	पन्न. प १४ सू १८८, ठा ४ उ १ सू. २४६, कर्म भा १ गा. १७-१८
कपाय कुशील	३६६	१ ३८१	ठा ५ उ. ३ सू ४४५, भ. श २५ उ ६ सू ७५१
कपाय कुशील के पाँच भेद ३६६	१ ३८४		ठा ५ उ. ३ सू ४४५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कपाय के भेद और प्रभेद	१५८-	१	११७-	ठा ४ सू २४६, २६३, पत्र. प १४
उपमा सहित	१६२		१२२	सू १८८ कर्म भा १ गा १६, २०
कपाय जीतने के चार उपाय	१६७	१	१२५	दश म ८ गा ३६
कपाय पर तेईस गाथाएं	६६४	७	२३६	
कपाय परिणाम	७४६	३	४२६	ठा १० उ. ३ सू ७१३, ११ प १३ सू १८२
कपाय प्रतिक्रमण	३२६	१	३३८	ठा. ५ उ ३ सू ४६७, मातृ. ४ म ४ गा. १२५०-१२५१
कपाय प्रमाद	२६१	१	२७३	ठा. ६ उ ३ सू ५०२, ध मधि २ ओ. ३६ पृ ८१, पचा १ गा २३ टी
कपाय मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	वर्म भा ४ गा ११
कपाय मोहनीय	२६	१	२०	कर्म भा १ गा १७, पत्र. प १४ सू १८६ टी
कपाय समुद्घात	५४८	२	२८८	पत्र. प. ३६ सू ३३१, ठा ७ उ ३ सू ४८६, श्रव्य लोम. ३ पृ १२५, प्रज्ञा २३१ गा १०११
कपायात्मा	५६३	३	६६	म. म १२ उ. १० सू ४६७
फॉक्ला	२८५	१	२६५	उपा म १ सू ७, मातृ. म. ६
काक की कथा औत्पत्तिकी	६४६	६	२६३	नं सू २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर				
काठिया तेरह	६८३	७	१२७	म. व. ३ नि गा ८१-८२
काण्ड नरकों के	५६०	२	३२८	जी. प्रति ३ सू. ६६
कापोत लेश्या	४७१	२	७३	उत्त. म. ३४ गा. २५-२६, कर्म भा. ४ गा. १३
काम कथा	६७	१	६६	ठा. ३ उ ३ सू. १८६
काम गुण पाँच	३६५	१	४२०	ठा. ५ उ. १ सू ३६०

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कामदेव श्रावक	६८५ ३ ३०६	उपा अ २
कामभोग की असारता के	६६४ ७ २१८	
विषय में सोलह गाथाएं		
काम सुख	७६६ ३ ४५४	ठा १० उ.३ सू. ७३७
कायकौत्कुच्य	४०२ १ ४२६	उत्तअ. ३६ गा २६१, प्रव. द्वा. ७३ गा ६४२
कायक्लेश	४७६ २ ८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा. ६ उ ३ सू ५११, उव सू १६, प्रव द्वा ६ गा २७०
कायक्लेश के तेरह भेद	६३३ ३ १६०	उव सू १६, म श. २५ उ ७ सू ८०२
कायक्लेश के तेरह भेद	८१६ ४ ३६७	उव. सू १६
कायगुप्ति	१२८(ख)१ ६२	उत्त अ. २४ गा. २४-२५, ठा ३ उ १ सू १२६
काय छः	४६२ २ ६३	ठा ६ उ ३ सू ४८०, दश. अ ८, कर्म भा. ४ गा १०
काय छः का अल्पवहुत्व	४६४ २ ६५	जी प्रति २ सू ६२, पत्र प ३ द्वा ८
काय छः की कुलकोटियाँ	४६३ २ ६४	प्रव द्वा १५० गा ६६३-६६७
काय पुण्य	६२७ ३ १७२	ठा ६ उ ३ सू ६७६
कायमार्गणा के भेद	८४६ ५ ५८	कर्म भा ४ गा १०
काययोग	६५ १ ६८	ठा ३ उ १ सू १०४, तत्त्वार्थ ब्रध्या. ६ सू १
काययोग के सात भेद	५४७ २ २८६	म.श २५ उ १ सू. ७१६, द्रव्य लो म ३ पृ ३५८, कर्म भा. ४ गा २४

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
काय विनय	४६८	२	२३०	उव सू २०, भग २५ उ. ७ सू ८०२, डा. ७ उ ३ सू ४८४, ध.प्रवि. ३ श्लो ४४ टी.पृ. १४१
काय विनय अप्रशस्त के सात भेद	५०४	२	२३३	भग २५ उ ७ सू ८०२, डा ७ उ ३ सू ४८४, उव सू २०
काय विनय प्रशस्त के सात भेद	५०३	२	२३२	भग २५ उ. ७ सू ८०२, डा ७ उ. ३ सू ४८४, उव सू २०
कायस्थिति	३१	१	२१	डा. २ उ ३ सू ८५
काया के दोष सामायिकके ७८६	४	२	७३	जिज्ञा
कायिकी क्रिया	२६२	१	२७७	डा २ उ. १ सू ६०, डा. ४ उ २ सू ४१६, पत्र. प. २२ सू. २७६ भाव ह. प्र ५
कायोत्सर्ग आवश्यक	४७६	२	६२	भाव ह. प्र. ५ पृ ७७८
कायोन्मर्ग के १२ आगार ८०७	४	३	१६	भाव ह. प्र. ५ गा. १४६- १४ ४७, प्रव द्वा ५ गा २४७- २६०, यो. प्रका. ३ पृ २४०
कायोत्सर्ग के उन्नीस दोष ८६६	५	४	२५	विशे गा. २६७४, इत्यलोग ३ श्लो. ६६६, ध.प्रवि. २ श्लो. २२ टी पृ ३६, आ.प्र. गा. ७६
कारक समकित	८०	१	५८	न्याय को, जै. प्र विशे. गा. २०६६
कारण	४३	१	२७	डा. १० उ ३ सू ७४३
कारण के दो भेद	३५	१	२३	डा. १० उ. ३ सू ७४३
कारण दोष	७२२	३	४०६	डा. १० उ. ३ सू ७४३
कारण दोष	७२३	३	४१२	डा. १० उ ३ सू ७४३
कारुण्यदान	७६८	३	४५१	डा. १० उ ३ सू ७४३
कार्माण काययोग	५४७	२	२८७	भ. ज. २५ उ १ सू ७१२, इत्य लो स ३ पृ. ३१८, वर्म. भा. ६ गा. २४

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कार्माण शरीर	३८६	१ ४१४	पत्र.प. २१सू. २६७, ठा. ६ उ १ सू. ३६६, कर्म.भा. १ गा ३३
कार्माणशरीरवन्धन नामकर्म	३६०	१ ४१६	कर्म भा १ गा ३६, प्रव द्वा २१६ गा. १२७३
कार्मिकी बुद्धि कार्य काल	२०१	१ १५६	नसू २६, ग्रा. ४ उ ४ सू ३६४
		४३	१ २७ न्याय को, जै. प्र.
		२१०	१ १८६ न्यायप्र.अध्या ७, रत्ना.परि. ६ सू. १६ टी०
काल	२७६	१ २५७	आगम, कारण, सम्मति भा ६ काण्ड ३ गा० ५३
काल के चार भेद	४३१	२ ३८	विशे. गा. २७०८-२७१०
काल के नौ भेद	६३४	३ २०२	विशे. गा० २०३०
काल के भेद और व्याख्या	३२	१ २२	ठा २ उ ४ सू. ६६
काल के ७ भेद (गृहूर्त तक)	५५१	२ २६२	ज. वक्त २ सू. १८
काल चक्र के दो भेद	३३	१ २२	ठा २ उ १ सू ७४
काल द्रव्य	४२४	२ ३	आगम, उक्त. अ. ३६
काल निधि	६५४	३ २२१	ठा ६ उ. ३ सू ६७३
कालपरिमाण के ४६ भेद	६६८	७ २६३	अनुसू ११४, भश ६ उ ७
काल पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म और वादर का स्वरूप	६१८	३ १३६	कर्म भा ६ गा. ८६-८८
काल प्रत्युपेक्षणा	४५६	२ ६०	ठा ६ उ ३ सू. ६०२
कालाचार	५६८	३ ६	ध अधि. १ श्लो. १६ टी पृ १८
कालानुपूर्वी	७१७	३ ३६१	अनु सू. ७१
कालिक भ्रत	८२२	५ ११	नं० सू० ४६
काली रानी	६८६	३ ३३३	अत. व ८ अ १

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कालोद्भि समुद्र में चन्द्र मूर्यादि की संख्या	७६६	४	३०१	मूर्य प्रा. १६ सू १००
काव्य के चार भेद	२१२	१	१६०	ठा ४ उ. ४ सू ३७६
काव्य के रस नौ	६३६	३	२०७	अनु.मू १२६ गा ६३ मे०१
कितनी दीक्षापर्यायवाले को प्र १४	२	२४३		ठा १७ १ मू ३६६, ज्यव. उ. १०
कौनसा सूत्र पढ़ाना चाहिए				मू २१-३६
किल्बिषिक	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ. अध्या. ४ मू ४
किल्बिषिकी भावना	१४१	१	१०४	उत्त अ. २६ गा २६३
किल्बिषिकी भावना के पांच प्रकार	४०३	१	४३०	उत्त० अ० ३६ गा. २६३, प्रत द्वा ७३ गा. ६८३
किस गति में किस कपाय की अधिकता होती है ?	१६३	१	१२३	
कीलिका संहनन	४७०	२	७०	पत्र १. २३ सू. २६३, ठा. ६ उ. ३ सू ४६४, कर्म गा १ गा. ३६
कुण्डकोलिक श्रावक	६२५	३	३१६	उपा अ. ६
कुन्ती	२७५	५	३४६	सा अ १६
कुब्ज संस्थान	४६२	२	६२	ठा ६ मू ४६५, कर्म गा. १ गा ४०
कुब्जा का दृष्टान्त क्षेत्र अननुयोग पर	७२०	४	२३६	माय द नि गा १३३, मृ. नि. गा. १७१ पीटिसा
कुमार की कथा पारिणा-मित्री बुद्धि पर	६१५	६	७६	न मू २७ गा. ७२, माय द नि. गा० ६४६
कुम्भक प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो. प्रसा ४ ग्लो. ७
कुम्भ की उपमा से ४ पुरुष	१६६	१	१२६	ठा ४ उ. ४ सू ३६०
कुम्भ की चौभंगी	१६२	१	१२५	ठा० ४ उ० ८ मू० ३६०
कुरुक्षेत्र दस (महाविदेहके)	७५४	३	४३२	ठा० १० ठ० ३ मू० ७६४

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाणा
कुलकर दस आगामी उत्सर्पिणी के	७६७	३	४५० टा० १० उ० ३ सू० ७६७
कुलकर दस गत ,,	७६६	३	४४६ टा० १० उ० ३ सू० ७६७
कुलकर ७ आगामी ,,	५११	२	२३६ टा. ७ उ. ३ सू. ५५६, मम १५६
कुलकर सात गत ,,	५१२	२	२३६ टा ७ उ ३ सू ५५६, मम १५७
कुलकर सात वर्तमान अवसर्पिणी के	५०८	२	२३७ टा ७ उ० ३ सू० ५५६, मम १५७, जै० भा० २ पृ० ३६२
कुलकोही छः काय की	४६३	२	६४ प्रव द्वा १५० गा ६६३-६६७
कुल धर्म	६६२	३	३६१ टा० १० उ० ३ सू० ७६०
कुलपर्वत ३६ समयक्षेत्रके	६८६	७	१४४ सम० ३६
कुल मद	७०३	३	३७४ टा. १० उ ३ सू ७१०, टा. ८ सू ६०६
कुलार्थ	७८५	४	२६६ वृ उ १ नि गा ३२६३
कुन्वयसन सात	६१८	६	१५५ गौ कु ज्ञा म. १८ सू १३७, पृ उ १ नि गा. ६४०
कुशध्वज राजा की कथा कांचा दोष के लिये	८२१	४	४५५ नवपद गा. १८ टी.
कुशील	३४७	१	३६० श्राव ह. अ ३ नि. गा ११० ७-११० ८, प्रव द्वा. २ गा १०६-११५
कुशील	३६६	१	३८१ टा ५ उ ३ सू. ४४५, भ. ज. २५ उ० ६ सू० ७५१
कुशील के अठारह भेद	८६३	५	४१० श्राव इ. अ. ४ पृ ६५२
कुशील के तीन भेद	३४७	१	३६० श्राव ह म ३ नि गा ११० ७ पृ ५१६ प्रव द्वा २ गा. १०६
कुशील के पांच भेद	३६६	१	३८४ टा ५ उ ३ सू ४४५
१ कृतदान	७६८	३	४५२ टा० १० उ० ३ सू० ७६४

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ कृतिकर्म	७६०	३	४४३	भावा अ. २ उ १ नि गा १८६
कृतिकर्म कल्प	६६२	३	२३८	पचा १७ गा २३-२५
२ कृत्स्ना आरोपणा	३२७	१	३३५	टा. ५ उ २ सू ४३३, सम. २८
३ कृष्ण वनीपक	३७३	१	३८८	टा. ५ उ ० ३ सू ४५६
कृषिकर्म	७२	१	५२	जी. प्रति. ३ उ १ सू १११, तन्दुल. सू १४-१५ पृ. ४०
कृष्ण का अपरकंका	६८१	३	२८०	टा. १० उ. ३ सू ७७७, प्रव द्वा. १३८ गा ८८६
गमन (आश्चर्य)				
कृष्ण का अपरकंकागमन	६००	५	४६६	ज्ञा. अ १६
४ कृष्णपात्तिक	८	१	७	भ रा १३ उ. १ सू. ४७०, टा. २ उ २ सू ७६
५ कृष्णराजियाँ आठ	६१६	३	१३३	टा. उ. ३ सू ६२३, भ. ज' उ. ६ सू २४२, प्रव द्वा. २१७ गा १४४१ से १४८४
कृष्ण लेश्या	४७१	२	७३	उत्त अ. ३४ गा. २१-२२, वर्म भा. ४ गा. १३
कृष्णा रानी	६८६	३	३४१	अन व. ८ म. ४
केवलज्ञान	३७५	१	३६१	टा. ५ उ ३ सू १६३, न सू १. कर्म. भा. १ गा. ४ अष्टाश्या
केवलज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पप प २६ सू ३१३
केवलज्ञानावरणीय	३७८	१	३६४	टा. ५ उ ३ सू ४६४, वर्म भा १ गा ४

१ वन्दना । २ प्रमथित का एक भेद ।

लेने वाला । ४ अर्द्धशतक गणना से म

वाला जीव । ५ / चिन

१ प्रयोग का एक वि

कार भेद

ख्याति

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
केवलज्ञानी जिन	७४	१ ५३	ठा ३ उ ४ सू २२०
केवलदर्शन	१६६	१ १५८	ठा ४ सू ३६५, कर्म भा ४ गा १२
केवलदर्शनअनाकारोपयोग	७८६ ४	२६६	पन्नप. २६ सू० ३१२
केवलि मरण	८७६	५ ३८४	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा. १००७
केवलि लब्धि	६५४	६ २६३	प्रव द्वा २७० गा १४६३
केवलि समुद्घात	५४८	२ २६०	पन्न.प. ३६ सू ३३१, ठा. ७ उ ३ सू ५८६, द्रव्य लो स ३ पृ. १२५, प्रव द्वा २३१ गा १३११
केवली के दस अनुत्तर	६५५	३ २२३	ठा १० उ ३ सू ७६३
केवली के परिषद सहन करने के पांच स्थान	३३२	१ ३४२	ठा० ५ उ० १ सू० ४०६
केवली के पांच अनुत्तर	३७६	१ ३६१	ठा० ५ उ० १ सू० ४१०
केवली जानने के ७ स्थान	५२४	२ २६१	ठा० ७ उ० ३ सू० ५५०
केवली प्ररूपित धर्ममांगलिक	१२६ क १	६५	आव ह अ ४ पृ. ५६६
लोकोत्तम और शरणरूप है			
केसवाणिज्जे कर्मादान	८६०	५ १४५	उपा.अ १ सू. ७, भ श ८ उ. ५ सू ३३०, आव. ह अ ६ पृ ८२८
कोङ्कणदारक का दृष्टान्त	७८०	४ २४८	आव. ह गा १३४, वृ नि गा० १७२ पीठिका
भाव अननुयोग पर			
कोणिक की विशाला नगरी जीतने की कथा	६१५	६ ११७	उत्त (क) अ १ गा ३ टी., निर अ. १, न. सू. २७ गा. ७४, आव ह नि गा. ६५१
कोष्ठक बुद्धि लब्धि	६५४	६ २६६	प्रव द्वा २७० गा १४६४
१ कौकुचिक	४४४	२ ४७	ठा ६ उ ३ सू ५२६, वृ (जी) उ ६

विषय	बाल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कौतुक	४०४ १ ४३१	उत्त अ ३६ गा २६२, प्रव द्वा ७३ गा० ६४८
कौतुक भूतिकर्म आदि का स्वरूप	३४७ १ ३६०	आच द अ ३ नि गा ११०१ पृ ११६, प्रव. द्वा २ गा. ११५-११६
१ कौतुकच्य	४०२ १ ४२६	उत्त अ. ३६ गा २६१, प्रव द्वा ७३ गा० ६८०
कौशल्या	८७५ ५ २६८	त्रि० प० पर्व ७
क्या एकलविद्वार शास्त्र सम्मत है ?	६१८ ६ १४२	पृ पीठिनागा ६८८-७०२ टी, ठा ८३ ३ सु० ४६८
क्या पृथ्वी के जीव अठा- रह पाप का सेवन करते हैं?	६८३ ७ १२२	भ ग. १६ उ. ३ सु ६४०
क्या सभी मनुष्य एकमी क्रिया वाले होते है ?	६८३ ७ १२१	भ० ज० १ उ० २ सु० २१
क्रिया की व्याख्या और उसके पाँच भेद	२६२ १ २७६	टा. २ उ. १ मृ. ६०, टा. ४ उ. २ सु ११६, प्रव. प. २२ सु २७६
क्रिया के पाँच भेद	२६३ १ २७७	टा. २ उ. १ मृ. ६०, टा. ४ उ. २ मृ. ४१६, प्रव. प. २२ सु २७६
क्रिया के पाँच भेद	२६४ १ २७६	टा २ उ १ मृ. ६०, टा. ४ उ २ मृ. ४१६, आच. प्र. पृ ६१०
क्रिया के पाँच भेद	२६५ १ २८०	टा २ उ. १ मृ. ६०, टा. ४ उ. २ मृ. ४१६, आच. प्र. पृ ६१३
क्रिया के पाँच भेद	२६६ १ २८२	टा २ उ १ मृ ६०, टा. ४ उ. २ मृ. ४१६, आच. प्र. पृ. ६१०, ३ नि गा ११०१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
क्रिया पचीस	६४०	६	२१८	ठा.२३.१सू.६०, ठा ५३ २सू. ४१६, प्राव ह अ ४४६११
क्रियारहित ज्ञान पर ४ गाथा ६६४	७	१६२		
क्रिया रुचि	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा २५
क्रियावादी	१६२	१	१५०	आचा०अ०१ उ० १ सू० ५
क्रियावादी की व्याख्या और उसके १८० भेद	१६१	१	१४४	भश ३० उ १सू. ८२४ टी., आचा.अ १ उ १सू ३, सूय अ १२
क्रियास्थान तेरह	८१४	४	३६२	सूयधु २अ. २ सू १६से २६
१ क्रीत दोष	८६५	५	१६३	प्रवद्वा. ६७ गा ५६५, ध अधि. ३श्लो ०२पृ ३८, पि नि. गा ६२, पि वि गा ३, पचा १३ गा ५
क्रीड़ा अवस्था	६७८	३	२६७	ठा. १० उ ३ सू ७७२
क्रोध आदि की शांति के तेरह उपाय	८१८	४	४०२	श्राद्ध प्रका० २ पृ० ४३५
क्रोध कषाय के दस नाम	७०२	३	३७४	सम० ५२
क्रोध के चार भेद और उनकी उपमाएं	१५६	१	१२०	पन्नप. १४सू. १८८, ठा ४सू २४६, २६३ टी, कर्म भा. १ गा. १६
क्रोध दोष	८६६	५	१६५	प्रव गा ५६७, ध अधि ३ श्लो २२टी पृ ४०, पि नि गा. ४०८, पि वि गा ५८, पचा १३ गा १८
क्रोध निःसृत असत्य	७००	३	३७१	ठा १०सू ७४१, पन्नप ११ सू १६५, ध अधि. ३श्लो. ४१पृ १२२
क्रोधसंज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०ठ ३सू ७५२, भ. श ७ उ० ८ सू० २६६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
क्रोधादि उत्पत्ति के ४ स्थान	१६५	१	१२४	टा० ४ उ० १ सू० २४६
क्रोधादि के चार प्रकार	१६४	१	१२३	टा० ४ उ० १ सू० २४६
क्लेश दस	७१४	३	३८८	टा० १० उ० ३ सू० ७३६
क्षपक की पारिणामिकी	६१५	६	८८	न.सू. २७ गा. ७३, भाव. ह. नि
बुद्धि की कथा				गा० ६५०
क्षपक भ्रेणी	८४७	५	८४	प्रव. द्वा ८६ गा. ६६४-६६६, कर्म. भा० २ गा० २
क्षपक भ्रेणी का वर्णन	५६	१	३६	विशे गा. १३१३, द्रव्यलो. न ३ रलो. १२१८-१२३४, कर्म भा २ गा. २, भाव. म. गा. १२१-१२३
क्षमा	६६१	३	२३३	नव. गा. २३, सम. १०, ना. भा १ प्रक = (संवर भावना)
क्षमापना पर आठ गाथाएं	६६४	७	२५०	
क्षयोपशमप्रत्यय अवधिज्ञान	१३	१	११	टा० २ उ० १ सू. ७१
क्षान्ति	३५०	१	३६५	द्य १ सू. ३६६, ध. अधि. ३३ लो ४६ पृ १२७, प्रव. द्वा. ६६ गा. ६५४
क्षान्ति क्षमणता	७६३	३	४४५	टा. १० उ० ३ सू. ७४८
क्षायिक और औपशमिक	६८३	७	११७	भ० ना० १ उ० ३ सू. ३७ टी.
सम्यक्त्व में क्या अन्तर है?				
क्षायिक भाव की व्याख्या	३८७	१	४०८	कर्म. भा. ४ गा ६५, अनु. म. १२६, प्रव. द्वा. २२१ गा० १२६१
और उसके नौ भेद				
क्षायिक समकित	८०	१	५६	प्रव. द्वा १८६ गा ६४४, कर्म. भा० १ गा० १५
क्षायिक समकित	२८२	१	२६३	कर्म० भा० १ गा १५
क्षयोपशमिक भाव की व्या-	३८७	१	४०८	कर्म. भा. ४ गा ६५, अनु. मृ १२६, प्रव. द्वा. २२१ गा. १२६२
ख्या और उसके १८ भेद				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ज्ञायोपशमिक समकित	८०	१	५६	प्रव द्वा. १४६गा ६४४, कर्म भा० १ गा० १५
ज्ञायोपशमिक समकित	२८२	१	२६२	कर्म० भा० १ गा० १५
ज्ञीणकषायवीतराग	८४७	५	८४	कर्म० भा० २ गा० २
छद्मस्थ गुणस्थान				
जीरमधुसर्पिराश्रवलब्धि	६५४	६	२६५	प्रव द्वा २७० गा १४६४
जुद्र प्राणी छः	४६७	२	६७	ठा. ६ उ. ३ सू ५१३
जुल्लक की कथा औत्प-	६४६	६	२६७	न०सू० २७ गा० ६३ टी.
त्तिकी बुद्धि पर				
जुल्लक निर्ग्रन्थीय अध्ययन	८६७	५	४१६	उत्त० अ० ६
की अठारह गाथाएं				
क्षेत्र	२१०	१	१८६	न्याय प्र अध्या ७, रत्ना. परि० ४ सू० १५ टी०
क्षेत्रपरिमाण के तेईस भेद	६२५	६	१७३	अनु.सू. १३३पृ १६०-१६२, प्रव द्वा २५४ गा १३६१टी.
क्षेत्र पन्थोपम (सूक्ष्म, व्यवहारिक)	१०८	१	७७	अनु. सू १४०, प्रव द्वा. १५८ गा० १०२६
क्षेत्र पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म	६१८	३	१३८	कर्म. भा ५ गा ८६-८८
और वादर का स्वरूप				
क्षेत्र प्रत्युपेक्षणा	४५६	२	६०	ठा०६ उ० ३ सू० ५०२
क्षेत्र वास्तु आदि ६परिग्रह	६४०	३	२११	आव. ह अ ६ पृ. ८२५
क्षेत्र सागरोपम	१०६	१	७८	अनु.सू १४०, प्रव.द्वा. १५६ गा १०३१-१०३२
क्षेत्रानुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनु सू० ७१
क्षेत्रार्थ	७८५	४	२६६	वृत् १ नि गा. ३२६३

ख

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
खड्ग (गेंहे) की कथा पारि-	६१५	६	११६	न.सू. २७ गा. ७४, प्रा.क.	
णामिकी बुद्धि पर				नि. गा. ६५१	
खण्ड भेद।	७५०	३	४३३	ठा. १०३.३ सू. १३३ टी., प्रा. प. १३३ सू. १८५	
खर पृथ्वी	४६५	२	६६	जी. प्रति. ३ सू. १०१	
खगवाटरपृथ्वी के	४०	भेद ६८७	७	१४५	पत्र.प. १। सू. १४
खिसित वचन	४५६	३	६२	ठा. ६७.३ सू. २७ प्रव. द्वा. २३ गा. १३३१, बु. (जी.) ३६	
खुड्ग (अंगूठी) की कथा	६४६	६	२५८	न. सू. २७ गा. १३ टी.	
आत्मिकी बुद्धि पर					
खुले मुँह कही गई भाषा	६१८	६	१५०	भ. १६ उ. २ सू. ४३८	
मावत्र होती है या निरवत्र?					
खेचर	४०६	१	४३६	पत्र. प. १ सू. ३२, उ. म. ३६	
खेलापधि लब्धि	६५४	६	२६०	प्रव. द्वा. २७० गा. १४३	
ख्याति	४६७	२	२२०		

ग

गंठी मुट्टी (ग्रन्थि मुष्टि) आदि	५८६	३	४२	आव. द्वा. नि. गा. १३३ प्रा. प्रव. द्वा. ४ गा. २००
गच्छत्वाण के आठ संकेत				वि. ० गा. ७ टी.
गच्छ प्रतिपद्य यथालन्दिक	५२२	२	२६०	ठा. ४ ट. १ सू. ३६६
गच्छ में आचार्य उपाध्याय	३४४	१	३५५	
के पांच कलहस्थान				
गच्छाचार पड़णा	६८६	३	३५४	द. १०
गज की कथा आत्मिकी	६४६	६	२६४	न. सू. २७ गा. १३ टी.
बुद्धि पर				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गजसुकुमाल की कथा	७७६	४	१६३	अत० व० ३ अ० ८
गण आठ	५६६	३	१०८	छ०, पिगल०
गण को धारण करने वाले	४५०	२	५४	अ० ६ उ० ३ सु० ४७४
के छः गुण				
गण ४ शुभ और ४ अशुभ	२१३	१	१६१	सरल पि०
गणधर अकम्पित स्वामी का	७७५	४	५२	विशे गा १८८५-१९०४
नरक विषयक शंका समाधान				
गणधर अग्नि भूति का कर्म	७७५	४	३१	विशे गा १६०६-१६४४
विषयक शंका समाधान				
गणधर अचल भ्राता का पुण्य	७७५	४	५४	विशे गा १९०५ से १९४८
पाप विषयक शंका समाधान				
* गणधर ऽपार्श्वनाथ के	५६५	३	३	ठा ८३ सू ६१७ सम. ८ टी
गणधर इन्द्र भूति का आत्मा	७७५	४	२४	विशे० गा० १५४६-१६०५
विषयक शंका समाधान				
गणधर ग्यारह	७७५	४	२३	विशे गा १५४६ से २०२४, सम ११, आव ह नि गा ५६३- ६५६, आव ह टिप्पण पृ २८-३५ ठा ८ सू ६१७ टी, मैम ८ टी प्रष द्वा १५ गा ३३०, आव ह नि. गा २६८-२६९, सश द्वा १११
* गणधर दस भगवान्	५६५	३	३	
पार्श्वनाथ के				
गणधर पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३ उ ३ सू १७७ टी.
गणधर प्रभास स्वामी का	७७५	४	६०	विशे० गा० १६७३ से २०३०
मोक्ष विषयक शंका समाधान				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गणधरमहिन्स्वामी का बन्ध ७७५	४	४४		विशे. गा. १८०२-१८६३
मोक्षविषयक शंकासमाधान				
गणधरमेतार्यस्वामी का पर-७७५	४	५६		विशे. गा. १६४६-१६७१
लोकविषयक शंकासमाधान				
गणधर मौर्यपुत्र का देवों के ७७५	४	५०		विशे. गा. १८६४-१८८४
विषय में शंका समाधान				
गणधर लक्ष्मि	६५४	६	२६३	प्रव. द्वा. २७० गा. १४६३
गणधरवाद संक्षेप में	७७५	४	२३	विशे. गा. १४४६-२००४
गणधर वायुभूति का जीव ७७५	४	३४		विशे. गा. १६४६-१६८६
और शरीर के भेदाभेद				
विषयक शंकासमाधान				
गणधरव्यक्तस्वामीकापृथ्वी ७७५	४	३६		विशे. गा. १६८७-१७६६
आदि भूतों के अस्तित्व				
विषय में शंका समाधान				
गणधरसंख्या तीर्थङ्करोंकी ७७५	४	२३		भाव. ह. निगा. २६६-२६६
गणधरसुधर्मास्वामीके, 'यहाँ ७७५	४	४०		विशे. गा. १७७०-१८०१
जो जैसा है परभव में वह वैसा				
ही रहता है,' मत का समाधान				
गण धर्म	६६२	३	३६१	टा. १० व. ३ सू. ७१०
गणना अनन्तक	४१७	१	४४१	टा. ४ व. ३ सू. ४१०
गणनानुपूर्वी	७१७	३	३६१	मनु सू. ७१
गणनासंख्या के तीन भेद	६१६	३	१४३	मनु सू. १४६
गणेश भगवान् महावीर के	६२५	३	१७१	टा. ८ व. ३ सू. ६८०
गणापक्रमण सान	५१५	२	२४४	टा. ७ व. ३ सू. ४४१

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गणाभियोग आगार	४५५	२ ५६	उपा अ १ सू८, आव द अ. ६ पृ ८१०, ध अ धि २ श्लो २२ पृ ४१
गणावच्छेदक पदवी	५१३	२ २४०	ठा०३ उ०३ सू० १७७ टी
गणित निमित्त आदि सूक्ष्म	६४२	३ २१३	ठा०६ उ०३ सू० ६७६
वस्तुओं के ज्ञाताऽनैपुणिक			
गणित योग्य काल परिमाण	६६८	७ २६३	अनुसू ११४, म. श ६ उ ७ सू २४७
के छियात्तीस भेद			
गणितानुयोग	२११	१ १६०	दश० नि० गा०३ पृ० ३
गणिविज्ञा पइण्णा	६८६	३ ३५५	द० प०
गणि सम्पदा आठ	५७४	३ ११	दशाद ४, ठा८ उ ३ सू ६०१
गणि पदवी	५१३	२ २४०	ठा०३ उ०३ सू० १७७ टी०
गत उत्सर्पिणीके २४ तीर्थंकर	६२७	६ १७६	प्रव द्वा ७ गा २८८-२६०
गत उत्सर्पिणीके ७ कुलंकर	५१२	२ २३६	ठा ७ उ. ३ सू ५५६, सम १५७
गत प्रत्यागता गोचरी	४४६	२ ५२	ठा. ६ उ. ३ सू ५१४, उत अ ३० गा १६, प्रव द्वा ६ उ गा ७४५, ध अ धि ३ श्लो. २२ टी. पृ ३७
गतागत के अठारह द्वार	८८८	५ ३६८	पत्र प ६ के आधार से
गति की व्याख्या और भेद	१३१	१ ६६	पत्र प २३ उ. २ सू २६३, कर्म भा ४ गा. १०
गति दस	७२५	३ ४१३	ठा १० उ ३ सू ७४५
गति नाम निधत्तायु	४७३	२ ७६	भ श ६ उ ८, ठा. ६ उ ३ सू ५३६
गति परिणाम	७४६	३ ४२६	ठा १० सू ७१३, पत्र प १३
गति परिणाम	७५०	३ ४३२	ठा १० उ. ३ सू ७१३, पत्र प. १३
गति पाँच	२७८	१ २५७	ठा. ५ उ. ३ सू. ४४२
गति प्रतिघात	४१६	१ ४४०	ठा. ५ उ. १ सू. ४०६

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गति प्रत्यनीक	४४५	२ ४२	भ.ग. च.व. ८ सू. ३२२
गति मार्गणा और भेद	८४६	५ ५७	कर्म. भा. ४ गा. १०
ग्रन्थ नारकियों का	५६०	२ ३३६	जी. प्रति ३ सू. ८७
ग्रन्थ परिणाम	७५०	३ ४३३	ठा. १०३. ३ सू. ७१३, पत्र १३
ग्रन्थर्व वाणवन्तर आठ	६१३	३ १२६	उत्तम २४, पत्र २ सू. ६७
गमिक श्रुत	८२२	५ १०	न.सू. ४४, विशेष. गा. ६४६
गर्भ जन्म	६६	१ ४७	तत्त्वार्थ. अ. २ सू. ३२
गर्भहरण आश्चर्य	६८१	३ २७७	ठा. १०३. ३ सू. ७३७, पत्र ३३. १३ = गा. ८८६
गर्भ के वारह नाम	७६०	४ २७५	भ.ग. १२३ ४ सू. ४४६
गर्ही पर कथा	५७६	३ ३४	आवृत्त ४ नि. गा. १२४८
गर्भपण्यपणा	६३	१ ६७	उत्तम २४ गा. ११-१२
गर्भपण्यपणा के सोलह उत्पादना दोष	८६६	५ १६४	प्रव. द्वा. ६७ गा. ६६७-६६८, पत्र. अधि. ३२ लो. २२ टी. पृ. ६०, पि. नि. गा. ४०८-४०९, पि. नि. गा. ६८-६९, पत्रा १३ गा. १८-१९
गर्भपण्यपणा के सोलह उद्गम दोष	८६५	५ १६१	प्रव. द्वा. ६७ गा. ६६६-६६९, पत्र. अधि. ३२ लो. २२ टी. पृ. ६० पि. नि. गा. ६२-६३, पि. नि. गा. १-३, पत्रा १३ गा. ४-६
गाथा अठारह उत्तराध्ययन	८६७	५ ४१६	उत्त. म. ६
सूत्र के छठे अध्ययन की			
गाथा (मूल) १८ उत्तराध्ययन	८६७	५ ४८५	उत्त. म. ६
यन सूत्र के छठे अध्ययन की			
गाथा १८ दशवैकालिक	८६८	५ ४२०	दश. सू. १
सूत्र की प्रथम चूलिका की			

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा (मूल) १८दशवैका-	८६८	५ ४८७	दश० चू० १
लिकसूत्र प्रथमचूलिका की			
गाथा अड़तीस सूयगडांग	६८५	७ १३६	सूय० अ ११
सूत्र के ११वें मार्गाध्ययन की			
गाथा आठ आलोचना पर	६६४	७ २४६	
गाथा आठ क्षमापना पर	६६४	७ २५०	
गाथा आठ धर्म पर	६६४	७ १५१	
गाथा आठ विजय पर	६६४	७ १६८	
गाथा इक्कीस स्त्री परिज्ञा	६६३	७ ८	सूय अ ४ ट. १
अध्ययन प्रथम उद्देशे की			
गाथा इक्कीस चरणविहि	६१७	६ १३०	उत्त अ ३१
नामक अध्ययन की			
गाथा २१सभिकसु अ०की	६१६	६ १२६	दश अ ३०
गाथा २६ वीरस्तुति अ०की	६५५	६ २६६	सूय अ ६
गाथा ग्यारह अपरिग्रह पर	६६४	७ १८१	
गाथा ग्यारह तप पर	६६४	७ २०२	
गाथा ग्यारह दशवैकालिक	७७१	४ ११	दश अ २
सूत्र के दूसरे अध्ययन की			
गाथा ग्यारह विनय पर	६६४	७ १६५	
गाथा ४ आत्मचिन्तन पर	६६४	७ २४८	
गाथा ४ क्रियारहितज्ञान पर	६६४	७ १६२	
गाथा चार भ्रमरवृत्ति पर	६६४	७ १८५	
गाथा चौदह सत्य पर	६६४	७ १७२	
गाथा चौबीस विनय	६३३	६ २०१	दश अ ६ उ २
समाधि अध्ययन की			

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
गाथा २४ ममाधि अध्ययन की	६३२ ६	१६७ सूय. श्रु. १ म. १०
गाथा ३६ धर्माध्ययन की	६८१ ७	८७ सूय. श्रु. १ म. ६
गाथा ६ आत्मा पर	६६४ ७	१५६
गाथा छः रतिअरति पर	६६४ ७	१६०
गाथा छः 'वमन किये हुण्को	६६४ ७	१८६
ग्रहण न करना' विषय पर		
गाथा तीन निर्ग्रन्थ प्रवचन	६६४ ७	१५५
महिमा पर		
गाथा तीन यतना पर	६६४ ७	१६५
गाथा २३ आचारांग नवें	६२२ ६	१६६ भावा. श्रु. १ म. ६ उ १
अध्ययन प्रथम उद्देशे की		
गाथा तेईस कषाय पर	६६४ ७	२३६
गाथा तेरह असंस्कृत	८१६ ४	४०६ उत म. ८
अध्ययन की		
गाथा १० अशरणभाव पर	६६४ ७	२२२
गाथा दस जीवन की	६६४ ७	२२५
अस्थिरता पर		
गाथा दस 'पूजा प्रशंसा	६६४ ७	१६०
त्याग' पर		
गाथा दस प्रमाद पर	६६४ ७	२३१
गाथा दस राग द्वेष पर	६६४ ७	२३३
गाथा दस सम्यग्दर्शन पर	६६४ ७	१५८
गाथा दो व्यवहार निश्चय पर	६६४ ७	१६३
गाथा दो तत्त्वे त्यागी पर	६६४ ७	१८८

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा नौ अनासक्ति पर	६६४	७ २०५	
गाथा नौ कठोर वचन पर	६६४	७ २१४	
गाथा ६ नमस्कारमहिमा पर	६६४	७ १५३	
गाथा नौ मृगचर्या पर	६६४	७ १८६	
गाथा नौ शल्य पर	६६४	७ २४४	
गाथा पचीस नरकविभक्ति	६४१	६ २१६	सूयश्रु १ अ ४ उ २
अध्ययन के दूसरे उद्देशे की			
गाथा पन्द्रह अनाथता की	८५४	५ १३०	उत्त अ २० गा ३८-५२
गाथा १५ पूज्यता पर	८५३	५ १२७	दश अ. ६ उ ३
गाथा १५ महानिर्ग्रथीय	८५४	५ १३०	उत्त अ २० गा ३८-५२
अध्ययन की			
गाथा पन्द्रह मोक्ष मार्ग पर	६६४	७ १६४	
गाथा पन्द्रह विनयसमाधि	८५३	५ १२७	दश अ ६ उ ३
अध्ययन के तीसरे उद्देशे की			
गाथा पाँच अर्चौर्य पर	६६४	७ १७६	
गाथा ५ कर्मों की सफलता पर	६६४	७ २१६	
गाथा ५ रात्रिभोजन त्याग की	६६४	७ १८४	
गाथा ४ प्रयत्नीयाध्ययन की	६६६	७ २५४	उत्त अ. २५
गाथा वत्तीस अकाम मर-	६७२	७ ४६	उत्त अ ५
णीय अध्ययन की			
गाथा ३२ बहुश्रुत पूजा अ० की	६७३	७ ५१	उत्त अ ११
गाथा वत्तीस वैतालीय	६७४	७ ५६	सूय. अ ० उ २
अध्ययन के दूसरे उ० की			
गाथा बारह जैन साधु के	७८१	४ २५५	उत्त अ २१ गा १३-२४
लिए मार्ग प्रदर्शक			

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा वारह दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन की	८११	४	३५२	दश अ ४ गा. १४ २४
गाथा वारह वैराग्य पर	६६४	७	२२८	
गाथा १२ समुद्रपालीय अ० की ७८१	४	२५५		उत्त अ २१ गा १३.२५
गाथा २० चतुरंगीय अ. की ६०६	६	२६		उत्त अ. ३
गाथा २७ ग्रन्थाध्ययन की	६४६	६	२३०	सूय धु १ अ. १४
गाथा २७ नरयविभक्ति अध्ययन के पहले उद्देशे की	६४७	६	२३६	सूय श्र १ अ ४ उ १
गाथा १७ अहिंसा-दया पर	६६४	७	१६७	
गाथा सत्रह उपधानश्रुत अध्ययन के चौथे उ० की	८७८	५	३८०	माना धु १ अ. ६ उ १
गाथा सत्रह भगवान् महा-वीर की तपश्चर्या विषयक	८७८	५	३८०	आचा धु. १ अ ६ उ ४
गाथा सत्रह विनय समाधि अध्ययन के प्रथम उ० की	८७७	५	३७७	दश अ ६ उ. १
गाथा ७ जीभ के संयम पर	६६४	७	२१२	
गाथा सात तृष्णा पर	६६४	७	२४२	
गाथा सात दान पर	६६४	७	२००	
गाथा सात विनय समाधि अध्ययन के चौथे उ० की	५५३	२	२६३	अ म - उ ४
गाथा सात सम्यग्ज्ञान पर	६६४	७	१६०	
गाथा ३७ द्रुमपत्रक अ० की ६८४	७	१३३		उत्त म १०
गाथा सोलह उपधानश्रुत अध्ययन के उ० २ की	८७४	५	१८२	माना धु. १ म. ६ उ. २

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
गाथा १६ आत्मदमन पर	६६४ ७ २०७	
गाथा सोलह उत्तराध्ययन	८६२ ५ १५२	उत्त अ १५
सूत्र के सभिकसु अ० की		
गाथा सोलह कामभोगों	६६४ ७ २१८	
की असारता पर		
गाथा १६ दशवैकालिकसूत्र	८६१ ५ १४७	दश चू २
की दूसरी चूलिका की		
गाथा १६ बहुश्रुत उपमा की	८६३ ५ १५५	उत्त अ. ११ गी १५-३०
गाथा सोलह महावीर की	८७४ ५ १८२	आचा श्रु १ अ. ६ उ २
वसति विषयक		
गाथा सोलह शील पर	६६४ ७ १७७	
❀ गान्धार ग्राम की सात	५४० २ २७३	अनुसू १२ गी ४१-४२ पृ.
मूर्च्छनाएं		१३०, ठा ७ उ ३ सू ५५३

❀ जैन सिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर गान्धार ग्राम की जो सात मूर्च्छनाएँ कपी हैं वे सगीतशास्त्र नामक ग्रन्थ में ली हुई हैं । अनुयोगद्वारा तथा स्थानाग सूत्र में गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं । इनकी गाथाओं इस प्रकार हैं —

नदी अ खुदिआ पूरिमा य चउत्थी अ सुद्धगंधारा ।

उत्तरगंधारा वि य सा पंचमिआ हवइ मुच्छा ॥ १-॥

सुट्टुतरमायामा सा छट्ठी सव्वओ य णायव्वा ।

अह उत्तरायया कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा ॥ २ ॥

अर्थ— (१) नदी (२) जुद्रिका (३) पूरिमा (४) शुद्धगान्धारा (५) उत्तरगान्धारा (६) सुट्टुतरमायामा (७) उत्तरायतकोटिमा ।

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
गान्धार स्वर	५४० २ २७१	अनु सू १२७गा. २१५ १२७, ठा ७ उ. ३ सू ५५३
गाय और बछड़े का दृष्टान्त ७८०	४ २३६	भाव. गा १३३ पृ. ८८, पृ पीठिका नि गा १७१
द्रव्य अननुयोग पर		
गारवहीन्याख्या और भेद	६८ १ ७०	ठा ३ उ ४ सू २१५
गिद्धपट्टपरण	७६८ ४ २६६	भ. श. २ उ १ सू. ६१
गिद्धपिष्टपरण	८७६ ५ ३८४	सम १७, प्र. द्वा. १५७ गा १०००
गिरिपट्टण मरण	७६८ ४ २६६	भ. श. २ उ. १ सू ६१
गिहन्थ संसहेण आगार	५८८ ३ ४२	भाव. द्वा. म ६ पृ ८६६, प्र. द्वा. ४ गा. २०४
आयम्बिल का गुण	४६ १ २८	उत्त अ २८ गा ६, तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४०
गुण २८ अनुयोग देने वाले के	६५२ ६ २८६	वृ पीठिका नि गा. २४१-२८८
गुण आठ आलीयणा करने वाले के	५७६ ३ १६	ठा ८ उ ३ सू ६०८, भ. श. २५ उ ७ सू ७६६
गुण आठ आलीयणा देने वाले के	५७५ ३ १५	ठा. ८ उ ३ सू ६०४, भ. श. २५ उ. ७ सू. ७६६
गुण ८ एकलविहार प्रतिमा के	५८६ ३ ३६	ठा. ८ उ ३ सू ६६५
गुण आठ शिक्षा शील के	५८४ ३ ३८	उत्त अ ११ गा. ४-४
गुण ८ सिद्ध भगवान् के	५६७ ३ ४	अनुसू १२१, पृ. ११५, सम ३१, प्र. द्वा. २७६ गा. १५६ उ ८८ पचा १४ गा. ३२-३८
गुण आठ से साधु और सोने	५७१ ३ ६	
की समानता		
गुण इकतीस सिद्ध भगवान् के दो प्रकार से	६६१ ७ २	उत्त अ. ३१ गा २०३, प्र. द्वा. ८५६ गा. १५६ उ-१५६४. सम ३१, भाव. द्वा. म ४२, ६६२, आ. गा. ५१ म. २ उ. ६ सू १२०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गुण इक्कीस श्रावक के	६११	६ ६१	प्रव. द्वा २३६ गा. १३६६- १३६८, ध अधि १श्लो. २० पृ २८
गुण के दो प्रकार से दो भेद	५५	१ ३२	सूय अ १४ नि गा. १२६, पचा ६ गा २टी, द्रव्य त अभ्या. १२
गुण छः गण को धारण करने वाले के	४५०	२ ५४	ठा. ६ उ ३ सू. ४७५
गुण छः श्रावक के	४५२	२ ५६	धर प्रक गा ३३ पृ २२
गुण ३६ आचार्य महाराज के	६८२	७ ६४	प्रव द्वा ६४ गा ६४१-६४६
गुण दस आलोचना करने योग्य साधु के	६७०	३ २५८	भ. श २५ उ. ७ सू ७६६, ठा. १० उ. ३ सू ७३३
गुण दस आलोचना देने योग्य साधु के	६७१	३ २५६	भ श २५ उ ७ सू ७६६, ठा १० उ ३ सू ७३३
गुण पचीस उपाध्याय के	६३७	६ २१५	प्रव. द्वा ६६-६७ गा ५६२-५६६, ध. अधि ३श्लो ४६-४७ पृ १२०
गुण १५ दीक्षा देने वाले गुरु के	६५१	५ १२४	ध अधि ३श्लो. ८०-८४ पृ ७
गुण पैंतीस गृहस्थ धर्म के	६८०	७ ७४	यो प्रका. १श्लो ४७-५६ पृ ५०
गुण प्रकाश के चार स्थान	२५६	१ २४४	ठा ४ उ ४ सू ३७०
गुण १२ अरिहन्त देव के	७८२	४ २६०	सम. ३४, म श द्वा. ६६, स्या का १
गुण रत्न संवत्सर तप	७७६	४ २००	अत व ६ अ १५
गुण लोप के चार स्थान	२५८	१ २४३	ठा. ४ उ ४ सू. ३७०
गुण व्रत की व्याख्या, भेद	१२८१	६१	भाव द्वा. अ ६ पृ ८२६-८२६
गुण व्रत तीन	४६७	२ २००	
गुण श्रेणी	८४७	५ ७६	कर्म भा २ गा. २
गुण संक्रमण	८४७	५ ७६	कर्म भा. २ गा. २

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
गुण सत्ताईस साधु के	६४५ ६ २२८	सम २७, उक्त.म ३१गा १८, आव २ अ ४ पृ ६४६
गुण सत्रह श्रावक के	८८३ ५ ३६२	ध अवि.२ ग्लो २०टीपृ. १८
गुण १६ दीक्षा लेने वालेके ८६४	५ १५८	ध अवि.३ ग्लो ७३-७८ पृ १
गुणस्थान	४६७ २ २०६	
गुणस्थान का सामान्य स्वरूप	८४७ ५ ६८	कर्म भा २, ४, प्रव द्वा २२१ गा १३०२
गुणस्थान चौदह	८४७ ५ ६३	कर्म. भा २, ४, प्रव द्वा २२१ गा १३०२, गुण थो.
गुणस्थानों में अट्ठाईस द्वार	८४७ ५ १०५	गुण थो
गुणस्थानों में अन्तर द्वार	८४७ ५ ११२	गुण थो
गुणस्थानों में अल्पत्रहुत्वद्वार	८४७ ५ ११३	गुण. थो, कर्म भा ४ गा १२
गुणस्थानों में आत्म द्वार	८४७ ५ १०८	गुण थो.
गुणस्थानों में उपयोगद्वार	८४७ ५ १०६	गुण थो
गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों का उदयाधिकार	८४७ ५ ६४	कर्म भा. २ गा. १३-२२
गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों का उदीरणाधिकार	८४७ ५ ६८	कर्म. भा २ गा २१-२४
गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों का बन्धाधिकार	८४७ ५ ८८	कर्म भा २ गा २१-२२
गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों का सत्ताधिकार	८४७ ५ ६६	कर्म भा २ गा २१-३४
गुणस्थानों में कारणद्वार	८४७ ५ १०७	गुण थो.
गुणस्थानों में क्रिया द्वार	८४७ ५ १०६	गुण थो

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गुणस्थानों में गुण द्वार	८४७	५ १०८	गुण थो.
गुणस्थानों में चारित्र्य द्वार	८४७	५ ११२	गुण थो.
गुणस्थानों में जीव द्वार	८४७	५ १०८	गुण थो
गुणों में जीव योनि द्वार	८४७	५ १११	गुण थो.
गुणस्थानों में दण्डक द्वार	८४७	५ १११	गुण थो.
गुणस्थानों में ध्यान द्वार	८४७	५ १११	गुण थो
गुणस्थानों में निमित्त द्वार	८४७	५ ११२	गुण थो.
गुणस्थानों में निर्जरा द्वार	८४७	५ १०६	गुण थो.
गुणस्थानों में परिषद द्वार	८४७	५ १०७	गुण थो
गुणस्थानों में भाव द्वार	८४७	५ १०७	गुण थो
गुणस्थानों में मार्गणा द्वार	८४७	५ ११०	गुण थो
गुणस्थानों में योग द्वार	८४७	५ १०६	गुण थो.
गुणस्थानों में लेश्या द्वार	८४७	५ १०६	गुण थो
गुणस्थानों में समकित द्वार	८४७	५ ११२	गुण थो
गुणस्थानों में स्थिति द्वार	८४७	५ १०५	गुण थो
गुणस्थानों में हेतु द्वार	८४७	५ ११०	गुण थो.
गुप्ति	२२	१ १६	उत्त अ २४ गा २
गुप्ति की व्याख्या और भेद	१२	६२	उत्त अ २४ गा २०-२६, ठा ३ उ १ सू १२६
गुरु	६३	१ ४४	यो. प्रका २ श्लो. ८
गुरु निग्रह आगार	४५५	२ ५६	उपा अ १ सू ८, भाव ह अ. ६ पृ ८१०, ध अ धि २ श्लो २२ पृ ४१
गुरु प्रत्यनीक	४४५	२ ४६	भ श ८ उ ८ सू ३३६
गुर्वभ्युत्थान आगार	५१७	२ २४७	भाव ह अ. ६ पृ ८६३, प्रव. द्वा ४ गा १२०६

विषय	श्लोक	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गृहपति अवग्रह	३३४	१	३४५	भ.न. १६७.२सू. ४६७, भा.न. शु.२ चू. १अ. ७ उ. २सू. १६२, प्र.व. द्वा. ८ गा. ६=१
गृह संकेत पञ्चखण्ड	५८६	३	४३	भा.न. भ. ६नि. गा. १६७८, प्र.व. द्वा. ४ गा. २००
गृहस्थ धर्म के पैंतीस गुण	६८०	७	७४	यो. प्रका. १२गो. ४७-२६५ ४=
गृहस्थलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र प. १ सू. ७
गृहस्थ वचन	४५६	२	६२	डा. ६७. ३सू. ४२७, प्र.व. द्वा. २३५ गा. १३२१, चू. (जी.) उ. ६
गंडेकी कथा पारि- णामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११६	नं.सू. २७ गा. ७८, भा.न. द्वा. गा. ६५१
गैरुक्त श्रमण	३७२	१	३८७	प्र.व. द्वा. ६८ गा. ७३१
गोचरी के छः प्रकार	४४६	२	५१	डा. ६७. ३सू. ४१४, उत्त. भ. ३० गा. १८, प्र.व. द्वा. ६७ गा. ७४६, ध. भ. नि. ३ गो. २२टी. पृ. ३७
गोत्र कर्म और उसके भेद	५६०	३	७६	पत्र. प. २३सू. २६३, कर्म भा. १
गोत्रकर्मका अनुभाव	५६०	३	८०	पत्र. प. २३ सू. २६२
गोत्र कर्म के ग्रन्थ के कारण	५६०	३	८०	भ.न. ८७८ सू. ३६१
गोत्र नरकों के	५६०	२	३१५	जी. प्रति. ३सू. ६७, प्र.व. द्वा. १७० गा. १०७०
गोत्रिपत्रिका	३५८	१	३७२	डा. ६७. १ सू. २६१टी., ४००
गोमूत्रिका गोचरी	४४६	२	५१	डा. ६७. ३सू. ४१४, उत्त. भ. ३० गा. १८, प्र.व. द्वा. ६७ गा. ७४६, ध. भ. नि. ३ गो. २२टी. पृ. ३७
गोमूत्र (लाग्यकी गोली)की कथा और तपत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६६	न. सू. २७ गा. १३ टी.

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
गोशालक के श्रमणोपासक	७६३	४	२७६	भ श ंउ५ सू ३३०
गोष्ठामाहिल सातवांनिद्वय	५६१	२	३८४	विशे.गा २५०६ से २५४६
गौण	३८	१	२४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३१
गौण आदि दस नाम	७१६	३	३६५	अनु सू १३०
गौण नाम	७१६	३	३६५	अनु सू १३०
गौरव की व्याख्या व भेद	६८	१	७०	ठा ३ उ.४ सू २१५
गौरव दान	७६८	३	४५२	ठा.१० उ ३ सू ७४५
ग्यारह अंग सूत्र	७७६	४	६६	
ग्यारह उपासक पट्टिमापं	७७४	४	१८	दशा द ६,सम ११
ग्यारह गणधर	७७५	४	२३	विशे गा १५४६-२०२४,सम ११,भाव ह टिप्पण पृ २८-३५, भाव ह नि गा ६६३-६४१
ग्यारह गाथा दशवैकालिक	७७१	४	११	दश अ २
सूत्र के दूसरे अध्ययन की				
ग्यारह दुर्लभ	७७२	४	१७	भाव ह नि गा ८३१ पृ ३४१
ग्यारह नाम महावीर के	७७०	४	३	जैन विद्या बोल्यूम १ न. १
ग्यारह बोल आरंभ परिग्रह	४६	१	२६	ठा.२ उ १ सू ६५
छोड़ने पर प्राप्त होते हैं				
ग्यारह बोल आरंभ परिग्रह	७७३	४	१७	ठा २ उ.१ सू ६४
छोड़े बिना प्राप्त नहीं होते				
ग्रन्थाध्ययन की	२७गाथापं ६४६	६	२३०	सूय अ १८
ग्रन्थि संकेत पञ्चखाण	५८६	३	४३	भाव ह अ ६ नि गा १५७८, प्रव द्वा.४ गा २००
ग्रहणौषणा	६३	१	६७	उत्त अ २४ गा ११-१२

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ ग्रहणैपणा के दस दोष	६६३	३ २४२	प्रव. द्वा. ६७ गा. ४६८, वि. नि. गा. ४२०, ध. मधि ३७ लो. २२ टी. पृ. ४१, पचा. ३३ गा. २६
ग्राम धर्म	६६२	३ ३६१	टा. १० उ. ३ सू. ७६०
ग्राम नगर आदि दस धर्म	६६२	३ ३६१	टा. १० उ. ३ सू. ७६०
ग्रामादि सोलह स्थान साधु के लिए कल्पनीय	८६७	५ १६६	वृ. उ. १ सु. ६
ग्रामेयक (ग्रामीण) का दृष्टान्त	७८०	४ २४५	माव. ह. नि. गा. १२३ पृ. ८८, वृ. पीठिका नि. गा. १७१
वचन अननुयोग पर			उत्त. अ. २४ गा. ११-१२
ग्रामैपणा (परिभोगैपणा)	६३	१ ६७	ध. मधि ३७ लो. २३ टी. पृ. ४३, वि. नि. गा. ६३४-६६८, उत्त. अ. २४ गा. १२ टी., उत्त. अ. २६ गा. ३२ टी.
ग्रामैपणा के पाँच दोष	३३०	१ ३३६	ध. मधि ३७ लो. २३ टी. पृ. ४३, वि. नि. गा. ६३४-६६८, उत्त. अ. २४ गा. १२ टी., उत्त. अ. २६ गा. ३२ टी.
ग्लान प्रतिचारी वारह और अड़तालीस	७६७	४ २६७	प्रव. द्वा. ७१ गा. १२६ ६३६, नवपद गा. १२६ पृ. ३१६
ग्लानकी सेवा करना साधु के लिये आवश्यक है या उसकी इच्छा पर निर्भर है?	६८३	७ १०८	वृ. नि. गा. १८७१, १८७२, १८७६, १८७८, मज. २४ उ. १ सू. ८०२, उत्त. अ. २६, २६, मो. गा. ४८, ४८, ४९, ४९, ४९, ४९
ग्लान साधु की सेवा करने वाले वारह	७६७	४ २६७	प्रव. द्वा. ७१ गा. १२६ ६३६, नवपद गा. १२६ पृ. ३१६

घ

घन तप	४७७	२ ८८	ता. म. ३० गा. १०
घन संन्यास	७२१	३ ४०६	टा. १० उ. ३ सू. ७५७

१. ग्रहणैपणा के दस दोषों में द्वा. 'दामक' दोष है, उसके नाश के भेद हैं।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
घयण (भांड) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६५	न सु २७ गा ६३ टी
घाती कर्म	२७	१	१६	अष्ट ३० श्लो १
घ्राणेन्द्रिय	३६२	१	४१८	पत्र प १५ सू १६१, अ १३ ३ सू ४४३, जै प्र

च

चउसरण पङ्गणा	६८६	३	३५३	द प
चैवालीर बोलस्थावर की अवगाहनाकेअल्पबहुत्वके	६६५	७	२५२	म श १६३३ सू ६५१
चक्रवर्तियों का वर्ण	७८३	४	२६३	आव. ह नि गा ३६१
चक्रवर्तियों की अवगाहना	७८३	४	२६३	आव. ह नि गा ३६२-३६३
चक्रवर्तियों की गति	७८३	४	२६१	ठा २ उ ४ सू ११२
चक्रवर्तियों की प्रव्रज्या	७८३	४	२६५	ठा १० उं ३ सू ७१८
चक्रवर्तियों की स्थिति	७८३	४	२६३	आव ह नि गा ३६५-३६६
चक्रवर्तियों के ग्राम	७८३	४	२६२	सम ६६
चक्रवर्तियों के जन्मस्थान	७८३	४	२६२	सम १५८, आव ह अ १ नि गा ३६७-४००
चक्रवर्तियों के पिता के नाम	७८३	४	२६२	
चक्रवर्तियों के स्त्री रत्न	७८३	४	२६४	सम १५८
चक्रवर्ती	४३८	२	४२	ठा ६ उ ३ सू ४६१, पत्र प १ सू ३७
चक्रवर्ती का काफिणीरत्न	७८३	४	२६१	ठा. ८ उ ३ सू ६३३
चक्रवर्ती का बल	७८३	४	२६२	आव म गा ७३-७४ पृ ७६
चक्रवर्ती का भोजन	७८३	४	२६१	ज वक्त २ सू २० टी
चक्रवर्ती का द्वार	७८३	४	२६३	सम ६४
चक्रवर्तीकीमहानिधियांनौ	६५४	३	२२०	ठा ६ उ ३ सू ६७३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चक्रवर्ती की सन्तान	७८३	४	२६४	ही. प्रका. २, ३, १३
चक्रवर्ती के एकेंद्रिय रत्न	७८३	४	२६३	डा. ७ उ ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती के एकेंद्रिय रत्न सात	२२८	२	२६५	डा. ७ उ ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती के चौदह रत्न	८२८	५	२०	सम. १४, डा. ७ उ ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती के पंचेन्द्रिय रत्न	७८३	४	२६३	डा. ७ उ ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती के पंचेन्द्रिय रत्न	५२८	२	२६५	डा. ७ उ. ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती वारह	७८३	४	२६०	डा. सू. ११३, १५८, ६६३, सम. ६४, ६६, १५८, १५८, २ सू. २० टी. माव ह. म. १ मा. ३८२-६०१. त्रि. प. ही. प्रका. २, ३, १३, २३
चक्रवर्ती वारह आगामी	७८४	४	२६५	मम. १६६
उत्सर्पिणी के				
चक्रवर्ती लब्धि	६५४	६	२६४	प्र. दा. २७० गा. १४६१
१ चक्रवाल श्रेणी	५४४	२	२८४	डा. ७ उ ३ सू. ६६१, म. म. २, उ ३ सू. ७३०
चक्षुदर्शन	१६६	१	१५७	डा. सू. ३६६, त्र्यंभा. १ मा. १२
चक्षुदर्शन अनाकारोपयोग	७८६	४	२६८	मम. १. २६ सू. ३१२
चक्षुदर्शन की तरह श्रोत्रादि	६८३	७	१०६	म. न. १ उ. ३ सू. ३७ टी.
दर्शन क्यों नहीं कहे गये?				
चक्षुगिन्द्रिय	३६२	१	४१८	मम. १. १६ सू. १६१, डा. ५ उ. २ सू. ६६३, त्रि. प्र.
चक्षुलोलुप	४४४	२	४८	डा. (उ. ३ सू. ६६१, प्र. (ही) उ ३
चण्डकौशिक सर्प की पारि-	६१५	६	११४	विष. मा. १०, त्रि. सू. ३७ मा. ७८, माव ह. त्रि. मा. २६१
णामिकी वृद्धि पर क्या				

१ अक्षान्द्रियों की यह श्रेणी त्रिकके द्वारा १-माण्ड आदि वार साधक व्यक्त होते हैं।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ चतुःस्पर्शी	६१	१ ४२	भ श १२ उ. ५ सू ४५०
चतुरंगीयअ०की२०गाथा६०६	६	२६	उत्त अ. ३
चतुरस्र संस्थान	४६६	२ ६६	भ श.२५ उ ३ सू.७२४, पत्र प. १
चतुर्थ भक्त प्रत्याख्यान	६१८	६ १४६	भ श २ उ १ सू ६३, ठा ३ उ. ३
काक्या मतलब है?			सू. १८२ टी, अंत. व. ८ अ १
चतुर्मासिकीभिक्षुपट्टिमा७६५	४	२८६	सम. १२, भ. श २ उ. १ सू ६३ टी, दशा द. ७
चतुर्विंशतिस्तव आवश्यक ४७६	२	६१	आव. ह. अ २
चतुष्पद तिर्यच पंचेन्द्रिय	२७१	१ २५०	ठा ४ उ ४ सू. ३५०
के चार भेद			
चन्दनवाला (वसुमती)	८७५	५ १९७	आवह निगा ५२०-५२१, नि ष पर्व १०, चन्दन
चन्द्र और सूर्यो की संख्या ७६६	४	३००	सूर्य प्रा. १६
चन्द्रगुप्त राजा के सोलह	८७३	५ १७८	व्यव. चू (हस्तलिखित)
स्वप्न फल सहित			
चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र का वर्णन	७७७	४ २२८	
चन्द्रप्रमाण संवत्सर	४००	१ ४२५	ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा १४२ गा ६०१
चन्द्रमा का दृष्टान्त	६०५	५ ४५६	ज्ञा अ. १०
चन्द्र संवत्सर	४००	१ ४२७	ठा. ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा १४२ गा. ६०१
चन्द्रसूर्यावतरण आश्चर्य	६८१	३ २८४	{ ठा. १० उ. ३ सू. ७७७, प्रव. द्वा. १३८ गा. ८८५, ८८६ }
चमरोत्पात आश्चर्य	६८१	३ २८७	

विषय	बाल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चरण करणानुयोग	२११	१	१६० दश. नि. गा. ३ पृ ३
चरणविहितअ०षी२१गाथा६१७	६	१३०	उत्त अ ३१
चरण ममति (चरण सत्तमि) के मत्तर बोल	६३७	६	२१६ प्र. टा ६१ गा. ४४२-४६६, ध. अवि ३२ लो ६७४ १३०
चरणाहन का दृष्टान्त पारि- णामिकी वृद्धि पर	६१५	६	११२ न. नु २३ गा. ७४, भाव. द. नि गा ६४१
चरमशरीरीको प्राप्त १७वार्ते ८६६	५	३६५	ध. वि. प्र. अ. ८८५ ४८४-४८८
चरम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८५ टा. ४ उ० ३ सू० ६६४
चरमाचरमके चौदह बोल ८४३	५	४२	भ. ग. १८ उ० १ सू० ११
चरिम पञ्चकवाण	७०५	३	३८० प्र. द. ६ गा. २०१, ५ गा. ४ गा. ६, आर. द. अ. ६ नि. गा. १४६५
चाणक्य की पारिणामिकी वृद्धि की कथा	६१५	६	६४ भाव. द. नि. गा. ६०, न. नु २५ गा ७३
चार अनुपेक्षा धर्मध्यानकी २२३	१	२०७	{ टा ४ उ० १ सू० २४७, भ. ग. २० उ० ७ सू० २०२, उ० सू० २०० गा. १ ध. प्र. १४ ध्याननवमा ६४, ८८
चार अनुपेक्षा शुक्लध्यानकी २२८	१	२१२	
चार अन्त क्रियाएं	२५४	१	२३७ टा ४ उ० १ सू० २३४
चार अवस्था कर्म की	२५३	१	२३७ धर्म. भा. २ गा. १, उपास. २१
चार आगार कार्यान्तर्गते ८०७	४	३१६	ज्ञान द. म. ४ नि. गा. १४११
चार आलम्बन धर्मध्यानके २२२	१	२०६	{ टा ४ उ० १ सू० २४७, भ. ग. २५३ २, उ० सू० २०० गा. १ ध. प्र. १४ ध्याननवमा ६४, ८८
चार आलम्बन शुक्लध्यान २२७ के	१	२११	
चार इन्द्रियां प्राप्यकारि २१४	१	१६३	ध. नु ३३, उपास. २१ सू० ३६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार उपसर्ग	२३६	१ २१८	{ ठा ४३ ४सू ३६१, सूय शु १ अ ३ उ १ नि गा ४८ दश अ = गा ३६ पत्र प. १४, ठा. ४उ १ सू २४६, कर्म भा १ गा. १७-१८ दश अ = गा ३८ उत अ २४ गा ४-८ ठा० ४उ० ३ सू० ३३७ ठा० ४ उ० ४ सू० ३७३ ठा० ४उ० ३ सू० ३२३ ठा. ४उ ४सू ३७३ ठा. ४उ. ४सू ३७३ ठा ४उ ४सू सू ३७३ ठा ४उ ४सू ३६६, प्रव द्वा. १४६ गा ६२३ टी ठा ४उ ३सू ३३७ ठा. ४उ. ४सू ३६६, प्रव द्वा १४६ गा. ६२३ टी.
चार उपसर्गतिर्यश्चसंबन्धी	२४२	१ २१६	
चार उपसर्ग देव संबन्धी	२४०	१ २१६	
चार उपसर्गमनुष्यसंबन्धी	२४१	१ २१६	
चार उपाय कषाय जीतनेके	१६७	१ १२५	
चार कषाय	१५८	१ ११७	
चार कषाय की हानियां	१६६	१ १२५	
चार कषायों की अधिकता	१६३	१ १२३	
गति की अपेक्षा			
चार कारण ईर्यासमितिके	१८१	१ १३५	
चार कारण जीव, पुद्गलोंके	२६८	१ २४७	
लोक बाहर न जा सकने के			
चार कारण तिर्यश्चायु के	१३३	१ ६६	
चार कारण देव के, मनुष्य-१	३८	१ १०१	
लोकमें न आ सकने के			
चार कारण देवायु के	१३५	१ १००	
चार कारण नरकायु के	१३२	१ ६६	
चार कारण मनुष्यायु के	१३४	१ १००	
चार कारणों से आहार-	१४३	१ १०५	
संज्ञा उत्पन्न होती है			
चार कारणों से जीव, पुद्गल	२६८	१ २४७	
लोकसे बाहर नहीं जा सकते			
चार कारणों से परिग्रह-	१४६	१ १०६	
संज्ञा उत्पन्न होती है			

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार कारणों से भयसंज्ञा उत्पन्न होती है	१४४	१	१०६	टा.४उ.४ सू.३६६, प्रव. द्वा. १४६ गा. ६०३ टी.
चार कारणों से मैथुनसंज्ञा उत्पन्न होती है	१४५	१	१०६	टा.४ उ.४ सू.३६६, प्रव द्वा १४६ गा ६०३ टी
चार कारणों से साध्वी के साथ आलापसंलाप करता हुआ साधु निर्ग्रन्थाचार का अतिक्रमण नहीं करता	१८३	१	१३७	टा ४ उ २ सू० २६०
चार गति में चार संज्ञार्थों का अल्पवहुत्व	१४७	१	१०७	पत्र.प८ सू १४८
चार छेद सूत्र	२०५	१	१८०	
१ चारण	४३८	२	४२	टा.६ सू.४२१, पत्र.प १ सू. ३७
चारण लब्धि	६५४	६	२६२	प्रव द्वा २७० गा १४६३
चार दानी भेष की उपमा से	१७५	१	१२६	टा.४ उ ४ सू. ३६६
चार देशकथा	१५१	१	१०६	टा.४उ.२ सू. २८२ टी.
चार दीप	२४४	१	२२१	पि.नि.गा.१८२, भ.प्रधि १ खो ४३ टी पु १३६
चार द्वार अनुयोग के	२०८	१	१८५	मनु सू ६६
चार निक्षेप	२०६	१	१८६	मनुसू.१४०, त्यागप्र. प्रथमा १
चार पर्त्ता	२७२	१	२५१	टा० ४ उ० ४ सू० ३६०
चार पृत्रवधुओं की कथा	६००	५	४४२	ग म ७
चार पुद्गल परिणाम	२६६	१	२४७	टा० ४ उ० १ सू० २६४
चार पृरूपकुम्भर्त्ता उपमा से	१६६	१	१२६	टा.४ उ. ३ सू.३६०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार पुरुष फूल की उपमासे १७१	१	१२७	ठा० ४ उ० ४ सू० ३२०
चार पुरुष मेघ की उपमा से १७३	१	१२७	ठा ४ उ० ४ सू० ३४६
चार पुरुषार्थ	१६४	१ १५१	पुरुषा.
चार प्रकार आत्म संवेद- नीय उपसर्ग के	२४३	१ २२०	ठा ४ उ० ४ सू० ३६१, सूय श्रु १ अ ३, उ १ नि गा ४=
चार प्रकार आर्त्तध्यान के	२१६	१ १६६	ठा ४ उ १ सू २४७, आव ह अ. ४ ध्यानशतक गा. ६-६
चार प्रकार का अनुयोग	२११	१ १६०	दश नि गा ३ पृ ३
चार प्रकार का असत्य चचन	२७०	१ २४६	दश. अ. ४ सू ४ टी.
चार प्रकार का आचार विनय	२३०	१ २१४	दशा द ४
चार प्रकार का उपकरणो- त्पादनता विनय	२३५	१ २१६	दशा. द० ४
चार प्रकार का उपक्रम	२४६	१ २३४	ठा० ४ उ० २ सू० २६६
चार प्रकार का काव्य	२१२	१ १६०	ठा० ४ उ० ४ सू० २७६
चार प्रकार का तिर्यञ्च का आहार	२६१	१ २४५	ठा० ४ उ० ३ सू० ३४०
चार प्रकार का दान	१६७	१ १५६	ध० र० गा० ७० टी०
चार प्रकार का देव का आहार	२६३	१ २४६	ठा ४ उ ३ सू ३४०
चार प्रकार का दोष निर्घा- तन विनय	२३३	१ २१६	दशा० द० ४
चार प्रकार का धर्म	१६६	१ १५४	स० श० द्वा० १४१
चार प्रकार का नरक का आहार	२६०	१ २४४	ठा० ४ उ० ३ सू० ३४०
चार प्रकार का प्रायश्चित्त	२४५	१ २२२	ठा० ४ उ० १ सू० २६३
चार प्रकार का बन्ध	२४७	१ २३१	ठा ४ सू २६६, कर्म भां १ गा. २

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चार प्रकार का भारप्रत्य-२३८	१ २१८	दशा. द. ४
वरोहणता विनय		
चार प्रकार का मनुष्य का २६२	१ २४५	टा. ४ उ. ३ सू. ३८०
आहार		
चार प्रकार का मेघ १७४क	१ १२८	टा. ४ उ. ६ सू. ३८७
चार प्रकार का वर्ण संज्ञ-२३७	१ २१७	दशा. द. ८
लनता विनय		
चार प्रकार का विक्षेपणा २३२	१ २१५	दशा. द. ४
विनय		
चार प्रकार का श्रुत विनय २३१	१ २१५	दशा. द. ४
चार प्रकार का संक्रम २५०	१ २३५	टा. ४ सू. २६६, वर्ण. भा. २ गा. १
चार प्रकार का संयम १७६	१ १३४	टा. ४ उ. २ सू. ३१०
चार प्रकार का सहायता-२३६	१ २१७	दशा. द. ४
विनय		
चार प्रकार की दुःखशय्या २५५	१ २४०	टा. ४ उ. ३ सू. ३२४
चार प्रकार की भाषा २६६	१ २४८	पञ्च. प. ११ सू. १६१
चार प्रकार की विनय- २३४	१ २१६	दशा. द. ४
प्रतिपत्ति		
चार प्रकार के प्रव्रजित पुरुष १७६	१ १३०	टा. ४ उ. ३ सू. ३२३
चार प्रकार के शूर पुरुष १६३	१ १५०	टा. ४ उ. ३ सू. ३१७
चार प्रकार के श्रावक १८४	१ १३८	टा. ४ उ. ३ सू. ३२१
चार प्रकार क्रोध के १६४	१ १२३	टा. ४ उ. १ सू. २६६
चार प्रकार तीर्थ के १७७	१ १३०	टा. ४ उ. ४ सू. ३६३
चार प्रकार फूल के १७०	१ १२६	टा. ४ उ. ३ सू. ३२०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार प्रकार रौद्रध्यान के	२१८	१ १६८	ठा ४ उ १ सू २४७
चार प्रकार वस्तु के स्वपर-	२१०	१ १८८	न्यायप्र अध्या. ७, रत्ना परि ४ सू १५ टी
चतुष्टय के			
चार प्रकार श्रावक के	१८५	१ १३६	ठा. ४ उ. ३ सू. ३२१
चार प्रकार संसारी जीवके	१३०	१ ६७	ठा ५ सू ४३०, भ श २ उ १ सू ६२
चार प्रकारसे लोक की व्यवस्था	२६७	१ २४७	ठा० ४ उ० २ सू० २८६
चार प्रकार से श्रमण की व्याख्या	१७८	१ १३१	दशम २ निगा १५४-१५७, अनु सू. १५० गा १२६-१३२
चार प्रमाण	२०२	१ १६०	भ श. ५ उ ४, अनु सू १४४
चारबन्धकास्वरूपसमझाने के लिए मोदक का दृष्टान्त	२४८	१ २३२	ठा ४ उ २ सू २६६, कर्म भा १ गा २
चार बोल देवता के लोक में आ सकने के	मनुष्य-१३६	१ १०२	ठा ४ उ ३ सू ३२३
चार बोल देवता के लोक में न आ सकने के	मनुष्य-१३८	१ १०१	ठा. ४ उ० ३ सू० ३२३
चार बोल देवोंकी पहचान के	१३७	१ १०१	व्यव भाष्य उ. २ गा ३०४
चार बोल नैरयिकके लोक में न आ सकने के	मनुष्य-१४०	१ १०३	ठा० ४ उ. १ सू २४४
चार भंग कुम्भ के	१६८	१ १२५	ठा ४ उ ४ सू ३६०
चार भक्त कथा	१५०	१ १०८	ठा ४ उ. २ सू २८२ टी.
चार भांगे स्थण्डिल के	१८२	१ १३७	उत्त अ २४ गा १६
चार भाण्ड (पण्य वस्तु)	२६४	१ २४६	ज्ञा अ ८ सू० ६६
चार भावना	१४१	१ १०३	उत्त अ ३६ गा २६१-२६४

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार भावना	२४६	१	२२४	भावना (परिक्षिप्त.) क.भा. २ श्री. ३५-४५, च.
चार भावना धर्मध्यान की	२२३	१	२०७	डा. एच. एम्. २८७ म. न. २६३. उत्तर ०३, भाव ह. म. ४५ वाम ननकगा १५, २२, उग्र म् २००
चार भावना शुक्लध्यान की	२२८	१	२१२	
चार भाव प्राण	१६८	१	१५७	पत्र प १ म् १ टी
चार भेद आक्षेपणी कथा के	१५४	१	११२	डा. ए. ड. २ म्. २२२, दग म. ३ निगा १८४-१६४
चार भेद उपमा संख्या के	२०३	१	१६१	मनु म् १८६ प्र २३१
चार भेद क्रोध के उपमा सहित	१५६	१	१२०	पत्र प १८ म् १८८, डा. एम् २८६, २६३, कर्म भा १गा १६
चार भेद गति के	१३१	१	६६	पत्र प २३३ २ म् २६३, नमं भा ४ गा १०
चार भेद चतुष्पद तिर्यच- पंचेन्द्रिय के	२७१	१	२५०	डा. ए. ड. ४ म्. ३५०
चार भेद दर्शन के	१६६	१	१५७	डा. ए. ड. ३६४, नमं भा. १गा १२
चार भेद देवों के	१३६	१	१०१	उग्र म् ३१ गा. २०२
चार भेद धर्म कथा के	१५३	१	११२	डा. ए. ड. २ म्. २२२
चार भेद धर्मध्यान के	२२०	१	२०१	डा. ए. ड. १ म् २६१
चार भेद धर्मध्यान के	२२४	१	२०८	जान प्र ३७-६०, श्री. प्रम ३-१०, क. भा. २२ मी. २००-२०१
चार भेद ध्यान के	२१५	१	१६३	डा. ए. ड. १ म् २६३, म् १६ प्र. श. ६ गा. २ ११ टी ह. २६ ५ नि. म्. २२० टी, ध्या. १६, १७ २-गानगा १६ ७ ३२२, भा. म. १

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चार भेद निकाचित के	२५२ १ २३६	ठा०४ उ० २ सू० २६६
चार भेद निधत्त के	२५१ १ २३६	ठा ४ उ० २ सू० २६६
चारभेद निर्वेदनी कथा के	१५७ १ ११५	ठा ४ उ २ सू २८२
चार भेद प्रायश्चित्त के	२४५ख १ २२३	ठा०४ उ० १ सू २६३
चार भेद बुद्धि के	२०१ १ १५६	न सू २६, ठा०४ उ० ४ सू ३६४
चार भेद मतिज्ञान के	२०० १ १५८	ठा० ४ उ० ४ सू० ३६४
चार भेद मान के उपमा सहित	१६० १ १३१	पत्र.प १४सू १८८, ठा ४ उ २ सू २६३, कर्म भा १ गा १६
चार भेद माया के उपमा सहित	१६१ १ १२१	पत्र प. १४सू १८८, ठा ४ उ २ सू २६३, कर्म० भा १ गा २०
चार भेद मोक्ष मार्ग के	१६५ १ १५३	उत्त अ २८ गा २
चार भेद लोभ के उपमा सहित	१६२ १ १२२	पत्र प १४सू १८८, ठा ४ उ २ सू २६३, कर्म भा १ गा २०
चार भेद वादी के	१६१ १ १४४	भश ३० उ १ सू ८२४ टी, आचा. ध्रु १ अ १ उ १ सू ३ टी, सूय ध्रु १ अ. १२
चार भेद विक्षेपणी कथा के	१५५ १ ११३	ठा ४ उ २ सू २८२, दश अ ३ नि गा १६७-१६८
चार भेद शुक्ल ध्यान के	२२५ १ २०६	ठा ४ सू २४७ ज्ञान प्रक ४२, क भा २ ग्लो २११-२१६, आच ह अ ४ ध्यानशतक गा ७७-८२
चार भेद संवेगनी कथा के	१५६ १ ११४	ठा ४ उ २ सू २८२
चार भेद सामायिक के	१६० १ १४३	ध अधि २ श्लो ३७ टी, विशेषे गा. २६७३-२६७७
चार भेद स्त्री कथा के	१४६ १ १०७	ठा ४ उ २ सू. २८२ टी.

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार मंगलरूप, लोकोत्तम, तथा शरण रूप हैं	१२६क	१	६४	आनन्द अ ४५. ४६६
चार महाव्रत	१८०	१	१३५	अ० ४३० १ सू० २६६
* चार मूल सूत्र	२०४	१	१६३	
चार मूलातिशय अरि-हन्त भगवान् के	१२६ख	१	६६	स्या का. १ टी.
चार मेघ	१७२	१	१२७	अ० ४३० ४ सू० ३६६
चार मेघ	१७४ख	१	१२६	अ० ४३० ४ सू० ३६६
चार राजकथा	१५२	१	११०	अ० ४३० २ सू० २८२ टी
चार लक्षण गौड्र ध्यान के	२१६	१	२००	{ अ० ४३१ सू० २०३ भाग २४ उ० सू० ८०३, भाग ४ अ ध्यानमनक गा २६, १४. १७, १८, १०
चार लिंग आर्त्त ध्यान के	२१७	१	१६८	
चार लिंग धर्म ध्यान के	२२१	१	२०५	
चार लिंग शुक्ल ध्यान के	२२६	१	२११	
चार वन जंबूद्वीप के मेरु पर्वत पर	२७३	१	२५१	अ ४३० २ सू० ३००
चार वाचना के अपात्र	२०७	१	१८५	अ० ४३० २ सू० ३२१
चार वाचना के पात्र	२०६	१	१८५	अ० ४३० ३ सू० ३२६
चार वादी	१६२	१	१४६	भावा. सू. १ अ. १३ १ सू २
चार विकथा	१४८	१	१०७	अ० ४३० २ सू० २८२

चार मूलसूत्र में उपाध्यायन सूत्र का व्याख्यान करते हुए कानादा ने कि भाषा में चार मूल सूत्र पढ़ाया जाता है इसलिए यह उपाध्यायन पद्धति है। हिन्दू आचार्यों में सूत्र के बाद उपाध्यायन सूत्र पढ़ने का क्रम उन्हीं का एक सूत्रवाचन करने का ही है। और पूर्व जन्मों की उपमाओंवाली उपाध्यायन सूत्र का उपाध्यायन करने के पश्चात् उपाध्यायन सूत्र के बाद उपाध्यायन सूत्र पढ़ाया जाता है कि उपाध्यायन का निर्दिष्ट भाग उही सूत्र में उपाध्यायन के और यही परिभाषा का भी उपाध्यायन है।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार विनयप्रतिपत्ति	२२६	१ २१३	दशा द ४
चार विश्राम	१८७	१ १४१	ठा ४ उ ३ सू ३१४
चार विश्राम श्रावक के	१८८	१ १४२	ठा ४ उ. ३ सू. ३१४
चार व्याधि	२६५	१ २४७	ठा ४ उ. ४ सू ३४३
चार शिक्षाव्रत	१८६	१ १४०	पचा १ गा २५-३२, श्राव. ह. अ ६ पृ ८३१
चार शुभ, चार अशुभ गण	२१३	१ १६१	सरलपिगल
चार संज्ञा	१४२	१ १०४	ठा ०४ उ ०४ सू ३६६, प्रव द्वा. १४६ गा. ६२३
चार संज्ञाओं का अल्प- बहुत्व चार गति में	१४७	१ १०७	पत्र प ८ सू १४८
चार सद्वहणा	१८६	१ १४२	उत्त अ २८ गा २८, अधि २ श्लो २२ टी पृ ४३
चार सुख शय्या	२५६	१ २४१	ठा ०४ उ ०३ सू ३२५
चार स्थान क्रोधोत्पत्ति के	१६५	१ १२४	ठा ४ उ. १ सू २४६
चार स्थान गुण प्रकाश के	२५६	१ २४४	ठा ४ उ ४ सू ३७०
चार स्थान गुण लोप के	२५८	१ २४३	ठा. ४ उ ४ सू ३७०
चार स्थान से हास्योत्पत्ति	२५७	१ २४३	ठा ४ उ १ सू २६६
चारित्र की व्याख्या और भेद	३१५	१ ३१५	ठा ५ उ २ सू ४२८, विशेष गा १२६०-१२८०
चारित्र कुशील	३६६	१ ३८४	ठा ५ उ ३ सू ४४५
चारित्र के भेद	४६७	२ १६६	
चारित्र धर्म	१८	१ १५	ठा. २ उ १ सू ७२
चारित्र धर्म	६६२	३ ३६२	ठा १० उ ३ सू ७६०
चारित्र धर्म के दो भेद	२०	१ १५	ठा २ उ १ सू. ७२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चारित्र परिणाम	७४६	३	४२८	ठा. १० उ ३ सू. ११३, ११५, ११६, ११७, ११८
चारित्र पुलाक	३६७	१	३८२	ठा. १५ उ ४ सू. ४४६, भग. २१३२
चारित्रभेदिनी विकथा	५३२	२	२६७	ठा. ७ उ ३ सू. ५६६
चारित्र मोहनीय	२८	१	२०	ठा. २३ उ ४ सू. १०६, कर्म. भा. १
चारित्र मोहनीय के दो भेद	२६	१	२०	कर्म. भा. १ गा. १०
चारित्र विनय	४६८	२	२३०	उ. मू. २०, भग. २६ उ ३ सू. ८०२, ज. उ. उ. मू. ६८५, ५ अभि. ३२ लो ५४ टी. पु. १४१
चारित्र विराधना	८७	१	६३	म. म. ३
चारित्राचार	३२४	१	३३२	ठा. ६ उ. २ सू. ४३२, ५ अ. म. ३ श्लो. ५४ पु. १४०
चारित्रात्मा	५६३	३	६६	भ. म. १० उ १० सू. ६६७
चारित्राराधना	८६	१	६३	ठा. ३ उ. ४ सू. १४६
चारित्रार्य	७८५	४	२६७	पृ. उ. १ नि. गा. २०६०
चारित्रेन्द्र	६२	१	६६	ठा. ३ उ. १ सू. ११४
चारित्रोपघान	६६८	३	२५७	ठा. १० उ ३ सू. ७३८
चार्याक दर्शन	४६७	२	१३०	
चालीम दाना दायक दोष	६८८	७	१४६	नि. नि. गा. ६००
से दूषित				
चालीम भेद स्वर पृथ्वी के	६८७	७	१४५	प. म. १ सू. १०
चिकित्सा दोष	८६६	५	१६५	प्र. म. ६ सू. म. १२ लो. २० टी. पु. २०, नि. नि. गा. ६००, नि. नि. गा. ६०, प. गा. १३ गा. १८
चिन्त के आठ दोष	६०३	३	१२०	क. मा. २ लो. १६० १६१

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चित्तसमाधि के दस स्थान	६७४	३ २६२	सम १०, दशा द. ५
चिन्तन के सात फल	५०७	२ २३५	था प्र. गा. ३६३
चिन्ता स्वप्न दर्शन	४२१	१ ४४४	भश १६ उ ६ सू ५७७
चिलाती पुत्र की सम्यक्त्व-प्राप्ति की कथा	८२१	४ ४३४	नवपद गा १४टी सम्यक्त्वा-धिकार, ज्ञा अ १८
चिह्न छः नकारे के	४६१	२ १०२	उत्त अ १८गा ४१नमुचिकुमार की कथा (हस्तलिखित)
चुलनीपिता के व्रतभंग का कारण रक्षा-परिणाम नहीं पर हिंसा व क्रोध हैं	६८५	३ ३१३	उपा अ० ३ टी
चुलनी पिता श्रावक	६८५	३ ३११	उपा अ ३
चुल्लशतक श्रावक	६८५	३ ३१५	उपा० अ० ५
चूर्ण दोष	८६६	५ १६५	प्रव गा ४६८, ध अधि ३श्लो २२टी पृ. ४०, पि नि गा ४०६, पि वि गा ४६, पचा १३ गा १६
चूर्ण भेद	७५०	३ ४३३	ठा १० स ७१३टी, पन्न प १३
'चेइय' शब्दपर टिप्पण परिशिष्ट	६४६	६ २७६	उपा (अ) व हस्तलिखित प्रतिया
चेटक निधान की कथा	६४६	६ २७६	न सू २७ गा ६५ टी.
श्रौत्पत्तिकी बुद्धि पर चोरी का स्वरूप	४६७	२ १६७	
१ चोर की प्रसूति अठारह	८६६	५ ४१५	प्रश्न आश्रवद्वार ३ सू. १२ टी
चौतीस अतिशय अरिहतके	६७७	७ ६८	सम ३४, स श द्वा ६७
चौतीस अस्वाध्याय	६६८	७ ३५	ठा ४ सू २८५, ठा १० सू ७१४, प्रव द्वा २६८ गा १४५०-७१, व्यव. भाष्य उ. ७ गा २६६-३१६, आव ह अ ४ गा १३२१-६०

१ चोर को चोरी के लिए दोसाहन देना तथा अन्य किसी प्रकार से सहायता देना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चौतीस क्षेत्र जंबूद्वीप में तीर्थङ्करोत्पत्ति के	८७८	७	७१	मम. ३८
चौदह अतिचार ज्ञान के	८२४	५	१४	आन. २ अ. १ पृ ७३०
चौदह गुणस्थान	८४७	५	६३	कर्म भा २, १, प्रवक्षा. ८५, १०, २२५, गुण भा
चौदह जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं	८४८	५	११५	ग. ज. १ उ-मू. २४
चौदह द्वार चरमाचरण के	८४३	५	४२	ग. ज. १८ उ-मू. १६
चौदह द्वार पठमापठम के	८४२	५	३८	ग. ज. १८ उ-मू. १६
चौदह द्वार समदेशी अमदेशी के	८४१	५	३४	ग. ज. १८ उ-मू. १६
चौदह नाम माया के	८३६	५	३१	मम. ४०
चौदह नाम लोभ के	८३७	५	३२	मम. ४०
चौदह नियम श्रावक के	८३१	५	२३	निर्या. भा. अति. २० भा ३४१,
चौदह पुत्र	८२३	५	१२	न. मू. १, मम. १५, १५५
चौदह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८	मम. भा. ३३१-३३८
चौदह प्रकार का दान	८३२	५	२६	निर्या. भा. अति. १० भा १५
चौदह प्रकार से अशुभ नाम कर्म भोगा जाता है	८३६	५	३३	आन. १०० उ-मू. १५५
चौदह प्रकार से शुभ नाम कर्म भोगा जाता है	८३८	५	३३	मम. १०० उ-मू. १५५
चौदह वार्तेमाधु के लिए धपलपनीय	८३४	५	२६	उ-मू. ३ मू. १००-१०१
चौदह भेद श्रावक के	८२७	५	१६	मम. १०० उ-मू. १५५

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चौदहभेद आभ्यन्तरपरिग्रह	८४०	५ ३३	वृ० उ० १ गा ८३१
चौदह भेद जीवों के	८२५	५ १७	सम १४, आवाह अ ४५ ६४६
चौदह भेद श्रुतज्ञान के	८२२	५ ३	नसू ३८-४४, विशेषे गा ४५४
चौदह महानदियाँ	८४४	५ ४५	सम० १४
चौदह महाखमतीर्थङ्कर व	८३०	५ २२	भ श १६३ ६ सू ६७८, ज्ञा
चक्रवर्ती के जन्म सूचक			अ. ८ सू ६६, कल्प सू ४
चौदह मार्गणास्थान	८४६	५ ५५	कर्म भा ४ गा ६-१४
चौदह रत्न चक्रवर्ती के	८२८	५ २०	सम० १४
चौदह राजू परिमाण लोक	८४५	५ ४५	प्रव द्वा. १४३, तत्त्वार्थ अध्या ३ सू ६टी, भ श ६ उ ६ सू २२६, भ श १३ उ ४ सू ४७६-४८०
चौदह लक्षण अविनीत के	८३५	५ ३०	उत्त. अ ११ गा ६-६
चौदह खम मोक्षगामी आत्मा के	८२६	५ २०	भ० श० १६ उ० ६ सू ६८०
चौपन उत्तम पुरुष	१००६	७ २७७	सम० ६४
१ चौमासी अनुद्घातिक	३२५	१ ३३४	ठा ६ उ० २ सू ४३३
२ चौमासी उद्घातिक	३२५	१ ३३४	ठा० ६ उ० २ सू ४३३
चौमासे के पिछले सित्तर	३३७	१ ३४७	ठा० ६ उ० २ सू ४१३
दिनों में विहार के प्रकारण			
चौमासे के प्रारंभिक पचास	३३६	१ ३४७	ठा० ६ उ० २ सू ४१३
दिनों में विहार के प्रकारण			
चौबीसगाथाविनयसमाधि	३३६	६ २०१	दश० अ० ६ उ० २
अध्ययन के दूसरे उद्देश की			
चौबीसगाथासमाधि	३३२	६ १६७	सुय० श्रु० १ अ० १०

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चौबीस जान्युत्तर	६३६ ६ २०६	पचीस भाग १ भाग = गु. २५, न्यायप्र, ज्ञानायक भाग १ भाग १
चौबीसतीर्थद्वार परवत क्षेत्र	६३१ ६ १६७	सम. १८, प्र. ३७ भा. ३००-३०३
के आगामी उत्सर्पिणी के		
चौबीस तीर्थद्वार परवत क्षेत्र	६२८ ६ १७६	सम ११६, प्र. ३७ भा २६६-२६८
के वर्तमान अवसर्पिणी के		
चौबीस तीर्थद्वार भरत क्षेत्र	६३० ६ १६६	सम० ११८, प्र० ३७० ७ भा० २६३ २६४
के आगामी उत्सर्पिणी के		
चौबीस तीर्थद्वार भरत क्षेत्र	६२७ ६ १७३	प्र० ३७० ७ भा २८८-२९०
के वर्तमान अवसर्पिणी के		
चौबीस तीर्थद्वार भरत क्षेत्र	६२६ ६ १७७	सम १४१, प्र० ३७१ भा. २९२ से ३३०, भाग ३ भा २३१ से ३८६, स. प्र. ३७ ७-१४
के वर्तमान अवसर्पिणी के		
चौबीस तीर्थद्वारों के सचा-६२६	६ १७८	सम. १४७, भाग ३ भा २९६ से ३३०, भाग ३ भा २३१- ३८६, स. प्र. ३७ ७-१४
ईस बोलों का यंत्र तथा उन		
सम्बन्धी अन्य तर्क बोल		
चौबीस दण्डक	६३४ ६ २०४	स. प्र. १५३, भा. १३३ भा
चौबीस धान्य	६३५ ६ २०५	स. प्र. १५३, भा. १३३ भा

छ

छः अक्षर प्रत्याख्यान	४८२ २ ६६	आयु, नि. १५२३ पृ. २४१ भा. २४१ २४१ १ २
छः अक्षर भूमि जंबूद्वीप की	४३५ २ ४१	स. प्र. १५३ १००
छः अनन्व	४८८ २ १००	स. प्र. १५३ १००, भा. २४१ २४१

१. आगामी के अक्षर प्रत्याख्यान के पृष्ठ में दोष न होने पर भी संपादन १५३३
पृष्ठ २४१ से २४१ ही संपादन बरतकर जान्युत्तर है ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
छः अप्रमाद प्रतिलेखना	४४८ २ ५२	ठा ६सू ५०३, उक्त अ २६गा २५
छः अप्रशस्त वचन	४५६ २ ६२	ठा ६ उ. ३सू ५२७, प्रव द्वा २३५गा १३२१, वृ(जी) उ ६
छः आगार पोरिसी के	४८३ २ ६७	भाव ह. अ ६पृ ८५२, प्रव द्वा ४
छः आगार समकित के	४५५ २ ५८	उपा अ १सू ८, भाव ह अ. ६पृ ८१०, ध अधि २श्लो. २२पृ. ४१
छः आभ्यन्तर तप	४७८ २ ८६	उवसू २०, उक्त अ. ३० गा ३०, प्रव द्वा ६गा २७१, ठा ६सू ५११
छः आरे अवसर्पिणी के	४३० २ २६	ज वक्त २सू १६-३६, ठा ६ उ ३ सू ४६२, भश ७ उ. ६सू २८७
छः आरे उत्सर्पिणी के	४३१ २ ३५	ज वक्त २सू ३७-४०, ठा ६ उ ३ सू ४६२, विशेषे गा २७०८-१०
छः आवश्यक	४७६ २ ६०	भाव ह.
छः इत्वरिक अनशन	४७७ २ ८७	उक्त अ ३० गा ६-११
छः उपक्रम	४२७ २ २५	अनु सू ७०
छः ऋतुएं	४३२ २ ४०	ठा ६ उ ३ सू ५२३ वृ हो
छः ऋद्धि प्राप्त आर्य	४३८ २ ४२	ठा ६सू ४६१, पत्र. प १ सू ३७
छः कर्त्तव्य आचार्य के	४५१ २ ५५	ठा ७ उ ३ सू ६७० टी
१ छः कल्प पल्लिमन्थु	४४४ २ ४७	ठा ६ उ ३ सू ५२६, वृ (जी) उ ६
छः कल्पस्थिति	४४३ २ ४५	ठा ३ उ ४सू २०६, अ. ६ उ ३ सू ५३०, वृ (जी) उ ६
छः काय	४६२ २ ६३	ठा ६ उ ३सू ४८०, दश अ ४, कर्म भा ४ गा. १०
छः काय का अल्पवहुत्व	४६४ २ ६५	जी प्रति २सू ६२, पत्र प ३ द्वा ४
छः काय की कुलकोटियाँ	४६३ २ ६४	प्रव द्वा १५० गा ६६३-६६७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ऋः कारण ज्ञानावर्णीय कर्म बाँधने के	४४०	२	४४	भ. ज. = उ. ६ सू. ३१
ऋः कारण दर्शनावर्णीय कर्म बाँधने के	४४१	२	४४	भ. ज. = उ. ६ सू. ३१
ऋः कारण मोहनीय कर्म बाँधने के	४४२	२	४४	भ. ज. = उ. ६ सू. ३१
ऋः कारण साधु के आहार करने के	४८४	२	६८	पि. नि. भा. ६. ६२, उ. ज. भा. २. ३२
ऋः कारण साधु के आहार न्याय के	४८५	२	६८	पि. नि. भा. ६. ६६, उ. ज. भा. २. ३६
ऋः कारण हिंसा के	४६१	२	६३	ज्ञानाधु. १ भा. १३. २ सू. ११
ऋः कुलकोटीजीवनिकायकी	४६३	२	६४	प्र. ज. भा. १. ७ भा. ६. ३ सू. ११
ऋः लुद्र प्राणी	४६७	२	६७	भा. ६. ३०३ सू. ११
ऋः गुण गणधारक के	४५०	२	५४	भा. ६. ३०३ सू. ११
ऋः गुण श्रावक के	४५२	२	५६	भा. ६. ३०३ सू. ११
ऋः चिह्न नकार के	४६१	२	१०२	भा. ६. ३०३ सू. ११
ऋः जीविकाय	४६२	२	६३	भा. ६. ३०३ सू. ११
ऋः जीविकायकी कुलकोटी	४६३	२	६४	भा. ६. ३०३ सू. ११
ऋः दर्शन	४६७	२	११५	भा. ६. ३०३ सू. ११
ऋः दुर्लभ बोल	४३६	२	४३	भा. ६. ३०३ सू. ११
ऋः द्रव्य	४२४	२	३	भा. ६. ३०३ सू. ११

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
छः पर्याप्ति	४७२ २ ७७	पञ्च प १ सू १२टी., भ श ३ उ १ सू १३०, प्रव द्वा २३२गा १३१७-१८, कर्म भा १गा ४६
छः पर्व अधिक तिथि वाले	४३४ २ ४१	ठा ६ सू ६२४, चन्द्र प्रा १२
छः पर्व न्यून तिथि वाले	४३३ २ ४०	ठा ६ उ ३ सू ५२४, चन्द्र प्रा १२, उत्त अ. २६ गा १५
छः प्रकार का अवधिज्ञान	४२८ २ २७	ठा ६ सू ६२६, न. सू ६-१५
छः प्रकार का आयुबन्ध	४७३ २ ७६	भ श ६ उ ८, ठा ६ उ ३ सू ५३६
छः प्रकार का प्रश्न	४६४ २ १०३	ठा ६ उ ३ सू ० ६३४
छः प्रकार का भोजन परिणाम	४८६ २ ६८	ठा ६ उ ३ सू ५३३
छः प्रकार का विवाद	४६३ २ १०३	ठा ६ उ ३ सू ६१२
छः प्रकार की गोचरी	४४६ २ ५१	ठा ६ सू ५१४, उत्त अ ३०गा १६, प्रव द्वा ६७गा ७४६, घ. अधि ३ श्लो २२टी पृ ३७ ठा ६ उ ३ सू ४६०
छः प्रकार के मनुष्य	४३७ २ ४१	
छः प्रकार से भूठा कलंक लगाने वाले को प्रायश्चित्त	४६० २ ६२	वृ (जी) उ ६ सू २
छः प्रतिक्रमण	४८० २ ६४	ठा. ६ उ ३ सू ५३८
१ छः प्रत्यनीक	४४५ २ ४६	भ श. ८ उ ८ सू ३३६
छः प्रत्याख्यान विशुद्धि	४८१ २ ६५	भाव ह नि. गा १६८६ पृ ८६६, ठा ५ उ ३ सू ४६६ टी
छः प्रमाद	४५६ २ ५६	ठा ६ उ ३ सू ५०२
छः प्रमाद प्रतिलेखना	४४६ २ ५३	ठा ६ सू ५०३, उत्त अ २६गा २६
छः प्रश्न परदेशी राजा के	४६६ २ १०७	रा सू ६३-७७
छः वार्ते ब्रह्मस्थ के अगोचर	४८६ २ १०१	ठा ०६ उ ३ सू ४७८

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
श्रः वादर वनस्पतिक्राय	४६६ २ ६६	दन्.म.४ सू० १
श्रः वाण तप	४७६ २ ८५	वन्.म.३० गा.८, द्रा. १ सू. १३ उत्त.गु. १८, प्र. १, द्रा. १ गा. २००
श्रः बोल उन्माद के	४५७ २ ६०	अ०६ उ०३ सू० १०१
श्रः बोल दुर्लभ	४३६ २ ४३	अ०६ उ.३ सू० ४८२
श्रः बोल में कोई समर्थ नहीं	४६० २ १०१	अ.६ उ०३ सू० ४८६
श्रः भाव	४७४ २ ८१	अनु सू. १२६, अ.६ उ ३ सू. ४३३, अ. गा. ४ गा. १०१, १०२
श्रः भावना समकित की	४५४ २ ५८	म. अ. १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००
श्रः भेद अर्थाविग्रह के	४२६ २ २८	न.सू. ३०, अ. ६ उ ३ सू. १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००
श्रः भेद अथविक्रोपलब्धि रूप हेतु के	४६५ २ १०४	गन्ता. ११ ३ सू. १८ ८०
श्रः भेद सुदृढ के	४२६ २ ८५	दन्.म. ४ भा. १ गा. १०० टी
श्रः भेद पृथ्वी के	४६५ २ ६५	जी. प्रति ३ सू. १०१
श्रः भेद प्रतिलेखनाविधि के	४४७ २ ५०	उत्त. ग. २, गा. २४
श्रः भेद प्राकृत भाषा के	४६२ २ १०२	प्रा. १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००
श्रः मनुष्य भेद	४३६ २ ४१	अ. ६ उ०३ सू. १०१
श्रः अथ चंदना से होनेवाले	४७५ २ ८४	प्रा. द्रा. २ गा. १००
श्रः लेखा	४७१ २ ७०	न. न. १ उ. २, वन्.म. ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००
श्रः विष परिणाम	४८७ २ १००	अ. ६ उ. ३ सू. १०१
श्रः संस्थान अर्थात् के	४६६ २ ६६	म. न. २ उ. ३ सू. १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
छः संस्थान जीव के	४६८ २ ६७	ठा ६सू. ४६५, कर्म. भा. १ गा ४०
छः संहनन	४७० २ ६६	पत्र प २३सू २६३, ठा ६उ ३ सू ४६४, कर्म भा १ गा. ३८, ३६
छः सामान्य गुण	४२५ २ १६	द्रव्य त. अध्या ११, आगम
छः स्थान अनात्मवान् (सक-४५८ २ ६१ पाय) के लिए अहितकर		ठा ६उ ३सू ४६६
छः स्थान समकित के	४५३ २ ५७	ध अधि २२श्लो २२टी. पृ ४६, प्रव द्वा १४८ गा. ६४१
छद्दियदोष (आहारकादोष) ६६३ ३ २४६		प्रव द्वा ६७ गा ५६८, पि नि गा ५२०, ध अधि ३ श्लो २२टी पृ ४१, पचा १३ गा २६
छत्तीसगाथाधर्माध्ययनकी ६८१ ७ ८७		सूय अ. ६
छत्तीस गुण आचार्य के	६८२ ७ ६४	प्रव द्वा ६४ गा ४४१-५४६
छत्तीस प्रश्नोत्तर	६८३ ७ ६८	
छद्मस्थ आठवार्तेनहीं देखता ६०२ ३ १२०		ठा ८ उ ३ सू ६१०
छद्मस्थ के परिपह उपसर्ग ३३१ १ ३४०		ठा. ५ उ १ सू. ४०६
सहने के पाँच स्थान		
छद्मस्थ छः वार्ते नहीं देखता ४८६ २ १०१		ठा ६उ ३ सू ४७८
छद्मस्थ जानने के ७ स्थान ५२३ २ २६०		ठा ७ उ ३ सू ५५०
छद्मस्थ दस वार्तो को नहीं ७१६ ३ ३८६		ठा १० उ ३ सू ७५४, म. श ८ उ २ सू ३१७
देख सकता		
छद्मस्थ पाँच बोल साक्षात् ३८६ १ ४०६		ठा ५ उ ३ स १५०
नहीं जानता		
छद्मस्थ सात वार्ते जानता ५२५ २ २६१		ठा. ७ उ ३ सू ५६७
और देखता नहीं है		

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
द्व्यस्य मरण	८७६	५	३८३	नन १७, प्राज्ञा १६७ मा १००७
द्वन्द्व के तीन भेद	५४०	२	२७५	अनु. सू. १२७ मा ६२, टी. ७ उ अनु ६४३ मा २७
द्वन्द्वणा समाचारी	६६४	३	२५०	भन २६३ अनु ८०१, टी १० उ ३ सू. ७६६, जिनम २६ मा ३, प्र. द्वा. १०१ मा ७६०
द्वयपन अन्तर द्वीप	१०११	७	२७७	पत्रप १५ ३७टी, पत्र. द्वा २६७ मा १४२० से १४२२, पी. प्रति. अनु १०८-११२
द्व्यस्य बोलों की मर्यादा	६४३	६	२२५	उपा. अ १५६, भा. परि २७० ३४ टी. पु ८०, भा प्रति
द्व्यस्य वैमानिक देव	६४४	६	२२७	पत्र. प १५ ३८, उपा. अ ३६ मा २०७-२१४, भन ८३, १
द्व्यस्य बोलों के गणित	६६८	७	२६३	भन ६३७ सू २४७, अनु सू ११४
द्व्यस्य काल परिमाण के	६६६	७	२६४	गमा. ४६
द्व्यस्य सातुकात्तर				
ब्राह्मी लिपि के				
द्वेद मंत्र चार	२०५	१	१८०	
द्वेदोपस्थापनिक चारित्र	३१५	१	३१७	टा. ५ उ. २ सू ४२८, अनु सू. १४२, द्वितीया १२१-१२२०
द्वेदोपस्थापनीय कल्प-	४४३	२	४५	टा. ३३ अनु २०१, टा. ६३, ३ सू ५३०, सू (गि.) ३६
स्थिति				
द्वेदी गतागत के १८ द्वार	८८८	५	३६८	पत्र. ६ के सागर से

ज

जतपीलगाकम्मकर्मि-	८६०	५	१४५	उपा. अ. १५ ३, भा. अ. ८ उ. ५ सू ३३०, भा. अ. ५, ६३, ८२८
दान				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जड़कर्म कैसे फल देता है?	५६०	३ ४८	कर्म भा १ भूमिका
जनपद सत्य	६६८	३ ३६८	ठा. १० सू. ७४१, पन्न प ११ सू. १६५, घ अघि ३ श्लो ४१ पृ १२१
जन्म की व्याख्या और भेद	६६	१ ४६	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३२
जमाली की कथा और उसका	५६१	२ ३४२	विशे गा २३०६-२३३२, भ
मत शंका समाधान सहित			श ६३ ३३, याव. ज. अ. १ पृ ३१२, भ श. १ उ १ सू० ७
जम्बूद्वीप	४	१ २	ठा १ सू ५२, तत्त्वार्थ अध्या ३ सू ६
जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति का वर्णन	७७७	४ २२५	
जम्बूद्वीप में चन्द्र सूर्यादि	७६६	४ ३००	सूर्य प्रा १६
जम्बूद्वीप में छः अकर्म भूमि	४३५	२ ४१	ठा ६ उ ३ सू ५२२
जम्बूद्वीप में तीर्थङ्करोत्पत्ति	६७८	७ ७१	सम. ३४
के चौतीस क्षेत्र			
जम्बूद्वीप में महानदियाँ सात	५३६	२ २७०	ठा ७ उ. ३ सू० ५५५
पश्चिम की ओर जाने वाली			
जम्बूद्वीप में महानदियाँ सात	५३८	२ २७०	ठा ७ उ ३ सू. ५५५
पूर्व की ओर जाने वाली			
जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत पर	२७३	१ २५१	ठा० ४ उ० २ सू० ३००
चार वन हैं			
जम्बूद्वीप में वर्षाधर ७ पर्वत	५३७	२ २७०	सम ७, ठा ७ उ ३ सू. ५५५
जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र	५३६	२ २६६	ठा ७ उ. ३ सू ५५५, सम ७, तत्त्वार्थ अध्या. ३ सू १०
जलचर	४०६	१ ४३५	पन्न प १ सू ३३, उत घ. ३६
जल प्रवेश मरणा	७६८	४ २६६	भ. श २ उ १ सू ६१
जल्लौषधि लब्धि	६५४	६ २६०	प्रव द्वा २७० गा. १४६२

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ जांगमिक वस्त्र	३७४	१	३८६	टा० १ उ० ३ म० ४४६
जागरिका तीन	६२४	३	१६८	भ. ग. १२ उ. १ म० ४३६
जाति की व्याख्या और भेद	२८१	१	२५६	पम. प. २३ उ. २ म० २६३, प्र. १ द्वा १८७ गा. १०६६-११०४
जाति नाम निश्चत्तायु	४७३	२	७६	भ. ग. ६ उ० म० २६०, उ. ६ उ. ३ म० ४३६
जातिभेद	७०३	३	३७४	टा. १० म० ७१०, टा. ८ म० ६०१
जातिस्मरणसे समकितमासि	८२१	४	४२३	नगपद गा. १२८
जात्याय	७८५	४	२६६	सूत्र १ निगा ३०१३
२ जान्युत्तर चौबीस	६३६	६	२०६	प्र. मी. म. १ भा. २ म० २८, न्याय प्र. म. भा. ४, न्याय ८ भा. १ भा. १
जितेन्द्रियता	७६३	३	४४५	टा १० उ ३ म० ७४८
जिनकल्प	५२२	२	२५३	विशं गा. ७
जिनकल्प स्थिति	४४३	२	४७	टा म० ६०६, ४३०, सु (पी. उ. १)
जिनकल्पी की प्रभावनाएं	५२२	२	२५५	विशं. गा. ७
जिनकल्पी यथालन्दिक	५२२	२	२६०	विशं. गा. ७
जिन तीन	७४	१	५३	टा. १ उ म० २२०
जिनदत्त, मागरदत्तकी कथा	६००	५	४३६	भा. म. ३
जिनदाम कुमार की कथा	६१०	६	५६	वि. म. १४
जिनपाल, जिनरत्नकी कथा	६००	५	४५३	भा. म. १
३ जीन व्यवहार	३६३	१	३७७	टा १ म० ४२१, भ. म. ८ उ० म० २४०, न्याय, पीठिया गा. १, २

१ प्रथम भीले के शोभ से बना हुआ वस्त्र । २ पृष्ठ १३२ वा दिखाने के लिये ।
 ३ अनेक भीवर्य मुनियों द्वारा की हुई मर्यादा का प्रतिपादन करने वाला ग्रन्थ
 जीन वस्त्राहार है । उसमें प्रसिद्ध व्यवहार भीगन्दाहार है ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
जीव के संयम पर ७ गाथा	६६४	७	२१२	
जीव	७व	१	४	ठा २सू १०१, तत्त्वार्थ अध्या २
जीव	१३०	१	६८	ठा. ५सू ४३०, भ श २उ १सू ६१
जीव और कर्म का संबन्ध	५६०	३	४७	विशे गा १६३५-१६३६
जीव और पुद्गल के लोकसे	२६८	१	२४७	ठा० ४उ० ३सू ३३७
बाहर न जाने के ४ कारण				
जीव और शरीर के भेदा-	७७५	४	३४	विशे गा १६४५-१६८६
भेद के विषय में गणधर वायु-				
भूति का शंका समाधान				
जीव कर्म का अनादि संबन्ध	५६०	३	५१	विशे गा १८१३-१८१४
जीव के चौदह भेद	८२५	५	१८	सम. १४, आव इ अ. ४पृ ६४६
जीव के चौदह भेदों का	८२५	५	१८	पत्र प ३द्वार. ३, १८, १६, जी प्रति
अल्पबहुत्व				४सू. २२५ प्रसंभा २
जीव के छः नाम	१३०	१	६८	भ श २उ १सू ६१
जीव के तीन भेद	६६	१	५०	भ श. ६ उ ३सू २३७
जीव के पाँच भाव	३८७	१	४०७	कर्म भा ४गा ६४-६८, अतु
				सू १२६, प्रवद्वा २२१ गा०
				१२६० से १२६८
जीव के संस्थान छः	४६८	२	६७	ठा ६सू ४६५, कर्म भा १गा ४०
जीव तत्त्व के ५६३ भेद	६३३	३	१७८	पत्र प. १, उत्त अ ३६, जी
जीव दस प्रकार के	७२६	३	४१४	ठा १० उ ३सू ७७१
जीव दस प्रकार के	७२७	३	४१५	ठा. १० उ ३सू ७७१
जीव द्रव्य	४२४	२	३	आगम, उत्त अ ३६
जीवन की अस्थिरता पर	६६४	७	२२५	
दस गाथाएं				

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जीवनिकाय छः	४६२	२	६३	टा. ६ उ. ३ मू. ४ = ०, टन म. १, कर्म. भा. ४ गा. १०
जीवनिकाय ६ की कुल कोड़ी	४६३	२	६४	प्रव. द्वा. १४० गा. ६६३-६१७
जीव परिणाम दस	७४६	३	४२६	पत्र. १, १३, टा. १० मू. ७१३
जीव प्रादेशिक दृष्टि निहव	५६१	२	३५३	विशे. गा. २३३३-२३४४
जीवमिश्रिता सत्यामृषा	६६६	३	३७०	टा. १० मू. ७४१, पत्र. ११ मू. १६६, प. म. वि. ३ भा. ४१ मू. १००
जीव सभी सात प्रकार के	५५०	२	२६२	टा. ७ उ. ३ मू. ४६२
जीवहन्का भारी कैसे होता है	६६३	७	१२०	न. ग. १३६ मू. ७२
जीवाजीवमिश्रिता सत्या-मृषा	६६६	३	३७१	टा. १० मू. ७४१, पत्र. ११ मू. १६६, प. म. वि. ३ भा. ४१ मू. १००
जीवाजीवाभिगम सूत्र का	७७७	४	२१६	
संक्षिप्त विषय वर्णन				
जीवादिनांतत्त्वों के ज्ञानसे	११	४	३५२	टन म. ४ गा. १४ ३४
१२ वोलों की परम्परा मासि				
जीवाधिकरण	५०	१	३०	न. ग. भा. ६ मू. ७
जीवात्मिकाय के ५ प्रकार	२७७	१	२५६	टा. ६ उ. ३ मू. ४४१
जीवों की समानता	४२४	२	८	भा. म.
जीवों के चौदह भेद	८२५	५	१७	म. ग. १३, मा. १०, म. टा. ६ ४३
जीवों के चौबीस दण्डक	६३४	६	२०४	टा. १ मू. ६१३, म. ग. १३, भा. ३.
जम्भक देवों के दस भेद	७४२	३	४२०	न. ग. १४ उ. ३ मू. ६३३
जैन दर्शन	४६७	२	१५६	
जैनधर्म की चार विशेषताएं	४६७	२	२१०	
जैन साधु	४६७	२	२०८	

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जैन साधु के लिए मार्ग- प्रदर्शक वारह गाथाएँ	७८१	४ २५५	उत्त अ २१ गा. १३-२४
ज्ञात, ज्ञातपुत्र	७७०	४ ४	जैनविद्या बोल्यूस १ न १
ज्ञाता के नौ भेद	६४१	३ २१२	आचा.श्रु १ अ २७ सू ८८
ज्ञाताधर्मकथांगकी १६ कथा ६००	५	४२७	
ज्ञाताधर्मकथांग के दोनों	७७६	४ १८५	
श्रुतस्कन्धों का विषयवर्णन			
ज्ञान	११	१ १०	पत्र प २६ सू ३१२
ज्ञान कुशील	३६६	१ ३८४	ठा ५ उ ३ सू ४४५
ज्ञान के चौदह अतिचार ८२४	५	१४	आच.ह अ ४ पृ ७३०
ज्ञान के दो भेद	१२	१ १०	ठा २ उ १ सू ७१, न सू २
ज्ञान के पाँच भेद	३७५	१ ३६०	ठा ५ उ ३ सू ४६३, कर्म भा १ गा ४, न० सू १
ज्ञान गर्भित वैराग्य	६०	१ ६५	क भा २ श्लो ११८-११९
ज्ञान नारकियों में	५६०	२ ३३७	जी प्रति ३ सू ८८
ज्ञानपरिणाम	७४६	३ ४२७	ठा १० उ ३ सू ७१३, पत्र प १३
ज्ञान पुलाक	३६७	१ ३८२	ठा ५ सू ४४५, भश २५ उ ६
ज्ञान मार्गणा और भेद	८४६	५ ५८	कर्म० भा ४ गा. ११
ज्ञान विनय	४६८	२ २२६	ज्व सू २०, भश २५ उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ५८६, ध. अधि. ३ श्लो ५४ टी पृ १४१

ज्ञान के चौदह अतिचारों में सुदुद्विन्न दुदुदुपडिच्छिय दो अतिचार हैं। इनका अर्थ इस प्रकार है—

सुदुद्विन्न—शिष्य में शास्त्र ग्रहण करने की जितनी शक्ति है उससे अधिक पढ़ाना।
यहाँ सुदुदु शब्द का अर्थ है शक्ति या योग्यता से अधिक।

दुदुदुपडिच्छिय—आगम को बुरे भाव से ग्रहण करना

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ज्ञान विराधना	८७	१	६३	सम ३
ज्ञान वृद्धि के दस नक्षत्र	७६२	३	४४४	सम. १०, भा. १०३ ३ सू. ७८१
ज्ञान संख्या	६१६	३	१४३	अनुसू. १४६
ज्ञानाचार	३२४	१	३३२	ठा. १७ उ २ सू. ४३०, अ. अधि ३ ग्लो ४४ पृ. १४०
ज्ञानाचार आठ	५६८	३	५	अ. अधि. १ ग्लो १६ टी पृ. १८
ज्ञानातिशय	१२६	ख १	६७	स्या का. १ टी.
ज्ञानात्मा	५६३	३	६६	भ रा १२ उ १० सू. ४३७
ज्ञानाराधना	८६	१	६३	ठा ३ उ ४ सू. १६५
ज्ञानार्थ	७८५	४	२६६	वृ उ १ नि गा ३०६३
ज्ञानावरणीय कर्मका अनुभाव	५६०	३	५६	पत्र प २३ सू. २६२
ज्ञानावरणीय कर्म के भेद	३७८	१	३६३	ठा ५ सू. ४६४, कर्म. भा. १ गा. ६
ज्ञानावरणीय कर्म के भेद और उसके बन्ध के छः कारण	५६०	३	५६	कर्म. भा. १ गा. ६, ४ ४. भ रा. ८ उ ६ सू. ३५१, पत्र प २३ सू. २६३-६४, तत्त्वार्थ ग्रन्था. ८ सू. ६
ज्ञानावरणीय कर्म बंधने के छः कारण	४४०	२	४४	भ रा ८ उ ६ सू. ३५१
ज्ञानेन्द्र	६२	१	६६	ठा ३ उ. १ सू. ११६
ज्ञानोपघात	६६८	३	२५७	ठा. १० उ ३ सू. ७३८
ज्येष्ठ कल्प	६६२	३	२३६	पचा. १७ गा. २६-३१
ज्योतिषशास्त्र की तरह क्या है	७	१२६		ज्ञा अ ८ सू. ६६
जैनशास्त्रों में भी पुण्यनक्षत्र की श्रेष्ठता का वर्णन है ?				
ज्योतिषी देव के पाँच भेद	३६६	१	४२३	ठा. ५ सू. ४०१, जी. प्रति ३ सू. १०२
ज्वलन प्रवेश मरण	७६८	४	२६६	भ रा २ उ १ सू. ६१

भ

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
भूठ बोलने के आठ कारण	५८२ ३ ३७	साधुप्र. महाव्रत २
भूठा कलंक लगाने वाले को प्रायश्चित्त	४६० २ ६२	वृ (जी) उ. ६ सू २

ठ

ठाणांग (स्थानांग) सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७६ ४ ७६-११४
---	--------------

ड

ढाई द्वीप में चन्द्र सूर्यादि ज्योतिषी देवों की संख्या	७८६ ४ ३०२ सूर्य प्रा १६
--	-------------------------

ण

णाय, णायपुत्त	७७० ४ ४	जैनविद्या बोल्यूम १ न १
---------------	---------	-------------------------

त

१ तज्जात दोष	७२२ ३ ४०६	ठा १० उ. ३ सू ७४३
१ तज्जात दोष	७२३ ३ ४११	ठा. १० उ ३ सू ७४३
२ तज्जात संसृष्ट कल्पिक	३५३ १ ३६८	ठा ४ उ १ सू. ३६६
तत्काल उत्पन्न देवकारणों से मनुष्य लोक में आता है	१३६ १ १०१	ठा ४ उ ३ सू ३०२

१ शास्त्रार्थ के समय प्रतिवादी के जाति, कुल आदि के दोषों को निकाल कर उस पर व्यक्तिगत आक्षेप करना ।

२ अभिग्रह विशेष, जिसके अनुसार साधु तभी आहार लेता है जब कि दिये जाने वाले आहार विशेष से दाता के हाथ और भाजन खरडे हुए हों ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तत्काल उत्पन्नदेव ४ कारणों १३८	१	१०१	१०१	अ. ३ उ ३ सू ३२३
सेमनुष्यलोक में नहीं आता है				
तत्काल उत्पन्न नैरयिक चार १४०	१	१०१	१०१	अ० ४ उ० १ सू २४६
बोलों से मनुष्य लोक में नहीं आ सकता				
तत्त्व की व्याख्या और भेद ६३	१	४४	४४	ध. अ. वि. २ श्लो २१-२२ पृ ३१, श्री प्रका २ श्लो ४-११
तत्त्व नौ	६३३	३	१७७	नव० गा १, अ. ६ उ ३ सू. ६६६
तथाकार समाचारी	६६४	३	२५०	भ. श. २. ४ उ. ७ सू. ८०, अ. १० उ. ३ सू. ७४६, उत्त अ २६ गा ३, प्रव द्वा १०१ गा ७६०
१ तथाज्ञानानुयोग	७१८	३	३६५	अ. १० उ ३ सू ७२७
तदुभयधर पुरुष	८४	१	६२	अ. ३ उ. ३ सू १६६
तदुभयागम	८३	१	६१	अनु. सू १४४
तदुभयाचार	५६८	३	६	ध अ. वि. १ श्लो. १६ टी. पृ १८
तद्धितज भावप्रमाण नाम	७१६	३	४०२	अनु सू १३०
” के. उ. भेद	७१६	३	४०२	अनु सू १३०
तद्भव मरण	७६८	४	२६६	भ. श. २ उ १ सू ६१
तद्भव मरणा	८७६	५	३८३	नम १७. प्रव द्वा १४७ गा १००६
तन्दुलवेया लिय पड़ण्णा	६८६	३	३५४	३ प.
तप	३५१	१	३६६	अ. ५ सू ३६६, प्र. गा. ५५४, ध अ. वि. ३ श्लो ४६ पृ. १२७
तप	६६१	३	२३४	न. गा. २३, म. १०, गा. भा १ प्र. ८

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
तप आचार	३२४ १ ३३३	ठा.५ उ.२ सू.४३२, अश्वि ३ श्लो ५४ पृ १४०
तप आदि के फल की दस प्रकार की इच्छा	६६७ ३ २५३	ठा १० उ ३ सू. ७५६
तपः कर्म	७६० ३ ४४३	आचा. अ २ उ १ नि गा १८३
तप के बारह भेद	४७६, ४७८ २ ८५, ८६	उत्त अ ३०, उव सू १६, २०, ठा. ६ उ ३ सू ५११, प्रव. द्वा ६ गा २७०-२७१
तप के विषय में ११ गाथा	६६४ ७ २०२	
तप धर्म	१६६ १ १५५	भ.श २५ उ ७, उत्त अ ३० गा ८
तप मद	७०३ ३ ३७४	ठा १० सू ७१०, ठा ८ सू ६०६
तप समाधि के चार भेद	५५३ २ २६४	दश अ ६ उ. ४
१ तयालीस प्रवचन संग्रह	६६४ ७ १५१	उत्त, दश, आचा, सूय, प्रश्न., दप., भ.ज्ञा, दश, पि नि, धर., विशे, आव ह, उव, ध, आगम, समय, वृ, पंचव, प्रतिमा
तरु पतन मरण	७६८ ४ २६६	भ.श २ उ १ सू ६१
तर्क	३७६ १ ३६५	रत्ना परि ३ सू ७
तापसश्रमण	३७२ १ ३८७	प्रव द्वा ६४ गा ७३१
तिथियों के पन्द्रह नाम	८५७ ५ १४२	चन्द्र प्रा १० प्रा प्रा १४
२ तिन्तिकाक	४४४ २ ४८	ठा ६ सू ५२६, वृ (जी) उ ६
३ तिरीडपट्ट वस्त्र	३७४ १ ३८६	ठा.५ उ ३ सू० ४४६

१ भिन्न भिन्न तयालीस विषयों पर आगम तथा धर्म ग्रन्थों की गाथाएँ एवं पाठों का सुन्दर संग्रह। यह संग्रह स्वान्यायप्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

२ चिड़चिड़े स्वभाव वाला व्यक्ति, कल्पलिमन्थु का एक भेद।

३ तिरीड वृक्ष की छाल का बना हुआ वस्त्र।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तिरोभाव	४४	१	२७	न्याय को.
तिर्यक्लोक	६५	१	४६	लोक भा. २ स. १२, भज ११ उ १० सू ४२०
तिर्यक् सामान्य	५६	१	४१	रत्ना. परि ५ सू ४
तिर्यञ्च आयुबंधके ४ कारण	१३३	१	६६	ठा ४ उ ४ सू ३७३
तिर्यञ्च के अड़तालीस भेद	६३३	३	१७८	उत्त अ. ३६, जी प्रति. १
तिर्यञ्च के अड़तालीस भेद	१००१	७	२६५	पत्र. प. १ सू १०-३६
तिर्यञ्च पंचेन्द्रियके पाँच भेद	४०६	१	४३५	पत्रप १ सू ३२-३६, उत्त अ ३६ गा १६६-१६२
तिर्यञ्च सम्बन्धी उपसर्ग के चार प्रकार	२४२	१	२१६	ठा. ४ उ ४ सू. ३६१, मृय अ ३ उ. १ टी नि. गा ४८
तिष्यगुप्त निह्व का आत्मा के संबंध में शंका समाधान	५६१	२	३५३	विशे. गा. २३३३-२३४४
तीन अंग पिता के	१२२	१	८७	ठा. ३ उ. ४ सू. २०६
तीन अंग माता के	१२३	१	८७	ठा ३ उ. ४ सू २०६
तीन अर्द्धेद्य	७३	१	५३	ठा. ३ उ २ सू १६५
तीन अभिलाषाएं देव की	१११	१	८०	ठा ३ उ ३ सू १७८
तीन अर्धयोनि	१२६	१	६०	ठा ३ उ ३ सू १८४ टी.
तीन अवस्था-वत्पादव्यय त्रौव्य	६४	१	४४	तत्त्वार्थ. प्रध्या. ४ सू. २६
तीन आत्मा	१२५	१	८६	परमा. गा १३-१४
तीन आधार विमानों के	११४	१	८१	ठा ३ उ ३ सू १८०
तीन आराधना	८६	१	६२	ठा. ३ उ ८ सू १६४
तीन कथा	६७	१	६६	ठा. ३ उ ३ सू १८६
तीन कर्म	७२	१	५२	जी प्रति ३ उ. १ सू. १११, नन्दुल. सू १४-१४ पृ. ८०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन का प्रत्युपकारदुःशक्व	१२४	१ ८७	ठा ३ उ १ सू १३५
तीन कारण अल्पायु के	१०५	१ ७४	ठा ३ उ १ सू १२५, भश ५ उ ६ सू २०४
तीन कारण अशुभदीर्घायुके	१०६	१ ७४	
तीन कारण जीव की शुभ दीर्घायु के	१०७	१ ७५	भश ५ उ ६ सू २०४, ठा ३ उ १ सू १२५
तीन कारण नवीन उत्पन्न देव के मनुष्य लोक में आने के	११०	१ ७६	ठा ३ उ ३ सू १७७
तीन जिन	७४	१ ५३	ठा ३ उ ४ सू २२०
१ तीन दुःसंज्ञाप्य	७५	१ ५४	ठा. ३ उ ४ सू २०३
तीन प्रकार के पुरुष	८४	१ ६१	ठा ३ उ ३ सू १६६
तीन बोल देव के च्यवन ज्ञान के	११३	१ ८१	ठा ३ उ ३ सू १७६
तीन बोल देव के पश्चात्ताप के	११२	१ ८०	ठा ३ उ ३ सू १७८
तीन बोल पृथ्वी के देशतः धूजने के	११६	१ ८२	ठा. ३ उ ४ सू १६८
तीन बोल सारी पृथ्वी धूजने के	११७	१ ८२	ठा. ३ उ ४ सू १६८
तीन भेद अंगुल के	११८	१ ८३	अनु सू १३३
तीन भेद आगम के दो प्रकार से	८३	१ ६०	रत्ना परि. ४ सू १, २, अनु सू १४४
तीन भेद आचार्य ऋद्धि के	१०२	१ ७१	ठा ३ उ. ४ सू २१४
तीन भेद आचार्य के	१०३	१ ७२	रा सू. ७७
तीन भेद ऋद्धि के	६६	१ ७०	ठा ३ उ ४ सू २१४
तीन भेद एपणा के	६३	१ ६६	उत्त अ २४ गा ११-१२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन भेद करण के	७८	१	५५	आगम, धाव. म गा १०६-१० टी, द्विगे गा १२०२-१२१८, प्रच द्वा २०४ गा १३०२टी. कर्म भा २ गा २ व्याख्या
तीन भेद करण के	६४	१	६७	ठा ३७१ सू १२४
तीन भेद गाग्व के	६८	१	७०	ठा ३ उ. ४ सू २१५
तीन भेद गुणव्रत के	१२८(क)	१	६१	धाव. ह्र प्र ६ पृ ८२६-८२६
तीन भेद गुण के	१२८(ख)	१	६२	उत्त प्र २४, ठा ३ सू १२६
तीन भेद जन्म के	६६	१	४६	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३२
तीन भेद जीव के	६६	१	५०	भश ६७ ३ सू २३७
तीन भेद तत्त्व के	६३	१	४४	यो प्रका २२लो ४-११, ध प्रा २ लो. २१-२२ टी पृ. ३१
तीन भेद दण्ड के	६६	१	६६	मन ३, धाया पु. १ म ४३. १ सू १२६टी, ठा ३७ १ सू १२
तीन भेद दर्शन के	७७	१	५५	ठा. ३ सू १८४ मज ८३२
तीन भेद देवोंकी ऋद्धि के	१००	१	७०	ठा. ३ उ. ४ सू २१८
तीन भेद द्रव्यानुपूर्वी के	११६	१	८४	धनु सू ६६-६८ टी.
तीन भेद धर्म के	७६	१	५४	ठा ३ उ ३, सू १८८, २०७
तीन भेद प्लयोपम के	१०८	१	७५	अनुसू १३८-१४०, प्र. द्वा १४८ गा १०१८ १०२६
तीन भेद भाव इन्द्र के	६२	१	६६	ठा. ३ उ. १ सू ११० ११६
तीन भेद मनुष्य के	७१	१	५१	ठा ३ उ. १ सू १३०, पन प १ सू ३०, जी प्रति. ३ सू. १०७
तीन भेद मोक्षमार्ग के	७६	१	५७	उत्त. प्र २८ गा. ३०, तत्त्वार्थ अध्या १ सू १
तीन भेद योग के	६५	१	६८	ठा. ३ सू १२४, तत्त्वार्थ. अध्या

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीनभेदयोनि के ३ प्रकारसे	६७	१ ४७	ठा ३सू १४०, तत्त्वार्थ, अध्या २
तीनभेद राजा की ऋद्धि के	१०१	१ ७१	ठा० ३ उ० ४ सू० २१४
तीन भेद लक्षणभास के	१२०	१ ८४	न्यायदी प्रका १
तीन भेद लोक के	६५	१ ४५	लोक भा २ स १२, म श. ११ उ १० सू ४२०
तीन भेद वनस्पति के	७०	१ ५०	ठा ३उ १ सू १४१
तीन भेद वेद के	६८	१ ४६	कर्म भा १ गा २२
तीन भेद वैराग्य के	६०	१ ६५	क, भा २ श्लो ११८-११९
तीन भेद व्यवसाय के	८५	१ ६२	ठा. ३उ ३ सू १८४
तीनभेद श्रद्धा, प्रतीति, रुचि	१२७	१ ६०	म श १ उ ६ सू ७६
तीन भेद समकित के दो प्रकार से	८०	१ ५८	विशे गा २६७५, द्रव्यलो स ३श्लो ६६८-६७०, घ. अधि २ श्लो २२टी पृ ३६, आ. ग. गा ४६-४०, प्रव द्वा १४६ गा ६४३-६४५, कर्म भा १ गा १५
तीन भेद समारोप के	१२१	१ ८५	रत्ना परि १, न्याय प्र अध्या ३
तीन भेद सागरोपम के	१०६	१ ७८	अनु सू १३८-१४०, प्रव द्वा १५६ गा १०२७ से १०३२ ठा ३उ ४सू २१०
तीन मनोरथ श्रावक के	८८	१ ६४	ठा ३ उ ४ सू २१०
तीन मनोरथ साधु के	८६	१ ६४	ठा ३ उ ४ सू २१०
तीन लिंग समकित के	८१	१ ५६	प्रव० द्वा. १४८ गा. ६२६
तीन बलय	११५	१ ८१	ठा० ३ उ० ४ सू० २२४
तीन विराधना	८७	१ ६३	मम० ३
तीन शल्य	१०४	१ ७३	धअवि ३श्लो २७पृ ७६, मम ३, टा० ३उ० ३ सू १८२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन शुद्धियां समकित की	८२	१	६०	प्रव० द्वा. १४८ गा ६३२
तीन स्थविर	६१	१	६६	ठा ३ उ. ३ सु १६६
तीर्थङ्कर चौतीस अतिशय	६७७	७	६८	सम० ३४
तीर्थङ्कर के विचरते हुए	६१८	६	१३६	वि० अ० ३ सु २० टी०
पुरिमताल नगर में अभग्ग- सेन का वध कैसे हुआ?				
तीर्थङ्कर को उपसर्ग रूप	६८१	३	२७६	ठा १० उ ३ सु ७७७, प्रव. द्वा. १३८ गा. ८८५-८८६
आश्चर्य (अच्छेरा)				
तीर्थङ्कर गोत्र के बीस बोल	५६०	३	७८	} भाव. ह. अ १ पृ ११८, ज्ञा. म. ८ सु ६४, प्रव. द्वा. १० गा. ३१० से ३१६
” ” ” ”	६०२	६	५	
तीर्थङ्कर गोत्र बाँधने वाले	६२४	३	१६३	ठा. ६ उ. ३ सु. ६६१
नौ आत्मा भगवान् महावीर के शासन में				
तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती के जन्म	८३०	५	२२	भ. श १६ उ. ६ सु ४७८, ज्ञा. म ८ सु ६४, कल्प. सु ४
सूचक महास्वप्न चौदह				
तीर्थङ्कर चौबीस ऐरवत क्षेत्र	६३१	६	१६७	सम १६८, प्रव द्वा ७ गा. ३००-३०२
के आगामी उत्सर्पिणी के				
तीर्थङ्कर चौबीस ऐरवत क्षेत्र	६२८	७	१७६	सम १६६, प्रव. द्वा ७ गा. २६६-२६८
के वर्तमान अवसर्पिणी के				
तीर्थङ्कर चौबीस के गणधर	७७५	४	२३	भाव. ह. नि गा २६६-२६८
तीर्थङ्कर चौबीस भरत क्षेत्र	६३०	६	१६६	सम० १६८, प्रव० द्वा० ७ गा० २६३-२६५
के आगामी उत्सर्पिणी के				
तीर्थङ्कर चौबीस भरत क्षेत्र	६२७	६	१७३	प्रव० द्वा ७ गा. २८८-२९०
के गत उत्सर्पिणी के				

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
तीर्थङ्कर चौबीस भरत क्षेत्र ६२६ के वर्तमान अवसर्पिणी के	६ १७७	सम १५७, आव ह नि गा. २०६ से ३६०, आव म गा २३१ से ३८६, स. श, प्रव द्वा ७-४५
तीर्थङ्कर दीक्षा लेते समय किये नमस्कार करते हैं?	७ १०२	आचा धु २ च्च ३ अ २४ सू. १७६, आव ह अ १ पृ १८६
तीर्थङ्करनामकर्मके २० बोल ५६०	३ ७८	} आव ह नि गा १७६-१८१ पृ ११८, आ अ ८ सू ६४, प्रव. द्वा १० गा ३१०-३१६
तीर्थङ्करनामकर्मके २० बोल ६०२	६ ५	
तीर्थङ्कर सम्बन्धी ५० बोल ६२६	६ १८८	} सम १५७, आव ह, गा २०६-३६०, आव म गा २३१-३८६, स श, प्रव द्वा ७-४५
तीर्थङ्कर सम्बन्धी २७ बोलों ६२६ का लेखा व अन्य २३ बोल	६ १७८	
तीर्थङ्कर सिद्ध	८४६ ५ ११७	पत्र.प १ सू ७
तीर्थङ्करों ने पाँच महाव्रत और चार महाव्रत रूप धर्म अलग अलग क्यों कहा ?	६८३ ७ ११६	भ ग १ उ ३ सू ३७ टी, उत्त अ २३ गा २३ से २७
तीर्थ की व्याख्या और भेद	१७७ १ १३०	ठ ४ उ. ४ सू ३६३ टी
तीर्थ सिद्ध	८४६ ५ ११७	पत्र.प १ सू ७
तीस अकर्मभूमि	६५७ ६ ३०७	पत्र.प. १ सू ३७
तीस द्वार नरकों के	५६० २ ३३८	जी प्रति ३ उ १, २, ३
तीस नाम परिग्रह के	६५८ ६ ३१०	प्रश्न आश्रवद्वार ५
तीस प्रकार भिक्षाचर्या के	६५६ ६ ३१०	उव सू १६, भ ग २ ५ उ ७
तीस महामोहनीय के बोल	६६० ६ ३१०	दशा द ६, सम ३०, उत्त अ ३१ गा १६ टी, आव ह अ ४ पृ ६६०
तुम्बे का दृष्टान्त	६०० ५ ४४१	ज्ञा० घ० ६
तृणवनस्पतिकाय आठ	६१२ ३ १२६	ठ ८ उ ३ सू ६१३

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
तृणवनस्पति के दस भेद	७४५	३	४२२	ठा १० उ ३ सू ७७३
तृतीयसप्तरात्रिदिवसनाम की दशर्षी भिक्खुपडिमा	७६५	४	२६०	सम. १२, दशा द ७, भ. स. २ उ १ सू ६३ टी
तृष्णा पर सात गाथाएं	६६४	७	२४२	
तेईसअध्ययनसूयगढांगके	६२४	६	१७३	सूय
तेईसगाथाएं भगवान् महा-	६२२	६	१६६	आचा शु १ अ. ६ उ. १
वीर की चर्या विषयक				
तेईस भेद क्षेत्र परिमाण के	६२५	६	१७३	अनु स १२३ सू १६०-१६२, प्रव द्वा २५४ गा १३६१ टी.
तेईस विषय पाँचइन्द्रियोंके	६२६	६	१७५	ठा सू ६७, ३६०, ४४३, ४६६, पत्र प २३ सू २६३, प बोल १२, तत्त्वार्थ अध्या २ सू २१
तेईस स्थान साधु के उतरने	६२३	६	१७०	आना शु २ चू १ अ २३ २
योग्य तथा अयोग्य				
तेजस्काय	४६२	२	६४	ठा ६ उ ३ सू १२०, दन अ ४, कर्म. भा ४ गा. १०
तेजोलेश्या	४७१	२	७४	उत्त अ ३६, कर्म भा ४ गा १३
तेजोलेश्या लब्धि	६५४	६	२६६	प्रव द्वा २७० गा १६६४
तेतलीपुत्र की कथा	६००	५	४६२	शा. अ १४
तेतीस आशातनाएं	६७५	७	६१	सम. ३३, दशा. द. ३, भा. १ द अ. ६ पृ ७२६
तेतीस बोल सिद्धों के अल्पबहुन्व के	६७६	७	६६	न सू. २० टी. पृ १२४
तेतीस बोलों का कथन करने वाली २१ गाथा	६१७	६	१३०	उत्त. अ. ३१

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
तेरह उपाय क्रोधादि की शान्ति के	८१८	४	४०२	श्राद्ध प्रका २ पृ ४३५
तेरह (कर्म) काठिया का वर्णन कहाँ है?	६८३	७	१२६	ध्रुव ह.नि गा ८४१ ८४२ पृ ३४६
तेरह क्रियास्थान	८१४	४	३६२	सूय श्रु २ अ २
तेरह गाथा असंस्कृत अ० की	८१६	४	४०६	उत्त अ ४
तेरह दृष्टान्त समकित प्राप्तिके	८२१	४	४२२	नवपद गम्यवत्वाधिकार
तेरह द्वार आहारक और अनाहारक के	८१७	४	३६८	पन्न प २८ उ २
तेरह भव भ० ऋषभदेव के	८२०	४	४०६	त्रि प पर्व १
तेरह भेद कायक्लेश के	८१६	४	३६७	} भ श २५ उ ७ सू ८०२, उव० सू १६
तेरह भेद प्रतिसंलीनता के	८१५	४	३६५	
तेरह भेद विनय के	८१३	४	३६१	दश अ ६८ १ नि गा ३२५-३२६, प्रव द्वा ६६ गा ५५०-५५१
तैजस शरीर	३८६	१	४१४	पन्न प २१ सू २६७, अ ५ उ १ सू ३६५, कर्म भा १ गा ३३
तैजस शरीर बन्धन नाम कर्म	३६०	१	४१६	कर्म भा १ गा ३५, प्रव द्वा २१६
तैजस समुद्घात	५४८	२	२८६	पन्न प ३६ सू ३३१, अ ७ उ ३ सू ५८६, प्रव द्वा २३१ गा. १३११, द्रव्यलो स. ३ पृ १२५
त्याग	३५१	१	३६६	ठा ५ सू ३६६, ध अ धि ३ श्लो ४६ पृ. १२७, प्रव. द्वा ६६ गा ५५४
त्रस	८	१	५	ठा २ उ ४ सू १०१
त्रस आठ	६१०	३	१२७	दश अ ४, अ. ८ उ. ३ सू. ५६५
त्रस काय	४६२	२	६४	ठा. ६ उ ३ सू. ४८०, दश अ ४, कर्म भा. ४ गा. १०

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
त्रायस्त्रिंश	७२६	३	४१५	तत्त्वार्थ ग्रन्था ४ सू. ४
त्रिमासिकी भिक्षुपण्डिमा	७६५	४	२८६	सम. १२, भ.श. २ उ. १ सू. ६३ टी, प्रशा. द. ७
त्रेपन नाम मोहनीयकर्मके	१००८	७	२७६	सम ४२, भ.श. १२ उ. ४
त्रैराशिक मत	५६१	२	३७१	विशे. गा २४४१-२४०८
त्र्यस्र संस्थान	४६६	२	६६	भ.श. २६ उ. ३ सू. ७२४, पत्र. प १ सू. ४

द

-दंतवाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा. अ. १ सू. ७, भ.श. ८ उ. ४ सू. ३३०, भावह. अ. ६ पृ. ८२८
दग्धाक्षर पांच	३८५	१	४०६	सरल पिणल
दण्ड	३	१	२	टा. १ सू. ३
दण्डक चौबीस	६३४	६	२०४	टा. १ सू. ५१ टी, भ.श. १ उ. १ टी
दण्ड की व्याख्या और भेद	६६	१	६६	भावा. भु. १ म. ४ उ. १ मू. १०६ टी. सम ३, टा. ३ उ. १ सू. १२६
दण्ड की व्याख्या और भेद	२६०	१	२६६	टा. ५ उ. २ सू. ४१८
दण्ड के दो भेद	३६	१	२३	टा. २ उ. १ सू. ६६
दण्ड नीति के सात प्रकार	५१०	२	२३८	टा. ७ उ. ३ सू. ४५७
दण्डायतिक	३५६	१	३७३	टा. ५ उ. १ सू. ३६६
दम्पन्ती सती	८७५	५	३५२	भरत गा. ८, त्रिप. पर्व ८ म. ३
दया के साठ नाम	६२२	३	१५१	प्रश्न संवाह्या १ सू. २१
दर्शन	११	१	१०	पत्रप २६ सू. ३१२
दर्शन आठ	५६८	३	१०६	टा. ८ उ. ३ सू. ६१८
दर्शन कुशील	३६६	१	३८४	टा. ४ उ. ३ सू. ८०४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दर्शन के चार भेद	१६६	१	१५७	ठा ४सू ३६६, कर्म भा ४गा. १२
दर्शन के तीन भेद	७७	१	५५	मश. ८८ २सू ३२०, ठा ३सू १८४
दर्शन छः	४६७	२	११५	तत्त्वार्थ, रत्ना., सर्वद, साख्य, योग, न्यायद, सि मु, प्रशास्त, शास्त्र, वेदान्त, ब्रह्म, हि फि.
दर्शन परिणाम	७४६	३	४२७	ठा १०३ ३सू ७१३, पन्न प १३
दर्शन पुलाक	३६७	१	३८२	ठा. ५ सू ४४६, मश २५३ ६
दर्शनभेदिनी विक्रथा	५३२	२	२६७	ठा० ७ उ० ३ सू० ६६६
दर्शनमार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म. भा ४ गा १२
दर्शन मोहनीय	२८	१	२०	ठा. २सू. १०६, कर्म भा १गा १३
दर्शन विनय	४६८	२	२२६	उवसू २०, म.ज २५३ ७सू ८०२, ठा ७ उ ३सू ४८६, ध. अधि ३ श्लो ६४ टीपृ १४१
दर्शनविनय के दस बोल	७०६	३	३८४	मश. २५३ ७ सू ८०२
दर्शन विनय के ५५ भेद	१०१०	७	२७७	उव सू २०
दर्शन विराधना	८७	१	६३	सम० ३
दर्शनाचार	३२४	१	३३२	ठा ४उ. २सू ४३२, धअधि ३ श्लो ४४ पृ. १४०
दर्शनाचार आठ	५६६	३	६	पन्न प १ सू ३७गा १२८, उक्त. अ २८ गा ३१
दर्शनात्मा	५६३	३	६६	म० श १२ उ १०सू ४६७
दर्शनाराधना	८६	१	६३	ठा० ३ उ०४ सू० १६६
दर्शनार्थ	७८५	४	२६७	वृ. उ १ नि गा. ३२६२
दर्शनावरणीय कर्म और उसके नौ भेद	५६०	३	५६	कर्म भा १गा १०-१२, पन्न प. २३सू २६३, तत्त्वार्थ- अध्या ८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दर्शनावरणीय कर्म बाँधने के छः कारण	४४१	२	४४	भ.श.८३.६५.३५१
दर्शनावरणीय कर्म बाँधने के छः कारण और अनुभाव	५६०	३	५६	कर्म भा. १ गा. ४४, पत्र १ २३ मू. २६२, भ.श.८३.६५.३५१
दर्शनेन्द्र	६२	१	६६	श.३.३.१ मू. ११६
दर्शनों का विकास	४६७	२	११६	
दर्शनों की परस्पर तुलना	४६७	२	२१४	
दर्शनोपघात	६६८	३	२५७	टा.०.१०.३०३ मू. ७३८
दशगिदावणया कर्मादान	८६०	५	१४६	उपा. अ. १ मू. ७, भ.श.८३.६५.३५१ मू. ३३०, आ.व.प.म.१.६५.२८
दशवैकालिकसूत्र की दूसरी	८६१	५	१४७	दश. चू. २
चूलिका की सोलह गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्र की दूसरी	८६१	५	४७८	दश. चू. २
चूलिका की १६ मूलगाथाएं				
दशवैकालिकसूत्र की प्रथम	८६८	५	४२०	दश. चू. १
चूलिका की अठारह गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्र की प्रथम	८६८	५	४८७	दश. चू. १
चूलिका की १८ मूलगाथाएं				
दशवैकालिकसूत्र के चौथे	८११	४	३५२	दश. अ. ४ गा. १८-२५
अ. की चारह गाथा का अर्थ				
दशवैकालिकसूत्र के दस	२०४	१	१७२	
अध्ययनों का विषयवर्णन				
दशवैकालिकसूत्र के १०वें	६१६	६	१२६	दश. अ. १०
अध्ययन की २१ गाथाएं				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
दशवैकालिकसूत्र के दूसरे ७७१	४	११	दश अ २	
अ० की ग्यारह गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्रकेनवेंअ० ५५३	२	२६३	दश. अ ६ उ ४	
के चौथे उ० की ७ गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्रकेनवेंअ० ८५३	५	१२७	दश. अ ६ उ ३	
के तीसरे उ० की १५ गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्रके नवें ८५३	५	४७६	दश० अ० ६ उ० ३	
अध्ययन के तीसरे उ० की				
पन्द्रह मूल गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्रकेनवेंअ० ६३३	६	२०१	दश० अ० ६ उ० २	
के दूसरे उ० की २४ गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्रकेनवेंअ० ८७७	५	३७७	दश० अ० ६ उ० १	
के पहले उ० की १७ गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्रके नवें ८७७	५	४८२	दश० अ० ६ उ० १	
अध्ययन के पहले उद्देशे				
की सत्रह मूल गाथाएं				
दशाश्रुतस्कधदशासूत्र का	२०५	१	१८०	
संक्षिप्त विषय वर्णन				
दस अच्छेरे (आश्चर्य)	६८१	३	२७६	ठा १० उ ३ सू० ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८५-८८६
दस अजीव परिणाम	७५०	३	४२६	ठा १० उ ३ सू ७१३, पत्र प १३ सू १८४-१८५
दस अधिपति अग्नि कुमारके	७३५	३	४१८	भश ३ उ ८ सू १६६
दस अधिपति असुर ,,	७३१	३	४१७	भश ३ उ ८ सू १६६
दस अधिपति उदधि ,,	७३७	३	४१६	भश ३ उ ८ सू १६६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस अधिपति दिक्कुमार के	७३८	३	४१६	भ.श. ३ उ.८ सू. १६६
दस अधिपति द्वीप	७३६	३	४१६	भ.श. ३ उ.८ सू. १६६
दस अधिपति नाग	७३२	३	४१८	भ.श. ३ उ.८ सू. १६६
दस अधिपति वायु	७३६	३	४१६	भ.श. ३ उ.८ सू. १६६
दस अधिपति विद्युत्	७३४	३	४१८	भ.श. ३ उ. ८ सू. १६६
दस अधिपति सृष्टि	७३३	३	४१८	भ.श. ३ उ. ८ सू. १६६
दस अधिपति स्तनित	७४०	३	४२०	भ.श. ३ उ. ८ सू. १६६
दस अनन्तक	७२०	३	४०३	टा. १० उ. ३ सू. ७३१
दस अनुत्तर केवली के	६५५	३	२२३	टा. १० उ. ३ सू. ७६३
दस अवस्था	६७८	३	२६७	टा. १० उ. ३ सू. ७७०
दस असंक्लेश	७१५	३	३८६	टा. १० उ. ३ सू. ७३६
दस अस्वाध्याय आन्तरिक	६६०	३	३५६	टा. १० उ. ३ सू. ७१४, प्र. श. २६८, व्यव. भाष्य उ. ७
(आकाश सम्बन्धी)				
दस आनुपूर्वी	७१७	३	३६०	अनु सू. ७१-११६
दस आशंसा प्रयोग	६६७	३	२५३	टा. १० उ. ३ सू. ७४६
दस इन्द्र वैमानिक देवों के	७४१	३	४२०	टा. १० उ. ३ सू. ७६६
दस उपघात दोष	६६८	३	२५४	टा. १० उ. ३ सू. ७३८
दस औदारिक अस्वाध्याय	६६१	३	३५८	टा. १० उ. ३ सू. ७१८
दस कल्प वृक्ष	७५७	३	४४०	सम. १०, टा. १० उ. ३ सू. ७६६, प्र. श. १७१ ना. १०६७ उ. ७०
दस कल्प साधु के	६६२	३	२३४	पत्रा. १७ गा. ६-४०
दस कारण दीक्षा लेने के	६६४	३	२५१	टा. १० उ. ३ सू. ७१३
दस कारण मान के	७०३	३	३७४	टा. १० सू. ७१०, टा. ८ सू. १०६
दस कुरुक्षेत्र (महाविदेह के)	७५४	३	४३८	टा. १० उ. ३ सू. ७४४

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस कुलकर आगामी उत्सर्पिणी के	७६७	३ ४५०	टा.१० उ३ सू ७६७
दस कुलकर गत उत्सर्पिणी के	७६६	३ ४४६	टा १० उ३ सू ७६७
* दस गणधर भगवान् पार्श्वनाथ के	५६५	३ ३	टा ८ उ३ सू ६१७ टी, सम ८ टी, प्रव द्वा १६ गा ३३०, आव. ह गा. २६८-२६६, म श द्वा १११
दस गति	७२५	३ ४१३	टा १० उ३ सू ७४५
दस गुण आलोचना देने योग्य साधु के	६७१	३ २५६	म. श २५ उ ७ सू ७६६, टा १० उ.३ सू ७३३
दस गुण आलोचना लेने योग्य साधु के	६७०	३ २५८	म श. २५ उ ७ सू ७६६, टा १० उ३ सू.७३३
दस चक्रवर्ती ने दीक्षा ली	६८३	३ २६२	टा १० उ३ सू ७१८
दस चित्त समाधि	६७४	३ २६२	दशा० द०५, सम १०
दस जीव परिणाम	७४६	३ ४२६	पत्र प १३, टा १० सू ७१३
दस जम्भक देव	७४२	३ ४२०	म ग १४ उ ८ सू ५३३
दस दान	७६८	३ ४५०	टा १० उ३ सू ७४५
दस दिशाएं	७५३	३ ४३७	टा १० सू ७२०, म श १० उ १ सू ३६४, आव. म १ उ. १ सू. २
दस दृष्टान्त मनुष्य भव की दुर्लभता के	६८०	३ २७१	उत्त अ ३ नि गा १६०, आव. ह नि गा ८३२ पृ ३४०
दस दोष आलोचना के	६७२	३ २५६	म श २५ उ ७, टा १० सू ७३३
दस दोष ग्रहणैपणा के	३६३	३ २४२	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, पि नि गा ५२०, पचा १३ गा २६, ध अधि ३ श्लो. २२ टी पृ ४१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
दस दोष मनके सामायिकमें ७६४	३		४४७	शिक्षा	
दस दोष वचनके	॥	७६५	३	४४८	शिक्षा
दस दोष वाद के		७२२	३	४०६	टा. १० उ ३ सू. ७४२
दस द्रव्यानुयोग		७१८	३	३६१	टा. १० उ ३ सू. ७२७
दस नक्षत्र ज्ञानवर्धक		७६२	३	४४४	सम १०, टा. १० उ ३ सू. ७८१
दस नाम आश्चर्यक के		६८७	३	३५०	विशेष गा. ८७२-७६, अनु. सू. २८
दस नाम क्रोध कषायके		७०२	३	३७४	सम ४२
दस नाम दृष्टिवाद के		६८८	३	३५१	टा. १० उ. ३ सू. ७४२
दस पङ्कणा		६८६	३	३५३	द. प
दस परंपरा फलपर्युपासनाके ७०८	३		३८३	टा. ३३ उ. सू. १६०	
दस पुत्र		६७७	३	२६५	टा. १० उ ३ सू. ७६२
दस प्रकार अद्धा पञ्च- क्त्वाण के		७०५	३	३७६	पञ्चा. ४ गा. ८-११, प्र. २३, २ गा. २-१, भाव. ३३ अ. ६ पृ. ८५१
दस प्रकार का असंवर		७११	३	३८६	टा. १० उ ३ सू. ७०६
दस प्रकार का असत्य		७००	३	३७१	टा. १० सू. ७४१, प. ११ सू. १६६, म. अ. वि. ३३, ४१४, १२०
दस प्रकार का नाम		७१६	३	३६५	अनु. सू. १३०
दस प्रकार का शस्त्र		६६६	३	३६४	टा. १० उ ३ सू. ७४३
दस प्रकार का शुद्धवागनुयोग		६६७	३	३६५	टा. १० उ ३ सू. ७४४
दस प्रकार का संवर		७१०	३	३८५	टा. १० उ ३ सू. १०६
दस प्रकार का सत्य		६६८	३	३६८	टा. १० सू. ७४१, प. ११ सू. १६६, म. अ. वि. ३३, ४१४, १२०
दस प्रकार का मराग मन्वन्दर्शन		६६४	३	३६४	टा. १० उ. ३ सू. ७४१, प. ११ सू. ३०
दस प्रकार की मिश्र (सत्या मृषा) भाषा		६६६	३	३७०	प. ११ सू. १६६, टा. १० सू. ७४१, म. अ. वि. ३३, ४१४, १२०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस प्रकार के धर्म	६६२	३ ३६१	ठा १० उ ३ सू ७६०
दस प्रकार के नारकी, समय ७४७	३	४२४	ठा १० उ ३ सू ७५७
के अन्तर आदि की अपेक्षा			
दस प्रकार के शब्द	७१३	३ ३८८	ठा १० उ ३ सू ७०५
दस प्रकार के सर्वजीव ७२६-२७	३	४१४-४१५	ठा १० उ ३ सू ७७१
दस प्रकार से संसार की समुद्र से उपमा	६७६	३ २६६	
१ दस प्रतिसेवना	६६६	३ २५२	म श २५ उ ७, ठा १० सू ७३३
दस प्रत्याख्यान	७०४	३ ३७५	ठा १० उ ३ सू ७४८, म श ७ उ २ सू २७२
दस प्राण	७२४	३ ४१३	ठा १ सू ४८ टी, प्रव द्वा. १७०
दस प्रायश्चित्त	६७३	३ २६०	म श २५ उ ७, ठा १० सू ७३३
दस बल इन्द्रिय, ज्ञानादि के ६७५	३	२६३	ठा १० उ ३ सू ७४०
दस वार्तेछन्नस्थ के अगोचर ७१६	३	३८६	ठा १० सू ७५४, म श ८ उ २
दस बोल पुण्यवान् के ६५६	३	२२४	उत्त अ ३ गा १७-१८
दस बोल सम्यक्त्वप्राप्तिके ६६३	३	३६२	उत्त अ. २८ गा. १६-२७
दस बोल सातावेदनीय के ७६१	३	४४३	म श ७ उ ६ सू २८६
दस बोलों का विच्छेद ६८२	३	२६२	विशे गा २५६३
दस ब्रह्मचर्य समाधि स्थान ७०१	३	३७२	उत्त. अ १६
दृष्टान्त सहित			
दस भवनपति	७३०	३ ४१६	पत्र प १ सू ३८, ठा. १० उ ३ सू ७३६, म श २ उ. ७ सू ११५, जी प्रति ३ उ १ सू ११५
दस भेद अरूपी अजीव के ७५१	३	४३४	पत्र प १ सू ३, जी प्रति १ सू ४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस भेद कर्म के	७६०	३	४४१	भावा अ. २३ १गा. १=३-८४
दस भेद तृणावनस्पति के	७४५	३	४२२	ठा १० उ ३स ७७३
दस भेद दर्शनविनय के	७०६	३	३८४	भ. ज. २५ उ ७ सू ८०२
दस भेद देवों के	७२६	३	४१५	तत्त्वार्थ ग्रन्था ४ सू. ४
दस भेद संसार में आने वाले प्राणियों के	७२८	३	४१५	ठा १० उ ३सू ७७१
दस महद्विक देव	७४३	३	४२१	ठा १० उ ३ सू ७६४
दस महानदी मेरुसे उत्तर में	७५६	३	४४१	ठा. १० उ ३ सू ७१७
दस महानदी मेरुसे दक्षिण में	७५८	३	४४०	ठा १० उ ३ सू ७१७
दस मिथ्यात्व	६६५	३	३६४	ठा १० उ ३ सू. ७३६
दस मुण्ड	३६४-३६५	१	३७८-३७६	ठा १० उ ३ सू ४४३
दस मुण्ड	६५६	३	२३१	ठा. १० उ. ३सू ७४६
दस यति धर्म	३५०-	१	३६४-	ठा. १३ १ सू ३०६, भ. अ. धि ३
	३५१		३६६	श्लो ४६ टी पृ १०७, प्रव द्वा ६६ गा ४४४
दस रानियों श्रेणिक की	६८६	३	३३३	अत व ८
दस रुचि	६६३	३	३६२	उत्त अ २८ गा ११-२७
दस लक्षण श्रावक के	६८४	३	२६२	भ. ज. २३ सू १०७
दस लब्धि ज्ञानादि की	६५८	३	२३०	भ. ज. ८३ सू ३२०
दस लोकस्थिति	७५२	३	४३६	ठा १० उ. ३सू ७०४
दस वक्खार पर्वत सीता	७५५	३	४३६	ठा १० उ. ३सू ७६८
महानदी के दोनों तटों पर				
दस वक्खार पर्वत सीतोटा	७५६	३	४३६	ठा १० उ ३ सू ७६८
महानदी के दोनों तटों पर				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस विगय	७०६	३	३८२	आवहृअ ६गा १६०१पृ८६३
दसविमानवैमानिकइन्द्रोके७४४	३	४२१		ठा १० उ० ३ सू ७६६
दस विशेषण स्थण्डिल के ६७६	३	२६४		उत्त. अ २४ गा १६-१८
दस विशेष दोष	७२३	३	४१०	ठा १०उ ३ सू ७४३
दस वेदना नारकी जीवों के ७४८	३	४२५		ठा १०उ ३सू ७५३
दस वेयावच्च (वैयावृत्त्य)	७०७	३	३८२	भश २५उ ७ सू ८०२
दस श्रमण धर्म	६६१	३	२३३	नव गा २३, सम १०, शा भा १ प्रक ८ संवरभावना
दस श्रावक आनन्द आदि ६८५	३	२६४		उपा अ. १-१०
दस संक्लेश	७१४	३	३८८	ठा १०उ ३ सू ७३६
दस सज्ञा	७१२	३	३८६	ठा १०सू ७५२, भश ७ उ ८
दस समाचारी	६६४	३	२४६	भश २५उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३सू ७४६, उत्त अ. २६गा २-७, प्रवद्वा १०१गा. ७६०
दस सुख	७६६	३	४५३	ठा १०उ ३ सू ७३७
दस सूक्ष्म	७४६	३	४२३	ठा १० उ ३ सू ७१६
दस स्थविर	६६०	३	२३२	ठा १०उ ३ सू ७६१
दसस्थानभद्रकर्मबोधनेके ७६३	३	४४४		ठा. १० उ ३ सू ७५८
दस स्थानों का अनुभव नारकी जीवों के	५६०	२	३४०	भश. १४ उ ५ सू ५१६,
दसस्वप्नभगवान्महावीरके ६५७	३	२२४		भश १६उ ६, ठा १०सू ७५०
दाता ४० दायक दोष दूषित ६६३	३	२४३		पिनि गा ५२०
दान के चार प्रकार	१६७	१	१५६	घरगा ७० टी
दान के विषय में ७ गाथाएं ६६४	७	२००		
दान दस	७६८	३	४५०	ठा १०उ ३ सू ७४५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दान धर्म	१६६	१	१५४	सूय.अ.६ गा.२३,पंचा.६ गा.६
दानसाधुयोग्य के १४ भेद	८३२	५	२६	शिक्षा, आवह पृ.८४६
दानान्तर्गत	३८८	१	४१०	कर्म.भा.१ गा.४२,पत्र प.२३
दायक दोष (ग्रहणैपणा का छठा दोष)	६६३	३	२४३	प्रव.द्वा.६७ गा.६६८,पि.नि. गा.४२०, ध.अधि.३ श्लो.२२ टी.पृ.१,पंचा.१३ गा.२६
दायक दोष के ४० प्रकार	६६३	३	२४३	पि.नि. गा.४२०
दायक दोष दूषित ४० दाता	६८८	७	१४६	पि.नि.गा.४२०
दायद्रव वृत्त का दृष्टान्त	६००	५	४५७	सा.अ.११
दिवकुमारोंके दस अधिपति	७३८	३	४१६	म.ग.३३ ८८ पृ.१६६
दिगाचार्य	३४१	१	३५२	ध.अधि.३ श्लो.६६ टी.पृ.१२८
दिष्टिया क्रिया	२६४	१	२७६	टा.२३ १८६०, टा.२८ ११८
दिशाणं दस	७५३	३	४३७	टा.५० ७२०, म.सा.१०३ १ सू.३६४, आचा.अ.१३ १८ २
दिशा परिमाण व्रत	१२८८	१	६१	आव.ह.अ.६ पृ.८२६
दिशा परिमाण व्रत के पांच	३०६	१	३०३	उवा.म.१ सू.७
अतिचार				
दिशा परिमाण व्रत निश्चय	७६४	४	२८२	आगम
और व्यवहार से				
दिशा मोह आगार	४८३	२	६८	सा.अ.३.अ.६ पृ.४२२, प्रव.द्वा.४
दीक्षा के अयोग्य १८ पुरुष	८६१	५	४०६	प्रव.द्वा.१०७-८ भा.७६०-६०७ अ.३ श्लो.७८ पृ.३
दीक्षा के अयोग्य वीमस्त्रियाँ	८६१	५	४०६	
दीक्षा के दस कारण	६६५	३	२५१	टा.१०३ ३ सू.७१६
दीक्षा देने वाले गुरु के पन्द्रह गुरु	८५१	५	१२४	ध.अधि.३ श्लो.८० ८१ पृ.७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दीक्षा पर्याय और सूत्र पढ़ाने की मर्यादा	५१४	२ २४३	ठा ५३ १ सू ३६६, टा ७ सू ५५४, व्यवभा उ १० सू २१-३५
दीक्षार्थी के सोलह गुण	८६४	५ १५८	ध अघि ३ श्लो ७३-७८ पृ १
दीक्षालेनेवाले दस चक्रवर्ती	६८३	३ २६२	ठा १० उ ३ सू ७१८
दीपक संकेत पञ्चकरवाण	५८६	३ ४३	आव ३ अ ६ नि गा १५ ७८, प्रव द्वा ४ गा २००
दीपक समकित	८०	१ ५८	विशे गा २६ ७५, द्रव्यलो स ३ श्लो. ६७०, ध अघि २ श्लो २२ टी पृ ३६, आ प्र गा ४०
दीर्घ आयु सुख	७६६	३ ४५३	ठा १० उ ३ सू ७३७
दीर्घ संस्थान	५५२	२ २६३	ठा १ सू ४७, ठा ७ उ ३ सू ५४८
दीर्घायु-अशुभ के ३ कारण	१०६	१ ७४	भ.श ४ उ ६ सू २०४, ठा ३ उ १ सू १२४
दीर्घायु शुभ के तीन कारण	१०७	१ ७५	
दुःखगर्भित वैराग्य	६०	१ ६५	क.भा २ श्लो. ११८-११९
दुःखविपाक की दस कथा	६१०	६ २६	वि अ. १-१०
दुःखशय्या के चार कारण	२५५	१ २४०	ठा० ४ उ. ३ सू ३२५
१ दुःशीलता	४०२	१ ४२६	उत्त अ ३६ गा २६ १, प्रव. द्वा ७३
दुःसंज्ञाप्य तीन	७५	१ ५४	ठा ३ उ ४ सू २०३
२ दुःहुपडिच्छयं	८२४	५ १५	आव ह अ ४ पृ ७३०
दुर्गन्धा का उदाहरण जुगुप्सा दोष के लिये	८२१	४ ४५८	नवपद गा १८ टी. सम्यक्त्वा-धिकार
दुर्लभ ग्यारह	७७२	४ १७	आव ह नि गा ८३ १ प्र. ३४१
दुर्लभ बोधि	८	१ ७	ठा ७ उ २ सू ७६

१ दुष्ट स्वभाव, कन्दर्पभावना का एक भेद।

२ पृष्ठ १४३ पर टिप्पणी देखो

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दुर्लभबोधि के पाँच कारण	२८६	१	२६६	ठा.२ उ २ सू ४२६
दुर्लभ वोल द्वः	४३६	२	४३	ठा ६ उ.३ सू ४८५
दुर्लभ मनुष्य भव के दम दृष्टान्त	६८०	३	२७१	उत्तम रेनि गा. १६०, भाव ह नि गा ८३२ पृ ३४०
दुपमदुपमा आरा अव- सर्पिणी का	४३०	२	३३	अवज. २ सू ३६, ठा ६ सू ४६२, म श ७ उ ६ सू २८७-२८८
दुपमदुपमा आरा उत्स० का	४३१	२	३६	ज.वज. २ सू ३७, ठा ६ सू. ४६२
दुपमसुपमा आरा अव० का	४३०	२	३२	ज वज. २ सू ३८, ठा. ६ सू ४६२
दुपमसुपमा आरा उत्स० का	४३१	२	३७	ज वज. २ सू ३७, ठा ६ सू ४६२
दुपमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३३	ज वज २ सू ३४, ठा ६ सू ४६२
दुपमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३६	ज.वज. २ सू ३७, ठा. ६ सू ४६२
दुपमा काल जानने के स्थान	५३४	२	२६८	ठा. ७ उ. ३ सू. ६ ४६
दुष्प्रत्याख्यान	५४	१	३१	म श. ७ उ २ सू २७१
दृती दोष (गवेपणैपणा का एक दोष)	८६६	५	१६४	प्रव गा १ ६७, ध. अभि. ३ ओ. २० पृ ४०, पि. नि गा. १०८, पि वि. गा. १८, पं. गा १३ गा. १८
१ दूषणाभास (जात्युत्तर) चौबीस	६३६	६	२०६	प्र मी मध्या १ भा. २ सू. २६, न्यायप्र, न्यायसू मध्या. ४ भा १
दूषित दाता चालीस	६८८	७	१४६	पि नि गा ४००
२ दृष्टलाभिक	३५४	१	३६६	ठा ६ उ १ सू ३६६
दृष्टान्त	३८०	१	३६७	स्त्वा परि ३ न्याय दी. प्रका ३
दृष्टान्त इक्कीस पारिणा- मिकी बुद्धि के	६१५	६	७३- १२६	न सू २७ गा. ७१-७४, भाव इ नि गा. ६४८-६४९

१ पृष्ठ १३० पर टिप्पणी देखो ।

२ देने हुए माहंग की गवेपणा करने वाला अभिमद्रवागी माधु ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
दृष्टान्त कमलामेलाका भाव ७८०	४ २५०	भाव ह नि. गा १३४ पृ ६४, वृ पीठिका नि गा १७२
अननुयोग तथा अनुयोगपर		
दृष्टान्त कुब्जा का क्षेत्र अन-७८०	४ २३६	भाव ह नि गा १३३ पृ ८८, वृ पीठिका नि गा. १७१
नुयोग तथा अनुयोग पर -		
दृष्टान्त कोङ्कणदारक का ७८०	४ २४८	भाव. ह नि गा. १३४ पृ ६२, वृ पीठिका नि गा. १७२
भाव अननुयोग, अनुयोगपर		
दृष्टान्त गाय, बछड़े का द्रव्य ७८०	४ २३६	भाव ह नि. गा. १३३ पृ ८८, वृ पीठिका नि गा १७१
अननुयोग तथा अनुयोगपर		
दृष्टान्त ग्रासेयक का वचन ७८०	४ २४२	भाव ह नि गा १३३ पृ ६५, वृ पीठिका नि गा १७१
अननुयोग तथा अनुयोगपर		
दृष्टान्त तेरह सम्यक्त्व के ८२१	४ ४२२	नवपद द्वा ७ सम्यक्त्वाधिकार
दृष्टान्त दस मनुष्य भव की ६८०	३ २७१	उत्त अ ३ नि गा १६०, भाव ह नि गा ८३२ पृ ३४०
दुर्लभता के		
दृष्टान्त नकुल का भाव अन ७८०	४ २४६	भाव. ह नि गा १३४ पृ ६३, वृ पीठिका नि. गा १७२
नुयोग तथा अनुयोग पर		
दृष्टान्त वधिरोल्लापका वचन ७८०	४ २४१	भाव ह नि गा १३३ पृ. ८६, वृ पीठिका नि गा १७१
अननुयोग तथा अनुयोगपर		
दृष्टान्त वारह अननुयोग ७८०	४ २३८	भाव ह. नि गा. १३३, १३४, वृ पीठिका नि. गा १७१-१७२
तथा अनुयोग पर		
दृष्टान्त १२ कम्मिया बुद्धि के ७६२	४ २७६	न सू. २७, भाव ह नि गा ६४७
दृष्टान्त शम्ब के साहस का ७८०	४ २५२	भाव ह नि गा १३३ पृ ६४, वृ पीठिका नि. गा १७२
भाव अननुयोग अनुयोगपर		
दृष्टान्त श्रावकभार्याका भाव ७८०	४ २४५	भाव ह नि गा १३४ पृ ६१, वृ पीठिका नि गा १७२
अननुयोग तथा अनुयोगपर		

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दृष्टान्त श्रेणिक के कोप का भावअननुयोगअनुयोग पर	७८०	४	२५३	भाव.ह.नि.गा. १३४ पृ.६४, वृ पीठिका नि.गा. १७२
दृष्टान्त सत्ताईस औत्प- त्तिकी बुद्धि के	६४६	६	२४२	नं.मृ २७गा ६२-६४टी.,
दृष्टान्तसाम्पदिकका भाव अननुयोग तथा अनुयोग पर	७८०	४	२४६	भाव ह.नि.गा. १३४ पृ ६१, वृ पीठिका नि.गा. १७२
दृष्टान्त स्वाध्याय का काल अननुयोग तथा अनुयोगपर	७८०	४	२४०	भाव.ह.नि.गा १३३ पृ ८६, वृ पीठिका निगा १७१
दृष्टिजा(दिष्टिया) क्रिया	२६४	१	२७६	टा.२मृ.६०, टा ४मृ.०१६
दृष्टि नारकियों में	५६०	२	३३७	जी प्रति ३स.८८
दृष्टिवाद के दस नाम	६८८	३	३५१	टा.१०७ ३मृ ७४२
१ दृष्टिसम्पन्नता	७६३	३	४४५	टा.१० उ.३मृ ७४८
देव	६३	१	४४	यो प्रका २२तो ४-११
देव आयुवन्द्य के ४ कारण	१३५	१	१००	टा ४३.४मृ ३७३
देवताओं की पहचान के बोल	१३७	१	१०१	टा.४३.२ मृ.६८० टी.
देवताओं के चार भेद	१३६	१	१०१	उत म.३६गा २०२
देवता की ऋद्धि के तीन भेद	१००	१	७०	टा. ३३ ४मृ २१४
देवता की तीन अभिलाषाएं	१११	१	८०	टा. ३ उ. ३ मृ १७८
देवता के एकसौ अष्टाशु भेद	६३३	३	१७६	प्राप. १मृ.३८, उत म ३६गा. २०३-०१४, जी. प्रति ३
देवता के च्यवन ज्ञान के तीन बोल	११३	१	८१	टा. ३३ ३मृ १०६
देवता के दो भेद	५७	१	४०	नरार्थ मय्या ४ मृ १७
देवता के पश्चात्ताप के तीन बोल	११२	१	८०	टा. ३३.३मृ १७८

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देवता के मनुष्यलोक में आने के चार कारण	१३६	१ १०२	ठा ४ उ ३ सू ३२३
देवता के मनुष्यलोक में आने के तीन कारण	११०	१ ७६	ठा ३ उ ३ सू १७७
देवता कौनसी भाषा बोलते हैं?	६८३	७ १२५	भ श ५ उ ४ सू १६१, मम ३४, पत्र प १ सू ३७
देवता चार कारणों से मनुष्यलोक में नहीं आ सकता	१३८	१ १०१	ठा ४ उ ३ सू ३२३
देवदत्ता रानी की कथा	६१०	६ ४७	त्रि अ ६
देव पाँच	४२२	१ ४४५	ठा ५ सू ४०१ भ श १२ उ ६
देवलोक कहाँ स्थित हैं ?	८०८	४ ३१८	पत्र प २ सू ५१, जी प्रति ३ सू २०७
देवलोक की गति आगति	८०८	४ ३२८	जी प्रति ३ सू २१४, पत्र प. ६
देवलोक की पर्षदारण, पारि-	८०८	४ ३२५	जी प्रति ३ सू २०८
पदों की संख्या और स्थिति			
देवलोक के देवों का उच्छ्वास	८०८	४ ३२६	जी. प्रति. ३ सू २१५
देवलोक के देवों का वर्ण	८०८	४ ३२६	जी प्रति ३ सू २१५
और स्पर्श			
देवलोक के देवों का संस्थान	८०८	४ ३२६	जी प्रति ३ सू २१४
देवलोक के देवों का संहनन	८०८	४ ३२६	जी प्रति ३ सू २१४
देवों के देवों की श्वगाहना	८०८	४ ३२६	जी प्रति. ३ सू २१३
देवलोक के देवों की वेशभूषा	८०८	४ ३३१	जी. प्रति. ३ सू २१८
देवलोक के देवों के दसभेद	८०८	४ ३३३	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू. ४
देवलोक के देवों के मुकुटचिह्न	८०८	४ ३१६	पत्र प. २ सू ५१
देवों के विमानों का आधार	८०८	४ ३२७	जी प्रति ३ सू २०६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देव०के विमानोंका विस्तार	८०८	४ ३२७	जी.प्रति ३ सू.२१३
देव०के विमानोंका संस्थान	८०८	४ ३२७	जी.प्रति ३ सू.२१२
देवलोक के विमानों की मोटाई और ऊँचाई	८०८	४ ३२७	जी प्रति ३ सू.२१०-२११
देवलोक के विमानों के वर्ण, गन्ध और स्पर्श	८०८	४ ३२७	जी.प्रति ३ सू.२१३
देवलोक वारह	८०८	४ ३१८	पत्र.प.२,४,६, जी.प्रति ३ सू. २०७-२०३, तत्त्वार्थ.ग्रन्था ४
देवलोक वारह की स्थिति	८०८	४ ३२४	पत्र.प.४ सू.६६
देवलोक वारह के दस इन्द्र	७४१	३ ४२०	टा.१० उ३ सू.७६६
देवलोक वारह के विमान	८०८	४ ३२३	पत्र.प.२ सू.१३
देवलोक १२में स्थिति आदि	८०८	४ ३३४	तत्त्वार्थ ग्रन्था.४ सू.२००
७वाते उत्तरोत्तर अधिक हैं			
देवलोक में अनुभाव	८०८	४ ३३३	तत्त्वार्थ.ग्रन्था १ सू.२०
देवलोक में अवधिज्ञान	८०८	४ ३३०	जी प्रति ३ सू.२११
देवलोक में आहार	८०८	४ ३३५	तत्त्वार्थ ग्रन्था.४ सू.२०
देवलोक में उच्छ्वास	८०८	४ ३३५	तत्त्वार्थ.ग्रन्था.४ सू.२३
देवलोक में उत्पन्न होने वाले जीव			
देवलोक में उपपात	८०८	४ ३३६	तत्त्वार्थ ग्रन्था १ सू.२०
देवलोक में उपपात विरह और उद्वर्तना विरह	८०८	४ ३३२	पत्र.प.६, प्र.प.दा.१६६-२०० गा. १०६७ में १०७२
देवलोक में क्षुधा पिपासा	८०८	४ ३३१	जी.प्रति ३ सू.२१०
देवलोक में गति आगति	८०८	४ ३३२	पत्र.प.६, प्र.प.दा.१६६-२००
देवलोक में चार वाते उत्तरोत्तर हीन होनी हैं	८०८	४ ३३५	तत्त्वार्थ.ग्रन्था ४ सू.२३

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देवलोक में ज्ञान	८०८	४ ३३०	जी प्रति ३ सू २१६
देवलोक में दृष्टि	८०८	४ ३३०	जी प्रति ३ सू २१५
देवलोक में देवोत्पत्तिसंख्या	८०८	४ ३२८	जी प्रति ३ सू २१३
देवलोक में प्रवीचार्	८०८	४ ३३३	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ८, ९.
देवलोक में लेश्यां	८०८	४ ३३०	जी प्रति ३ सू २१५
देवलोक में विकुर्वणा	८०८	४ ३३१	जी प्रति ३ सू २१७
देवलोक में वेदना	८०८	४ ३३६	तत्त्वार्थ. अध्या ४, उव सू ३८
देवलोक में समुद्घात	८०८	४ ३३१	जी. प्रति ३ सू २१७
देवलोक में सुख और ऋद्धि	८०८	४ ३३१	जी प्रति ३ सू २१७
देव वैमानिक के २६ भेद	६४४	६ २२७	पन्न प. १ सू ३८, उत अ ३६ गा २०७-१४, अ शू ८८, १ सू ३१० ठा ४८ ४ सू ३६१, सूय अ ३ उ १ नि गा ४८ टी
१ देवाधिदेव	४२२	१ ४४६	ठा ४८ १ सू ४०१, अ श १२ उ. ६ सू. ४६२
देवाभियोग आगार	४५५	२ ५६	उपा अ. १ सू ८, आव ह, अ ६ पृ ८१०, ध अग्नि २ श्लो २२ पृ ४१
देवार्थ-भ० महावीरकानाम	७७०	४ १०	जैनविद्या बोल्युम १ नः १
देविंदयव पङ्कणा	६८६	३ ३५५	द प.
देवी (पुष्पवती) की पारिणा-६१५	६	८०	न सू २७ गा ७२, आव ह नि. गा. ६४६
मिकी बुद्धि की कथा			गा. ६४६
देवेन्द्रावग्रह	३३४	१ ३४४	अ श १६ उ २ सू ५६७, प्रव द्वा ८५ गा. ६८१, आचा. ५ २ चू १ अ ७ उ. २ सू १६२

१ देवों से भी बड़कर अतिशय वाले, अतएव उनके भी आराध्य, केवलज्ञान केवल-
दर्शन के धारक अरिहन्त भगवान् देवाधिदेव कहलाते हैं ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देवों की पाँच परिचारणा	३६८	१	४२२	पत्र प ३६, डा १४ १ मू ४०० टी.
देवों के इन्द्र सामानिक	७२६	३	४१५	तत्त्वार्थ. भा. ४ मू. ४
आदि दस भेद				
देवों के विषय में गणधरमौर्य	७७५	४	५०	विशे. गा १८६ ४-१८८४
स्वामी का शंका समाधान				
देश अवसन्न	३४७	१	३५६	भाव ह. म ३ नि गा ११०७, प्र. द्वा २ गा १०३-१०३
देशकथा चार	१५१	१	१०६	डा ४८. २ मू. २=३
देशकथा से होनेवाली हानि	१५१	१	११०	डा ४८ २ मू २=२ टी
देश बन्ध	५२	१	३०	कर्म भा १ गा. ३६ च्याख्या
देशविरत गुणस्थान	८४७	५	७५	कर्म. भा. २ गा २
देशविरति सामायिक	१६०	१	१४४	विशे. गा. २६७३-२६७३
देशविस्तार अनन्तक	४१८	१	४४२	डा ४ ३. ३ मू १६२
देशावकाशिक व्रत	१८६	१	१४०	पत्रा १ गा २७, भाव ह. म १
देशावकाशिक व्रत के पाँच	३१०	१	३१०	उपा. भा. १ मू. ३, भाव. ह. म. ६ पृ. ८३४, प्र. भा. १ मू. १११
अतिचार				
देशावकाशिक व्रत निश्चय	७६४	४	२८४	भागम.
और व्यवहार से				
दो उपयोग	११	१	१०	पत्र प २६ मू ३१२
दो नियम-उन्सर्ग, अपवाद	४०	१	२५	वृ. गा. ३१६, स्वा. का ११ टी
दो पोरिसी के सात आगार	५१६	२	२४६	भाव ह. म. ६ पृ ८६२, प्र. द्वा २
दो प्रकार का अवधिज्ञान	१३	१	११	डा २३ १ मू ७१
दो प्रकार का मनःपर्ययज्ञान	१४	१	१२	डा २३ १ मू ७१
दो प्रकार का वस्तु का स्वरूप	४१	१	२६	स्वा. का. ४, स्वता १ वि. ६ मू १
सामान्य और विशेष				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दो प्रकार जीव के	७ख	१ ४	टा २ सू १०१, तत्त्वार्थ अध्या, २
दो प्रकार ज्ञान के प्रमाण, नय ३७	१	२३	रत्ना परि १, ७
दो प्रकार प्रवचन माता के	२२	१ १६	उत्त. अ २४
दो भेद अधिकरण के	५०	१ २६	तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ७
दो भेद अवग्रह के	५८	१ ४०	न सू २८, कर्म भा. १ गा ४, ५
दो भेद आकाशा के	३४	१ २२	टा. २ उ. १ सू ७४
दो भेद आधार और आधेय	४८	१ २८	विशेष गा. १४०६
दो भेद आयु के	३०	१ २१	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ५२, भ. श. २० उ १ सू ६८५
दो भेद-आरंभ और परिग्रह	४६	१ २६	टा. २ उ १ सू ६४
दो भेद-आविर्भाव, तिरोभाव	४४	१ २७	न्याय को
दो भेद इन्द्रिय के	२३	१ १७	पद्म. प. १५ सू. १६ १ टी, तत्त्वार्थ. अध्या. २ सू १६
दो भेद जनोदरी के	२१	१ १६	भ. श. २५ उ ७ सू ८०२
दो भेद कर्म के दो प्रकार से	२७	१ १८	कर्म. भा १ गा १ व्याख्या, अष्ट ३०, कम्म. गा १ पृ. ६, वि अ. ३ सू २० टी
दो भेद कारण के	३५	१ २३	विशेष गा २०६६
दो भेद-कार्य और कारण	४३	१ २७	न्याय को
दो भेद काल के	३२	१ २३	टा २ उ ४ सू ६६
दो भेद कालचक्र के	३३	१ २२	टा २ उ १ सू ७४
दो भेद गुण और पर्याय	४७	१ २८	उत्त अ २८ गा ६
दो भेद गुण के दो प्रकार से	५५	१ ३२	सूय. अ १४ नि गा १३६, पचा ५ गा २, द्रव्यत अध्या १२ लो ८
दो भेद चारित्रधर्म के	२०	१ १५	टा २ उ १ सू ७२
दो भेद चारित्रमोहनीय के	२६	१ २०	पद्म प. १४ सू १८६ टी, कर्म भा. १

विषय	वाँल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दो भेद ज्ञान के	१२	१	१०	नसू २, डा २३, १सू. ७१
दो भेद दण्ड के	३६	१	२३	डा २३ १ सू ६६
दो भेद देवता के	५७	१	४०	तत्त्वार्थ, अध्या. ४ सू. १७
दो भेद-द्रव्य और गुण	४६	१	२८	उत्त अ. २-गा ६, तत्त्वार्थ, अध्या ५
दो भेद द्रव्य के	६०	१	४२	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३, ४
दो भेद द्रव्येन्द्रिय के	२४	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू १७
दो भेद धर्म के	१८	१	१४	दश. अ १ गा. १ टी, डा. २३. १ सू ७२, प्र. अधि. १७ लो. ३ टी पृ १
दो भेद नय के	१७	१	१४	रत्ना परि ७ सू ५
दो भेद निगोद के	६	१	८	भागम.
दो भेद परोक्ष ज्ञान के	१५	१	१२	पद्म. प २६ सू ३१२, डा २३ १ सू ७१, म. श. ८३. २ सू ३१८, नसू १, धर्म भा १ गा ४ भज ७३ २ सू २७१
दो भेद प्रत्याख्यान के	५४	१	३१	
दो भेद प्रवृत्ति और निवृत्ति	४५	१	२८	
दो भेद बन्ध के	५२	१	३०	कर्म भा. १ गा. ३५ व्याख्या
दो भेद बन्धन के	२६	१	१८	डा २३ ४ सू ५६
दो भेद भावेन्द्रिय के	२५	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू १८
दो भेद मरण के	५३	१	३१	उत्त अ ५ गा २
दो भेद मोहनीय कर्म के	२८	१	१६	डा. २. सू. १०४, कर्म. भा १ गा १३
दो भेद रूपी के	६१	१	४२	भज १२ ३ सू ६६
दो भेद लक्षण के	६२	१	४२	न्यायश्री प्रका. १
दो भेद वेदनीय कर्म के	५१	१	३०	पद्म प २३, धर्म. भा १ गा. १२
दो भेद श्रुतज्ञान के	१६	१	१३	नसू ४६, डा. २३ १ सू ७१
दो भेद श्रुतधर्म के	१६	१	१५	डा २३ १ सू ७२

विषय -	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
दो भेद श्रेणी के	५६ १ ३३	कर्म भा २ गा २, द्रव्यलो स ३ श्लो ११६६-१२३४, विशेषे. गा १२८४, आव म गा ११६-१२३
दो भेद संसारी जीव के नौ प्रकार से	८ १ ४	ठा. २ सू ७३, ७६, १०१, मश. १३ उ १ सू ४७० टी, आ. प्र गा ६६- ६७, आतुर गा ४२-४३
दो भेद सम्यक्त्व के चार प्रकार से	१० १ ८	प्रव द्वा १४६ गा ६४२ टी, कर्म भा १ गा १५, ठा २ सू ७०, पत्र प. १ सू ३७, तत्त्वार्थ अध्या १ सू ३
दो भेद सामान्य के दो प्रकार से	५६ १ ४१	रत्ना परि ७ सू १५, १६, रत्ना परि ५ सू ३-५
दो भेद स्थिति के	३१ १ २१	ठा २ उ. ३ सू ८५
दो भेद हेतु और साध्य	४२ १ २७	रत्ना परि ३ सू ११, १४
दो राशि,	७(क) १ ४	सम १४६
दो विवक्षा-मुख्य और गौण	३८ १ २४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३१
दोष	७२३ ३ ४११	ठा. १० उ ३ सू ७४३
दोष अठारह दो प्रकार से जो अरिहन्त देव में नहीं होते	८८७ ५ ३६७	प्रव द्वा ४१ गा ४५१-४५३, सश द्वा ६६ गा १६१-१६२,
दोष अठारह पौष के	८६४ ५ ४१०	शिक्षा
दोष आठ अनेकान्तवाद पर	५६४ ३ १०२	प्रसी अध्या १ आ १ सू. ३३
दोष आठ चित्त के	६०३ २ १२०	क भा २ श्लो. १६०-१६१
दोष आठ साधु को वर्जनीय	५८३ ३ ३८	उत्त अ २४ गा ६-१०
दोष उन्नीस कायोत्सर्ग के	८६६ ५ ४२५	आव ह अ ५ गा १५४६-४७, प्रव. द्वा ५ गा २४७, यो प्रका ३ पृ. २५०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दोष चार	२४४	१	२२१	पिं नि गा. १२२, ध अधि ३ श्लो. ६३ टी. पृ १३६
दोष दस आलोचना के	६७२	३	२५६	भ श २४ उ ७, अ १० सू ७३३
दोष दसमनकेसामायिकके ७६४	३	४४७		जिज्ञा
दोष दसवचनके,, ,,	७६५	३	४४८	जिज्ञा.
दोष दस वाद के	७२२	३	४०६	टा १० उ ३ सू ७४३
दोषनिर्घातनविनयके भेद २३३	१	२१६		दशा. ६४
दोष पाँच ग्रासैपणा (मांडला)के	३३०	१	३३६	उत्त. अ ० दगा १२, उत्त अ. २६ गा. ३२, न अधि ३ श्लो २३टी. पृ ४६, पि नि गा ६३६-६६८
दोष बत्तीस तथा गुण आठ सूत्र के	६६७	७	२३	अनुसू १४ १टी, विज्ञे गा ६६६, घृ. मीटिका नि गा. २७८-२८७
दोष बत्तीस वन्दना के	६६६	७	३८	भाव द. अ ३ गा. १२०७ १२११ पृ ४४३ घृ. उ ३ गा ४१७१- ६४, प्रस ह्य २ गा १४०-१७३
दोष बत्तीस सामायिक के	६७०	७	४३	जिज्ञा
दोष बयालीस आहारादिके ६६०	७	१४६		पिं. नि गा. ६६६
दोष १२ कायाकेसामायिकके ७८६	४	२७३		जिज्ञा.
दोष विशेष दस	७२३	३	४१०	टा. १० उ ३ सू ७४३
दोष शबल इक्कीस	६१३	६	६८	दशा. ६०२, तम. ३१
दोष सैनालीस आहार के	१०००	७	२६५	पिं. नि. गा. ६६६
दो स्वरूप वस्तु के-निश्चय आर व्यवहार	३६	१	२५	विज्ञे गा ३४८२, अच्य. त. अध्या. ० = श्लो. १
द्यूत (जूआ) प्रमाद	४५६	२	६०	टा. ६ उ. ३ सू ४००
द्रव्य	४६	१	२८	उत्त अ ० दगा. ६, तत्कार्य. अध्या. ४ सू. ४० टी.

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्रव्य	२१०	१ १८६	न्यायप्र अध्या ७, रत्ना परि. ८
द्रव्य अनन्तक	४१७	१ ४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
द्रव्य जनोदरी	२१	१ १६	भ.श. २५ उ ७ सू ८०२
द्रव्य और भावमनका क्या ६८३	७	१२२	पत्र १ १५ सू २००, भ.श. १३
स्वरूप है? क्या वे एक दूसरे			उ १ सू ४७२ टी, लोक स ३
के बिना भी होते है?			श्लो० ५७०
द्रव्य कर्म	७६०	३ ४४१	आचा अ २ उ १ नि गा १८३
द्रव्य के दो भेद	६०	१ ४२	तत्त्वार्थ, अध्या ५ सू ३, ४
द्रव्य के सात लक्षण	५२७	२ २६३	विशे गा २८
द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव-इनमें ६८३	७	१२४	आव ह नि गा ३६-३७ पृ ३१
कौन किससे सूक्ष्म है?			
द्रव्य छद्म	४२४	२ ३	आगम., उक्त अ ३६
द्रव्यत्व गुण	४२५	२ १६	आगम द्रव्य त अध्या ११ श्लो २
द्रव्य नय और भाव नय	५६२	२ ४१६	न्यायप्र अध्या ५
द्रव्य निक्षेप	२०६	१ १८७	अनु सू १५०, न्यायप्र अध्या. ६
द्रव्य पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म ६१८	३	१३६	कर्म भा ५ गा. ८६-८८
और बादर का स्वरूप			
द्रव्य प्रतिक्रमण	४७६	२ ६२	आव ह. अ ४
द्रव्य प्रत्युपेक्षणा	४५६	२ ६०	ठा ६ उ ३ सू ५०२
द्रव्य लेश्या का स्वरूप	४७१	२ ७१	भ.श. १ उ २, उक्त अ ३४, पत्र
तथा उसके सम्बन्ध में			प १७ उ ४ सू २२५ टी, कर्म भा ४
तीन मत			गा. १३, आव ह अ ४ पृ ६४४
			द्रव्यलो स. ३ श्लो. २८४-३८२
द्रव्य सम्यक्त्व	१०	१ ८	प्रव द्वा १४६ गा ६४२ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्रव्य द्विसा में द्विसा का लक्षण नहीं घटता फिर वह द्विसा क्यों कही गई?	६८३	७	१२१	भ.स. १ उ. ३ मू. ३७ टी.
द्रव्यात्मा	५६३	३	६६	भ.स. १० उ. १० मू. ६६ उ.
द्रव्यानुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनु. मू. ७१
द्रव्यानुपूर्वी के तीन भेद	११६	१	८४	अनु. मू. ६६-६८ टी. पृ. ३३
द्रव्यानुयोग	२११	१	१६०	दश. नि. गा. ३ पृ. ३
द्रव्यानुयोग	५२६	२	२६३	विशे. गा. १३८५-१३८६
द्रव्यानुयोग	७१८	३	३६२	टा. १०३ उ. ३ मू. ५२७
द्रव्यानुयोग दस	७१८	३	३६१	टा. १०३ उ. ३ मू. ७२७
द्रव्यार्थिक नय	१७	१	१४	रत्ना परि. ७ मू. ४
द्रव्यार्थिक नय के दस भेद	५६२	२	४२०	द्रव्य न. म. पा. ५, आगम.
द्रव्यार्थिक नय के मतान्तर	५६२	२	४१२	नय. २.
से तीन और चार भेद				
द्रव्यार्थ	७८५	४	२६६	वृ. उ. १ नि. गा. ३२१ उ.
द्रव्यावश्यक के विशेषण	८७२	५	१७६	अनु. मू. १३, विशेष. गा. ८२१-८२७
द्रव्येन्द्रिय	२३	१	१७	प. ११ ११ मू. १६ १ टी., न. य. म. ४ मू. १६
द्रव्येन्द्रिय के दो भेद	२४	१	१७	त. वार्थ. म. पा. २ मू. १७
द्रव्यों का परिणाम	४२४	२	१५	आगम
द्रव्यों का पारस्परिक संबंध	४२४	२	१४	अ. ग. न.
द्रव्यों का स्व द्रव्य क्षेत्रकाल	४२४	२	१२	आगम
भाव की अपेक्षा वर्णन				
द्रव्यों की अर्थक्रिया	४२५	२	१८	आगम

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्रव्यों की संख्या	४२५	२ १६	आगम.
द्रव्यों के गुण पर्यायों की	४२४	२ ७	आगम.
नित्यानित्यता			
द्रव्यों के चार चार गुण	४२४	२ ४	आगम.
द्रव्यों के चार चार पर्याय	४२४	२ ४	आगम.
द्रव्यों में आठ पक्ष	४२४	२ ७	आगम.
द्रव्यों में गुण पर्याय आदि	४२४	२ ७	आगम.
की एकता और अनेकता			
द्रव्यों में गुण पर्यायों की	४२४	२ १०	आगम.
वक्तव्यता अवक्तव्यता			
द्रव्यों में नित्य अनित्य	४२४	२ ७	आगम.
आदि आठ पक्ष			
द्रव्यों में नित्य अनित्य	४२४	२ ११	आगम.
पक्ष की चौभंगी			
द्रव्यों में परस्पर समानता	४२४	२ ५	आगम
और भिन्नता			
द्रव्यों में सत् असत् पक्ष	४२४	२ ६	आगम
द्रुमपत्रक अ० की ३७ गाथा	६८४	७ १३३	उत्त अ १०
द्रौपदी	८७५	५ २७५	ज्ञा अ. १६, त्रिष पर्व ८
द्वार १८ छोटी गतागत के	८८८	५ ३६८	पत्र प ६ के आधार से
द्वार बीस परिहार विशुद्धि	६०५	६ १६	पत्र प १ सू ३७ टी
चारित्र के			
द्वार सत्रह शरीर के	८८१	५ ३८५	पत्र प २१
द्वितीय सप्त रात्रिदिवस	७६५	४ २६०	सम १२, दशा. द ७, भ श २
नामक नवीं भिक्षुपण्डिता			उ. १ सू ६३ टी.

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्विधा अनन्तक	४१८	१	४४२	टा. ५३ ३म ४६०
द्विमासिकी भिक्खुपडिमा	७६५	४	२८६	मम १२, दशाद ७.म.श २ उ १ मू ६३टी
१ द्विष्ट दुःसंज्ञाप्य	७५	१	५४	टा ३३.६मू.२०३
द्वीपकुमारों के दमअधिपति	७३६	३	४१६	मज ३ उ= मू १६६
द्वेष निःसृत असत्य	७००	३	३७२	टा १०मू ७४१, पत्र ११ मू १६४, ध अधि ३: ४५४ १२०
द्वेष प्रत्यया क्रिया	७६६	१	२८२	टा २३.१मू ६०, टा ४३ २म ६१६, आ १६.म ६ मू ११६
द्वेष बन्धन	२६	१	१८	टा २३ ४ मू ६-६६
द्वैक्रियनामकपाँचवाँ निहव	५६१	२	३६६	विजे गा २४२४-० ६४०

ध

धनदत्त की पारिणामिकी	६१५	६	८३	न मू २७गा ७२, गा म १८, आ १६, गा. ६ ४६
बुद्धि की कथा				वि.म. १६
धनपति कुमार की कथा	६१०	६	५६	नवपद गा १६ ममरत्नवागि १२
धनसार्थवाह की कथा	८२१	४	४४६	
सम्यक्त्व प्राप्त पर				
धनुष के जीवोंकी तरहक्या	६८३	७	१२८	म.श. ४ उ १ मू. ००७टी.
पात्रादिके जीवोंकी भी जीव- रक्षाकारणक पुण्यबन्ध होता है?				
धन्ना कुमार की कथा	७७६	४	२०४	ममूव ३ म. १
धन्नासार्थवाह और विजय	६००	५	४३४	म. म. २
घोर की कथा				

१ नमः सा ज्ञानदाता क प्रति ह्ये होने न उपयन वो द्वावा न केनेगा जी ॥

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
धर्म	६३	१	४४	यो प्रका २श्लो ११, ध अवि २ श्लो २१-२२ टी. पृ ३१
धर्म कथा	६७	१	६६	ठा ३उ.३ सू १८६
धर्म कथा	३८१	१	३६८	ठा ५ उ.३ सू ४६५
धर्म कथा की व्याख्या, भेद	१५३	१	११२	ठा ४ उ२ सू. २८२
धर्म कथानुयोग	२११	१	१६०	दश० नि गा ३ पृ ३
धर्म की व्याख्या और उदाहरण	१८	१	१४	दश अ १ गा. १ टी, ठा २ उ १ सू. ७२, ध अवि १ श्लो ३ टी पृ १
धर्म के चार प्रकार	१६६	१	१५४	स श द्वा १४१ गा २६६ पृ ७०
धर्म के तीन भेद	७६	१	५४	ठा ३ सू १८८, ठा ३ सू २१७
धर्म के वाईस विशेषण	६१६	६	१५६	ध अवि ३ श्लो २७ टी पृ ६१
धर्म के बारह विशेषण	८०४	४	३०६	शा भा २ प्रक १० धर्म भावना.
धर्म दस	६६२	३	३६१	ठा १० उ ३ सू ७६०
धर्मदान	७६८	३	४५२	ठा १० उ ३ सू. ७४५
धर्मदेव	४२२	१	४४५	ठा ५ उ १ सू ४०१, भ श. १२ उ ६
धर्म द्रव्य	४२४	२	३	आगम, उक्त. अ ३६ गा ५
धर्मध्यान	२१५	१	१६५	सम ४, ठा ४ उ १ सू २४७, दश. अ १ नि गा ४८ टी, आव, ह अ. ४ ध्यान शतक गा ६८
धर्मध्यान की चार भावनाएं	२२३	१	२०७	ठा ४ सू २४७, भ श २५ उ ७
धर्मध्यान के चार आलंवन	२२२	१	२०६	ठा ४ उ १ सू २४७
धर्मध्यान के चार प्रकार	२२०	१	२०१	ठा ४ उ १ सू २४७
धर्मध्यान के चार भेद	२२४	१	२०८	ज्ञान प्रक ३७-४०, यो प्रका ७-१०, क भा २ श्लो २०७-२०६
धर्मध्यान के चार लिंग	२२१	१	२०५	ठा ४ सू २४७, भ श २५ उ ७ सू ८०३, आव ह, अ ४ पृ ६०४

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
धर्म बोधि आदि ग्यारह बोलों की प्राप्ति	४६	१	२६	ठा २३.१ सू ६४-६५
धर्म भावना	८१२	४	३७३, ३८६	शा भा. प्रक १०, भावना, शाव प्रक २, प्रव द्वा. ६७ गा. ५७३, तत्त्वार्थ ग्रन्था ६ सू ७
धर्म रुचि	६६३	३	३६३	उत्त प्र २८ गा. २७
धर्मरुचि-धर्मभावना	८१२	४	३८६	ज्ञा प्र १६
धर्म विषय पर आठ गाथाएं ६६४	७	१५१		
धर्माचार्य	१०३	१	७२	रा. सू. ७७
धर्माध्ययनकी ३६ गाथा	६८१	७	८७	सुय अ ६
धर्मास्तिकायके पाँचप्रकार २७७	१	२५४		ठा. ५८ ३ सू ४४१
धातुकी खण्ड मेचन्द्रमूर्यादि ७६६	४	३०१		सूर्य. प्रा १६
ज्योतिषी देवों की संख्या				
धातुज भावप्रमाण नाम	७१६	३	४०१	अनु. सू १३०
धात्री दोष	८६६	५	१६४	प्रव. द्वा ६७ गा ५६ ७, प्र व पि. ३ श्लो २० पृ ४०, पि. नि गा. ४०८, पि. नि. गा ५८, पचा १३ गा. १८
धात्री (धाय) पाँच	४०८	१	४३४	शाचा ध्रु. २१. ३ अ. २. सू. १७६, अ. ग. ११ उ ११ सू ४२६
धान्य के चौबीस प्रकार	६३५	६	२०५	दण. ०४ ३ नि गा २२६-२६३
धाय (धात्री) पाँच	४०८	१	४३४	शाचा ध्रु. २१. ३ अ. २. सू. १७६, अ. ग. ११ उ ११ सू ४२६
धारणा	२००	१	१५६	ठा ४३ ४ सू ३६४
धारणा	६०१	३	११८	शौ. सा यो.
धारणा व्यवहार	३६३	१	३७६	ध्रु. ४२. १, अ. ग. ८३. ८ सू १४०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
धार्मिक पुरुष के ५ आलंवन	३३३	१ ३४३	ठा ५ उ ३सू ४४७
धूम दोष	३३०	१ ३४०	ध अधि ३श्लो २३टी पृ ५५, पि.नि गा. ६३५ ६८, उक्त अ २४गा १२, उक्त अ २६गा. ३२
धैवत या रैवत स्वर	५४०	२ २७१	अनुसू १२७गा २६, ठा ७सू ६६३
धौवन पानी इक्कीस प्रकार का	६१२	६ ६३	आचाश्रु २अ १उ. ७-८सू ४१- ४२, पि नि गा १८-२१, दश अ. ५ उ १गा ७५-७६
ध्मात वायु	४१३	१ ४३८	ठा ५ उ ३सू ४४४
ध्यान	४७८	२ ८६	उवसू २०, उक्त अ ३०गा. ३०, ठा ६सू ५११, प्रव द्वा ६गा २७१
ध्यान	६०१	३ ११६	यो, रा यो.
ध्यान की व्याख्या और उसके भेद	२१५	१ १६३	ठा ४ उ १सू २४७, सम ४, दश अ १नि गा ४८टी, प्रव द्वा. ६गा २७१टी, आव ह अ ४ ध्यानशतकपृ ५८०, प्रागम.
ध्यान के अड़तालीस भेद	६३३	३ १६५	उवसू २०, भ श २५ उ ७सू ८०३
ध्यानके अड़तालीसभेद	१००	२ ७ २६६	उवसू २०, भ.श २५ उ ७सू ८०३
ध्यानमेविघ्न रूप आठ दोष	६०३	३ १२०	क भा २ श्लो १६०-१६१
ध्रुवबन्धिनी प्रकृतियाँ	८०६	४ ३३७	कर्म भा ५ गा १-२
ध्रुवसत्ताक प्रकृतियाँ	८०६	४ ३४२	कर्म भा ५ गा. १, ८, ६
ध्रुवोदया प्रकृतियाँ	८०६	४ ३४१	कर्म भा ५ गा १-६
ध्रौव्य	६४	१ ४५	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू २६

न

नकारे के छः चिह्न	४६१	२ १०२	उत्त. अ १८गा ४१ नमुचि- कुमार की कथा (हस्तलिखित)
-------------------	-----	-------	--

विषय	पृष्ठ	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नकुल का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आर. द. गा. १३४ पृ. १, सु पीठिका नि. गा. १७०
नक्षत्र अष्टाईम	६५३	६	२८८	अं. व. ल. ७५५, म. २७
नक्षत्र दस ज्ञान वर्धक	७६२	३	४४४	सम. १०, डा. १०७ ३५ ७८९
नक्षत्र प्रमाण संवत्सर	४००	१	४२५	डा. ३७. ३५. ४६०, प्र. डा. १४३
नक्षत्र संवत्सर	४००	१	४२५	डा. ३७. ३५. ४६०, प्र. डा. १४३ गा. ६०१
नक्षत्र संवत्सर	४००	१	४२७	
नगर धर्म	६६२	३	३६१	डा. १०७. ३. सु. ७६०
नन्दमणियार की कथा	८२१	४	४४४	जा. प्र. १३, ना. प. द. गा. १६५ १३
नन्दमणियार की कथा	६००	५	४६०	जा. ०. थ. १३
नन्दिनी पिता श्रावक	६८५	३	३३१	उपा. ०. म. ०. ६
नन्दी फल का दृष्टान्त	६००	५	४६४	गा. ०. म. १६
नन्दीवर्द्धनकुमार की कथा	६१०	६	४३	वि. प्र. ६
नन्दीपेण की पारिणा-	६१५	६	८२	नं. सु. २७ गा. ७२, श्या. व. ह. गा. ६४६
मिकी बुद्धि की कथा				
नन्दी मूत्र का विषय वर्णन	२०४	१	१७८	५
नपुंसकलिंग मित्र	८४६	५	११६	पञ्च. १५ ७
नपुंसक वेद	६८	१	४६	कर्म. भा. १ गा. २०
नमस्कार का स्वामी नम-	६८३	७	१०१	वि. प्र. गा. २८७१ मे. २८६२
स्कार कर्ता होगा पूज्य है ?				
नमस्कार के उत्पादक	६८३	७	१००	वि. प्र. गा. २८०१-२८३०
निमित्त क्या है ?				
नमस्कार पुण्य	६२७	३	१७३	डा. ३३. ३ सु. ६३६
नमस्कार महिमा पर ६ गाथा	६६४	७	१५३	

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
नमस्कारसूत्र में सिद्ध और	६८३	७	६८	म. मंगलाचरण टी, विशेष. गा.
साधु दो ही पद न कहकर				३२०१ से ३२०६
पाँच पद क्यों कहे ?				
नमस्कार सूत्र में सिद्ध से	६८३	७	६८	म मंगलाचरण टी, विशेष गा
पहले अरिहन्त को नम-				३२१०-३२२१
स्कार क्यों किया गया ?				
नमिराजर्षि-एकत्वभावना	८१२	४	३८१	उत्त० अ ६
नमुक्कार सहिय, पोरिसी	७०५	३	३७६	प्रव० द्वा ४ गा २०१-२०२,
आदि दस पञ्चखाण				आवह अ ६ नि गा १५६७,
पाठ सहित				पंचा ५ गा. ८-११
नय	३७	१	२४	रत्ना. परि ७ सू. १
नय	४६७	२	१७१	
नय के दो भेद	१७	१	१४	रत्ना० परि. ७ सू ५
नय के भेद प्रभेद	४६७	२	१७४	
नय सात	५६२	२	४११	अनु सू १५२, प्रव द्वा. १२४ गा
				८४७-८४८, विशेष गा २१८०-
				२२७८, रत्ना परि ७, तत्त्वार्थ
				अध्या १, आगम, द्रव्य त
				अध्या ५-८, न्यायप्र अध्या ५,
				नय, नयप्र., नयवि, नयो., आलाप,
नयों का विषय	५६२	२	४२५	रत्ना० परि. ७
नयों के अपेक्षा विशेष से	५६२	२	४२६	प्रव. द्वा १२४ गा ८४८ टी.
दो सौ से सात सौ भेद				
नयों के तीन दृष्टान्त	५६२	२	४२७	अनु सू. १४५
नयों के दूसरी अपेक्षा से	५६२	२	४२७	
सात सौ भेद				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नरकायुञ्ज्ध के ४ कारण	१३२	१	६६	टा. ४ व ४ मू. ३७३
नरकके विषयमें गणधर अंक-७७५	४	४२		विद्ये गा १८८५-१६०८
स्मित स्वामी कारुणिकासमाधान				
नरक के तीस द्वार	५६०	३	३३६	जी. प्रति. ३८. १-३
नरक के दुःखों का वर्णन	६४१	६	२१६	मू. ० म ६ उ. २
करनेवाला पचीस गाथाएं				
नरक के दुःखों का वर्णन	६४७	६	२३६	मू. ० म ४ उ. १
करनेवाली २७ गाथाएं				
नरक गतिमें अन्तर काल	५६०	२	३२०	प्रव. डा. १७७ गा १०८१ =
नरक में वेदना	५६०	२	३१६	जी. प्रति. ३ मू. ८६, प्रव. डा. १७४, प्रव. ० प्रथम प्रश्न १
नरक सात	५६०	२	३१४	जी. प्रति. ३, प्रव. डा. १७२-८६, म. न. १८३ ६-८, म. न. ३०० १ म. प. ०, प्रव. ० प्रथम प्रश्न १
नरकावासमान नारकी के	५६०	२	३१६	जी. प्रति. ३ मू. ७०, प्रव. डा. १७२
नरकावासों का विस्तार	५६०	२	३३६	जी. प्रति. ३ मू. ८१
नरकावासों का संस्थान	५६०	२	३३४	जी. प्रति. ३ मू. ८२
नरकों का परस्पर अन्तर	५६०	२	३४१	म. न. १८३ = मू. ६२३
नरकों की मोटाई (साहज्य)	५६०	२	३२८	जी. प्रति. ३ मू. ८८
नरकों के कण्ठ	५६०	२	३२८	जी. प्रति. ३ मू. ८८
नरकों के नाम आर गोत्र	५६०	२	३१५	जी. प्रति. ३ मू. ६७, प्रव. डा. ० १७२ गा. १०१२
नरकों में प्रतर (पाथड़े)	५६०	२	३२८	जी. प्रति. ३ मू. ७० वी
नरकों में संस्थान	५६०	२	३४१	म. न. २६३ = मू. ७२३
नरदेव	४२२	१	४४५	टा. ४७ मू. ० म. न. १२३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नरयविभक्ति अध्ययन के	६४१	६	२१६	सूय० अ ५ उ २
दूसरे उ० की २७ गाथाएं				
नरय विभक्ति अध्ययन के	६४७	६	२३६	सूय० अ ५ उ १
पहले उ० की २७ गाथाएं				
नवतत्त्व	६३३	३	१७७	नव गा १, ठा ६ उ ३ सू ६६५
नव वाढ़ शील की	६२८	३	१७३	सम ६, ठा ६ उ ३ सू ६६३
नवीन उत्पन्न देवता के मनुष्य	११०	१	७६	ठा ३ उ ३ सू १७७
लोक में आने के तीन कारण				
नाक के ४ मण्डल और उन प्र	५६	२	३०७	यो० प्रका. ५, राज, हठ,
में रहने वाली वायु के भेद				
नाग कुमार के दस अधिपति	७३२	३	४१८	भ० श ३ उ ८ सू १६६
नाग सुवर्ण मद्	७०३	३	३७४	ठा १० उ ३ सू ७१०
नाणक की कथा औत्प-	६४६	६	२७५	न० सू २७ गा ६५ टी
त्तिकी बुद्धि पर				
नाम	४२७	२	२६	अनु. सु ७०
नाम अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ. ३ सू ४६२
नाम कर्म	७६०	३	४४१	आचा अ २ उ १ नि. गा १८३
नाम कर्म अशुभ भोगने के	८३६	५	३३	पन्न० प २३ सू २६२
घौदह प्रकार				
नाम कर्म और उसके वया-	५६०	३	६८	कर्म भा १ गा २३-२७, पन्न०
लीस मूल भेद				प २३ उ २ सू २६३
नाम कर्म की १४ पिंड प्रकृति	५६०	३	६६	पन्न० प २३ सू २६३-२६४, कर्म
के ६ प्रश्न भेद व व्याख्या				भा० १ गा ३३-४३
नाम कर्म की ६३, १०३ और ५६०		३	७७	कर्म० भा. १ गा. ३१ व्याख्या
६७ प्रकृति गों				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नाम कर्म की ४२ प्रकृतियाँ ६६१	७	१४६	पन०५२३३.२ सू०६३
नामकर्मके बन्धके कारण ५६०	३	७८	म०५८३६ सू०३१
नामकर्म-शुभ और अशुभ ५६०	३	७८	पन०५०३ सू०२६२
का १४ प्रकारका अनुभाव			
नामकर्म-शुभचौदह प्रकार ८३८	५	३३	पन०५०३ सू०२६२
से भोगा जाता है			
नाम ११ भ० महावीरके ७७०	४	३	जैनविद्या बोल्युम १ न. १
नाम दम प्रकार का	७१६	३	३६५ अनुसू १३०
नाम नरकोंके	५६०	२	३१५ नी प्रति. ३, प्र० द्वा १७०२ गा १००२
नाम निक्षेप	२०६	१	१८७ अनुसू १३०, न्यायप्र अ०५. ६
नाम सत्य	६६८	३	३६६ टा १०५ ७४५, पप्र. ५. ११५ ११६, घ. प्रनि ३००. ८१५ १०१
नाम सत्रह मायाके	८८०	५	३८५ सम. ५२
नामसे नाम	७१६	३	३६८ अनुसू १३०
नामानुपूर्वा	७१७	३	३६० अनुसू. ७१
नामानुयोग	५२६	२	२६२ विवेका १३८३-१३८२
नामार्य	७८५	४	२६६ सू० १ नि गा ३२६३
नारकी की आगति	५६०	२	३२७ प्रव द्वा. १८२ गा १०६१-६३
नारकीके दम प्रकारसमय ७४७	३	४२४	टा १०३. ३ सू ७४७
के अन्तर आदिकी अपेक्षा			
नारकी जीवोंका आयुबन्ध ५६०	२	३४१	मज ३०३. १ सू०२५
नारकी जीवोंका आहार	५६०	२	३४० मज १८३. १ सू०११
नारकी जीवोंका गन्ध	५६०	२	३३६ जी प्रति ३ सू. ८७
नारकी जीवोंका वर्ण	५६०	२	३३६ जी. प्रति ३ सू०७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नारकीजीवोंकाश्वासोच्छ्वास	५६०	२	३३७ जी.प्रति ३ सू ८८
नारकी जीवोंका संस्थान	५६०	२	३३७ जी प्रति ३ सू ८७
नारकी जीवों का संहनन	५६०	२	३३७ जी प्रति.३ सू ८७
नारकी जीवों का स्पर्श	५६०	२	३३६ जी प्रति ३ सू.८७
नारकीजीवोंकीअवगाहना	५६०	२	३१६ जी प्रति ३सू ८६,प्रव द्वा १७६
नारकी जीवों की उद्वर्तना	५६०	२	३२६ प्रवद्वा.१८१,पन्नप २०सू २६३
नारकी जीवोंकीविग्रहगति	५६०	२	३४० भश १४उ.१ सू ४०२
नारकी जीवों की स्थिति	५६०	२	३१६ जी प्रति ३सू ६०टी, प्रव द्वा १७६गा १०७६-१०७६
नारकीजीवों केअवधिज्ञान	५६०	२	३२३ जी प्रति ३सू ८८,प्रव द्वा १७६
नारकी जीवों के चौदहभेद	६३३	३	१७८ पन्नप १सू ३१,उत्त अ ३६ गा १६६-१६६, जी प्रति ३
नारकीजीवों केवेदनादस	७४८	३	४२५ ठा १०उ ३ सू ७६३
नारकी जीवों में उपयोग	५६०	२	३३७ जी प्रति ३ सू ८८
नारकी जीवों में ज्ञान	५६०	२	३३७ जी प्रति ३ सू.८८
नारकी जीवोंमेंदस स्थानोंका अनुभव	५६०	२	३४० भश १४ उ ४ सू ४१६
नारकी जीवों में दृष्टि	५६०	२	३३७ जी प्रति ३ सू ८८
नारकीजीवोंमेंपरिचारणा	५६०	२	३३६ पन्नप ३४
नारकी जीवों में युग्म	५६०	२	३४१ भश १८उ.४सू ६२४
नारकी जीवों में योग	५६०	२	३३७ जी प्रति ३ सू ८८
नारकी जीवों में लेश्या	५६०	२	३२१ जी प्रति ३सू ८८,प्रवद्वा १७८
नारकी०मेंवेदना, निर्जरा	५६०	२	३३६ भश.७उ ३ सू २७६
नारकीजीवों में समुद्घात	५६०	२	३३८ जी प्रति ३ सू ८८
नारद नौ	६५२	३	२१६ सेन उल्ला.३ प्रश्न ६६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नागच संहनन	४७०	२	७०	पत्र २३ मू. २२३, डा ६३.३ मू. ४६४, नर्म. भा १ गा. ३८
निर्शांकित दर्शनाचार	५६६	३	७	पत्र १ मू. ३७, उक्त म. २८ गा ३१
१ निक्काचना करण	५६२	३	६५	कम्म. गा २
निक्काचितकीव्याख्या, भेद २५२	१	२३६		टा. ४७३ मू. २६६
निक्खित्तदोष (ग्रहणोपणा ६६३ का तीसरा दोष)	३	२४३		प्र. डा. ६७ गा ४६८, विं. नि. गा ४२०, ५ मधि ३४ लो. २२ पृ ४१, पंचा. १३ गा २६
निक्षिप्त चरक	३५२	१	३६७	टा ४७ १ मू. ३६६
निक्षेप चार	२०६	१	१८६	प्र. मू. १४०, न्याय प्र. शब्दा. ६
निक्षेपमात अनुयोग के	५२६	२	२६२	विं. गा १३८६-१३६२
निगमन	३८०	१	३६७	स्ता. परि ३ मू. ४१
निगोद	६	१	८	भागम.
निगोद का वर्णन	४२५	२	१६	भागम
निगोद के दो भेद	४२५	२	२१	भागम
० निग्रह दोष	७२२	३	४१०	टा १०३.३ मू. ४१३
३ निग्रहस्थान चार्डिस	६२१	६	१६२	प्र. मी. मा. १ मू. ३४, न्यायप्र. न्यायमू. अथा. ४ मा. ०
नित्य अनित्यपत्र की चौभंगी छः द्रव्यों में	४२४	२	११	भागम.
नित्य दोष	७२३	३	४१२	डा १० उ. ३ मू. ७४३

१ द्रव्यों की अपरतन्ता, उदीरणा आदि सभी वर्णों के प्रयोग एव प्रत्ययवैध
रमाने वाला जल का पौष्टि विक्षेप निदानकारण माना जाता है। २ पत्र आदि आदि
में ४३ में परिभाषित करना। ३ मते पत्र ही निदान पर सुकमे के कारण यही
५ प्रतिपत्ती की पर हो जाना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नित्यानित्यता छःद्रव्यों में	४२४	२	७	आगम
निदान कर्त्ता	४४४	२	४८	ठा ६३ ३सू १२६, वृ (जी) उ ६
निदान (नियाणा) नौ	६४४	३	२१५	दशा द १०
निदान शून्य	१०४	१	७४	ठा ३३ ३सू १८२, सम ३, घ. अधि ३श्लो २७ पृ. ७६
निद्रा	४१६	१	४४३	कर्म भा १गा ११-१२, पत्र प २३
निद्रा के पाँच भेद	४१६	१	४४३	कर्म भा १गा ११-१२, पत्र प. २३
निद्रानिद्रा	४१६	१	४४३	कर्म भा १गा ११-१२, पत्र प २३
निद्रा प्रमाद	२६१	१	२७५	ठा ६३ ३सू ५०२, घ अधि २ श्लो ३६ पृ. ८१, पचा १गा २३टी.
निद्रा से जागने के प्रकार	४२०	१	४४४	ठा ५३ २ सू ४३६
निधत्तकीव्याख्या और भेद	२५१	१	२३६	ठा ४३ २सू २६६
१ निधत्ति करण	५६२	३	६५	कम्म गा २
निधि के पाँच प्रकार	४०७	१	४३३	ठा ५३ ३सू ४०८
निन्दा पर कथा	५७६	३	२८	आव. ह्र अ ४नि गा १२४२
निमन्त्रणा समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५३ ७सू ८०१, ठा १० सू ७४६, प्रव द्वा १० १गा ७६०
निमित्त	४०४	१	४३१	उत्त. अ ३६गा २६२, प्रव द्वा ७३
निमित्त कथन	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६गा २६४, प्रव द्वा ७३
निमित्त कारण	३५	१	२३	विशे गा २०६६
निमित्त दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७गा १६७, घ अधि ३ श्लो २२ पृ ४०, पि नि गा ४०८, पि नि गा ५८, पचा १३गा, १८

१ जिससे कर्म उद्धर्तना और अपवर्तना करण के सिवाय जेष करणों के अयोग्य हो जाय ऐसा जीव का वीर्य विशेष ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नियट्टिवादर गुणस्थान	८४७	५	७६	कर्म भा. २ गा २
नियत वादी	५६१	३	६४	ठा. ८ उ ३ सू ६०५
नियति	२७६	१	२५७	आगम., कारण, सम्मति भा ५ काण्ड ३ गा. ५ ३
नियम	६०१	३	११५	यो. रा यो.
नियम चौदह श्रावक के	८३१	५	२३	शिक्षा, ध अधि. २ श्लो ३ ४ पृ ७६
नियाणा नौ	६४४	३	२१५	दशा ६ १०
निरनुकम्पता	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६ गा. २६४, प्रव. द्वा ७३ गा ६४५
निरयावलिका सूत्र के दस	३८४	१	४००	निर
अध्ययनों का विषय वर्णन				
निरयावलिका सूत्र के दस	७७७	४	२३२	निर
अध्ययनों का विषय वर्णन				
निरयावलिकासूत्रके ५ वर्ग	३८४	१	३६६	निर
निरयावलिकासूत्रके पाँच	३८४	१	४००	
वर्गों के ५२ अध्ययन				
निरुपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्त्वार्थ अध्या २ सू. ५२, भ. श २० उ १० सू. ६८५
निरुपक्रम कर्म	२७	१	१६	वि. अ ३ सू २० टी.
निर्ग्रन्थ	३६६	१	३८१	ठा. ५ मृ ४४५, भ श २५ उ ६
निर्ग्रन्थ के पाँच भेद	३७०	१	३८५	ठा ५ उ ३ सू. ४४५, भ ग २५ उ. ६ सू ७५१
निर्ग्रन्थ पाँच	३६६	१	३७६	
निर्ग्रन्थप्रवचन पर ३ गाथा	६६४	७	१५५	
निर्ग्रन्थ श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ६८ गा ७३१

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
निर्जरा	४६७ २ २०६	
निर्जरा, वेदना नैरयिकों में	५६० २ ३३६	भश ७ उ ३सू २७६
निर्जरा के वारह भेद	४७६ २ ८५	उत्त अ. ३० गा. ८, ३०, उवसू १६, २०, प्रव द्वा ६ गा २७०-२७१, ठा ६ उ ३ सू ५११
निर्जरा के वारह भेद	४७८ २ ८६	
निर्जरा तत्त्व के वारह भेद	६३३ ३ १८४	नव, उवसू १६-२०, भश. २५ उ ७ सू ८०२ से ८०४
निर्जरा भावना	८१२ ४ ३६६, ३८६	शा भा १ प्रक ६, भावना, ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ. अध्या ६ सू ७
निर्मितवादी	५६१ ३ ६३	ठा ८ उ ३ सू ६०७
निर्याण मार्ग पाँच	२८० १ २५६	ठा ५ उ ३ सू ४६१
निर्विकृतिक (णिन्वियते)	३५५ १ ३७०	ठा ५ उ १ सू ३६६
निर्विचिकित्सदर्शनाचार	५६६ ३ ७	पत्र ५ १ सू ३७, उत्त अ २८ गा ३१, प्र र. भा २ पृ ८१४,
निर्विशमान कल्पस्थिति	४४३ २ ४६	ठा ३ उ ४ सू २०६ ठा ६ उ ३ सू ५३०, वृ (जी) उ ६
निर्विष्टकायिक कल्पस्थिति	४४३ २ ४६	
निवृत्ति द्रव्येन्द्रिय	२४ १ १७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू १७
निर्वेद	२८३ १ २६४	ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ४३
निर्वेदनी कथा के भेद	१५७ १ ११५	ठा ४ उ २ सू २८२
निर्ल्लंघ्य कर्मकर्मादान	८६० ५ १४६	उपा. अ १ सू ७, भश ८ उ ५ सू ३३०, आव ह अ ६ पृ ८२८
निवृत्ति	४५ १ २८	
निवृत्ति पर कथा	५७६ ३ २६	आव ह अ. ४ नि गा. १२४२
निन्विगइ पञ्चखाण	७०५ ३ ३८१	प्रव द्वा. ४ गा २०१-२०२, आव. ह अ ६ नि गा. १५६७३. ८५१, पचा १ गा ८-११

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
निव्विगडपञ्चके नौ आगार	६२६	३	१७४	आवह अ ६४ = ४, प्रव द्वा. ४
निशीथमूत्रकाविषयवर्णन	२०५	१	१८२	निशीथ.
निश्चय	३६	१	२५	विशे गा ३६ = ६, द्रव्य त. अध्या ८
निश्चय और व्यवहार नय	५६२	२	४१६	न्यायप्र अध्या ५, द्रव्य त अध्या ८
निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८०	आगम
श्रावक के वारह भाव व्रत				
निश्चय नय के दो भेद	५६२	२	४२०	रत्ना परि ७ सू. ५, न्यायप्र अध्या ५
निश्चय सम्यक्त्व	१०	१	६	कर्म भा १ गा १५, प्रव द्वा. १८८
निपद्या के पाँच भेद	३५८	१	३७२	टा ५ सू ३६६ टी, टा. ५ सू ४००
निपाद स्वर	५४०	२	२७१	अनु सू. १२७ गा २५, टा ७ सू ५५३
१ निपेक	४७३	२	७६	भ श ६ व = सू २५० टी, टा ६ उ ३ सू ५३६ टी
निष्कांचित दर्शनाचार	५६६	३	७	पत्र प १ सू. ३७, उक्त अ २ = गा ३१
२ निष्कृपता	४०५	१	४३२	उक्त अ ३६ गा २६४, प्रव द्वा ७३
निष्क्रमण सुख	७६६	३	४५४	टा १० उ ३ सू ७३७
निसर्गरुचि	६६३	३	३६२	उक्त अ. २ = गा. १७-१८
निसीहिया (नैपेथिकी)	६६४	३	२५०	भ श २५ उ, ७ सू ८०१, टा १० उ ३ सू ७६६, उक्त अ = ६ गा. २-७, प्रव द्वा १०१ गा ७६०
समाचारी				
निह्व आठवां (शिवभूति	५६१	२	३६६	विशे गा २५४०-२६०६, टा ७ उ ३ सू ५८७
अथवा वोटिक)				
निह्व चौथा (अश्वमित्र)	५६१	२	३५८	विशे. गा. २३ = ६ - २ ८२३
निह्व छठा (रोहगुप्त)	५६१	२	३७१	विशे. गा. २८५१-२९०८

१ कल भोग के लिए होने वाली कर्म पुटला की रचना विशेष । २ रथावगदि जीवों पर दयाभाव न रखना तथा निना उपयोग गमनादि क्रिया करना ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
निहवतीसरा (अव्यक्तदृष्टि)	५६१ २ ३५६	विशे गा-२३६६-२३८८
निहव दूसरा (तिष्यगुप्त)	५६१ २ ३५३	विशे २३३३-२३५५
निहव पहला (जमाली या बहुरत)	६६१ २ ३४२	विशे गा २३०६-२३३२, म श १३ १, म श ६३ ३३, आव ह अ १ पृ ३१२
निहव पाँचवाँ (आर्यगंग)	५६१ २ ३६६	विशे गा २४२४-२४५०
निहव सात	५६१ २ ३४२	विशे. २३००-२६२०, ठा. ७ सू ५८७, म. श. १३. १, म श ६३ ३३, आव ह अ १ गा ७७८-७८८
निहवसातवां-गोष्ठामाहिल	५६१ २ ३८४	विशे गा २५०६-२५४६
नील लेश्या	४७१ २ ७३	उत्त अ ३४, कर्म. भा ४ गा १३
नैगमनय और उसके दो तथा तीन भेद	५६२ २ ४१२	रत्ना परि ७ सू ७, तत्त्वार्थ. अध्या. १, न्यायप्र अध्या. ५, द्रव्य त अध्या ६
नैपुणिक नौ	६४२ ३ २१३	ठा ६३ ३ सू ६७६
नैरयिकचारबोलोंसेमनुष्य	१४० १ १०३	ठा ४७ १ सू २४५
लोक में आने में असमर्थ है		
नैरुक्त भाव प्रमाण नाम	७१६ ३ ४०१	अनु सू १३०
नैपद्यिक	३५७ १ ३७२	ठा ५३ १ सू ३६६
नैपेधिकी (निसीहिया)	६६४ ३ २५०	म श २५३ ७ सू ८० १, ठा १० उ ३ सू ७४६, उत्त अ २६ गा २-७, प्रव. द्वा १० १ गा ७६०
समाचारी		
नैसर्गिक सम्यक्त्व	१० १ ६	ठा २३ १ सू ७०, पत्र प १ सू ३७, तत्त्वार्थ. अध्या १ सू. ३
नैसर्प निधि	६५४ ३ २२०	ठा. ६३ ३ सू ६७३
नैसृष्टिकी (नेसत्थिया)	२६५ १ २८०	ठा २३ १ सू. ६०, ठा ५३ २ सू ४१६, आव. ह. अ. ४ पृ ६१३
क्रिया		

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नोउत्सर्पिणी अवसर्पिणी	४३१	२	३८	विजेगा २७०८-२७१०
नोउत्सर्पिणी अवसर्पिणी	४३१	२	३६	विशे.गा. २७०८-२७१०
फालकेक्षेत्रकीअपेक्षा४भाग				
नोकपायमोहनीय	२६	१	२१	कर्म भा १गा १७
नोकपाय वेदनीय नौ	६३५	३	२०३	ठा ६३, ३ सू ७००
नोगौण नाम	७१६	३	३६५	अनुसू १३०
नौ अनृद्धि प्राप्त आर्य	६५३	३	२१६	पत्रप १सू ३७
नौआगार निव्विगईपच्च- कखाण के	६२६	३	१७४	आवहअ ६पृ ८४, प्रत द्वा ४ गा २०६
नौ आचार्योंके नाम(वल देव, वासुदेवों के पूर्वभवके)	६५१	३	२१६	सम १४८
नौआत्मा ने भ०महावीरके	६२४	३	१६३	ठा ६३ ३ सू ६६१
शासन में तीर्थङ्करगोत्रत्राँधा				
नौ आयु परिणाम	६३६	३	२०४	ठा ६३ ३सू ६८६
नौ काव्यरस	६३६	३	२०७	अनुसू १२६गा. ६३-१०६
नौ कोटि भिन्ना की	६३१	३	१७६	ठा ६सू ६८१, आवा अ २७ ५
नौगणभगवान्महावीरके	६२५	३	१७१	ठा ६३ ३ सू. ६८०
नौ नारद	६५२	३	२१६	सेन उद्गा ३ पत्र ६६
नौ निमित्त स्वप्न के	६३८	३	२०६	विजेगा १७०३
नौ नियाणा (निदान)	६४४	३	२१५	दशाद १०
नौ नैपुणिक	६४२	३	२१३	ठा ६३ ३सू ६७६
नौ नोकपाय वेदनीय	६३५	३	२०३	ठा ६३ ३ सू ७००
नौ परिग्रह	६४०	३	२११	आवह.अ ६पृ ८४
नौ पाप भूत	६४३	३	२१४	ठा. ६३ ३सू. ६७८

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नौ पुण्य	६२७	३ १७२	ठा ६३ ३सू ६७६
नौ प्रकार की वसति	६२३	६ १७०	आचा शु २चू १अ २उ २
नौ प्रतिवासुदेव	६४८	३ २१८	सम. १५८, प्रव द्वा २११गा. १२१३, आव ह. अ १पृ. १५६
नौ बलदेव	६४६	३ २१७	सम १५८, प्रव द्वा २०६गा १२११, आव ह अ. १पृ १५६
नौ बलदेवोंके पूर्व भवके नाम	६४६	३ २१८	सम १५८
नौ वार्ते मनःपर्यय ज्ञान के लिए आवश्यक हैं	६२६	३ १७२	नसू १७
नौ ब्रह्मचर्य गुप्ति	६२८	३ १७३	अ ६उ ३सू ६६३, सम ६
नौ भेद काल के	६३४	३ २०२	विशे गा २०३०
नौ भेद ज्ञाता के	६४१	२ २१२	आचा. शु. १अ. २उ. ५ सू ८८
नौ महानिधियांचक्रवर्तीकी	६५४	३ २२०	ठा ६ उ ३ सू. ६७३
नौ लौकान्तिक देव	६४५	३ २१७	ठा ६ उ ३ सू ६८४
नौ वासुदेव	६४७	३ २१७	आव ह. अ १गा ४० पृ १५६, प्रव द्वा २१०गा १२१२
नौ वासुदेवोंके पूर्व भवके नाम	६५०	३ २१८	सम १५८
नौ विगय	६३०	३ १७५	ठा ६उ. ३ सू ६७४, आव ह अ ६गा १६०१ टी
नौ स्थानरोग उत्पन्न होनेके	६३७	३ २०५	ठा ६उ ३सू ६६७
नौ स्थान संभोगी को विसंभोगी करने के	६३२	३ १७६	ठा ६उ ३ सू ६६१
न्यग्रोध परिमंडल संस्थान	४६८	२ ६८	ठा ६सू ४६५, कर्म. भा. १गा ४०
न्यायदर्शन	४६७	२ १३२	
न्यून तीर्थ वाले पर्व छः	४३३	२ ४०	ठा ६उ ३सू ५२४, चन्द्र. प्रा १२, उत्त. अ २६गा १५

प

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पङ्कणा दस	६८६	३	३५३	द. प.
पंच कल्याणक	२७५	१	२५३	पंचा. ६गा. ३०-३१, दशा द =
पंच परमेष्ठी	२७४	१	२५२	भ मगलाचरण
पंचम स्वर	५४०	२	२७१	अनु मृ १२७, टा. ७सू. ५५३
पंचमासिकी भिक्षुपडिमा ७६५	४	२८६		सम १२, भ श २३. १, दशा. द. ७
पंचास्तिकाय	२७६	१	२५३	उत्त अ २८गा ७, टा ५सू ४४१
पंचेन्द्रियजीवों का समारंभ २६८	१	२८५		टा ४३ २ सू ४२६, ४३०
न करने से पाँच संयम				
पंचेन्द्रियजीवोंके आरंभ से २६७	१	२८४		टा ५३ २सू ४२६
पाँच प्रकार का असंयम				
पक्षाभास के सात भेद	५४६	२	२६१	रत्ना परि ६सू ३८-४६
पक्षी चार	२७२	१	२५१	टा. ४ उ ४सू. ३५०
पचपनभेददर्शनविनयके १०१०	७	२७७		उवसू २०
पचास भेद प्रायश्चित्तके १००४	७	२७१		भ.श २५उ. ७सू ८०२, टा. १० उ ३सू ७३३, उवसू २०
पचीस क्रिया	६४०	६	२१८	टा २सू ६०, टा ५सू ०१६, पग. प. २२, भाव ह. म. ४पृ ६११ सूय अ. ५उ. २
पचीसगाथा सूयगडांगसूत्र ६४१	६	२१६		
के पाँचवें अ० के दूसरे उ० की				
पचीस गुण उपाध्याय के ६३७	६	२१५		प्रव द्वा. ६६-६७गा ४४२-४६६, ध अधि. ३श्लो ४७पृ १३०
पचीस प्रतिलेखना	६३६	६	२१८	उत्त अ २६गा २४-२७
पचीस भावनाएं पाँच महा-६३८	६	२१७		सम २५, आचा. भू २ चू. ३अ. २४सू. १७६, भाव ह अ. ४पृ. ६५८, प्रव द्वा ७२गा ६३६-६४०, ध. अधि. ३श्लो, ४५टी. पृ १२५
व्रत की				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पञ्चक्खाण के दस प्रकार	७०४	३ ३७५	ठा. १० सू ७८८, भ. श ७ उ २
पञ्चक्खाण में आठ तरह का संकेत (चिह्न)	५८६	३ ४२	भाव. ह. अ. ६ नि. गा. १५७८, प्रव द्वा ४ गा २००
पट की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २६२	न. सू. २७ गा ६३ टी.
पडिमा ग्यारह श्रावक की	७७४	४ १८	द. गा. द. ६, सम ११
पडिमा बारह भिक्षु की	७६५	४ २८५	सम १२, दशा द. ७, भ. श २ उ १
पडिलेहणा पचीस	६३६	६ २१८	उत्त. अ. २६ गा २४-२७
पटुच्चमक्खिण्णं-निव्विगइ	६२६	३ १७४	भाव. ह. अ. ६ पृ ८५४, प्रव द्वा. ४ गा. २०५
पञ्चक्खाण का आगार			
पढमापढम के चौदह द्वार	८४२	५ ३८	भ. श १ उ ८. १ सू. ६१६
पणित की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २५६	न. सू. २७ गा. ६३ टी.
पण्डित मरण	८७६	५ ३८३	सम. १७, प्रव द्वा १५७ गा. १००६
पण्डित वीर्यान्तराय	३८८	१ ४११	कर्म भा १ गा ५२, पत्र प. २३
१ पण्य वस्तु चार	२६४	१ २४६	ज्ञा. अ. ८ सू. ६६
पतंग वीथिका गोचरी	४४६	२ ५१	ठा ६ सू ५१४, उत्त अ ३० गा. १६, प्रव द्वा ६७ गा ७४५, अ. अधि ३ श्लो. २२ टी. पृ ३७
पति की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६ २६६	न. सू. २७ गा. ६३ टी.
पदवियों सात	५१३	२ २३६	ठा. ३ उ. ३ सू १७७ टी.
पद श्रुत	६०१	६ ४	कर्म. भा १ गा ७

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पद समास श्रुत	६०१	६	४	कर्म.भा १गा.७
पदस्थ धर्मध्यान	२२४	१	२०८	ज्ञान प्रक ३८, यो प्रका.८, क भा ० श्लो २०७-२०६
पदानुसारिणी लब्धि	६५४	६	२६६	प्रव हा.२७० गा. १४६५
पदार्थ की तीन अवस्था	६४	१	४४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू २६
पद्म लेश्या	४७१	२	७४	उत्त अ ३४, कर्म. भा ४गा १३
पद्मावती	८७५	५	३६६	आवह गा १३११
पद्य के आठ गूण	५४०	२	२७५	अनु सु १२७गा ६१, डा ७सू ४५३
पन्द्रह अंग मोक्ष के	८५०	५	१२१	पच व गा १४६-१६३
पन्द्रह कर्म भूमि	८५८	५	१४२	पत्र प १, भ ज २०८ ८सू ६७४
पन्द्रह कर्मादान	८६०	५	१४४	उपा अ. १सू ७, भ ज ८३ ५ सू ३३०, आवह हं अ ६पृ ८२८
पन्द्रह गाथा अनाथता की	८५४	५	१३०	उत्त. अ. २० गा ३८-५२
पन्द्रहगाथा पूज्यताप्रदर्शक	८५३	५	१२७	दश अ ६८३
पन्द्रहगुणदीक्षा देनेवालेके	८५१	५	१२४	ध अधि ३श्लो ८०-८४पृ ७
पन्द्रह नाम तिथियों के	८५७	५	१४२	चन्द्र प्रा. १० प्रा प्रा १८
पन्द्रह परमाधार्मिक	८५६	५	१४३	सम १४
पन्द्रह प्रकार के मिद्ध	८४६	५	११७	पत्र प १सू ७
पन्द्रह भेद बंधननामकर्मके	८५६	५	१४०	कर्म भा १गा ३७, स्मम गा १टी
पन्द्रह योग	८५५	५	१३८	पत्र प १६सू २०२, भ ज. २४८१
पन्द्रह लक्षण विनीत के	८५२	५	१२५	उत्त अ ११गा १०-१३
पन्नवणा सूत्र के छत्तीसपदों	७७७	४	२२१	पत्र प १-३६
का संक्षिप्त विषय वर्णन				
परदेशी राजा की कथा	७७७	४	२१६	रा
परदेशी राजा के छःपन्न	४६६	२	१०७	रासू ६३-७७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परपाषंडी प्रशंसा	२८५	१ २६५	उपा अ १सू ७, आव ह अ ६४ ८१०
परपाषंडी संस्तव	२८५	१ २६५	
परमाणु	६	१ ३	ठा १सू ४५
परमाणु	७३	१ ५३	ठा ३उ २सू १६५
परमात्मा	१२५	१ ६०	परमा गा १५
परमाधार्मिक देव पन्द्रह	५६०	२ ३२४	प्रव.द्वा १८०गा १०८५-१०८६
परमाधार्मिक पन्द्रह	८५६	५ १४३	सम १५
परमावधिज्ञानी क्या चरम	६८३	७ १०३	भ ज ७उ ७ सू.२६१
शरीरी होते हैं ?			
परमेष्ठी पाँच	२७४	१ २५२	भ मगलाचरण
परम्परागम	८३	१ ६१	अनुसू १४४
परलोक के विषयमें गणधर	७७५	४ ५६	विशे गा १६४६-१६७१
मैतार्यस्वामीकाशंकासमाधान			
परलोक नास्तित्ववादी	५६१	३ ६४	ठा ८उ ३ सू ६०७
परलोक भय	५३३	२ २६८	ठा ७उ ३सू ५४६,सम ७
परविस्मयोत्पादन	४०२	१ ४३०	उत्त अ ३६गा २६१,प्रव द्वा ७३
पर सामान्य	५६	१ ४१	रत्ना परि ७ सू १५,१६
परार्थानुमान	३७६	१ ३६६	रत्ना परि ३सू २३
परार्थानुमान के पाँच अङ्ग	३८०	१ ३६६	रत्ना परि ३,न्यायदी.प्रभा.३
परावर्तमान प्रकृतियाँ	८०६	४ ३५१	कर्म भा ५गा १-१६
परिकर्मोपघात	६६८	३ २५५	ठा १०उ ३सू ७३८
परिकुंचना प्रायश्चित्त	२४५ख	१ २२४	ठा ८उ १सू २६३
परिक्रम संख्यान	७२१	३ ४०४	ठा १०उ ३सू ७४७
परिग्रह	४६	१ २६	ठा २उ १ सू ६४

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परिग्रह आभ्यन्तरके १४ भेद	८४०	५	३३	वृत्. १ भा ८३१
परिग्रह का स्वरूप	४६७	२	१६८	
परिग्रह के तीस नाम	६५८	६	३१०	प्रश्न. आश्रमद्वार ४
परिग्रह त्यागपर ११ गाथा	६६४	७	१८१	
परिग्रह नौ	६४०	३	२११	भाव ह. अ. ६ पृ ८२६
परिग्रह परिमाण व्रत	३००	१	२६०	भाव ह. अ. ६ पृ ८२६, अ. ५ सू. ३८६, उपा. अ. १ सू. ६, अ. ५ अधि. २ श्लो २६ पृ ६७
परिग्रह परिमाण व्रत के पाँच अतिचार	३०५	१	३००	उपा. अ. १ सू. ७, भाव ह. अ. ६ पृ. ८२६, अ. ५ अधि. २ श्लो. ४७ पृ १०४
परिग्रह परिमाण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८२	भाग ५
परिग्रह विरमण रूप पाँचवें महाव्रत की पाँच भावनाएं	३२१	१	३२६	भाव ह. अ. ६ पृ ६४८, प्रव. द्वा ७२ गा ६००, गम. २४, आचा भु. २ सू. ३ अ. २४ सू. १०६, अ. ५ अधि. ३ श्लो. ४४ टी. पृ १२४
परिग्रह संज्ञा	१४२	१	१०५	अ. ४ उ. ४ सू. ३४६, प्रव. द्वा १४४
परिग्रह संज्ञा	७१२	३	३८७	अ. १० सू. ७४२, अ. ५ उ. ८
परिग्रह संज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४६	१	१०६	अ. ४ उ. ४ सू. ३४६, प्रव. द्वा १४४ गा ६२३
परिचारणानारकी जीवों में	५६०	२	३३६	पत्र प. ३४ सू. ३२०
परिचारणा पाँच देवों की	३६८	१	४२२	पत्र प. ३४, अ. ५ सू. ४०२ टी.
१ परिज्ञा पाँच	३६२	१	३७५	अ. ४ उ. ४ सू. ४२०
परिहावणियागार	५१७	२	२४७	भाव ह. अ. ६ पृ ८२३, प्रव. द्वा ४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परिणामिया बुद्धि	२०१	१	१६०	ठा ४उ ४ सू ३६४, नसू २६
परिणामिया (पारिणामि-६१५ की) बुद्धिके इक्कीस दृष्टान्त	६	७३		नसू २७गा ७१-७४, आवह नि गा ६४८-६५१, निर अ १, उत्त अ १गा ३टी. (कथा)
परित्त संसारी	८	१	६	ठा २उ २सू ७६, मातुर गा ४३,
परिमंडल संस्थान	४६६	२	६६	भ श २५उ ३सू ७२४, पत्र ५१
परिमाणसंख्या के दो भेद	६१६	३	१४२	अनु सू १४६
परिमित पिण्डपातिक	३५५	१	३७०	ठा. ५उ. १सू ३६६
१ परिवर्तना	३८१	१	३६८	ठा. ५ उ ३ सू ४६५
परिवर्तित दोष (गवेषणै- षणा का एक दोष)	८६५	५	१६३	प्रव द्वा ६७गा ५६६, ध अघि ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पि नि गा ६३, पि वि. गा ४, पचा १३गा ६
परिषह बाईस	६२०	६	१६०	सम २२, उत्त अ २, प्रव द्वा ८६ गा ६८५-८६, तत्त्वार्थ अध्या ६
परिहरण दोष	७२२	३	४०७	ठा. १०उ ३सू ७४३
परिहरणा पर कथा	५७६	३	२४	आवह अ ४नि गा. १२४२
परिहरणोपघात	६६८	३	२५५	ठा. १० उ ३ सू ७३८
परिहार विशुद्धि चारित्र	३१५	१	३१८	ठा ५उ. २सू ४२८, अनु सू १४४, विशेषे गा १२७०-१२७६ पत्र ५१सू ३७ टी
परिहार विशुद्धि चारित्र के बीस द्वार	६०५	६	१६	
परुष वचन	४५६	२	६२	ठा. ६उ ३सू ५२७, प्रव द्वा. २३५ गा. १३२१, वृ (जी.) उ ६
परोक्षज्ञान	१२	१	११	नसू २, ठा २उ १ सू ७१

विषय	बाल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परोक्ष ज्ञान के दो भेद	१५	१	१२	टा २ उ १ मू ७१, पत. प २६ मू. ३१२, भ. श. व. २ मू ३१८, कर्म भा. १ गा ४, न मू १
परोक्ष प्रमाण के पाँच भेद	३७६	१	३२५	रत्ना परि. ३, ४
पर्यङ्का (निपद्या का भेद)	३५८	१	३७२	टा. ५ मू ३६६ टी., टा. ५ मू ४००
पर्याप्तक	८	१	५	टा २ उ २ मू ७६
पर्याप्त छः	४७२	२	७७	पत्र १ मू १२ टी., भ. श. ३ उ १ मू १३०, प्रव द्वा २३२ गा १३१७- १३१८, कर्म भा १ गा ४६
पर्याप्तियों के पूर्ण होने का क्रम	४७२	२	७६	पत्र १ मू १२ टी., प्रव द्वा २३२
पर्याय	४७	१	२८	उत्त. श्र ०८ गा ६
पर्याय, पर्याय समास श्रुत	६०१	६	३	कर्म भा. १ गा ७
आदि श्रुत ज्ञान के वीस भेद				
पर्याय श्रुत	६०१	६	३	कर्म भा १ गा ७
पर्याय समास श्रुत	६०१	६	३	कर्म भा १ गा ७
पर्यायार्थिक नय	१७	१	१४	रत्ना परि ७ मू ४
पर्यायार्थिक नय के छः भेद	५६२	२	४२१	ज्ञानन, द्रव्य न अ. भा ५
पर्युपामना के परस्पर फल	७०८	३	३८३	टा ३ उ ३ मू १६०
पर्युसना कल्प	६६२	३	२४१	पत्र १ मू ३८-६०
पर्यु छः अधिक तिथि वाले	४३४	२	४१	टा ६ उ ३ मू ४२६, चन्द्र. प्रा १३
पर्यु छः न्यून तिथि वाले	४३३	२	४०	टा ६ उ ३ मू ४२६, चन्द्र. प्रा. १३, उत्त. श्र २६ गा १४
पर्यु वोज	४६६	२	६६	दश. अ ४ मू १
पर्युयोपम	३२	१	२२	टा २ उ. ६ मू ६६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
षल्योपम की व्याख्या और उसके भेद	१०८	१ ७५	अनुसू-१२८-१४०, प्रव द्वा-१५८गा १०१८-१०२६
पञ्चानुपूर्वी	११६	१ ८४	अनु सू ६६-६८
पाँच अङ्ग परार्थानुमान के	३८०	१ ३६६	रत्ना परि ३, न्यायदी. प्रका ३
पाँच अणुव्रत	३००	१ २८८	आव ह अ. ६पृ ८७७, डा ५ सू ३८६, उपा. अ १सू ६, ध अधि. २श्लो २३-२६ पृ ५७-६७
पाँच अतिचार अचौर्याणु-व्रत के	३०३	१ २६६	उपा अ १सू ७, आव ह पृ ८२१, ध अधि २श्लो ८५पृ १०२
पाँच अतिचार अथितिसंवि-भाग व्रत के	३१२	१ ३१३	उपा अ १सू ७, आव ह अ ६ पृ ८३६
पाँच अतिचार अनर्थदंड विरमण व्रत के	३०८	१ ३०७	उपा अ १सू ७, प्रव द्वा ६गा २८२, आव ह अ ६पृ ८२६
पाँच अतिचार अपश्चिम मारणान्तिकी संलेखना के	३१३	१ ३१४	उपा. अ १सू ७, ध अधि २श्लो. ६६ पृ २३०
पाँच अतिचार अहिंसाणु व्रत के	३०१	१ २६०	उपा अ १सू ७, ध अधि. २श्लो. ४३पृ १००, आव ह अ. ६पृ ८१८
पाँच अतिचार उपभोगपरि-भोग परिमाण व्रत के	३०७	१ ३०५	उपा. अ १सू ७, प्रव द्वा ६गा २८१
पाँच अतिचार दिग्ग परिमाण व्रत के	३०६	१ ३०३	उपा. अ. १ सू. ७
पाँच अतिचार देशावकाशिक व्रत के	३१०	१ ३१०	उपा अ १सू ७, आव ह अ ६पृ. ८३४, ध अधि २श्लो ५६पृ ११४
पाँच अतिचार परिग्रह परिमाण व्रत के	३०५	१ ३००	उपा. अ १सू ७, आव ह अ. ६ पृ ८२५, ध अधि २श्लो ४७-४८ पृ १०५-१०७

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच अतिचार प्रतिपूर्णा	३११	१	३११	उपा. अ. १सू. ७
पौषध व्रत के				
पाँच अतिचार संलेखनाके	३१३	१	३१४	उपा. अ. १सू. ७, ध. अधि. २श्लो. ६६टी. पृ. २३०
पाँच अतिचार सत्याणु	३०२	१	२६४	उपा. अ. १सू. ७, ध. अधि. २श्लो. ४४
व्रत के				पृ. १०१, भाव. ह. अ. ६पृ. ८२०
पाँच अतिचार समकित के	२८५	१	२६५	उपा. अ. १सू. ७, भाव. ह. पृ. ८१०
पाँच अतिचार सामायिक व्रतके	३०६	१	३०६	उपा. अ. १सू. ७, भाव. ह. पृ. ८३१
पाँच अतिचार स्वदार	३०४	१	२६८	उपा. अ. १सू. ७ टी.
संतोष व्रत के				
पाँच अतिशय आचार्य	३४२	१	३५३	ठा. ५उ. २ सू. ४३८
उपाध्याय के				
पाँच अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा. ५उ. ३ सू. ४६२
पाँच अनन्तक	४१८	१	४४२	ठा. ५उ. ३ सू. ४६२
पाँच अनुत्तर केवली के	३७६	१	३६१	ठा. ५उ. १ सू. ४१०
पाँच अनुत्तर विमान	३६६	१	४२०	पत्रप. १सू. ३८, भ. श. १४उ. ७
१ पाँच अभिगम श्रावक के	३१४	१	३१५	भ. श. ७ उ. ५ सू. १०६
पाँच अवग्रह	३३४	१	३४४	भावा. भू. २चू. १ अ. ७उ. १सू. १६२, भ. श. १६उ. २सू. ५६७
				प्रव. द्वा. ८५गा. ६८१
पाँच श्रवन्दनीय साधु	३४७	१	३५७	भाव. ह. अ. ३ नि. गा. ११०७,
				पृ. ५१६, प्रव. द्वा. २गा. १०३-२३
पाँच अशुभ भावना	४०१	१	४२८	प्रव. द्वा. ७३गा. ६४१, उत्त. अ. ३६गा. २६१-२६४

१ साधु के सामने जाते समय मचित्त द्रव्यादित्याता रूप पाले जाने वाले नियम ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच असंयम	२६७	१ २८३	ठा ६७ सू ४२६, ४३०
पाँच अस्तिकाय	२७६	१ २५३	उत्त. अ २८गा ७-१२, ठा ६ उ ३ सू ४४१
१ पाँच आचार	३२४	१ ३३२	ठा ६७ २सू ४३२, ध अधि ३ श्लो ६४ पृ १४०
पाँच आचार्य	३४१	१ ३५२	ध अधि ३श्लो ४६टी पृ १२८
पाँच आलंबनस्थान धार्मिकके	३३३	१ ३४३	ठा ६७.३ सू. ४४७
पाँच आश्रव	२८६	१ २६८	ठा ६७ २सू. ४१८, सम ६
पाँच इन्द्रियों	३६२	१ ४१८	पत्र प १६सू १६१, ठा ६७ ३ सू. ४४३टी, जै प्र.
पाँच इन्द्रियों का विषय परिमाण	३६४	१ ४१६	पत्र प १६उ. १सू १६६
पाँच इन्द्रियों के तेईस विषय	३२६	६ १७५	ठा सू. ४७, ३६०, ६६६, पत्र प. २३उ. २सू. २६३, प. बोल १२, तत्त्वार्थ अध्या २ सू. २१
पाँच इन्द्रियों के संस्थान	३६३	१ ४१६	पत्र प १६, ठा. ६ सू ४४३टी
पाँच कलहस्थान गच्छ में आचार्य उपाध्याय के	३४४	१ ३५५	ठा ६७. १सू. ३६६
पाँच कल्याणक	२७५	१ २५३	पचा ६गा. ३०-३१, दशा. ६. ८
२ पाँच कामगुण	३६५	१ ४२०	ठा ६७ १सू ३६०
पाँच कारण अवधिज्ञान या	३७७	१ ३६२	ठा ६७ १ सू ३६४
अवधिज्ञानीके चलित होनेके			
पाँच कारण आचार्य उपा-	३४३	१ ३५४	ठा. ६ उ. २ सू. ४३६
ध्याय के गण से निकलनेके			

१ मोक्ष प्राप्ति के लिये किये जाने वाला ज्ञानादि आसेदन रूप अनुष्ठान विशेष ।

२ काम अर्थात् अभिलाषा को उत्पन्न करने वाले गुण, शब्दादि ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
पाँच कारण चौमासे के पिछले सित्तर दिनों में विहार करने के	३३७ १ ३४७	टा ५ उ २ सू ४१३
पाँच कारण चौमासे के प्रारंभिक पचास दिनों में विहार करने के	३३६ १ ३४७	टा ५ उ २ सू ४१३
पाँच कारण दुर्लभ बोधि के	२८६ १ २६६	टा ५ उ २ सू ४२६
पाँच कारण निद्रासे जागने के	४२० १ ४४४	टा ५ उ २ सू ४३६
पाँच कारण पारंचित प्रायश्चित्त के	३४६ १ ३५६	टा ५ उ १ सू ३६८
पाँच कारण मोक्ष प्राप्ति के	२७६ १ २५७	आगम, कारण,, सम्मति भा. ५ कांड ३ गा ५३
पाँच कारण शिक्षा में बाधक	४२३ १ ४४६	उत्त अ ११ गा ३
पाँच कारण संभोगी साधु को अलग करने के	३४५ १ ३५६	टा ५ उ १ सू ३६८
पाँच कारण साधु द्वारा साध्वी को ग्रहण करने या सहारा देने (स्पर्श करने) के	३४० १ ३५१	टा ५ उ २ सू ४३७
पाँच कारण साधु साध्वी के एकजगह स्थान, शय्या, निपट्टा आदि के	३३६ १ ३४६	टा ५ उ २ सू ४१७
पाँच कारण सुलभ बोधि के	२८७ १ २६६	टा ५ उ २ सू ४२६
पाँच कारण मूत्र की वाचना के	३८२ १ ३६८	टा ५ उ ३ सू १६८
पाँच कारणों से साधु मास में दो या तीन बार पाँच महानदियों को पार कर सकता है	३३५ १ ३४६	टा ५ उ २ सू ४१२

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच कारणों से साधु राजा ३३८ के अन्तःपुर में प्रवेश कर सकता है	१	३४८	ठा ५उ २ सू ४१५
पाँच क्रिया	२६२	१ २७६	} ठा २सू ६०, ठा ५सू ४१६, पत्र प २२सू २७६-२८४
पाँच क्रिया	२६३	१ २७७	
पाँच क्रिया	२६४	१ २७६	} ठा २सू ६०, ठा ५सू ४१६, आवह.अ ४पृ ६१२-६१३
पाँच क्रिया	२६५	१ २८०	
पाँच क्रिया	२६६	१ २८२	ठासू ६०, ४१६, आवह.अ ४ पृ ६१४, सुय शु २अ २गा १६८
पाँच गति	२७८	१ २५७	ठा ५उ ३ सू ४४२
पाँच जाति	२८१	१ २५६	पत्र ०प २३उ २सू २६३, प्रव द्वा १८७गा. १०६६-११०४
१ पाँच दग्धाक्षर	३८५	१ ४०६	सरलपिगल
पाँच देव	४२२	१ ४४५	ठा ५सू ४०१, म०श १२उ ६
पाँच दोष मांहुला (ग्रासै-पणा) के	३३०	१ ३३६	उत्त अ २६ गा ३२, पि नि गा ६३५-६६८, ध अधि ३श्लो २३पृ ५५, उत्त अ २४गा १०,
पाँच धाय (धात्री)	४०८	१ ४३४	म श ११उ ११सू ४२६, आचा अ २चू ३अ २४सू १७६
पाँच निद्रा	४१६	१ ४४२	कर्म भा १गा ११-१२, पत्र ०प २३
पाँच निर्ग्रन्थ	३६६	१ ३७६	ठा ५सू ४४५, म श २५उ ६
पाँच निर्याण मार्ग	२८०	१ २५६	ठा ५उ ३ सू ४६१
पाँच परमेष्ठी	२७४	१ २५२	म मंगलाचरण
पाँच परिचारणा देवों की	३६८	१ ४२२	पत्र प ३४, ठा ५सू १०० टी
पाँच परिज्ञा	३६२	१ ३७५	ठा ५उ २सू ४२०

विषय	शाल भाग पृष्ठ	प्रमाण
पाँच पाँचभावनाएं अदत्ता-३१६	१ ३२६	सम २६, आचाशु २चू३अ २४सू १७६, भाव.इ.अ ४ पृ ६६८, प्रव द्वा ७२गा ६३६ से ६४०, अ अवि, ३ श्लो. ४६ टी पृ १२६
दानविरमण व्रत,		
परिग्रह विरमण व्रत, ३२१	१ ३२६	
प्राणातिपात विरमण व्रत, ३१७	१ ३२४	
मृपावाद विरमणव्रत और ३१८	१ ३२५	
मैथुन विरमण व्रत रूप ३२०	१ ३२७	
पाँच महाव्रतों की		
पाँचपाँचभेद अस्तिकाय के २७७	१ २५४	ठा ६३ उसू. ४४१
पाँच प्रकार आभियोगिकी ४०४	१ ४३१	उत्त. अ ३६गा २६२, प्रव द्वा ७३गा ६४४
भावना के		
पाँच प्रकार आसुरीभावना के ४०५	१ ४३१	उत्त म. ३६गा २६४, २६५, प्रव द्वा ७३गा ६४६, ६४७
पाँच प्रकार रुन्दर्षभावना के ४०२	१ ४२८	
पाँच प्रकार का आचार प्रकल्प ३२५	१ ३३३	ठा ६३ २ सू ४२३
पाँच प्रकार का दण्ड २६०	१ २६६	ठा ६३ २ सू ४१८
पाँच प्रकार का प्रत्याख्यान ३२८	१ ३३६	ठा ६३ सू ४६६, भाव.इ. पृ ८७७
पाँच प्रकार का स्वप्नदर्शन ४२१	१ ४४४	भग १६३ ६ सू ४७७
पाँच प्रकार किंल्विपीभावना के ४०३	१ ४३०	उत्त म ३६गा. २६३, प्रव द्वा ७३
पाँच प्रकार की अचित्तवायु ४१३	१ ४३८	ठा ६३. ३ सू ४४४
पाँच प्रकार के मच्छ ४१०	१ ४३६	ठा ६३ ३ सू ४६३
पाँच प्रकार के मुण्ड ३६४	१ ३७८	ठा ६३ ३ सू ४४३
पाँच प्रकार के मुण्ड ३६५	१ ३७६	ठा. ६३ ३ सू ४४३
पाँच प्रकार के चनीपक ३७३	१ ३८७	ठा. ६३ ३ सू ४४४
पाँच प्रकार के श्रमण ३७२	१ ३८७	प्रव द्वा ७४ गा ७३१

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण			
पाँच प्रकार सम्मोही भाषना के	४०६	१ ४३२	उत्त अ३६गा २६५टी, प्रव द्वा ७३ गा. ६४६			
पाँच प्रतिक्रमण	३२६	१ ३३७	ठा ५उ ३ सू ४६७, आव ह अ ४ गा १२५०-१२५१			
पाँच प्रतिघात	४१६	१ ४४०	ठा ५उ १ सू ४०६			
पाँच प्रमाद	२६१	१ २७०	पचा १गा २३टी, ध अधि २श्लो ३६टी पृ ८१, ठा ६उ ३सू ५०२, अष्ट १६श्लो. १टी			
पाँच बोल छद्मस्थ साक्षात् नहीं जानता	३८६	१ ४०६	ठा ५उ ३ सू ४५०			
पाँच बोल पासजाकर वंदना करने के असमय के	३४८	१ ३६३	प्रव द्वा २गा १२४, आव ह अ ३ निगा ११६८ पृ ५४०			
पाँच बोल पासजाकर वंदना करने योग्य समय के	३४६	१ ३६४	प्रव द्वा २गा १२५, आव ह अ ३ निगा ११६६ पृ ५४१			
पाँच बोल भगवान् महावीर से उपदिष्ट एवं अनुमत	३५०, ३५१	१ ३६४, ३६५	<table border="0"> <tr> <td rowspan="2" style="font-size: 3em; vertical-align: middle;">}</td> <td>ठा ५ सू ३६६, प्रव द्वा ६६</td> </tr> <tr> <td>गा ५५४, ध अधि. ३श्लो. ४६पृ १२७</td> </tr> </table>	}	ठा ५ सू ३६६, प्रव द्वा ६६	गा ५५४, ध अधि. ३श्लो. ४६पृ १२७
}	ठा ५ सू ३६६, प्रव द्वा ६६					
	गा ५५४, ध अधि. ३श्लो. ४६पृ १२७					
पाँच बोल भगवान् महावीर से उपदिष्ट एवं अनुमत	३५२	१ ३६७	ठा ५उ १ सू ३६६			
पाँच बोल महानिर्जरा और महापर्यवसान के	३६०	१ ३७४	ठा ५उ १ सू ३६७			
पाँच बोल महानिर्जरा और महापर्यवसान के	३६१	१ ३७४	ठा ५ उ १ सू ३६७			
पाँच भाव जीवों के	३८७	१ ४०७	कर्म भा. ४गा. ६४-६८, अनु सू १२६, प्रव द्वा. २२१ गा. ६०-६८			

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँचभिक्षुकमच्छकीउपमासे	४११	१ ४३७	ठा ५७ ३ सू ४५३
पाँच भूपण समकित के	२८४	१ २६४	घ अवि २३० २२टी पृ ८३
पाँच भेद अन्तराय कर्म के	३८८	१ ४१०	पत्र प. २३, कर्म भा १ गा ५२
पाँच भेद आगोपणा के	३२६	१ ३३४	ठा ५३ २ सू ४३३, सम २८टी.
पाँच भेद कुशील के	३६६	१ ३८४	ठा ५८ ३ सू ४४५
पाँच भेद चारित्र के	३१५	१ ३१५	ठा ५९ ८२८, अतु सु १४४, त्रिशो गा १२६०-१२८०
पाँच भेद ज्ञान के	३७५	१ ३६०	ठा ५९ ८६३, कर्म भा १, तं म १
पाँच भेद ज्ञानावर्णनीय के	३७८	१ ३६३	ठा ५९ ८६४, कर्म भा १ गा ६
पाँच भेद ज्योतिषी देवों के	३६६	१ ४२३	अ ५९ १०१, जी प्रति ३ सू. १२०
पाँच भेद तिर्यच पंचेन्द्रिय के	४०६	१ ४३५	पत्र प १, उत्त अ. ३६ गा १६६-२३
पाँच भेद निर्ग्रन्थ के	३७०	१ ३८५	ठा. ५८ ३ सू ४४५
पाँच भेद निपट्या के	३५८	१ ३७२	ठा ५९ ३६६टी, ठा ५९ १००
पाँच भेद परोक्ष प्रमाण के	३७६	१ ३६५	स्त्ना परि ३, १
पाँच भेद पुलाक के	३६७	१ ३८२	ठा. ५९. ८४५ अ. ३५३५
पाँच भेद वकुश के	३६८	१ ३८३	ठा ५३ ३ सू ४४५
पाँच भेद वन्धन नाम कर्म के	३६०	१ ४१५	कर्म भा १ गा ३५, प्र प्र २१६
पाँच भेद वस्त्र के	३७४	१ ३८६	ठा ५८ ३ सू ४४६
पाँच भेद वेदिका प्रतिलेखना के	३२२	१ ३२६	ठा ६३. ३ सू ४०३ टी.
पाँच भेद शरीर के	३८६	१ ४१२	ठा ५३ १ सू ३६५, पत्र १. २१ सू २६७, कर्म भा १ गा. ३३
पाँच भेद संवातनाम कर्म के	३६१	१ ४१६	कर्म भा १ गा ३६ प्र प्र २१६
पाँच भेद संसारी निधि के	४०७	१ ४३३	ठा. ५३ ३३ सू ४४८
पाँच भेद समकित के	२८२	१ २६१	कर्म भा १ गा. १५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच भेद स्नातक के	३७१	१	३८६	ठा.५सू.४४५, म.श.२५३६
पाँच भेद स्वाध्याय के	३८१	१	३६८	ठा.५उ.३सू.४६५
पाँच महानदियोंको १मास ३३५	१	३४६	ठा.५उ.२सू.४१२	
में दो, तीन बार साधु द्वारा पार करने के पाँच कारण				
पाँच महाव्रत	३१६	१	३२१	दश.म.४, ठा.५उ.१सू.३८६, प्रव. द्वा. ६६गा.५५३, ध.अधि.३ श्लो. ३६-४४ पृ. १२०
पाँच मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	कर्म भा. ४गा. ५१, ध.अधि. २ श्लो. २२टी. पृ. ३६
पाँच रस	४१५	१	४३६	ठा.५उ.१सू.३६०
पाँच लक्षण समकित के	२८३	१	२६३	ध.अधि. २श्लो. २२टी. पृ. ४३
पाँच वर्ग निरयावल्लिकाके	३८४	१	३६६	निर
पाँच वर्ण	४१४	१	४३६	ठा.५उ.१सू.३६०
पाँच व्यवहार	३६३	१	३७५	ठा.५सू.४२१, म.श.८ उ.८ सू.३०४, व्यवभा.पीठिकागा.१-२
पाँच शौच (शुद्धि)	३२७	१	३३५	ठा.५उ.३सू.४४६
पाँच संयम	२६८	१	२८४	ठा.५उ.२सू.४२६-४३०
पाँच संवत्सर	४००	१	४२४	ठा.५सू.४६०, प्रव. द्वा. १४२
पाँच संवर	२६६	१	२८५	ठा.५सू.४१८, ४२७, प्रश्न धर्मद्वार
पाँच सभाएं इन्द्रस्थान की	३६७	१	४२१	ठा.५उ.३सू.४७२
पाँच समिति की व्याख्या और उसके भेद	३२३	१	३३०	सम.५, उक्त अ. २४गा. २, ठा.५सू. ४५७, ध.अधि. ३श्लो. ४७पृ. १३०
पाँच स्थान के बली के परिपह	३३२	१	३४२	ठा.५उ.१सू.४०६
उपसर्ग सहन करने के				

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँचस्थानछद्मस्थकेपरिपहरे	३३१	१	३४०	ठा ५७ १ सू ४०६
उपसर्ग सहन करने के				
पाँचस्थानभगवान् महावीर	३५३-१		३६७-	ठा ५७ १ सू ३६६
से उपदिष्ट एवं अनुमत	३५७	१	३७३	
पाँचस्थानभगवान् महावीर	३५६	१	३७३	ठा ५७.१ सू.३६६
से उपदिष्ट एवं अनुमत				
पाँच स्थान सूत्र सीखनेके	३८३	१	३६६	ठा.५७ ३ सू.४६८
पाँच स्थावरकाय	४१२	१	४३७	ठा.५७.१ सू ३६३
पाखण्ड धर्म	६६२	३	३६१	ठा १०७.३ सू ७६०
पाणिप्राण विशोधन	४४८	२	५३	ठा.६७.३ सू ५०३, उत म २६
प्रतिलेखना				गा २५
१ पाण्डुक निधि	६५४	६	२२१	ठा ६७ ३ सू ६७३
पात्र परिकर्मोपघात	६६८	३	२५५	ठा १०७.३ सू ७३८
पादपोषणमन मरण	८७६	५	३८५	सम १७, प्रव द्वा. १५७ गा. १००७
पान पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ६७ ३ सू ६७६
पानी(धोवन) इक्कीस	६१२	६	६३	भाचा.शु २.म.१७७ ८ सू ४१,
प्रकार का				४३, पि नि गा १८-२१, दग.
				अ.५३ १ गा. ७५-७६
पानैपणा के सात भेद	५२०	२	२५०	भाचा.शु २. चू. १ म १७ ११
				सू ६२, ठा. ७३. ३ सू ५४४ टी.
				ध मधि ३ श्लो २२ टी पृ ४५
पाप प्रकृतियों वयासी	८०६	४	३५१	कर्म भा. ५ गा. १६-१७,
पाप प्रकृतियों वयासी	६३३	३	१८२	

१ चम्वर्ती की नौ महानिधियों में से दूसरी निधि ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
पापवर्धनेके अठारहप्रकार	६३३ ३ १८२	दश्या. ६, टा. १ सू ४८, भ.श. १३.६
पापभोगनेके वयासीप्रकार	६३३ ३ १८२	नव. कर्म भा. १गा १६-१७
पाप श्रुत के उनतीस भेद	६५६ ६ ३०५	सम २६, उक्त अ. ३१गा. १६टी., भाव ह. अ. ४ पृ ६६.
पाप श्रुत नौ	६४३ ३ २१४	टा ६३.३ सू ६७८
पाप स्थानक अठारह	८६५ ५ ४१२	टा. १ सू ८८, प्रव द्वा. २३७गा १३५१-१३५३, दशा ६६, भ.श. १३ ६, भ.श. १२ उ. ५
पारंचितप्रायश्चित्तके प्रबाल	३४६ १ ३५६	टा ४ उ १ सू ३६८
पारिग्रहिकी क्रिया	२६३ १ २७८	टा २३ १ सू ६०, टा ५ उ २ सू. ८१६, पत्र प. २२ सू २८४
पारिणामिक भावकी व्याख्या और उसके तीन भेद	३८७ १ ४०६	कर्म भा ४गा ६६, अनुसू १२६, प्रव द्वा २२१ गा १२६४
पारिणामिकी बुद्धि	२०१ १ १६०	टा ८ उ. ४ सू ३६४, नसू २६
पारिणामिकी (पारिणामिका) बुद्धिके इक्कीसदृष्टान्त	६१५ ६ ७३	नसू २७गा. ७१-७४, भाव. ह. गा-६४८-६५१
पारितापनिकी क्रिया	२६२ १ २७७	टा २३ १ सू ६०, टा ५ उ २ सू. ८१६, पत्र प. २२ सू २७६
पारिपद्य	७२६ ३ ४१६	तत्त्वार्थ अध्या. ४ सू ४
१ पार्श्वनाथ भगवान् के प्रद्वय गणधर आठ	३ ३	टा ८ उ. ३ सू ६१७, सम ८
पास जाकर वन्दना करने के पाँच असमय	३४८ १ ३६३	प्रव द्वा २गा १२४, भाव ह. अ. ३ नि. गा. ११६८ पृ ५४०
पास जाकर वन्दना करने योग्य समय पाँच	३४६ १ ३६४	प्रव द्वा २गा. १२५, भाव. ह. अ. ३ नि. गा. ११६६ पृ. ५४१

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पासन्थ(पार्श्वस्थ)साधु	३४७	१	३५७	प्रव द्वा २गा. १०४-१०५, आ. ह अ. ३निगा. ११०७-११०८
पिंगल निधि	६५४	३	२२१	टा ६३ ३सू ६७३
पिण्डस्थ धर्मध्यान	२२४	१	२०८	ज्ञान प्रक ३७, यो प्रका ७, क भा २ श्लो २०७
पिण्डैषणाएं सात	५१६	२	२४६	आचा. ध्रु. २ चू १अ १३ ११ सू ६ २, टा. ७८, ३सू. ६ ४६टी ध अधि ३श्लो. २२टी. पृ ४४
पिता के तीन अङ्ग	१२२	१	८७	टा ३३ ४सू २०६
पिहित्य दोष(ग्रहणोपणा का एक दोष)	६६३	३	२४३	प्रव द्वा ६७गा ६६८, पि नि. गा. ४२०, धअधि ३श्लो २२टी. पृ ४१, मचा १३गा. २६
पीड़ित वायु	४१३	१	४३६	टा ६४ ३सू ४६४
पुण्डरीक, कुण्डरीक की कथा ६००	५	५	४७२	ज्ञा०अ १६
पुण्य की तीन अवस्थाएं	६३३	३	२०१	नव०गा. १ व्याख्या
पुण्य के नौ भेद	६२७	३	१७२	टा. ६ ३ ३सू ६७६
पुण्यपाप विषयक गणधर ७७५	४	५४		विजे. गा १६०६-१६४८
अचलभ्राताकाशंकासमाधान				
पुण्य प्रकृतियों	८०६	४	३५०	} कर्म भा ६ गा १, १४, १७, नव०गा १०-१२
पुण्य प्रकृतियों वयालीस	६३३	३	१८२	
पुण्य प्रकृतियों वयालीस	६६३	७	१५०	
पुण्य बाँधने के नौ प्रकार	६३३	३	१८१	नव, टा. ६३. ३सू ६७६
पुण्य भोगने के ४२ प्रकार	६३३	३	१८२	नव, कर्म भा ६ गा १४-१७
पुण्यवान् को प्राप्त दसवोल	६५६	३	२२४	उत्त अ. ३गा १७-१८
पुत्र की कथा आत्पत्तिकी	६४६	६	२७१	नेमू २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पुत्र के दस प्रकार	६७७	३	२६५	ठा १०७ ३ सू. ७६२
पुद्गल के छः भेद	४२६	२	२५	दश अ. ४ भाष्य गा ६० टी
पुद्गलछःकीइन्द्रियविषयता	४२६	२	२५	दश अ. ४ भाष्य गा ६० टी
पुद्गल द्रव्य	४२४	२	३	आगम, उत्त अ ३६ गा १०
पुद्गल परमाणुओं की वर्गणा आठ	६१७	३	१३४	विशेष गा ६३१-६३७
पुद्गल परावर्तन आठ	६१८	३	१३६	कर्म भा ५ गा ८६-८८
पुद्गल परावर्तन सात	५४६	२	२८४	ठा ३७ ४ सू. १६३ टी, भ श १२ उ ४ सू. ४४६, कर्म भा ५ गा. ८७- ८८, प्रव द्वा. १६२ गा १०३६ से १०५२, पच द्वा २ गा ३६ टी.
पुद्गल परिणाम चार	२६६	१	२४७	ठा ४८. १ सू २६५
पुद्गलास्तिकाय के ५ प्रकार	२७७	१	२५६	ठा ५७ ३ सू ४४१
पुद्गलोंके शुभाशुभपरिणाम	६००	५	४५८	ज्ञा अ १२
पुष्पचूलिया सूत्र के दस अध्ययनों का विषय वर्णन	३८४	१	४०३	निर०
पुष्पचूलिया सूत्र के दस अध्ययनों का विषय वर्णन	७७७	४	२३४	निर०
पुष्पिया सूत्र के दस अध्ययनों का संक्षिप्त विषय वर्णन	३८४	१	४०१	निर०
पुष्पिया सूत्र के दस अध्ययनों का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२३३	निर०
पुरिमड्ड (दो पहर) अवहट्ट (तीन पहर) का पञ्चखाण	७०५	३	३७७	प्रव द्वा. ४ गा २०१-२, आव द्वा. अ ६ गा १४६७, पचा ५ गा ८-११
पुरिमड्ड (दो पोरिसी) के सात आगार	५१६	२	२४६	आव ह अ ६ पृ ८२, प्रव द्वा ४ गा २०३

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पुरुषकार(उच्चारण)	२७६	१	२५७	आगम,कारण,सम्पत्ति,भा ४ कांड ३ गा. ४३
पुरुष के तीन प्रकार	८४	१	६१	ठा ३३ ३ सू १६६
पुरुष लिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र.प १ सू.७
पुरुष वेद	६८	१	४६	वृ ट ४,कर्म.भा.१ गा. २०
पुरुषार्थ	२७६	१	२५७	आगम,कारण,सम्पत्ति भा ४ कांड ३ गा ४३
पुरुषार्थ के चार भेद	१६४	१	१५१	पुष्पा
पुलाक	३६६	१	३७६	} टा.४८ ३ सू ४४४,अन २४ उ ६ सू.७४१
पुलाक (मतिसेवा पुलाक) के पाँच भेद	३६७	१	३८२	
पुलाक लब्धि	६५४	६	२६७	प्रवृद्धा २७० गा १ ४६४
पुष्करवरद्वीपमें चन्द्रमूर्यादि	७६६	४	३०१	सूर्य प्रा. १६ सू. १००
ज्योतिषी देवों की संख्या				
पुष्करोदधिसमुद्रमें चन्द्रमूर्यादि	७६६	४	३०२	सूर्य प्रा १६ सू १००
दि ज्योतिषी देवों की संख्या				
पुष्पचूला	८७५	५	३६४	भावहनि गा १०८६
पुष्पवती देवी की कथा	६१५	६	८०	न.सू. २७ गा ७२, आ १८ नि. गा ६४६
पारियायिकी बुद्धि पर				स्या. का १ टी
पूजातिशय	१२६	१	६७	
पूजा प्रशंसा के त्याग पर	६६४	७	१६०	
दस गाथाएं				
पूज्यता प्रदर्शक १५ गाथाएं	८५३	५	१२७	दश अ. ३ उ ३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पूति कर्मदोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७गा ५६५, घ अघि. ३श्लो २२टी पृ ३८, पि नि गा ६२, पि. वि गा ३, पचा १३गा ५
पूरक प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो प्रका ५ श्लो ७
पूणिमाणं वारह	८००	४	३०२	सूर्य प्रा १० प्रा प्रा ६ सू ३८
पूर्वकृत कर्म क्षय	२७६	१	२५७	आगम, कारण, सम्मति. भा ५ काड ३ गा ५३
पूर्व चौदह	८२३	५	१२	न सू ५७, सम १४, १४७
पूर्वधर लब्धि	६५४	६	२६४	प्रव द्वा २७० गा १४६३
पूर्वमीमांसा दर्शन	४६७	२	१५२	
पूर्वश्रुत	६०१	६	५	कर्म भा. १ गा ७
पूर्व समास श्रुत	६०१	६	५	कर्म भा १ गा ७
पूर्वानुपूर्वी	११६	१	८४	अनु सू ६६-६८
पूर्वादििक (पुरिमढ्ठी)	३५५	१	३७०	ठा ५८ १ सू ३६६
१ पृच्छना	३८१	१	३६८	ठा ५८ ३ सू ४६५
पृथक्त्व वितर्क सविचारी शुक्लध्यान	२२५	१	२०६	ठा ४८ १ सू २४७, ज्ञान प्रक ४२, आव ह अ ४ ध्यानशतक गा ७७-७८, क. भा २ श्लो ०१२
पृथुल संस्थान	५५२	२	२६३	ठा १ सू ४७, ठा ७ सू ५४८
पृथ्वयां आठ	६०८	३	१२६	ठा: ८३ ३ सू ६४८
पृथ्वीआदिभूतोंके विषयमें ७७५	४	३६		विशे गा १६८७-१७६६
व्यक्तस्वामीकाशंकासमाधान				
पृथ्वीकाय	४६२	२	६४	ठा ६३ ३ सू ४८०, दश अ ४, कर्म. भा ४ गा १०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पृथ्वीकाय के चालीस भेद	६८७	७	१४५	पत्र प १ सू. १४
पृथ्वीकाय के सात भेद	५४५	२	२८४	पत्र प. १ सू १४
पृथ्वी के छः भेद	४६५	२	६५	जी. प्रति ३ सू १०६
पृथ्वीकेदेशतःधुजनेके ३बोल	११६	१	८२	ठा ३३.४ सू १६८
पृथ्वी ३वल्लयाँसेवल्यित है	११५	१	८१	ठा ३३.४ सू २०४
पृथ्वीसारीधुजनेके ३बोल	११७	१	८२	ठा ३३.४ सू १६८
१ पृष्ठ लाभिक	३५४	१	३६६	ठा ५३.१ सू. ३६६
पृष्ठजा (पुष्टिया) क्रिया	२६४	१	२७६	ठा.२ सू ६०, ठा ५ सू ११६
पेटा गांचरी	४४६	२	५१	ठा ६३.३ सू १४, उत्तम ३० गा १६, प्रथ द्वा ६७ गा ७४५, ध अघि ३५ मो २२ टी पृ ३७
पैंतालीस आगम	६६७	७	२६०	जैत्र, अभि. ग भा. १ प्रस्तावना
पैंतालीसगाथाउत्तराध्ययन	६६६	७	२५४	उत्तम ३५
सूत्र के पचीसवें अध्ययन की				
पैंतीस गुण गृहस्थधर्म के	६८०	७	७४	यो. प्रका १५ लो ४७-५६ पृ ६०
पैंतीस वाली के अतिशय	६७६	७	७१	सम. ३५ टी, राम ४ टी, उव सू १० टी.
पोट्टिल अनगार	६२४	३	१६४	ठा. ६ सू ६६१, मणु व. ३ म १
२ पोतक वस्त्र	३७४	१	३८६	ठा ५३ ३ सू ११६
पोरिसी का प्रमाण चारह	८०३	४	३०४	उत्तम २६ गा १३-१४
महीनों का				
पोरिसी के छः आगार	४८३	२	६७	प्रथ द्वा ६ गा २०१-२०३, आव ह अ. ६ नि गा १४६७ पृ. ८५१-५२, पना ६ गा ८-११
पोरिसी साठुपोरिसी का	७०५	३	३७७	
पचत्रवाण				

१ आहार आदि के लिए पृष्ठने वाले दाना से ही भिन्ना लेने वाला अभिरक्षारी साधु।

२ व्रतम का बना हुआ वस्त्र ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पौद्गलिक सम्यक्त्व	१०	१	१०	प्रव द्वा १४६ गा ६४२ टी.
पौषध के अठारह दोष	८६४	५	४१०	शिक्षा.
पौषध के पाँच अतिचार	३११	१	३११	उपा.अ १ सू०
पौषध व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८४	आगम.
पौषधोपवास व्रत	१८६	१	१४०	पंचा १गा २६, आब.ह.अ ६पृ.८३६
१ प्रकीर्णक	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ-अध्यय ४ सू४
प्रकीर्ण तप	४७७	२	८८	उत्त.अ ३० गा ११
प्रकृति बन्ध	२४७	१	२३१	ठा.४५-२६६, कर्म.भा १गा २
प्रकृतियों २८ मोहनीय कर्म की ६५१	६	२८४		कर्म.भा १गा १३-२२, सम २८
प्रकृतियों ४१ उदीरणादिना ६८६	७	१४६		कर्म भा ६गा ५४-६६
उदय में आने वाली				
प्रकृतियों ४२ नाम कर्म की ६६१	७	१४६		पत्र.प २३उ.२सू २६३
प्रकृतियों ४२ पुण्य की ६६३	७	१५०		कर्म.भा-५गा १६, १७
प्रचला	४१६	१	४४३	} कर्म भा १गा.११, पत्र.प २३ उ २सू २६३
प्रचलाप्रचला	४१६	१	४४३	
प्रच्छन्न काल आगार	४८३	२	६८	आब.ह.अ ६पृ ६८२, प्रव द्वा.४
२ प्रज्ञा अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १०उ ३सू ७७२
प्रतर तप	४७७	२	८७	उत्त.अ ३०गा १०
प्रतर नरकों में	५६०	२	३२८	जी प्रति.३सू ७० टी
प्रतर भेद	७५०	३	४३३	ठा १०सू ७१३टी, पत्र.प १३

१ वे देव जो नगरनिवासी अथवा साधारण जनता की तरह रहते हैं।

२ दस अवस्थाओं में से एक अवस्था, इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष को अपने अभीष्ट की सिद्धि एवं कुडुम्बवृद्धि की बुद्धि उत्पन्न होती है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रतान स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४४	भ.श. १६३ ६सू.५७७
प्रतिक्रमण आवश्यक	४७६	२	६१	आव.ह.अ.४
प्रतिक्रमण कल्प	६६२	३	२४०	पचा. १७ गा. ३२-३४
प्रतिक्रमण के आठ भेद और उन पर दृष्टान्त	५७६	३	२१	आव.ह.अ. ४नि. गा. १२३३- १२४२
प्रतिक्रमण के छः भेद	४८०	२	६४	टा. ६३ ३ सू. ५३८
प्रतिक्रमण क्या व्रतरहित को भी करना चाहिए?	६१८	६	१४४	आव.ह.अ. ४नि. गा. १०७० टी पृ. ५६८, पंच प्र. (वदित्ता सूत्र)
प्रतिक्रमण पर कथा	५७६	३	२२	आव.ह.अ. ४नि. गा. १२४२
प्रतिक्रमण पाँच	३२६	१	३३७	टा. ५३ ३ सू. ४६७, आव.ह.अ. ४ नि. गा. १०५०-१०५१
प्रतिघात पाँच	४१६	१	४४०	टा. ५३ १ सू. ४०६
१ प्रतिचरणा पर कथा	५७६	३	२३	आव.ह.अ. ४नि. गा. १२४२
प्रतिज्ञा	३८०	१	३६६	रत्ना परि. ३, न्यायदी. प्रका. ३
प्रतिपत्ति श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा. १ गा. ७
प्रतिपत्ति समास श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा. १ गा. ७
प्रतिपाती अवधिज्ञान	४२८	२	२८	टा. ६ सू. २६३, ६सू. १४
प्रतिपूर्णापौषधव्रत के पाँच अतिचार	३११	१	३११	उपा. अ. १ सू. ७
२ प्रतिपृच्छा समाचारी	६६४	३	२५०	भ.श. २५३ ७ सू. ८०१, टा. १० उ. ३ सू. ७८६, उत्त. अ. २६ गा. २, प्रव. द्वा. १०१ गा. ७६०

१ समय का सावधानता पूर्वक निर्दोष पालन करना प्रतिचरणा है।

२ गुरु ने पहले जिस कार्य के लिए निषेध कर दिया है उन्हीं कार्य में आवश्यकता-
नुसार फिर प्रवृत्त होना ही तो वितय पूर्वक गुरु से पूछना।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ प्रतिमास्थायी	३५७	१ ३७२	ठा ५३ १ सू. ३६६
प्रतिलेखनाकीविधिकेन्द्रभेद	४४७	२ ५२	उत्त अ २६गा २४
प्रतिलेखना के पचीसभेद	६३६	६ २१८	उत्त अ २६गा. २४-२७
प्रतिवासुदेव नौ	६४८	३ २१८	सम १५८, प्रव द्वा २११ गा. १२१३, आव ह. भाष्यगा ४२५ १५६
प्रतिसंलीनता तप	४७६	२ ८६	उत्त अ ३०गा ८, ठा ६सू ५११, उव सू. १६, प्रव द्वा ६गा २७०
प्रतिसंलीनतातपकेतेरहभेद	६१५	४ ३६५	मश २५३ ७सू ८० २उव सू १६
प्रतिसंलीनता तप के भेद	६३३	३ १६२	उव सू. १६, मश २५ उ ७
चार और अवान्तरभेद तेरह			सू ८०२
प्रतिसेवना कुशील	३६६	१ ३८१	ठा ५सू. ४४५, म.श २५३ ६
प्रतिसेवना कुशील के ५ भेद	३६६	१ ३८४	ठा ५उ ३सू ४४५
प्रतिसेवना दस	६६६	३ २५२	मश. २५३ ७सू ७६६, ठा. १० उ ३सू ७३३
प्रतिसेवना प्रायश्चित्त	२४५	ख १ २२३	ठा ४उ १सू २६३
प्रतिसंवा पुलाक	३६६	१ ३८०	ठा ५सू. ४४५, म.श २५उ. ६
प्रतिसंवातचारी भिक्षु	४११	१ ४३७	ठा ५उ ३सू ४५३
प्रतिसंवातचारी मच्छ	४१०	१ ४३६	ठा ५उ ३सू ४५३
प्रतीत सत्य	६६८	३ ३६६	ठा १०सू ७४१, पत्र प १११सू १६५, घ अघि ३ ग्लो ४१५ १२१
प्रतीत साध्य धर्म विशेषण	५४६	२ २६१	रत्ना परि ६सू ३६
पक्षाभास			
प्रतीति	१२७	१ ६०	मश १उ ६सू ७६
प्रतीति निराकृतवस्तुदोष	७२३	३ ४११	ठा. १०उ ३सू ७४३टी

१ एक रात्रि आदि की पडिमा अग्नीकार कर कायोत्सर्ग में स्थिर रहने वाला साधु।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रत्यक्ष ज्ञान	१२	१	११	टा २३ १ सू ७१, तं सू २
प्रत्यक्ष निराकृत वस्तु दोष	७३३	३	४११	टा १०३.३ सू ७४३ टी
प्रत्यक्ष निराकृत साध्यधर्म	५४६	२	२६१	रत्ना परि. ६ सू ४१
विशेषण पक्षाभास				
प्रत्यक्ष प्रमाण	२०२	१	१६०	भ.श. ५ उ ४ सू १६३, प्रनु सू १६६
प्रत्यक्ष व्यवसाय	८५	१	६२	टा ३३ ३ सू १८६
प्रत्यनीक के छः प्रकार	४४५	२	४६	भ.श. ८ उ. ८ सू ३३६
प्रत्यभिज्ञान	३७६	१	३६५	रत्ना परि ३ सू ६
प्रत्याख्यान आवश्यक	४७६	२	६३	भाव ह म ६
प्रत्याख्यान के दो भेद	५४	१	३१	भ.श. ७ उ २ सू २७१
प्रत्याख्यान दस	७०४	३	३७५	टा १० सू ७४८, भ.श. ७ उ २
प्रत्याख्यान पाँच प्रकारका	३२८	१	३३६	टा ५ सू. ४६६, भाव ह. पृ. ८४७
प्रत्याख्यान पालने के छः अङ्ग	४८२	२	६६	भाव. ह म ६ नि गा १५६३ पृ ८५१, ध मधि. २ श्लो. ६३ पृ. १६२
प्रत्याख्यान विशुद्धि के छः प्रकार	४८१	२	६५	टा ५ उ. ३ सू ४६६ टी, भाव ह. म ६ नि गा. १५८६ पृ ८४६
प्रत्याख्यानावरण कषाय	१५८	१	११६	पत्र प. १४ सू. १८८, टा ७ उ १ सू २४६, कर्म भा १ गा १७, १८
प्रत्याहार (योगका एक अंग)	६०१	३	११८	यो०, रा० यो०
प्रत्याहार प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो. प्रका ५ श्लो. ८
प्रत्युत्पन्न दोष	७२३	३	४१२	टा. १०३ ३ सू ७४३
प्रत्युपकारतीनका दुःशक्य है	१२४	१	८७	टा. ३ उ १ सू १३५
प्रत्युपेक्षणा प्रमाद	४५६	२	६०	टा. ६ उ. ३ सू ५०२
प्रत्येक बुद्ध सिद्ध	८४६	५	११८	पत्र प. १ सू ७
प्रत्येक मिश्रिता सत्यामृषा	६६६	३	३७१	टा. १० सू. ७४१, पत्र प. ११, ध मधि ३ श्लो. ४१ टी. पृ. १२२

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रथमसप्तरात्रिदिवसनामक	७६५	४ २६०	सम १२, दशा द ७, भ श २ उ १ सू ६३ टी.
आठवीं भिक्षुपट्टिमा			
प्रथम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१ ३८५	ठा ५ उ ३ सू ४४५
१ प्रदेश	५	१ ३	ठा. १ सू ४५
प्रदेश	७३	१ ५३	ठा ३ उ २ सू १६६
प्रदेश अनन्तक	४१७	१ ४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
प्रदेश नाम निश्चत्तायु	४७३	२ ८०	भ श ६ उ ८, ठा ६ सू ५ ३६टी.
प्रदेश बन्ध	२४७	१ २३२	ठा ४ सू २ ६६, कर्म भा १ गा २
प्रदेशवत्त्व गुण	४२५	२ १६	द्रव्य त अघ्या ११ श्लो ४
प्रधान (मुख्य)	३८	१ २४	तत्त्वार्थ, अघ्या ५ सू ३१
प्रधानतापद नाम	७१६	३ ३६७	अनु० सू १३०
२ प्रपञ्चा अवस्था	६७८	३ २६८	ठा १० उ ३ सू ७७२
३ प्रभावक आठ	५७२	३ १०	प्रव द्वा १४८ गा ६३४
प्रभावती	८७५	५ ३६५	भाव. ह निगा १२८४
प्रभावना दर्शनाचार	५६६	३ ८	पन्न प १ सू ३७, उत अ २८ गा ३१
प्रभासस्वामी कीमोक्ष विषयक शका और समाधान	७७५	४ ६०	विशे गा १६७२-२०२४
प्रमत्त संयत गुणस्थान	८४७	५ ७६	कर्म भा २ गा २
प्रमाण	३७	१ २३	रत्ना० परि १ सू. २
प्रमाण	४२७	२ २६	अनु० सू ७०
प्रमाण और नय	४६७	२ १७०	
प्रमाणा चार	२०२	१ १६०	भ श. ५ उ ४ सू १६३, अनु सू १४४

१ स्वन्ध या देश में मिला हुआ द्रव्य का अति सूक्ष्म विभाग ।

२ इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष का स्वास्थ्य गिरने लगता है ।

३ जो धर्म के प्रचार में सहायक होते हैं वे प्रभावक कहलाते हैं ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रमाण नाम	७१६	३	३६६	अनु० सू १३०
प्रमाण नाम के चार भेद	७१६	३	४००	अनु० सू १३०
प्रमाण संवत्सर की व्याख्या और उगके षोडशभेद	४००	१	४२५	ठा ५३३ सू ४६०, प्रव ह्य, १४२ गा ६०१
प्रमाणांगुल	११८	१	८३	अनु० सू १३३
प्रमाद आठ	५८०	३	३६	प्रव ता २०७ गा १२००-८
प्रमाद आश्रय	२८६	१	२६८	ठा ६३ २ सू ४१८, प्रम. ४
प्रमाद छः	४५६	२	५६	ठा ६३ ३ सू ६०२
प्रमाद पाँच	२६१	१	२७०	ठा ६ सू ६०२, प्र अभि. स्थली ३६ टी पृ = १. पता १ गा २०१, अष्ट १६ जो १ टी
प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त. अ. २६ गा २७
प्रमाद प्रतिलेखना छः	४४६	२	५३	ठा ६ सू ६०३, उत्त अ. २६ गा २६
प्रमाद प्रतिलेखना सात	५२१	२	२५१	उत्त अ. २६ गा २७
प्रमाद विषयक दस गाथाएँ ६६४	७	२३१		
प्रमेयत्व गृण	४२५	२	१६	आगत प्रमेयन अ गा. ११५ लो. १
प्रमोद भावना	२४६	१	२२६	आगतता, च, न गा. स्थली ४३ ४३
प्रयत्न आदिके योग्य स्थान ६०६	३	१२४		ठा ८३, ३ सू ६०६
प्रयोग कर्म	७६०	३	४४२	आगत गा २३ १ ति गा १८२
प्रयोग गति के पन्द्रह भेद ८५५	५	१३८		पता १ १ सू २०२, अ. गा. १३ १ सू ७१६
१ प्रयोग गति सम्पदा	५७४	३	१४	उत्त अ. २६ गा २७
प्रलम्ब प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ. २६ गा २७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ प्रवचन उद्भावनता	७६३	३	४४६	ठा १० उ ३ सू ७५८
प्रवचन माता	२२	१	१६	उत्त. अ २४ गा. १-२
प्रवचन माता आठ	५७०	३	८	उत्त. अ २४ गा १-२, सम ८
प्रवचन वत्सलता	७६३	३	४४६	ठा. १० उ ३ सू ७५८
प्रवचन संग्रह तयालीस	६६४	७	१५१	उत्त, दश, आचा, मूय, प्रश्न, द प, भ, जा, विज्ञे, आव ह, उव., ध., आगम, ममय, वृ, प्रतिमा., पचच., किं नि, पि वि, ध र, दशा
प्रवर्तक पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३ उ. ३ सू १७७ टी
प्रवृत्ति	४५	१	२८	
प्रव्रज्या के दस कारण	६६५	३	२५१	ठा. १० उ ३ सू ७१२
प्रव्रज्या दस	६६५	३	२५१	ठा १० उ ३ सू ७१२
प्रव्रज्या प्राप्त पुरुष चार	१७६	१	१३०	ठा ४ उ ४ सू ३२७
प्रव्रज्या स्थविर	६१	१	६६	ठा ३ उ ३ सू १५६
२ प्रव्राजकाचार्य	३४१	१	३५२	ध अधि. ३ लो ४६ टी पृ १०८
प्रशस्त काय विनय सात	५०३	२	२३२	भश २५ उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ६८६, उंके सू २०
प्रशस्त मन विनय सात	४६६	२	२३१	
प्रशस्त वचन विनय सात	५०१	२	२३२	भश २५ उ ७, ठा ७ सू ६८६
प्रशान्त रस	६३६	३	२११	अनु सू १२६ गा ५०-८१
प्रशास्त्र दोष	७२२	३	४०७	ठा १० उ ३ सू ७८३
प्रशिक्षित प्रमादप्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ. २६ गा २५१

१ द्वादशांग रूप प्रवचन का वर्णवाद एव गुण कीर्तन काना प्रवचन उद्भावनता है ।

२ सामायिक व्रत आदि का आरोपण करने वाले आचार्य ।

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रश्न(आभियोगीकीभावना४०४ का एक भेद)	१	४३१	उत्त.अ. ३६गा. २६ २, प्रव द्वा. ७३गा ६४४
प्रश्न छः परदेशी राजा के	४६६	२ १०७	ससू ६३
प्रश्न छः प्रकार का	४६४	२ १०३	ठा ६३ ३ सू ५३४
प्रश्न व्याकरण सूत्र के दस	७७६	४ २०८	
अध्ययनों का विषय वर्णन			
प्रश्नाप्रश्न	४०४	१ ४३१	उत्त.अ. ३६गा. २६ २, प्रव द्वा ७३
*प्रश्नोत्तर इक्कीस	६१८	६ १३३	
*प्रश्नोत्तर छत्तीस	६८३	७ ६८	
प्रस्थापिता आरोपणा	३२६	१ ३३५	ठा ५३ २ सू ४३३
प्रस्फोटना प्रतिलेखना	४४६	२ ५४	ठा. ६सू ५०३, उत्त अ २६गा २६
प्राकृतश्चादि १२ भेद भाषा के	७७६	४ २३८	प्रश्न धर्मद्वार २सू २५टी.
प्राकृत भाषा के छः भेद	४६२	२ १०२	प्रा, पद्भाषा
प्राक्पश्चात्सस्तव दोष	८६६	५ १६५	प्रव द्वा ६७गा ५६८, ध. अधि. ३५लो २२पृ ८०, पिं नि गा ४०६, पिं वि गा ६६, प्रना १३ गा. १६
प्राग्भारा अवस्था	६७८	३ २६८	ठा १०३ ३ सू. ७७२
प्राजापत्य स्थावरकाय	४१२	१ ४३८	ठा ५३. १ सू ३६३
प्राण	१३०	१ ६७	ठा ५सू. ४३०, अम २३ १सू ८८
प्राण	५५१	२ २६२	जवज. २ सू १८
प्राण अपानादि पाँच वायु	५५६	२ ३०४	यो. प्रसा. ५, राज. १४
प्राण अपानादि पाँच वायु	५५६	२ ३०५	यो. प्रसा ५, राज. १४,
फो जीतने का फल			
प्राण दम	७२४	३ ४१३	ठा १सू. ४८टी, प्रम. द्वा. १७० गा १०६६, नम.

* पृथक् पृथक् नामों एवं धर्म प्रन्थों में से चुन कर लिखे हुए प्रश्न तथा उनके उत्तर ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाणा
प्राणातिपात विरमण व्रत ३१७	१	३२४	अव.ह अ ४४ ६५८, प्रव.द्वा.
रूप प्रथम महाव्रत की पाँच भावनाएं			७२गा ६३६-६४०, सम २५, आचा भ्रु. २चु ३अ. २४सू १७६, घ अघि ३श्लो. ४५टी पृ १२५
प्राणातिपात विरमण व्रत ७६४	४	२८०	आगम.
निश्चय और व्यवहार से प्राणातिपातिकी क्रिया	२६२	१ २७७	ठा. २. उ १सू ६०, ठा ५ उ २सू. ४१६, पत्रप २२सू. २७६
प्राणायाम	६०१	३ ११८	यो०, रा० यो०
प्राणायाम सात	५५६	२ ३०२	यो प्रका. ६, रा-यो, हठ
प्रातीत्यकी क्रिया	२६४	१ २७६	ठा २सू ६०, ठा ५सू ४१६
प्रात्ययिक व्यवसाय	८५	१ ६२	ठा ३उ. ३ सू १८५
मादुष्करण दोष	८६५	५ १६३	प्रव. द्वा ६७गा ५६६, घ अघि ३श्लो २२टी पृ ३८, पि. निगा. ६२, पि वि गा ३, पचा १३गा ६
प्राद्वेषिकी क्रिया	२६२	१ २७७	ठा २उ १सू. ६०, ठा ५ उ २सू ४१६, पत्रप २२ सू २७६
१ प्रान्त चरक	३५२	१ ३६७	ठा ५ उ १सू ३६६
प्रान्ताहार	३५६	१ ३७१	ठा ५ उ. १ सू ३६६
प्राप्यकारी इन्द्रियाँ चार	१२१४	१ १६३	ठा ४सू ३३६, रत्ना परि २सू ५
प्राभृतप्राभृत श्रुत	६०१	६ ४	कर्म भा १गा ७
प्राभृतप्राभृत समास श्रुत	६०१	६ ४	कर्म भा १गा. ७
प्राभृत श्रुत	६०१	६ ४	कर्म भा. १गा. ७
प्राभृत समास श्रुत	६०१	६ ५	कर्म भा १गा. ७

१ भोजन से अवशिष्ट तुच्छ एवं हल्के आहार का गवेष्क अभिप्रदहारी साधु ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
प्राभृतिका दोष	३४७ १ ३५६	आव ह अ, नि गा. ११०७ ८ पृ ६१६, प्रव. द्वा २ गा १०३-२३
प्राभृतिका दोष	८६५ ५ १६३	} प्रव. द्वा ६७ गा ६६५, ध अधि ३२लो २२टी पृ ३८, पि नि गा ६२, पि. वि गा ३, पचा. १३ गा ६
प्रामित्य दोष	८६५ ५ १६३	
प्रायश्चित्त	४७८ २ ८६	उव सू २०, उत अ ३० गा ३०, ठा ६ सू ५११, प्रव. द्वा. ६ गा. २७१
प्रायश्चित्त आठ	५८१ ३ ३७	ठा ८३ ३ सू ६०४
प्रायश्चित्त के अन्यचार भेद २४५ ख १	२२३	ठा ८३. १ सू २६३
प्रायश्चित्त के पचास भेद	६३३ ३ १६३	भ. ग. २६४ ७ सू ८०२, उव. सू २०, ठा. १०३ ३ सू ७३३
प्रायश्चित्त के पचास भेद १००४	७ २७१	भ. ग. २६४ ७ सू. ८०२
प्रायश्चित्त चार	२४५ क १ २२२	ठा ८३ १ सू २६३
प्रायश्चित्त झूठा कलंक लगाने वाले को	४६० २ ६२	वृ (जी) उ. ६
प्रायश्चित्त दस	६७३ ३ २६०	भ. ग. २६४. ७, ठा. १० सू ७३३
प्रायोगिकी क्रिया	२६६ १ २८२	ठा. २३. १ सू ६० ठा ८३ ३ सू ४१६, आव ह अ. ८ पृ ६१८
प्रियसेन कृष्णारानी	६८६ ३ ३४७	प्रत. ० व = प्र ६
प्रेम निःसृत असत्य	७०० ३ ३७२	ठा १० सू ७३१, प्रत १. ११ सू १६४, ध अधि. ३२ लो. ४१ पृ १२२
प्रेम प्रत्यया (पेज्जवत्तिया) क्रिया	२६६ १ २८२	ठा २३ १ सू ६०, ठा. ८३. ३ सू ४१६, आव ह अ. ८ पृ. ६१८

फ

फूल की उपमा से पुरुषचार १७? ? १२७ ठा ८३. ४ सू ३२०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
फूल के चार प्रकार	१७०	१	१२६	टा. ४४ सू. ३२०
फोड़ी कम्से कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा अ १सू ७, म श. ८४ ५सू. ३३०, आव ह अ ६पृ ८२८
ब				
वकुश	३६६	१	३८०	टा ५सू. ४४५, म श २५ उ. ६
वकुश के पाँच भेद	३६८	१	३८३	टा ५ उ ३ सू. ४४५
वत्तीस अस्वाध्याय	६६८	७	२८	टा ४ उ २ सू. २८५, टा १० उ ३ सू. ७१४, प्रव द्वा २६८ गा. १४५०- १८७१, व्यव. भा उ ७ गा. २६६- ३१६, आव ह अ. ४ गा १३२१-६०
वत्तीस उपमा शील की	६६४	७	१५	प्रण धर्मद्वार ४ सू २७
वत्तीस गाथा अकाम मर-	६७२	७	४६	उत्त अ ५
णीय अध्ययन की				
वत्तीस गाथा बहुश्रुत पूजा	६७३	७	५१	उत्त अ ११
अध्ययन की				
वत्तीस गाथा सूयगढांग सूत्र	६७४	७	५६	सुय अ २ उ २
केदूसरे अ० केदूसरे उ० की				
वत्तीस दोष तथा आठ	६६७	७	२३	अनुसू १५ १टी, विगे गा ६६६ टी, वृ गा २८७-२८८ पीठिका
गुण सूत्र के				
वत्तीस दोष वन्दना के	६६६	७	३८	आव ह अ ३ गा १२०७-११९ ५४३, वृ उ. ३ गा ४४७१-६४, प्रव द्वा २ गा १५०-१७३
वत्तीस दोष सामायिक के	६७०	७	४३	शिक्षा०
वत्तीस योग संग्रह	६६५	७	१६	उत्त अ ३१, प्रण धर्मद्वार ५ सू २८, मम ३२, आव. ह अ ४ गा. १०७-४७८ पृ. ६६३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वत्तीस विजय	६७१	७	४३	ज.वत्त ४, लोक भा. २म १०
वत्तीस सूत्र	६६६	७	२१	
वधिरोल्लाप का दृष्टान्त	७८०	४	२४१	ध्याव ह गा. १३३, दृ पीटिका
वचन अननुयोग पर				नि गा. १७१
वन्ध	२५३	१	२३७	कर्म भा २गा १ व्याख्या
वन्ध	४६७	२	२०१	
वन्ध का स्वरूप समझाने के लिये मोदक का दृष्टान्त	२४८	१	२३२	ठा ४उ २मू २६६, कर्म भा १ गा २
वन्ध की व्याख्या और भेद	२४७	१	२३१	ठा ४मू २६६, कर्म भा १गा २
वन्ध के कारण आठ कर्मों के	५६०	३	४३	भश ८उ ६ मू ३४१
वन्ध के दो भेद	५२	१	३०	कर्म. भा. १ गा ३४ व्याख्या
वन्ध के भेद	४६७	२	२०४	
वन्ध तत्त्व के चार भेद	६३३	३	१६७	कर्म भा १गा २, नव, ठा ४मू २६६
वन्धन करण	५६२	३	६५	वम्म गा २
वन्धन की व्याख्या और भेद	२६	१	१८	ठा २उ ४ मू ६६
वन्धन नामकर्म का स्वरूप और उमके पाँच भेद	३६०	१	४१५	कर्म भा १गा ३४, प्रव द्वा २-१६ गा. १२७२
वन्धन नामकर्मके पन्द्रह भेद	८५६	५	१४०	कर्म भा. १गा. ३७, वम्म. गा. १टी.
वन्धन परिणाम	७५०	३	४३०	ठा १०मू ७१३, पत्र ५ १३
वन्धन प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा ५ उ. १ मू. ६०६
वन्ध मोक्षविषयक गणधर	७७५	४	४४	विज्ञे. गा १८०२-१८६३
मंडितस्वामी का शंकासमाधान				
वन्धाधिकार कर्म प्रकृतियों	८४७	५	८८	कर्म. भा. २गा. ३-१२
का गणेशान में				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बयालीसदोषआहारादिके	६६०	७ १४६	पिं निगा ६६६
बयालीस पुण्य प्रकृतियों	६६३	७ १५०	कर्म भा ५गा.१५-१७।
बयालीस प्रकृतिनाम कर्मकी	६६१	७ १४६	पत्र प २२२ ३सू २६३
बयालीस भेद आश्रव के	६६२	७ १४६	नव०गा १६
बयासी पाप प्रकृतियाँ	६३३	३ १८२	कर्म भा ५ गा १५-१७, नव०
बलदेव इन्द्रिय, ज्ञानादिके	६७५	३ २६३	ठा.१०उ ३ सू ७४०
बलदेव	४३८	२ ४२	ठा ६सू ४६१, पत्र.प १सू ३७
बलदेव नौ	६४६	३ २१७	आव.ह पृ १५६, प्रव द्वा. २०६ गा १२११, सम. १५८
बलदेव और वासुदेवों के पूर्वभवे के आचार्य नौ	६५१	३ २१६	सम १५८
बलदेव लब्धि	६५४	६ २६४	प्रव द्वा २७० गा १४६३
बलदेवों के पूर्वभवे के नाम	६४६	३ २१८	सम १५८
बलमद	७०३	३ ३७४	ठा १०सू ७१०, ठा ८सू ६०६
बल वीर्य पुरुषाकार परा- क्रम का प्रतिघात	४१६	१ ४४१	ठा ५उ १सू ४०६
१ बला अवस्था	६७८	३ २६८	ठा १०उ ३ सू ७७२
बलाभियोग आगार	४५५	२ ५६	उपा अ. १सू ८, आव.ह अ ६पृ ८१०, ध अधि २श्लो २२ पृ ४१
बहिरात्मा	१२५	१ ८६	परमा गा १३
२ बहुमानाचार	५६८	३ ६	ध अधि १श्लो १६टी पृ १८
बहुमत निहव का मत शंका समाधान सहित	५६१	२ ३४२	विशे गा २३०६-२३३२, म श ६उ ३३, म श. १उ १, आव. ह भाष्यगा १२५-१२६ पृ ३१२

१ दम अवस्थाओं में से चौथी अवस्था ।

२ ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानी और गुरु के प्रति भक्ति एवं श्रद्धा रखना

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बहुश्रुतपूजा अ०की ३२गाथा ६७३	७	५१		उत्त अ ११
बहुश्रुतसाधुकी १६उपमाणं ८६३	५	१५५		उत्त अ. ११गा १५-३०
वाईस निग्रह स्थान	६२१	६	१६२	प्र.मी. अख्या १आ १स ३४, न्यायप्र, न्यायसु अख्या ५आ २
वाईस परिषद	६२०	६	१६०	सम २२, उत्त अ २, प्रम द्वा ८३ गा ६-८-८६, तत्त्वार्थ अख्या. ६
वाईस विशेषण धर्म के	६१६	६	१५६	ध अवि ३खो २७टी. पृ. ६१
वादर	८	१	५	टा २३१ सू ७३
वादर पुद्गल	४२६	२	२५	दश. अ. भाष्यगा. ६० टी.
वादर वादर पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ ४ भाष्यगा ६०टी
वादर वनस्पतिकाय छः	४६६	२	६६	दश० अ. ४ सू. १
वादर सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ ४ भाष्यगा ६० टी.
वारह अमात्रस्याणं	८०१	४	३०३	सूर्य प्रा १० प्रा. प्रा ६सू ३८
वारह आगार कायोत्सर्गके ८०७	४	३१६		भाष ह. प्र ५ पृ. ७७८
वारह उपमाणं साधु की	८०५	४	३०६	अनु०सू १५० गा १३१
वारह उपयोग	७८६	४	२६७	पत्र. ग. २६सू ३१०
वारह उपांग सूत्र	७७७	४	२१५	
वारह गाथा दशवैकालिक ८११	४	३५२		दश० अ ८ गा ११-२५
सूत्र के चौथे अध्ययन की				
वारह गाथाणं मसुद्रपालीय ७८१	४	२५५		उत्त. अ. २१
अध्ययन की				
वारह गाथाणं साधुके लिये ७८१	४	२५५		उत्त० अ. २१
मार्ग प्रदर्शक				
वारह गुण अरिहन्त देवके ७८२	४	२६०		गन ३४, ग अ ३६, ६६, म्ना ११.१

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वारह ग्लान प्रतिचारी	७६७	४ २६७	प्रव द्वा ७१गा.६२६से६३५, नवपद गा १२६ पृ ३१६
* वारह चक्रवर्ती	७८३	४ २६०	ठा ८८ ३सू.६३३,ठा २८ ४सू ११२,सम.६४,१५८,आव ह अ १निगा.३६७,त्रि प
वारह चक्रवर्ती आगामी उत्सर्पिणी के	७८४	४ २६५	सम. १५६
वारह दृष्टान्त अननुयोग तथा अनुयोग के	७८०	४ २३८	आवह गा १३३-१३४,वृ पीठिका नि गा १७१-१७२
वारह दोषकायाकेसामायिकके	७८६	४ २७३	शिक्षा.
वारह द्वार कर्म प्रकृतियों के	८०६	४ ३३६	कर्म भा ५ गा १-१६
वारह नाम ईषत्प्राग्भारा के	८१०	४ ३५२	सम १२
वारह नाम मान के	७६०	४ २७५	भ.श १२८ ५सू ४४६
वारह पूर्णिमाएं	८००	४ ३०२	सूर्य प्रा १० प्रा प्रा ६सू ३८
वारह प्रकार का तप (निर्जरा)	४७६, २ ८५, ४७८ २ ८६	}	उत्त अ ३०, उवसू १६-२०, ठा ६सू ५११.प्रव द्वा.६गा २७०
वारह प्रकार के आर्य	७८५		
वारह बाल मरणा	७६८	४ २६८	भ.श २८ १सू ६१
वारह भावना (अनुपेक्षा)	८१२	४ ३५५	शा भा १, २, भावना ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७गा ५७२-५७३, नस्वार्थ, अध्या ६ सू ७

: हरिभद्रीयावश्यक निर्युक्ति गाथा ४०१ में सुभूम और धर्मदत्त चक्रवर्ती का सातवीं नरक में जाना, मधवा और सनत्कुमार चक्रवर्ती का तीसरे सनत्कुमार देवलोक में उत्पन्न होना एवं शेष आठ चक्रवर्तियों का निरुद्ध होना बतलाया है ।

विषय	श्लोक	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वारह भावना पर दोहे	८१२	४	३७६	
वारह भावव्रत श्रावक के निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८०	भागम.
वारह भिक्षु पद्धिमा	७६५	४	२८५	मम १२, दशा ६७, भ.श. २३ १
वारह भेद अप्रशस्त मन विनय के	७६१	४	२७५	अ मृ २०
वारह भेद अवग्रह ज्ञान के	७८७	४	२६६	ठा ६७ ३ मृ ५१० टी, विशेष. गा. ३०७, तत्त्वार्थ अध्या १ मृ. १६
वारह भेद असत्यामृपाभापा के	७८८	४	२७२	पत्र प ११ मृ १६५ टी.
वारह भेद कल्पोपपन्न देवों के	८०८	४	३१८	पत्र प. २, ४, ६, जी प्रति. ३ मृ. २०७-२२३, तत्त्वार्थ अध्या ४
वारह भेद भाषा के	७७६	४	२३८	प्रश्न धर्मद्वार २ मृ. २४ टी
वारह भेद सूत्र के	७७८	४	२३५	वृ ३ १ गा १२२१
वारह महीनों में पारिसी का परिमाण	८०३	४	३०४	उत्तम २६ गा १२-१८
वारह मान्यताएं चन्द्र और सूर्योक्ती संख्या के विषय में	७६६	४	३००	सूर्य प्रा. १६ मृ. १००
वारह मास	८०२	४	३०३	सूर्य प्रा १० प्रा. प्रा. १६
वारह विशेषण धर्म के	८०४	४	३०६	गा. भा २ प्रक १० (धर्मभाषना)
वारह विशेषण सापेक्ष यति धर्म के	८०६	४	३१४	ध वि. मृ. ३६६
वारह व्रत श्रावक के				
(पाँच अणुव्रत)	३००	१	२८८	श्रावक म. ६ पृ ८१७-२६, उपा म. १ मृ ६, ठा. मृ. ३८६, पचा १ गा ७-३०, भ. म. वि. २ ज्यो. २३-४० पृ ४३-६६
(तीन गृणव्रत)	१२८८	१	६१	
(चार शिक्षाव्रत)	१८६	१	१४०	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चारह श्रमणोपासक	७६३	४	२७६	भ श ८३ १सू.३३०
आजीवक के				
चारह संभोग	७६६	४	२६२	निजी.उ.१, सम १२, प्रयव.भा उ ६
बाल अवस्था	६७८	३	२६७	ठा १० उ ३ सू ७७२
बाल पण्डित मरण	८७६	५	३८३	सम १७, प्रव द्वा १५७गा १००६
बाल पण्डित वीर्यान्तराय	३८८	१	४१२	कर्म भा १गा.१२, पत्र.प. २३
बाल मरण	८७६	५	३८३	सम १७, प्रव द्वा १५७गा.१००६
बाल मरण के चारह भेद	७६८	४	२६८	भ श.२ उ १सू.६१
बाल वीर्यान्तराय	३८८	१	४११	कर्म भा १गा १२, पत्र. प.२३
वाचन अनार्चीर्ण साधु के	१००७	७	२७२	दश अ.३
वाचन भेद विनय के	१००६	७	२७२	प्रव द्वा ६५गा ५५१
वाहन्य(मोटार्ई) नरकोंकी	५६०	२	३२८	जी प्रति ३सू.६८
वाह्य तप छः	४७६	२	८५	उत्त.अ ३०गा ८, ठा.६सू ५११, उवसू १६, प्रव द्वा ६गा २७०
१ बाह्यावाह्यानुयोग	७१८	३	३६४	ठा १० उ ३ सू ७२७
बीज वृद्धि लब्धि	६५४	६	२६६	प्रव द्वा २७०गा १४६४
बीजरुचि(समाकृतकाभेद)	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा.२२
२ बीज रूह	४६६	२	६६	दश अ.४
बीभत्स रस	६३६	३	२०६	अनुसू १२६गा.७४-७४
बीस असमाधि स्थान	६०६	६	२१	सम २०, दशा.द.१
बीस आश्रव	६०७	६	२५	सम ६, प्रध.नि.गा २पृ ३, ठा.१ सू ४१८, ४२७, ७०६

१ द्रव्यानुयाग का भेद, बाह्य (विलक्षण) और अबाह्य (समान) का विचार ।

२ बीज से उगने वाली वनस्पति, जैसे शालि आदि ।

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वीस कल्प	६०४	६ ६	वृ ३ १
वीसगाथाचतुरंगीयअ०की	६०६	६ २६	उत्त०अ ३
वीस वोल तीर्थङ्करगोत्र वाँधने के	६०२	६ ५	भाव द नि.गा. १७६-१८१ पृ ११८, शा अ न्त. ६४, प्रव द्वा. १०गा ३१३-३१६
वीस भेद श्रुत ज्ञान के	६०१	६ ५	कर्म भा १गा. ७
वीस विहरमान	६०३	६ ८	ठा. न्त. ६३ ७टी., विहर., त्रिलोक
वीस संवर	६०८	६ २५	ठा. ६ न्त. ४१८, ४२७, ठा. १० न्त. ७०६, प्रश्न मवरद्वार, सम ६
वीस स्त्रियाँ दीक्षा के अयोग्य	८६१	५ ४०६	प्रव द्वा १०८ गा. ७६२, घ. अधि. ३ श्लो ७८ टी पृ ३
बुद्ध बांधित सिद्ध	८४६	५ ११६	पत्र १ १ सु ७
बुद्धि औत्पत्तिकी (उत्पा- तिया) के सत्ताईस दृष्टान्त	६४६	६ २४२	न० न्त. २७
बुद्धि कम्पिया के १२ दृष्टान्त	७६२	४ २७६	न० न्त. २७, भाव द नि गा ६४७
बुद्धि के चार भेद	२०१	१ १५६	न० न्त. २६, ठा ८३ ४ न्त. ३६४
बुद्धि पारिणामिकी (परि- णामिया) के उक्तीस दृष्टान्त	६१५	६ ७३	न० न्त. २७ गा. ७१-७४, भाव. द नि गा ६४८-६४९
बृहत्कल्पमूत्रकाविषयवर्णन	२०५	१ १८१	वृ.
बृहरपतिदत्तकुमार की कथा	६१०	६ ४१	वि०अ ६
बोटिकनामक आठवाँ निहव	५६१	२ ३६६	त्रि. जे गा २४४०-२६०६
बांधि दुर्लभ भावना	८१२	४ ३७१,	गा. भा. २ प्रक १२ ठा. ७३ ३ न्त. ३८८ ६८७, भावना. प्रान पत्र २, प्रा. द्वा ६६ गा. ६ ७३, त्रयार्थ अथ्या ६
बाँद्ध दर्शन	४६७	२ ११७	

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
ब्रह्मचर्य	६६१ ३ २३४	नव, मम १, शा.भा. १ प्रक. ८
ब्रह्मचर्य की बत्तीस उपमा	६६४ ७ १५	प्रश्न धर्मद्वार ४ सू. २७
ब्रह्मचर्य के अठारह भेद	८६२ ५ ४१०	सम. १८, प्रव. द्वा. १६८ गा. १०६१
ब्रह्मचर्य के असमाधिस्थान	७०१ ३ ३७२	उत्त. अ. १६
ब्रह्मचर्यगृप्ति नौ	६२८ ३ १७३	ठा. ६७ ३ सू. ६६३, सम. ६
ब्रह्मचर्य पर सोलह गाथाएं	६६४ ७ १७७	
ब्रह्मचर्य महाव्रत की पाँच भावनाएं	३२० १ ३२७	भाव. ह. अ. ४४ ६३८, प्रव. द्वा. ७२ गा. ६३६, सम. २५, आचा. ध्रु. २ चू. ३ अ. २४ सू. १७६, ध. अधि. ३ श्लो. ४५ टी. पृ. १२५
ब्रह्मचर्य वास	३५१ १ ३६६	ठा. ५७. १ सू. ३६६, ध. अधि. ३ श्लो. ४६ पृ. १२७, प्रव. द्वा. ६६
ब्रह्मदेवलोक का वर्णन	८०८ ४ ३२२	पत्र प. २ सू. ५३
ब्रह्म स्थावर काय	४१२ १ ४३८	ठा. ५७ १ सू. ३६३
१ ब्राह्मण वनीपक	३७३ १ ३८८	ठा. ५७ ३ सू. ४५४
ब्राह्मी	८७५ ५ १८५	भाव. ह. गा. १६६, त्रि. प. पर्व १, २
ब्राह्मीलिपिके. ४६ मातृकाक्षर	६८६ ७ २६४	सम. ४६

भ

भंग उनपचास श्रावक के	१००३ ७ २६७	भ. शा. ८ उ. ५ सू. ३२६
प्रत्याख्यान के		
भंग छब्बीस सान्निपातिक	४७४ २ ८१	अनु. मृ. १२६, ठा. ६७ उ. ३ मृ. ५३७, कर्म भा. ४ गा. ६४-६६
भाव के		
भंग सात (सप्तभंगी)	५६३ २ ४३५	सूय. ध्रु. २ अ. ५ गा. १०, आगम, सप्त, रत्ना परि. ४, स्या. का. २३

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भगवती मूत्र के इकतालीस ७७६	४	१३८		
शतको का विषय वर्णन				
१ भगवान् पार्श्वनाथ के	५६५	३	३	टा ८३ ३ मू ६ १७टी, सम ८
दस गणधर				टी श्रावह निगा २६८-६८, ग.
				गद्दा १११, मवद्दा १५गा ३३०
भगवान् मल्लिनाथ आदि	५५३	२	२७७	टा. ७३ ३ मू ५६०
एकसाथदीक्षालेनेवालेसात				
भगवान् महावीर की चर्या	६२२	६	१६६	श्रावा०धु १म ६३. १
विषयक गाथाएं तेईस				
भगवान् महावीर की तप-	८७८	५	३८०	श्रावा०धु १म ६३ ४
श्र्याविषयक खत्रह गाथाएं				
भगवान् महावीर की वसति	८७४	५	१८२	श्रावा०धु. १म ६३ ०
विषयक सोलह गाथाएं				
भगवान् महावीर के ११ नाम	७७०	४	३	जैन विद्या बोल्डूम १ न० १
भगवान् महावीर के दस स्वप्न	६५७	३	२२४	म. ग १६३. ६ मू ४७६, टा. १०
				उ ३ मू ५६०
भगवान् महावीर के नौ गण	६२५	३	१७१	टा. ६३. ३ मू ६००
भगवान् महावीर के पास	५६६	३	३	टा ८३ ३ मू १२१
आठ राजा दीक्षित हुए				
भ० महावीर के शासन मंत्री	६२४	३	१६३	टा ६३. ३ मू ६८१
कुंरगोत्रवाचनेवाले नौ आत्मा				
भगवान् महावीर से उपदिष्ट	३५०-	१	३६४-	टा ६३. १ मू ३२६, ग. श्राधि ३-नी ४६टी मू १२७. प्रग, शा ६६गा ४४४
एवं अनुमान पांच पांचवाल	३५७	३७२		

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भगवान् महावीरसे उपदिष्ट ३५६	१	३७३	ठा ४७ १ सू ३६६
एवं अनुमत पाँच स्थान			
भक्त कथा चार	१५०	१ १०८	ठा ४७ २ सू २८२
भक्तकथासे होनेवाली हानि	१५०	१ १०६	ठा. ४७ २ सू २८२ टी
भक्त प्रत्याख्यान मरण	८७६	५ ३८४	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा. १००७
भक्त परिणाम पड़ना	६८६	३ ३५३	द० प०
भद्र कर्म बंधने के दो स्थान	७६३	३ ४४४	ठा १०७ ३ सू ७६८
भद्रनन्दी कुमार की कथा	६१०	६ ५८	वि० अ १२
भद्रनन्दी कुमार की कथा	६१०	६ ६०	वि० अ १८
भद्रोत्तर प्रतिमा तप की	६८६	३ ३४७	अत० व ८
विधि और उसका यत्र			
१ भयदान	७६८	३ ४५१	ठा १०७ ३ सू ७४५
भय निःसृत असत्य	७००	३ ३७२	ठा १०० सू ७४१, पत्र १ १ सू १६५, अथि ३ खो ४ १ पृ १२२
भय संज्ञा	१४२	१ १०५	ठा ४७ ४ सू ३५६, प्रव द्वा १४५
भय संज्ञा	७१२	३ ३८६	ठा १०० सू ७४२, अ श ७७८
भय संज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४४	१ १०६	ठा ४७ ४ सू ३५६, प्रव द्वा १४५ गा ६२३
भय स्थान सात	५३३	२ २६८	ठा ७७ ३ सू ५४८, नम ७
भक्त क्षेत्र की आगायी उत्स-६३०	६	१६६	नम १५८, प्रव द्वा ७ गा २६३-२६५
पिंणी के चौबीस तीर्थद्वार			
भक्त क्षेत्र की गत उत्स-६२७	६	१७६	प्रव द्वा ७ गा २५८-२६०
पिंणी के चौबीस तीर्थद्वार			

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भरतक्षेत्र के वर्तमान अक्षय-६२६	६	१७	७	मम १५७, भाव ह गा २०६-२६०,
पिंणी के चौबीस तीर्थद्वार				भाव म गा २३१-३८६, स रा, प्रव द्वा ७ से ४५,
भरतचक्रवर्ती अनित्य भावना	८१२	४	३७८	त्रि प. पर्व १ स ६
भरतशिलाकी कथा औत्प-६४६	६	२४३		नंमू २७ गा. ६२ टी.
चित्तकी बुद्धि पर				
भव तेरह भ० ऋषभदेव के	८२०	४	४०६	त्रि प. पर्व १
भवनपति देवों के दस	७३१-	३	४१७-	भ.श ३ उ ८ सू १६६
दस अधिपति	७४०	३	४२०	
भवनवासी (भवनपति)	७३०	३	४१६	पञ्च प. १ सू ३८, अ १० उ ३ सू. ७३६, भ.श. उ ७ सू. ११५, जी प्रति. ३ उ १ सू ११५
देव दस				
भवपुद्गल परावर्तन	६१८	३	१४०	कर्म भा. ५ गा ८६-८८
भवप्रत्यय अत्रिधि ज्ञान	१३	१	११	अ २ उ १ सू ७१
भव सिद्धिक	८	१	७	अ २ उ २ सू ७६, भा प्र गा ६६
भव स्थिति	३१	१	२२	अ २ उ ३ सू ८५
भव्य अर्भव्य स्त्री पुरुषों में	६५४	६	२६८	प्र ह द्वा २७० गा. १५०४ से १५०८
कितनी लब्धियां हो सकती हैं?				
भव्य जीवों के मिद्ध हो जाने	६१८	६	१३६	भ.श. १ उ २ सू १४३
पर क्या लोक भव्यों से शून्य हो जायगा?				
भव्यत्व मार्गणा और उसके भेद	८४६	५	५८	कर्म. भा. ६ गा. १३

विषय	वोल्ल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ भव्य द्रव्य देव	४२२	१ ४४५	ठा ५सू ४०१, भ श १२३ ६
२ भांगिक वस्त्र	३७४	१ ३८६	ठा ५उ ३ सू ४४६
भांगे सोलह आश्रव आदिके ८६८	५	१६८	भ श १६उ.४ सू ६६४
भाढी कम्मे कर्मादान	८६०	५ १४५	उपा अ १सू ७, भ श ८उ ५सू. ३३०, आवाह अ ६पृ ८२८
भाण्ड (पण्यवस्तु) चार	२६४	१ २४६	ज्ञा अ. ८ सू ६६
भार प्रत्यवरोहणता विनय २२८	१	२१८	दशा द. ४
के चार प्रकार			
भाव	२१०	१ १८६	न्यायप्र अथ्या ७, रत्ना. परि ४
भाव इन्द्र के तीन भेद	६२	१ ६६	ठा. ३उ १सू ११६
भाव जनोदरी	२१	१ १६	भ श २५उ ७सू ८०२
भाव कर्म	७६०	३ ४४३	आचा अ २उ १ नि गा. १८४
भाव छः	४७४	२ ८१	अनु सू १२६, ठा ६उ ३सू ५३७, कर्म भा. ४ गा. ६४-६६
भावदुःखशय्याके ४ प्रकार २५५	१	२४०	ठा. ४उ ३सू ३२५
भाव देव	४२२	१ ४४६	ठा ५सू ४०१, भ श. १२उ ६
भावना अशुभ पाँच	४०१	१ ४२८	प्रव द्वा. ७३ गा ६४१, उत्त अ. ३६
भावना चार	१४१	१ १०३	उत्त अ ३६ गा २६१-२६४
भावना चार	२४६	१ २२४	भावना, क भा २श्लो ३५-३६, च.
भावना चार	४६७	२ १८८	
भावना छः समकित की ४५४	२	५८	प्रव द्वा १४८ गा ६४०, घ. अधि २श्लो २२ टी. पृ ४६
भावना धर्म	१६६	१ १५६	घ. अधि ३श्लो. ४७ टी पृ १३१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
भावना २५ पाँचमहाव्रतकी	६३८	६	२१७	आचा.अ २ चू ३ अ २४ सु १७६,सम २४,आच ह अ.४५. ६४,पव द्वा ७२गा ६ ३६-४०. ध अवि ३ श्लो ४४टीपृ.१२५	
भावना पचीस पाँचमहा- व्रतों की	३१७-१	१	३२४- ३२१		३२६
भावना बारह	८१२	४	३५५		शाभा १,२,भावना ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ४७०-५७३ तत्त्वार्थ.अध्या ६सु ७
भाव निक्षेप	२०६	१	१८८	अनुसु १४०,न्याय.प्र.अध्या ६	
भाव पाँच जीव के	३८७	१	४०७	अनुसु १२६,पव द्वा २२१ गा. १२६०-६८,कर्म भा.४गा.६४-६८	
भाव पुद्गल परावर्तनमृक्षम और बादर का स्वरूप	६१८	३	१३६	कर्म.भा ४गा ८६-८८	
भाव प्रतिक्रमण	३२६	१	३३६	टा ४३ ३ सु. ४६७,आच ह.अ ४ गा १२४०-१२४१ पृ ४६८	
भाव प्रत्यनीक	४४५	२	५१	अ.म.८ ३८ सु ३३६	
भाव प्रत्युपेक्षणा	४५६	२	६०	टा ६३ ३ सु २००	
भाव प्रमाणनामके चार भेद ७१६	३	४०१		अनु स १३०	
भावप्राणकी व्याख्या, भेद १६८	१	१५७		पाप.१ सु १टी.	
भाव लेश्या	४७१	२	७२	अ.म.१३ २,उग अ ३०,पव प १ ७३ ४,कर्म भा ४गा १३२गा पृ ३३,आच ह.अ.४५ ६ ४४, द्रव्य-गौ न ३ गा, २८-३८२	
भावशुद्ध प्रत्याख्यान	३२८	१	३३७	टा ४३ ३ सु ४६६,आच ह अ ६पृ ८८०	
भावश्रावणके मन्त्रदत्तगण ८८३	५	३६२		ध अवि.३श्लो.२२टी पृ.४६	
भाव मन्त्र	६६८	३	३७०	टा १०५ ३१,पव १.११सु. १६५,ध अवि ३श्लो ४१ पृ.१२१	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भाव सम्यक्त्व	१०	१	८	प्रव. द्वा. १४६ गा ६४२ टी.
१ भावानुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनु सू ७१
२ भाविताभावितानुयोग	७१८	३	३६४	ठा १०४.३ सू ७२७
भावेन्द्रिय	२३	१	१७	पत्र प १६, तत्त्वार्थ ग्रन्थ्या २ सू १६
भावेन्द्रिय के दो भेद	२५	१	१७	तत्त्वार्थ ग्रन्थ्या २ सू १८
भाषा के चार भेद	२६६	१	२४८	पत्र प ११ सू १६१
भाषा के बारह भेद	७७६	४	२३८	प्रज्ञ सवस्त्रार २ सू २४टी
भाषा पर्याप्ति	४७२	२	७८	पत्र प १ सू १० टी., भ.श. ३ उ. १ सू १३०, प्रव. द्वा २३२ गा १३१७, कर्म भा. १ गा ४६
भाषार्थ	७८५	४	२६६	वृ उ १ नि. गा ३२६२
भाषा सप्रति	३२३	१	३३१	सम ५, ठा ५ सू ४४७, उत अ २४, ध अवि उज्जलो. ४७ टी पृ १३०
भिक्षु पढिमा वारह	७६५	४	२८५	सम १२, भ ग २ उ १ टी, दशा ६७
भिक्षा की नौ कोटियाँ	६३१	३	१७६	ठा ६ उ ३ सू ६८१, आचा अ. २ उ. ५ सू ८८ टी
भिक्षाचर्या	४७६	२	८६	उत अ ३० गा ८, ठा ६ सू ५११, उव सू १६, प्रव द्वा ६ गा. २७०
भिक्षाचर्या के तीस भेद	६३३	३	१८६	} उव सू १६, भ.श २५ उ ७ सू ८०२
भिक्षाचर्या के तीस भेद	६५६	६	३१०	
भिक्षुक षमञ्च की उपमासे	४११	१	४३७	ठा ५ उ ३ सू ४५३
भिक्षुक का स्वरूप बताने	८६२	५	१५२	उत अ १६
बाली सोलह गाथाएं				

१ शौदारिक परिणाम आदि भाषों का नाम, परिपाटी ।

२ द्रव्यानुयोग का एक भेद

विषय	शोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भिक्षु की कथा औत्पत्तिकी	६४६	६	२७६	नं.सू. २७गा ६७टी.
बुद्धि पर				
भिक्षु प्रतिमा (पडिमा)	६८६	३	३४३	अत०न. ८म. ५
१ भिन्न पिण्डपातिक	३५५	१	३७०	टा ४३ १ सू ३६६
२ भुज परिसर्प	४०६	१	४३६	पत्र प. १सू ३५, उत्त. म. ३६
३ भूत (जीव)	१३०	१	६८	टा ५सू ४३०, भ. ग. २३. १सू. ८८
भूतग्राम (जीवों) के १४ भेद	८२५	५	१७	सम. १४, धातु म ४ पृ ६४६
भूतिकर्म	४०४	१	४३१	उत्त. म. ३६गा २६२, प्रव. द्वा. ७३
भेद तेईस क्षेत्र परिमाण के	६२५	६	१७३	मनुसू १३३, प्रव. द्वा २४४
भेद परिणाम	७५०	३	४३३	टा १०८. ३सू ७१३, पत्र प. १३
भेद प्रभेद आठ कर्मों के	५६०	३	४३	पत्र. प. २३, उत्त. म. ३३, कर्म. भा. १, तत्त्वार्थ मध्या ८, भ. ग. ८ उ ६, भ. ग. १८ ४, ६, विज्ञो. गा १६०६-४४ तथा १६४२-४५
भेद बयालीस आश्रव के	६६२	७	१४६	नव गा. १६
भोग प्रतिघात	४१६	१	४४०	टा. ५३ १ सू ४०६
भोग सुख	७६६	३	४५४	टा. १०३ ३ सू ७१७
भोगान्तराय	३८८	१	४११	कर्म. भा १गा ४२, पत्र प २३
भोजन परिणाम छः प्रकार का	४८६	२	६६	टा ६३. ३सू ६३३
भ्रमर वृत्ति पर चार गाथाएं	६६४	७	१८५	

म

मंगल रूप लोकोत्तमतया	१२६क१	६४	माप ह. म ४ पृ ६६६
शरण रूप चार हैं			

- १ पूरी वस्तु न लेकर टुकड़े की हुई वस्तु को ही लेने वाला अभिमहवागी नाथ।
- २ भुजाओं से चलने वाले जीव, चूरे आदि।
- ३ भूत, भविष्यत और वर्तमान तीनों कालों में विद्यमान होने से जीव भूत कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मक्खिय दोष (ग्रहरणै- पणा का एक दोष)	६६३	३	२४२	प्रव द्वा ६७गा ५६८पृ १४८, पि नि गा ५२०, व अधि ३श्लो. २२टी पृ ४१, पचा १३ गा. २६
मच्छ की उपमा से प्रथित्तुक	४११	१	४३७	ठा. ५उ ३ सू ४५३
मच्छ के पाँच प्रकार	४१०	१	४३६	ठा ५उ. ३सू ४५३
मणि का दृष्टान्त पारिणा- मिकी बुद्धि पर	६१५	६	११३	नं सू २७ गा ७४, आव. ह गा ६५१
मण्डितस्वामीगणधरकाबंध मोक्षविषयकशंकासमाधान	७७५	४	४४	त्रिशे०गा १८०२-१८६३
मतिज्ञान	१५	१	१२	पत्र.प. २६सू ३१२, ठा २सू ७१
मतिज्ञान	३७५	१	३६०	ठा ५उ ३ सू ४६३, नं सू. १, कर्म भा १गा ४ व्याख्या
मतिज्ञान के अठाईस भेद	६५०	६	२८३	सम. २८, कर्म भा. १ गा ४-६
मतिज्ञान के चार भेद	२००	१	१५८	ठा ४उ ४ सू ३६४
मतिज्ञानावरणीय	३७८	१	३६४	कर्म. भा १गा ६, ठा ५सू ४६४
१ मतिभंग दोष	७२२	३	४०६	ठा १०उ. ३सू ७४३
मति सम्पदा	५७४	३	१४	दगा द ४, ठा ८उ ३सू. ६०१
मत्यज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पत्र०प २६ सू. ३१२
मद दस	७०३	३	३७४	ठा १० सू. ७१०, ठा ८सू ६०६
मद्य प्रमाद	२६१	१	२७१	ठा ६उ ३सू ५०२, ध अत्रि २ श्लो. ३६टी पृ ८१, पंचा १गा २३टी, अष्ट १६श्लो १टी.
मधु सिक्थ की कथा श्रौत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७२	नसू २७गा ६५ टी.

१ वाद या शास्त्रार्थ के समय अपनी जानी हुई बात को भी झूल जाना अथवा समय पर उसका याद न आना ।

विषय	श्लोक	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मध्यग्रामकी मूर्धनाएं ५४०	२	२७३	अनुसू. १२७गा ४०, डा ७सू ५६३	
१ मध्यचारी भिक्षु	४११	१	४३७ डा ४उ.३ सू ४६३	
मध्यचारी मच्छ	४१०	१	४३७ डा ४उ ३ सू ४६३	
मध्यम स्वर	५४०	२	२७१ अनुसू. १२७गा २६, डा ७सू ५६३	
मनःपर्ययज्ञान	३७५	१	३६१ डा ४उ ३सू ४६३, कर्म भा १ गा ४, न० सू १	
मनःपर्ययज्ञान का विषय क्या है ?	६८३	७	१०४ विशेषगा = १२-८१४	
मनःपर्ययज्ञान की अवधि ज्ञान से विशेषता	६१८	६	१३७ भज १उ ३सू ३७टी, तत्त्वार्थ अध्या १ सू २१	
मनःपर्ययज्ञानकी व्याख्या, भेद	१४	१	१२ डा. २३ १सू ७१	
मनःपर्यय ज्ञान के लिये आवश्यक नौ बातें	६२६	३	१७२ न० सू १७	
२ मनःपर्ययज्ञानसाकारो- पयोग	७८६	४	२६८ पग०प २६सू ३१२	
मनःपर्ययज्ञानावरणीय	३७८	१	३६४ डा ४सू ४६४, कर्म भा १गा ६	
मनःपर्यय ज्ञानी जिन	७४	१	५३ डा. ३उ. ४ सू २२०	

॥ श्री जैन सिद्धान्त श्लोक सप्रद भाग २ पृष्ठ २७३ पर मध्य ग्राम की दो बातें मूर्धनाएं श्लोकी हैं वे नर्गीत नाम्न नाम्न ग्रन्थ में ली हुई हैं । अनुयोगद्वार तथा श्यानाग सूत्र में मध्य ग्राम की मूर्धनाओं के नाम दूसरी तरह हैं । उनही भाषा इस प्रकार हैं—

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा ।

समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ कत्तमा ॥

अर्थ—उत्तरमंदा, उत्तरा, उत्तरासमा, समजाता, सुवीरा और अभिरूपा ।

१ जबल घांच घांच के पत्तों में निचा लेने वाला अभिप्रद्वारी गा ११ ।

२ दाईं द्वीप ओर सुनुओ में गेहुएमा की पंचेन्द्रिय जीवों के मनोगत भावों की जानना ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मनःपर्यय दर्शन नहीं है फिर ६८३	७	१०५	न०सू. १८टी, विशेषे गा ८१५
मनःपर्ययज्ञानी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध जानता और देखता है यह कैसे कहा ?			
मनःपर्याप्ति	४७२	२ ७८	पत्र.प १सू १२टी, भ.श. ३उ १सू १३०, प्रव द्वा २३२, कर्म भा १ गा ४६
मनःपुण्य	६२७	३ १७२	ठा ६उ ३ सू ६७६
मनःशिल्ला पृथ्वी	४६५	२ ६६	जी प्रति ३सू १०१
मनकेदसदोपसामायिकके ७६४	३	४४७	शिक्षा०
मन विनय	४६८	२ २३०	उवसू २०, भ.श. २५उ. ७ सू. ८०२, आ ७उ ३सू ५८५, घ. अधि ३श्लो ५४टी पृ. १४१
मन विनय (अप्रशस्त) के ७६१	४	२७५	उवसू २०
चारह भेद			
मनविनय (अप्रशस्त) सात ५००	२	२३१	भ.श. २५उ. ७सू ८०२, आ ७ उ ३सू ५८५, उवसू २०
मन विनय (प्रशस्त) सात ४६६	२	२३१	
मनुष्य आयुबन्धके ४ कारण १३४	१	१००	ठा ४उ ४ सू ३७३
मनुष्य के छः प्रकार	४३७	२ ४१	ठा ६उ ३ सू ४६०
मनुष्य के तीन भेद	७१	१ ५१	ठा ३उ १सू १३०, पत्र.प १सू ३७, जी.प्रति ३सू १०७
मनुष्य के तीनसौ तीन भेद ६३३	३	१७६	पत्र.प. १, उत.अ. ३६, जी.प्रति ३
मनुष्य क्षेत्र छः	४३६	२ ४१	य ३उ ३ सू ४६०
मनुष्य भव आदि ११ दुर्लभ ७७२	४	१७	भाव ह नि गा ८३ १पृ ३४१
मनुष्य भव आदि ४ अद्भोंकी ६०६	६	२६	उत.अ. ३
दुर्लभतावतानेवाली वीसगाथा			

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
मनुष्य भव की दुर्लभता के ६८० दस दृष्टान्त	३	२७१	उत्त. अ. ३ नि. गा. १६०, प्रा. व. ह. नि. गा. ८३२ पृ. ३४०	
मनुष्य संसृष्टिम के चौदह उत्पत्ति स्थान	८२६	५	१८	पत्र. ० प. १ सू. ३७, अनु. सू. १३३ पृ. १६६
मनुष्यसम्बन्धी उपसर्ग चार	२४१	१	२१६	ठा. ४ सू. ३६१, सू. य. ३ उ. १ टी
मनो गुप्ति	१२८ ख	१	६२	उत्त. अ. २४, ठा. ३ सू. २१६
मनोयोग	६५	१	६८	ठा. ३ सू. १२४, तत्त्वार्थ. सध्या. ६
मनोरथ तीन श्रावक के	८८	१	६४	ठा. ३ उ. ४ सू. २१०
मनोरथ तीन साधु के	८६	१	६४	ठा. ३ उ. ४ सू. २१०
मन्त्र दोष	८६६	५	१६५	प्रा. द्वा. ६ उ. गा. ४६८, अ. अधि. ३ उलो. २ पृ. ४०, पि. नि. गा. ८०६, पि. वि. गा. ६६, पना. १ उ. गा. १६
मन्दा अवस्था	६७८	३	२६७	ठा. १० उ. ३ सू. ७७२
मयूराण्ड और नार्थवाह की कथासम्यक्त्वमेंशंकाकेलिए	८२१	४	४५३	नवपद. गा. १८ टी. मय्यस्त्या-दि. कार. शा. अ. ३
मरण के दो भेद	५३	१	३१	उत्त. अ. १ गा. २
मरण (बाल) के चार भेद	७६८	४	२६८	अ. अ. उ. १ सू. ६१
मरण के सत्रह प्रकार	८७६	५	३८२	गम. १ उ. प्रा. द्वा. १ उ. गा. १००६
मरण भय	५३३	२	२६८	ठा. ७ उ. ३ सू. ४४०, गम. १
मरण समाहि पडण्णा	६८६	३	३५५	८०१०
मर्यादा छव्वीस बोलों की	६४३	६	२२५	उ. गा. अ. १ सू. १, भा. प्रति. ग. अधि. उलो. ३ टी. पृ. ८०
मल्लिनाथ आदि एक साथ दीक्षा लेने वाले मान	५४३	२	२७७	ठा. ७ उ. ३ सू. ४६४
मल्लिनाथ भगवान् और उन के द्वाः माथियों का पूर्वभव	५४३	२	२७७	ठा. ७ उ. ३ सू. ४६४

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मल्लिनाथ भगवान् की कथा	६००	५ ४४४	ज्ञा० अ. ८
मल्लिनाथ भगवान् के छः	८१२	४ ३८०	ज्ञा० अ. ८
मित्रराजा (संसार भावना)			
मल्लिनाथ भ० के साथ दीक्षा	५४३	२ २७८	अ. ७३ ३ सू. ५६४
लेनेवाले छः राजाओं की कथा			
मसि कर्म	७२	१ ५२	जी प्रति ३३ १ सू. १११, तन्दुल सू. १४-१५ पृ. ४०
महति'वीर (महावीर)	७७०	४ ६	जैनविद्या बोल्युम १ न १
महत्तरागार	५१६	२ २४७	आव ह अ ६ पृ. ८५ ३ टी, प्रव. द्वा ४ गा २०४
महर्द्धिक देव दस	७४३	३ ४२१	अ. १०३. ३ सू. ७६४
महाकाल निधि	६५४	३ २२१	अ. ६३ ३ सू. ६७३
महाकाली रानी	६८६	३ ३४१	अत० व. ८ अ. ३
महा कृष्णा रानी	६८६	३ ३४४	अत० व. ८ अ. ६
महाग्रह आठ	६०४	३ १२१	अ. ८३ ३ सू. ६१२
महा चन्द्र कुमार की कथा	६१०	६ ६०	वि० अ. १६
महानदियाँ चौदह	५३८-५३६	२ २७०	अ. ७३. ३ सू. ५६६
महानदियाँ चौदह	८४४	५ ४५	सम १४
महानदियाँ दसमेरुसे उत्तरमें	७५६	३ ४४१	अ. १०३. ३ सू. ७१७
महानदियाँ दसमेरुसे दक्षिणमें	७५८	३ ४४०	अ. १०३ ३ सू. ७१७
महानदियाँ सातसात	५३८-५३६	२ २७०	अ. ७३ ३ सू. ५६६
महानदियों को साधु द्वारा	३३५	१ ३४६	अ. ५३ २ सू. ४१२
एक मास में दो, तीन बार पार करने के पाँच कारण			
महानिधि नौ चक्रवर्ती की	६५४	३ २२०	अ. ६३. ३ सू. ६७३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
महानिमित्त आठ	६०५	३	१२१	टा ८५, ६०८, प्रवृत्त २५७
महानिर्ग्रन्थीय अध्ययन	८५४	५	१३०	उत्त अ २० गा. ३८-४२
की पन्द्रह गाथाएं				
महा निर्जरा और महापर्य-३६०,	१	३७४		टा ४३ १ मू. ३६७
वर्मान के पाँच पाँच बोल	३६१			
महा पञ्चस्वाराण पड़ण्णा	६८६	३	३५३	६०५०
महा पञ्चनिधि	६५४	३	२२१	टा ६३ ३ मू ६७३
महाप्रातिहार्य अरिहन्तके ७८२	४	२६०		सम ३४, स गद्दा. ६७
महाबलकुमार की कथा	६१०	६	५६	वि० अ. १७
महामोहनीय कर्म के तीस	६६०	६	३१०	दगा ६, सम ३०, उत्त. अ ३१
स्थान				गा १८ टी, आन दू. म. ३५ ६६०
महा युग्म सोलह	८७१	५	१७२	ग न. ३४३, १ मू ८४४
महाविद्वेह क्षेत्र के बत्तीस	६७१	७	४३	अनन्त. अ मू ६३-१००, लोक.
विजय				भा २ म १७
महावीर	७७०	४	४	जिनविद्या जेन्वृम १ न १.
महावीर भगवान् की चर्या	६२२	६	१६६	आना अ १ म ६३१
विषयक तेईस गाथाएं				
महावीर भगवान् की तप-	८७८	५	३८०	आना अ मू. १ म. २३. ६
श्र्याविषयक सत्रह गाथाएं				
महावीर भगवान् की वसति	८७४	५	१८२	आना अ मू. १ म २३. २
विषयक सोलह गाथाएं				
महावीर भगवान् के ग्या-	७७५	४	२३	विजे गा. १५६२ २०२, १ म.
रुद्र गणधर				११, आन दू. टिकाकी पृ. २८-३५.
				आन दू. नि. गा ४८३-६६६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
महावीरभगवान् के ११ नाम ७७०	४	३	जैनविद्या बोल्युम १ नं १
महावीरभगवान् के दस स्वप्न और उनका फल	६५७	३ २२४	भश १६८.६सू ४७६, अ १० उ ३सू ७५०
महावीरभगवान् के नौ गण ६२५	३	१७१	ठा ६उ ३सू ६८०
महावीरभगवान् के पास दीक्षित आठ राजा	५६६	३ ३	ठा ८उ.३ सू ६२१
महावीरभ० के शासनमें तीर्थ-६२४	३	१६३	ठा ६उ ३सू ६६१
ङ्करगोत्र बाँधने वाले नौ आत्मा			
महावीर स्तुति अध्ययनकी	६५५	६ २६६	सुय० अ ६
उनतीस गाथाएं			
महाव्रत की व्याख्या और उसके भेद	३१६	१ ३२१	दश अ ४, ठा ४उ १सू. ३८६, प्रवद्धा ६६गा ५५३, घ. अधि ३ श्लो. ३६-४४ पृ १२०
महाव्रत चार	१८०	१ १३५	ठा ४उ १ सू २६६
महाव्रत पाँच की पचीस भावनाएं	३१७-	१ ३२४-	} आचाथु २ चू ३अ २४सू १७६, आवह. अ. ४पृ ६६८, सम २५, प्रव द्वा ७२ गा. ६३६-६४०, घ अधि ३ श्लो. ४५टी पृ १२५
महाव्रत पाँच की पचीस भावनाएं	३२१	१ ३२६	
महाव्रत पाँच की पचीस भावनाएं	६३८	६ २१७	
महाव्रतोंकी पचीस भावनाएं ४६७	२	१८४	
महाशतक श्रावक	६८५	३ ३२७	उपा० अ. ८
महाशुक्रदेवलोकका वर्णन	८०८	४ ३२२	पग प २सू ५३
महासर्वतोभद्रतपयंत्रसहित	६८६	३ ३४५	श्रंत० व. ८अ. ७
महा सामान्य	५६	१ ४१	रत्ना परि ७ सू १५
महासिंहनिष्क्रीडिततप यंत्र ६८३	३	३४१	अत० व = अ. ४

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
महासेन कृष्णा रानी	६८६	३	३४६	भंत० व.८ अ. १०
महास्वप्न चौदह	८३०	५	२२	भ.श. १६उ. ६सू ५७८, शा. प्र. ८ सू. ६३, कल्पसू ४
महेश्वरदत्तकीकथासम्यक्त्व	८२१	४	४५६	नवपद. गा १८टी सम्यक्त्वा- धिकार
के विचिकित्सा दोषकेलिप				
मांगलिक पदार्थ आठ	५६४	३	३	उव सू. ४टी, रा०सू. १४
मांडला (ग्रासैपणा)केपाँच	३३०	१	३३६	ध अथि ३७लो. २३ टी पृ ५५, पि. नि. गा ६३५-६८, उत्तम २४
दोष				
१ माणवक निधि	६५४	३	२२२	ठा ६उ. ३ सू ६७१
माता के तीन अङ्ग	१२३	१	८७	ठा ३उ ४सू २०६
मातापितास्वामीधर्माचार्य	१२४	१	८७	ठा. ३उ १ सू १३४
काप्रत्युपकार दुःशक्य है				
मातृकाक्षर ४६ ब्राह्मीलिपि के	६६६	७	२६४	सम. ४६
२ मातृकानुयोग	७१०	३	३६२	ठा १०उ. ३ सू ७२७
माध्यस्थ भावना	२४६	१	२२८	भाषना (परिशिष्ट), क. भा. १ ७लो. ५ १-४४, ल०
मान के चार भेद और	१६०	१	१२१	पम. प. १ सू. १८८, टी ४उ ३ सू. २६३, कर्म गा. १ गा. १६
उनकी उपमाएं				
मान के दस कारण	७०३	३	३७४	ठा. १०सू. ७१०, ठा ८सू ६०६
मान के चारह नाम	७६०	४	२७५	भज १०उ ५सू ४४६
मान दोष	८६६	५	१६५	प्रव. डा ६ गा ४६०, ध अथि ३ २० २२टी पृ ४०, पि. नि. गा. १०८, पि. नि. गा ४८, पचा. १३ गा. १८

१ चरवर्ती की नौ मातृनिधियों में से एक निधि ।

२ उत्पाद, व्यय और प्रौढ्य इन तीन पदों को मातृमाद कहते हैं । इन्हें बीयादि
पदों में पद्याना मातृकानुयोग है ।

विषय	चोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मान निःसृत असत्य	७००	३ ३७१	ठा. १०७. ३सू ७४१, पत्र प ११ सू १६६, ध. अधि ३श्लो. ४१५. १२२
मानसंज्ञा	७१२	३ ३८७	ठा १०७ ३सू ७६२, भ श ७७. ८
माया का फल	५७८	३ १६	ठा ८७ ३सू ६६७
माया की आलोचना के	५७७	३ १६	ठा ८७ ३सू ६६७
आठ स्थान			
माया की आलोचना न	५७८	३ १८	ठा ८७ ३सू ६६७
करने के आठ स्थान			
माया के चार भेद और	१६१	१ १२१	पत्र. प १४सू १८८, ठा ४७ २
उनकी उपमाएं			सू २६३, कर्म. भा १गा. २०
माया के चौदह नाम	८३६	५ ३१	सम ६२
माया के सत्रह नाम	८८०	५ ३८५	सम ६२
माया दोष	८६६	५ १६५	प्रव द्वा ६७गा ६६७, ध अधि ३ श्लो २२५ ४०, पि नि गा ४०८, पि वि. गा. ६८. पंचा १३गा १८
माया निःसृत असत्य	७००	३ ३७१	ठा. १०७. ७ ४१, पत्र प ११सू १६६, ध अधि ३श्लो ४१५ १२२
१ मायाप्रत्यया क्रिया	२६३	१ २७८	ठा २७ १ सू ६०, ठा ६७ २सू. ४१६, पत्र प २२ सू २८४
मायावी भावना	४०३	१ ४३०	उत्त अ ३६गा. २६३, प्रव द्वा ७३ ना ६४३
माया शून्य	१०४	१ ७३	मम ३, ठा ३७ ३सू १८२, ध. अधि ३श्लो २७ती ५६
माया संज्ञा	७१२	३ ३८७	ठा १०७. ३सू ७६२, भ श ७७. ८

१ छल एव माया द्वारा दूसरों को ठगने के व्यापार से लगने वाली क्रिया ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मारणान्तिक समुद्घात	५४८	२	२८८	पत्र प. ३६, डा ७३ ३५६=६, द्रव्यलो. म. ३५ १२४, प्रव द्वा. २३१
मार्ग की कथा औत्पत्तिकी	८४६	६	२६७	न० मू २७ गा. ६ ३टी
बुद्धि पर				
मार्गणा चौदह और उसके	६३	३	१६६	नव गा. ३४, कर्म भा ४ गा ६
अवान्तर भेद				
मार्गणा स्थान के अवान्तर	८४६	५	५७	कर्म भा ४ गा १०-१४
भेद वासठ				
मार्गणा स्थान चौदह	८४६	५	५५	कर्म भा. ४ गा. ६-१४
१ मार्ग दृपण	४०६	१	४३३	उत्त अ ३६ गा २६४टी, प्रव द्वा. ७३ गा ६४६
२ मार्गविप्रतिपत्ति	४०६	१	४३३	उत्त अ ३६ गा २६४टी, प्रव द्वा. ७३ गा ६४६
मार्दव (मृदुता)	३५०	१	३६५	डा ५ मू ३६६, प्रव द्वा ६६ गा ५४६, अ अति ३५ लो ४६५ १२७
मार्दव (मृदुता)	६६१	३	२३३	नव. गा २३, मम १०, गा भा. १ प्रव २० मंग भा ३ गा
३ मालापहूत टोप	८६५	५	१६३	प्रव द्वा. ६७ गा. ५६६, अ. माधि. ३ ५ लो. २-३ टी पृ ३८, पि नि गा ६३, पि वि गा. ४, पंचा १३ गा. ६
४ माम कल्प	६६३	३	२४०	पत्रा १७ गा ३६-३७

१ ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य रूप सत्य भर्म में तथा उसके पालन करने वाले महात्माओं में स्वरूपित रूप का लक्षण । २ ज्ञान दर्शन चारित्र्य रूप सत्य भर्म को छोड़ कर विपरीत मार्ग की अज्ञानता । ३ ऐसी अवस्था जहाँ भ्रामार्गों से होकर न पहुँच सकें वहाँ पंजापर सत्येतेकर गा नि मार्गी आदि लगाकर साहाय्य देना । ४ महात्माओं के जिन महात्माओं से या जिनों द्वारा वे सत्य के बिना एक नाम से अविज्ञान पर न उदग्ना मानकर व्यवहार करते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मास वारह	८०२	४	३०३	सूर्य प्रा १० प्रा. प्रा. १६
१ मासिक अनुद्घातिक	३२५	१	३३३	ठा. ५७ २ सू ४३३
२ मासिक उद्घातिक	३२५	१	३३४	ठा ५७ २ सू ४३३
माहण का अर्थ क्या श्रावक ६८३	७	१२६		भ श १७ ७ सू ६२टी, भ श. २ उ ५ सू ११२टी
भी होता है ?				
माहेन्द्र देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२१	पत्र प २ सू ५३
मिच्छाकार (मिथ्याकार)	६६४	३	३५०	भ ग २५७ ७ सू ८०, ठा १० उ ३ सू ७४६, उक्त अ २६गा ३, प्रव द्वा १०१गा ७६०
समाचारी				
३ मितवादी	५६१-	३	६२	ठा ८७ ३ सू ६०७
मिथ्यात्व आश्रव	२८६	१	२६८	ठा ५७ २ सू ४१८, सम ५
मिथ्यात्व दस	६६५	३	३६४	ठा १०७ ३ सू ७३४
मिथ्यात्व पाँच	२८८	१	२६७	ध अघि २१ लो २२टी पृ ३६, कर्म भा ४ गा ५१
मिथ्यात्व प्रतिक्रमण	३२६	१	३३८	ठा ५७ ३ सू ४६७, आव. ह अ. ४ गा. १२५०-१२५१ पृ ५६४
मिथ्या दर्शन	७७	१	५५	भ ग ८७ २ सू ३२०, ठा ३ सू १८४
४ मिथ्या दर्शन प्रत्यया	२६३	१	२७८	ठा २७. १ सू. ६०, ठा ५७ २ सू ४१६, पत्र. प २२ सू २८४
क्रिया				
मिथ्या दर्शन शून्य	१०४	१	७४	सम ३, ठा. ३७ ३ सू. १८२

१ जिम प्रायश्चित का भाग न हो यानि गुरु प्रायश्चित ।

२ जो प्रायश्चित विभाग करके दिया जाय यानि लघु प्रायश्चित ।

३ जीवों के अनन्तानन्त होने पर भी उन्हें परिमित बताने वाले अक्रियावादी ।

४ मिथ्या दर्शन अर्थात् तत्त्व में अश्रद्धान या विपरीत श्रद्धान से लगने वाली क्रिया मिथ्या दर्शन प्रत्यया क्रिया कहलाती है ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मिथ्या दृष्टि गुणस्थान	८४७	५	७२	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
मिथ्या श्रुत	८२२	५	७	न० मू. ४२, विशेष. गा. ४२७-३६
मिश्र गुणस्थान	८४७	५	७३	कर्म भा २ गा. २ व्याख्या
१ मिश्र जात दोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७गा ४१५, प्रअभि ३ श्लो २२टी पृ ३८, पि नि गा ६२, पि दि गा ३, पत्ता १३गा ४
मिश्र दर्शन	७७	१	५५	भ श ८८ २, डा ३३, ३ मू १८४
मिश्र भाषा	२६६	१	२४६	पत्र ५ १५ मू. १६१
मिश्र भाषा के दस प्रकार	६६६	३	३७०	डा १०८ ३ मू ७५१, पत्र. ५ ११ मू ५६५, प्र अवि ३ श्लो ४१ पृ १२२
२ गुंमुही अवस्था	६७८	३	२६८	डा १०३, ३ मू ७७२
मुख्य (प्रधान)	३८	१	२४	तत्त्वार्थ मध्या ४ मू ३१
मुण्ड दस	६५६	३	२३१	डा १०३ ३ मू ७५६
मुक्तावली तप यंत्र सहित	६८६	३	३४८	अंग. त ८ अ. २
मुक्ति	३५०	१	३६५	डा ५ मू ३६६, प्र. डा. ६१ गा. ४४५, प्र अभि ३ श्लो. २६ पृ १२५
मुक्ति	६६१	३	२३३	नर गा २० मम १०, गा ना १ पृ ८ अंतरभाषा
मुनि(मुणि)माहण(ब्राह्मण) ७७०	४	७		१ मिथ्या श्रोत्र्य १ न १
मुद्रिकाकीकथा र्जात्पत्तिकी ८४६	६	२७२		न. मू. २ गा. १४ टी.
बुद्धि पर				
मुहूर्त	५५१	२	२६३	१ वज. २ मू १८ व्याख्या

१ अपने और मातु के लिए मुक्त माय पराया दुष्ठा माता १०

२ हम मातृभाषी में से नहीं बनना, हम मातृ भाषी हो प्रान्त का रहना मुक्त मातृभाषी बनने से समझना दोष अपने जीवन के प्रति। जो उद्योगों हो जाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मुष्टि संकेत पञ्चक्रवाण	५८६	३	४३	आवह अ ६ नि गा १५७८, प्रव.द्वा ४ गा २००
मूढ	७५	१	५४	टा.३३४ सू २०३
* मूर्च्छना २१ तीन ग्रामों की	५४०	२	२७३	अनुसू १२७, टा ७ सू ६३, सगीत
मूर्त कर्म का अमूर्त आत्मा	५६०	३	४७	विशे अग्निमूर्तिगणधरवाद पर प्रभाव
मूल गुण	५५	१	३२	स्य अ १४ नि गा १२६, पचा ६ गा २
मूलगोत्र मात	५४२	२	२७६	टा. ७ उ ३ सू ५५१
मूल कर्म दोष	८६६	५	१६६	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, ध अ वि ३ श्लो २२ टी पृ ४०, पि नि गा ४०६, पि वि गा ६६, पचा १३ गा १६

॥ श्री जैन सिद्धान्त बोलसंग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर पङ्ज, मध्यम और गान्धार ग्रामों की जो इक्कीस मूर्च्छनाएँ कृषी त्रै वे सगीतशास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोगद्वारा तथा स्थानाग सूत्र में इन तीनों ग्रामों की मूर्च्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उन ही गाथा इस प्रकार हैं —

मग्गी कोरविश्वा हरिया, रयणी अ सारकंता य ।

छट्टी अ सारसी नाम, सुद्ध सज्जा य सत्तमा ॥३९॥

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा ।

समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा ॥४०॥

नंदी अ खुदिश्वा पुरिमा य, चरथी अ सुद्धगंधारा ।

उत्तरगंधारा वि अ, सा पंचमिश्वा ह्वह मुच्छा ॥३१॥

सुट्टुत्तरमायामा सा छट्टी सच्चो य णायवा ।

अह उत्तरायया कोडिमाय, सा सत्तमी मुच्छा ॥४२॥

अर्थ - पङ्ज ग्राम की मात मूर्च्छनाएँ—मार्गी, वारवी, हरिता, रत्ना, सारकंता, मारसी और सुद्धपङ्ज । मध्यम ग्राम की मात मूर्च्छनाएँ—उत्तरमंदा, रत्ना, उत्तरा, उत्तरासमा, समकंता, सुवीरा और अभिरूवा । गान्धार ग्राम की मात मूर्च्छनाएँ—नंदी, खुदिश, पुरिमा, सुद्धगान्धारा, उत्तरगान्धारा, सुट्टुत्तरमायामा और उत्तराययकोटिमा ।

विषय	श्लोक	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ मूल बीज	४६६	२	६६	दश अ. ४
मूल सूत्र चार	२०४	१	१६३	
मूलातिशयअरिहन्तदेवके	१२६	ख	१	६६ स्या. का १ टी.
मृगचर्या पर नौ गाथाएं	६६४	७	१८६	
मृगापुत्र (अन्यन्वभावना) =	१२	४	३८२	उत्त अ १६
मृगापुत्र की कथा	६१०	६	२६	वि अ १
मृगावती	८७५	५	३०३	भाव ह नि गा १०४८, दश अ १ नि गा. ७६
मृदुकारुणिकी विकथा	५३२	२	२६७	ठा. ७ उ ३ सू ६६६
मृपावाद चार प्रकार का	२७०	१	२४६	दश अ ८ दूसरे महात्म की टीका
मृपावाद दस प्रकार का	७००	३	३७१	ध. १० सू ७४१, पत्र प. ११ सू १६४, ध. अभि ३ ग्लो ४१ टी पृ १२२
मृपावाद विरमण रूप द्वितीय	३१८	१	३२५	मम २५, भाचा पु. २ सू ३ अ. २४ सू १७६, भाव ह अ ४ पृ ६६८, प्रव. द्वा ७२ गा ६३६-४०, ध. अभि ३ ग्लो. ४४ टी पृ. १२४
महाव्रत की पाँच भावनाएं				
मृपावाद विरमण व्रत	७६४	४	२८१	आगम.
निश्चय और व्यवहार से				
मेघ की उपमा से ४ दानी पुरुष	१७५	१	१२६	ठा ४३.४ सू ३४६
मेघ की उपमा से पुरुष चार	१७३	१	१२७	ठा ४३.४ सू ३४६
मेघकुमार की कथा	६००	५	४२६	आ अ. १
मेघ की उपमा से वक्ता	१७४	क	१२८	ठा ४३.४ सू ३४७
और दाता के चार प्रकार				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मेघ के अन्य चार भेद	१७४ख	१२६	ठा.४ उ४ सू.३४६
मेघ चार	१७२	१२७	ठा.४ उ४ सू.३४६
मेतार्यस्वामी का परलोक	७७५	४ ५६	विशे.गा.१६४६-१६७१
के विषयमें शंका समाधान			
मेरुपर्वत के चार वन	२७३	१ २५१	ठा.४ उ.२ सू.३०२
मेरुपर्वत के सोलह नाम	८७०	५ १७१	सम.१६, ज.व.क्त.४ सू.१०६
मैत्री, प्रमोद, करुणा और	४६७	२ १८८	
माध्यस्थ्य भावनाएं			
मैत्री भावना	२४६	१ २२४	भावना, च, क. भा. २ श्लो. ३५-४२
मैथुन विरमण रूप चतुर्थ	३२०	१ ३२७	सम. २५, प्राचा श्रु. २ च. ३ श्र. २४
महाव्रत की पाँच भावनाएं			सू. १७६, प्रव. द्वा. ७२ गा. ६३६, आव. ह. अ. ४ पृ. ६६८, घ. अ. वि. ३ श्लो. ४६ टी. पृ. १२५
मैथुन विरमण व्रत निश्चय	७६४	४ २८२	आगम
और व्यवहार से			
मैथुन संज्ञा	१४२	१ १०५	ठा.४ सू.३५६, प्रव. द्वा. १४५
मैथुन सज्ञा	७१२	३ ३८७	ठा. १० उ. ३ सू. ७६२, भ. श. ७ उ. ८
मैथुन संज्ञा चार कारणों से	१४५	१ १०६	ठा. ८ उ. ४ सू. ३६६, प्रव. द्वा. १४५
उत्पन्न होती है			गा. ६२३
मोक्ष	४६७	२ २०६	
मोक्ष के पन्द्रह अंग	८५०	५ १२१	पच. व. गा. १५६-१६३
मोक्षगामी आत्मा के	१४ स्वम. ८२६	५ २०	भ. ग. १६ उ. ६ सू. ५८०
मोक्षतत्त्वकानों द्वारा	से वर्णन	६३३ ३ १६८	न. व. गा. ३२-३३
मोक्षप्राप्ति के काल	स्वभाव	२७६ १ २५७	आगम, कारण, सम्मति भा. ५
आदि पाँच कारण			काण्ड उगा ५३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मोक्षमार्गके चार भेद	१६५	१	१५३	उत्त अ २० गा २
मोक्षमार्गके तीन भेद	७६	१	५७	उत्त अ २० गा ३०, तत्त्वार्थ, अध्या १
मोक्षमार्गपर १५ गाथाएं	६६४	७	१६५	
मोक्षविषयक गणधरप्रभास	७७५	४	६०	विशे. गा १६७२-२०२४
स्वामीका शंका समाधान				
मोसली प्रतिलेखना	४४६	२	५४	टा. ६ मू ४०३, उत्त. अ. २६ गा. २६
मोह (सम्प्लोही भावना)	४०६	१	४३३	उत्त अ. ३६, प्रव द्वा ७३ गा. ६ ४७
मोह गर्भित वैराग्य	६०	१	६५	कभा २ श्लो. ११८
मोह जनन	४०६	१	४३३	उत्त. अ ३६, प्रव द्वा. ७३ गा. ६ ४६
मोहनीय कर्म और उसके भेद	५६०	३	६२	कर्म भा १ गा. १३-२२, तत्त्वार्थ अध्या ८, पत्र प २ मू २६३
मोहनीय कर्मकी २८ प्रकृति	६५१	६	२८४	कर्म भा १ गा १३-२२, मम २८
मोहनीय कर्मकी व्याख्या, भेद २८	१	१६		टा. २ मू १०६, कर्म भा. १ गा. १३
मोहनीय कर्म के ५३ नाम	१००८	७	२७६	तम ४२, अच १२८ मू ४५०
मोहनीय कर्मबोधनेके लक्षणकारण	४४२	२	४४	अज. = ब ६ मू २५१
मोहनीय कर्मबोधने के प्रकार	५६०	३	६३	अज ८८ मू ३५१, पत्र प. २३ मू २६२
और उसका अनुभाव				
मोहनीय कर्मवेदताहुआ जीव	६८३	७	१२०	उप. मू ३६
क्या मोहनीय कर्म बोधता है				
या वेदनीय कर्म बोधता है?				
मौखिक	४४४	२	४८	अ ६३ मू ४२६, मू (जी.) ३६
१ गौन चरक	३५३	१	३६८	टा ४३.१ मू. ३६६
मौख्यपुत्र गणधरका देवोंके	७७५	४	५०	विशे गा १८६ १८८६
विषय में शंका समाधान				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
यतनाकेविषयमें३ गाथा	६६४	७	१६५
यतिधर्म दस	३५०, १	३६४,	{ ठा ५सू ३६६, घ. अधि. ३, श्लो ४६४ १२७, प्रव द्वा ६६ गा. ५५४
	३५१	३६६	
यंति धर्म दस	६६१	३	२३३ नव गा २३, सम १०, शा. भा. १ प्रक ८
यथाख्यात चारित्र	३१५	१	३२१ ठा ५उ २सू ४२८ अनुसू १४४, विशे गा १२६०-१२८०
यथाच्छन्द साधु	३४७	१	३६३ आव ह अ. ३ नि गा ११०७-८ पृ ८१६, प्रव द्वा २गा १२१-१२३
यथाप्रवृत्तिकरण	७८	१	५५ आव म. गा १०६-१०७ टी, विशे गा. १२०२-१२१८, प्रव द्वा २२४ गा १३०२ टी, कर्म भा २गा २व्याख्या, आगम, विशे गा. ७
यथालन्दिक कल्प	५२२	२	२५६
यथा सूक्ष्म कुशील	३६६	१	३८४ ठा ५उ ३ सू ४४५
यथा सूक्ष्म निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८६ ठा ५उ, ३ सू ४४५
यथा सूक्ष्म पुलाक	३६७	१	३८२ ठा ५सू ४४५, भ. श २५उ ६
यथा सूक्ष्म वकुश	३६८	१	३८३ ठा ५उ ३ सू. ४४५
यम	६०१	३	११५ यो, रा यो
याथातथ्य स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४४ भ. श १६उ ६सू ५७७
यावत्तावत् संख्यान	७२१	३	४४५ ठा १०उ ३सू ७४७
युग संवत्सर की व्याख्या और उसके पाँच भेद	४००	१	४२५ ठा ५उ ३सू ४६०, प्रव द्वा १४२ गा ६०१
युग नारकी जीवोंमें	५६०	२	३४१ भ. श १८उ ४ सू ६२४
योग आश्रव	२८६	१	२६६ ठा. ५उ २सू ४१८, सम. ५

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
योग का चौथाअङ्ग (प्राणा-५५६ याम)	२	३०२		यो प्रता ५, रा यो, हृद, पी प, गीता अध्याय ६
योग का साधन करने के लिये नियमित आहार विहारादि	५५६	२	३१४	गीता अध्याय ६
योग की व्याख्या और भेद	६५	१	६८	ठा. ३ मू. १२४, तत्त्वार्थ अध्या १
योग के कुछ आसन	५५६	२	३१०	पी०प०
योग के पन्द्रह भेद	८५५	५	१३८	पत्र प १६ मू २०२, भ सा. २४३. १
योग दर्शन	४६७	२	१४६	
योग दोष	८६६	५	१६५	प्रव. द्वा. ६७ गा ५६८, ध. अधि ३ ज्जो २२ पृ. ४०, पि. नि गा. ४०६, पि. वि गा. ४६, पचा. १३ गा १६
योग नारकियों में	५६०	२	३३७	जी० प्रति ३ मू ८८
योग परिणाम	७४६	३	४२७	ठा १०३ ३ मू ७१३, पत्र प. १३
योग प्रतिक्रमण	३२६	१	३३८	ठा ४८. ३ मू ४६७, माप. ६ म. ४ गा. १२४०-१२४१ पृ. ४६४
योगमार्गणा और उसके भेद	८४६	५	५८	कर्म. भा ४ गा १०
१ योगवाहिता	७६३	३	४४५	ठा १०३. ३ मू ७४८
योग संग्रह वक्तिस	६६५	७	१६	वक्तिस ३१ गा. २० टी., प्रज्ञ धर्म- ज्ञा (४ मू २० टी.) मग. ३२, मार. ह म ४ गा. १२ ७४-७८ पृ (६३)
योग सत्य	६६८	३	३७०	ठा. १० मू ७४९, पत्र. प. ११ मू. १६४, ध अधि ज्जो ६१ टी. पृ. १२१
योगांग याठ	६०१	३	११४	यो०, रा० यो०
योगात्मा	५६३	३	६६	मन १२७ १० मू. ४६७

१ भद्रकर्म बोधने का कारण, सामाजिक कर्तव्यों पर से राग दृष्टा कर शर्मों का पट्टन पाउन करना, इसने शुभ कर्मों का बन्ध होता है ।

विषय बोल भाग पृष्ठ प्रमाण

योनि की व्याख्या और भेद	६७	१	४७	तत्त्वार्थ अध्या २, ठा. ३सू. १४०
योनि संग्रह आठ	६१०	३	१२७	दश०अ ४, ठा. ८उ ३सू. ५६५

र

रज्जु की व्याख्या	८४५	५	४६	प्रव द्वा १४३ गा ६१७, तत्त्वार्थ- अध्या १सू ८ टिप्पणी
१ रज्जु संख्यान	७२१	३	४०४	ठा १०उ ३सू. ७४७
रति अरति पर छःगाथाएं	६६४	४	१६०	
रत्न चौदह चक्रवर्ती के	८२८	५	२०	सम १४
रत्नावली आदि तप काली	६८६	३	३३५	अत०व ८
आदि रानियों के				
रत्नावली तप यंत्र सहित	६८६	३	३३६	अत०व ८
रस गौरव (गारव)	६८	१	७०	ठा ३उ ४ सू २१४
रस घात	८४७	५	७८	कर्म भा २गा २
रसना के संयम पर ७ गाथा	६६४	७	२१२	
रसनेन्द्रिय	३६२	१	४१८	पन्नप १५उ १सू १६१, ठा ५ उ ३सू ४४३, जैप्र.
रस नौ काव्य के	६३६	३	२०७	अनु०सू १२६गा. ६३-८१
रस परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १०उ ३सू ७१३टी., पन्नप १३सू १८४-१८५
रस परित्याग	४७६	२	८६	उत्त.अ ३०गा ८, ठा ६सू ५११, उव.मू १६, प्रव द्वा ६गा २७०
रस परित्याग के नौ भेद	६३३	३	१८६	उव.मू १६, भश २५उ ७सू ०२
रस पाँच	५१५	१	४३६	ठा ५उ १ सू ३६०

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
रस वाणिज्जे कर्मादान	८६०	५ १४५	उपाध १सू ७, भग. ८३ ५६. ३३०, भाव ह म ६५ ८२८
राग द्वैपविषयकदसगाथाएं ६६४-७		२३३	
राग बन्धन	२६	१ १८	ठा २३, ४ सु ६६
राज कथा चार	१५२	१ ११०	ठा. ४३ २ सू २८२
राजकथासे होनेवाली हानि	१५२	१ १११	ठा ४३ २ सू २८२ टी.
१ राजपिण्ड कल्प	६६२	३ २३७	पंचा १७गा २०-२२
राजमती रहनेमि की कथा ७७१	४	१३	दश० म २ टी.
राजमती सती	८७५	५ २४६	दश. म ३, वि. प. ३८, उक्त म. २२, राजमती (पुत्र्य श्रीजनादिदानार्थ)
राजा की ऋद्धि के तीन भेद १०१	१	७१	ठा ३३ ६ सू. २१४
राजा के अन्तःपुरमें माधुके ३३८	१	३४८	ठा ४३.२ सू ५१५
प्रवेश करनेके पाँच कारण			
राजाभियोग आगार	४५७	२ ५८	उपा म १ग. ८, भाव. ह म. ६५ ८१०, भ. म. ११, २०० २०५ ४९
२ राजावग्रह	३३४	१ ३४४	भग. १६३ २ सू ६६७, प्रा. ३. ८६ गा ६८१, आना भू. २ सू १ म. ७७ २ म १६२
राजा श्रेणिक के कोप का	७८०	४ २५३	भा. ह. गा १३६, सु. पी. ६६ नि. गा १७२
दृष्टान्न भाव अननुयोग पर			
रात्रिभोजनत्यागपर प्रमाथा ६६४ ७		१८४	

१ राजा कर्मा के अक्षयमति न लेने के विषय में बताया गया गा. १० या आचार (निर्णय)

२ अन्तर्गत आदिमात्रा विधाने क्षेत्र के राजाओं के उक्त क्षेत्र में रहते हुए गा. १०
के भाव की भा. ३ लेना राजावग्रह है ।

विषय	बोल, भाग	पृष्ठ	प्रमाण
राम कृष्णा रानी	६८६	३ ३४६	अतः ११८ सू =
रायप्पसेणी (राजप्रश्नीय)	७७७	४ २१६	
सूत्र का संक्षिप्त विषयवर्णन			
राशिकी व्याख्या और भेद	७८१	१ ४	सम १४६ ।
१ राशि संख्यान	७२१	३ ४०४	ठा १०३३ सू ७४७ ।
राष्ट्र धर्म	६६२	३ ३६१	ठा. १०३. ३ सू ७६०
रुचक प्रदेश आठ	६०७	३ १२५	आचाश्रु १अ १उ १निगा ६२ टी, आगम, भश ८उ ६सू ३४७ टी, ठा ८उ ३ सू ६२४
२ रुचि	१२७	१ ६१	भश १उ ६सू ७६ ।
रुचि दस	६६३	३ ३६२	उत्त. अ २८गा १६-२७
रूप मद	७०३	३ ३७४	ठा १०सू ७१०, ठा ८सू ६०६
३ रूप सत्य	६६८	३ ३६६	ठा १०सू ७४१, पत्रप ११ सू १६५, ध अधि ३श्लो ४१ ती पृ १२१
रूपस्थ धर्मध्यान	२२४	१ २०८	ज्ञान प्रक ३६, यो प्रका ६, कभा २ श्लो २०६
रूपातीत धर्मध्यान	२२४	१ २०६	ज्ञान प्रक ४०, यो प्रका १०, कभा २श्लो २०६ ।
रूपी	६०	१ ४२	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू. ४
रूपी अजीव के ५३० भेद	६३३	३ १८१	पत्रप १सू ३, उत्त अ. ३६गा ४६
रूपी के दो भेद	६१	१ ४२	भश १२उ ६सू ४५०

१ धान आदि के ढेर का नाप करवा तोल कर परिमाण जानना ।

२ श्रद्धा पूर्वक ज्ञान दर्शन चारित्र्य आदि के सेवन की इच्छा ।

३ वास्तविकता न होने पर भी रूप विशेष को धारण करने से किसी व्यक्ति या वस्तु को उस नाम से पुकारना रूपसत्य है ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
रेचक प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो.प्रका.६श्लो.६, रा.यो., ६४.
रेचकादिप्राणायामकाफल	५५६	२	३०४	यो.प्रका.६श्लो.१०-१२
रेवती	६२४	३	१७०	टा.६उ.३ सू.६६१
रैवत या ध्रैवत स्वर	५४७	२	२७१	अनुसू.१२७गा.२६, टा.७सू.१६३
रोग उत्पन्नहोने के नौ स्थान	६३७	३	२०५	टा.६उ.३ सू.६६७
१ रोचक समकित	८०	१	५८	विशे.गा.२६७६ द्रव्यलो.स.३ श्लो.६६६, ध.अधि.७श्लो.२२ टी.पू.३६, आ.प्र.गा.४६
रोहक की औत्पत्तिकी	६४६	६	२४३	न.सू.२७ गा.६४
बुद्धि के चौदह दृष्टान्त				
रोहगुप्तनापकच्छेनिहवका	५६१	२	३७१	विशे.गा.२४६१-२४७०
त्रैराशिकमत समाधान सहित				
रौद्रध्यान	२१५	१	१६४	सम.४, प्रव.द्वा.६गा.२७१टी., दत्त.म.१नि.गा.४८ टी.
रौद्रध्यान के चार प्रकार	२१८	१	१६८	टा.८३.१सू.२४७
रौद्र ध्यान के चार लक्षण	२१६	१	२००	टा.४३.१सू.२४७, म.ज.२६३ ७ सू.८०३, भाव.द.म.४-पा.१ जन.गा.२६पृ.५६०
रौद्र रस	६३६	३	२०६	अनुसू.१२६गा.७०-७१

ल

लक्ष्मणाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१४५	उत्तम.१ध.७, न.न.८३.१सू. ३३०, भाव.द.म.६पृ.८२८
लक्षण स्त्रीव्याख्या व भेद	६२	१	४३	न्यायटी.प्रका.१

१ जिस समाप्ति के होने पर जीव मरगुटन में गिरिं रुति रता है किन्तु मान-
रत नहीं कर पाता वह रोचक समकित है ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लक्षण दस श्रावक के	६८४	३	२६२ भश २३ सू १०७
१ लक्षण दोष	७२२	३	४०८ ठा १०३ सू ७४३
लक्षण पन्द्रह विनीत के	८५२	५	१२५ उत्तम ११गा १०-१३
लक्षणसंवत्सर की व्याख्या	४००	१	४२७ ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा
और उसके पाँच भेद			१४२ गा ६०१
लक्षण सत्रह श्रावक के	८८३	५	३६२ ध अधि २श्लो. २२टी पृ ४६
लक्षणाभास की व्याख्या	१२०	१	८४ न्यायदी. प्रका १
और भेद			
२ लगण्डशायी	३५६	१	३७३ ठा ५उ १ सू ३६६
लघुसर्वतोभद्रतपयंत्रसहित	६८६	३	३४५ श्रंत व ८अ. ६
लघुसिंहक्रीड़ातपयंत्रसहित	६८६	३	३४१ श्रंत व ८ अ ३
लघुसिंह निष्क्रीडित तप	६८६	३	३४१ श्रंत व ८ अ. ३
लज्जादान	७६८	३	४५१ ठा १०उ ३सू ७४५
लब्धि दस	६५८	३	२३० भश ८उ २ सू ३२०
लब्धि पुलाक	३६६	१	३८० ठा ५उ ३सू ४४५, भश. २५
			उ ६सू ७५१ टी.
लब्धि प्रत्यय वैक्रिय शरीर	३८६	१	४१३ पत्र प २१सू २६७, ठा ५उ १
			सू. ३६५, कर्म भा १गा ३३
लब्धि भावेन्द्रिय	२५	१	१७ तत्त्वार्थ अध्या २सू १८
लब्धि मद	७०३	३	३७४ ठा १०सू ७१०, ठा ८सू ६०६
लब्धियाँ अठाईस	६५४	६	२८६ प्रव द्वा २७०गा १४६२-१६०८
लयन पुण्य	६२७	३	१७२ ठा. ६उ ३ सू. ६७६

१ वाद का एक दोष, इसका अन्यासि, अतिव्याप्ति और असम्भव तीन भेद हैं ।

२ दु सम्भित या बाकी लकड़ी की तरह कुबड़ा होकर मस्तक और कोहनी को जमीन पर लगाते हुए एवं पीठ से जमीन को स्पर्श न करते हुए सोने वाला साधु ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लव (७स्तोक का एक लव)	५५१	२	२६३	जंज. २सू. १८
लवणसमुद्रमें चन्द्रसूर्यादि	७६६	४	३००	सूर्य प्रा १६सू १००
ज्योतिषी देवों की संख्या				
लाघव	३५०	१	३६५	ठा. ५सू ३६६, प अवि ३६०. ४६पृ १२७, प्रव द्वा ६६गा. ६५५
लान्तकदेवलोक का वर्णन	८०८	४	३२२	पग प २सू. ६३
लाभान्तराय	३८८	१	४१०	कर्म भा. १गा. १०, पग प २३
लिंगकुशील	३६६	१	३८४	ठा ६३. ३सू. ८४६
लिंग तीन समकित के	८१	१	५६	प्रव द्वा १४८गा ६२६
लिंग पुलाक	३६७	१	३८२	ठा. ५सू १४१, भा. २५३ ६
लित्त दोष (दायक दोष का एक भेद)	६३३	३	२४७	प्रव द्वा ६७ गा. ६८८पृ १५८, मिनिगा ६२०, १ अवि २२लो २०६पृ ४१, पन्ती. १३गा २६
लिपियाँ अठारह	८८६	५	४०१	पग प. १ सू ३७, गग. १८
* लूत्त चक्र	३५२	१	३६७	ठा ६३ १सू २५१
* लूत्ताहार	३५६	१	३७१	ठा ६३ १सू ३५१
लेवालेवेणं आगार (आयं-५८८)	५८८	३	४२	आगार अ ६पृ ८४१, प्रा. ३. ३ गा २०६
लेख का)				
लेश्या का स्वरूप समझाने के लिए दो दृष्टान्त	४७१	२	७४	कर्म भा ६ प. ३३ आगार, भा ४ पृ ३६
लेश्या छः	४७१	२	७०	भा. १३ २ द्वा. ३ १, पग प १७, कर्म. भा ७गा. १३३गा १७. ३३, आगार भा. ४पृ १ ४ ६४सू योग ३८लो २८६-३८२

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लेश्या नारकी जीवों में	५६०	२	३२१ जी प्रति ३सू.८८, प्रव द्वा १७८
लेश्या परिणाम	७४६	३	४२७ टा १०८ ३सू ७१३, पत्र १ १३
लेश्या मार्गणा और भेद	८४६	५	५८ कर्म भा ४ गा. १३
लोक का नक्शा	८४५	५	५३
लोककानक्शावतानेकीविधि	८४५	५	४८ प्रव द्वा १४३ गा. ६०६-६०७
लोक का सस्थान	८४५	५	४७ तत्त्वार्थ. अध्या ३सू ६, प्रव द्वा १४३ गा. ६०६
लोक की व्याख्या और भेद	६५	१	४५ लोक भा २ स १२, स श ११ उ १०सू ४२०
लोककीव्यवस्था ४ प्रकारसे	२६७	१	२४७ टा ४ उ. २ सू २८६
लोक के भेद	८४५	५	४६ तत्त्वार्थ. अध्या ३ सू. ६ टी
लोक चौदह राज्जुपरिमाण	८४५	५	४५ प्रव द्वा १४३ गा ६०२-६१७, तत्त्वार्थ अध्या. ३सू ६ टी, भ ग. ४ उ ६ सू २६, भ ग. १३ उ ४ सू ४७६-४८०
लोक निराकृत साध्य धर्म	५४६	२	२६१ रत्ना परि ६सू ४४
विशेषण पक्षाभास			
१ लोकपाल	७२६	३	४१६ तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४
लोक भावना	८१२	६	३७० शा भा २ प्रक ११, भावना ज्ञान. प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ४७३, तत्त्वार्थ. अध्या ६ सू ७
लोक में अन्धकार कितने कारणों से होता है?	६१८	६	१५६ टा ४ उ ३ सू ३२४

१ गीमा (नरदह) की रक्षा करने वाले देव लोकपाल कहलाते हैं।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ लोल प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२ २५१	उत्त अ २६गा २७
लौकान्तिक देव आठ और	६१५	३ १३२	भ श ६उ ५सू २४३, ठा ८उ ३
उनके विमान			सू ६२३
लौकान्तिक देव नौ	६४५	३ २१७	ठा ६उ ३सू ६८४
लौकिक फल के लिए यज्ञ	८१८	६ १४६	भ श २उ ५सू १०७, आद्ध प्रति
यज्ञिणी की पूजा करने में			(रत्नशेखरसूरिकृतविवरण) पृ
क्या दोष है ?			३३, ध अघि २श्लो २२पृ ३६

व

वक्खार पर्वतदससीतामहा	७५५	३ ४३६	ठा १०उ. ३सू ७६८
नदी के दोनों तटों पर स्थित			
वक्खार पर्वत दस सीतोदा	७५६	३ ४३६	ठा १०उ ३सू ७६८
महानदी के दोनों तटों पर स्थित			
वक्तव्य अवक्तव्य	४२४	२ १०	आगम, उत्त अ ३६१
वक्तव्यता	४२७	२ २६	अनु सू ७०
वचनकेदसदोष सामायिकके	७६५	३ ४४८	शिक्षा.
वचन के सोलह भेद	८६६	५ १७०	पत्र प ११सू १७३, आचा. ध्रु २चू १अ १३ उ १
वचन गुप्ति	१२८ख	१ ६२	उत्त. अ २४, ठा. ३उ १सू १२६
वचन पुण्य	६२७	३ १७२	ठा ६उ ३ सू ६७६
वचनयोग	६५	१ ६८	ठा ३सू १२४, तत्त्वार्थ अध्या ६
वचन विकल्प सात	५५४	२ २६५	ठा ७उ ३ सू ५८४
वचन विनय	४६८	२ २३०	उवसू २०, भ श २५उ ७ सू. ८०२, ठा. ७उ ३सू ५८५, ध. अघि ३श्लो ५४ टी पृ ४१

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
वन्दना के वत्तीस दोष	६६६ ७ ३८	आव ह गा १२०७-१२११ पृ. ४८३, वृत्त ३गा ४४७१-६४, प्रव द्वा २गा १६०-१७३
वन्दना योग्य समय के पाँच बोल	३४६ १ ३६४	आव ह अ ३निगा, ११६६ पृ ४८१, प्रव द्वा २गा १२६
‘वमनक्रिये हुए को ग्रहण न करना’ विषय पर छः गाथाएँ	६६४ ७ १८६	
१ वय स्थविर	६१ १ ६६	ठा ३३ ३सू १६६
वरदत्त कुमार की कथा	६१० ६ ६०	वि अ २०
वर्गणा आठ	६१७ ३ १३४	विशे गा ६३१-६३७
वर्ग तप	४७७ २ ८८	उत्त० अ ३० गा १०
वर्ग वर्ग तप	४७७ २ ८८	उत्त अ ३० गा ११
वर्ग वर्ग संख्यान	७२१ ३ ४०६	ठा १०३ ३ सू ७८७
वर्ग संख्यान	७२१ ३ ४०६	ठा १०३ ३ सू ७४७
वर्ण नारकी जीवों का	५६० २ ३३६	जी प्रति ३सू ८७
वर्ण परिणाम	७५० ३ ४३३	ठा. १०३ ३सू ७१३, पत्र १ १३
वर्ण पाँच	४१४ १ ४३६	ठा ५३ १ सू ३६०
वर्ण संज्वलनतादिनय चार	२३७ १ २१७	दगा द ४
वर्णादि के भेद से स्त्रियों का स्वर भेद	५४० २ २७५	अनु सू १२७ गा ६४, ठा ७ उ ३सू ५४३
वर्तमान अवसर्पिणी के कुल- करों की भार्याओं के नाम	५०६ २ २३८	सम १६७, ठा ७३ ३सू ५६६
वर्तमान श्वसर्पिणी के चौबीस तीर्थङ्कर	६२६ ६ १७७	सम १६७ आव ह नि गा. २०६- ३६०, आव स गा २३१-३८६, स. ज, प्रव द्वा ७ मे ६६

विषय	बाल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वर्तमान अवमर्षिणी के मान कुलकर	५०८	२	२३७	टा.७७ ३ मू. ४४६, मम. १४७, अ. भा. २७.२६२
वर्धमान (महावीर)	७७०	४	३	अन विम बोल्म १११
१ वर्धमान अवधिज्ञान	४२८	२	२७	टा. ६८.३ मू. ८२६, नं. मू. १२
वर्धमान पर्यंत मात	५३७	२	२७०	टा. ७७ ३ मू. ४४६, मम. ७
बलन्मरण	७६८	४	२६८	मम. २७.१ मू. ६१
बलन्मरण	८७६	५	३८३	मम. १७, मम. डा. १४७ मा. १००६
बलय तीन	११५	१	८१	टा. ३३.१ मू. २२४
अवशार्तमरण	८७६	५	३८३	मम. १७, मम. डा. १४७ मा. १००६
अवमट्ट मरण	७६८	४	२६८	मम. २७.१ मू. ६१
वसति के नौ भेद	६२३	६	१७०	मा. १० मू. २७.१ म. २३.२
वसति परिकर्मापघात	६६८	३	२५५	टा. १०८.३ मू. ७३८
वसुमती (चन्द्रनद्यात्ता)	८७५	५	१६७	मा. ७ नि. मा. १००-४२१, वि. १११०, न. ३०.
वस्तु का लक्षण	४६७	२	१८२	
वस्तु के स्वपर चतुष्टय के चार भेद	२१०	१	१८८	व्यासक म. २०, मना परि. ८ म. १४ टी.
वस्तुत्व गुण	४२५	२	१६	मामन प्रमाण, म. २० ११ म. २
+ वस्तु दोष	७२२	३	४१०	टा. १०३ ३ मू. ७४३
+ वस्तु दोष	७२३	३	४११	टा. १०८.३ मू. ७४३

१ गुण अवमर्षियों के कर्मों जो आश्रित अवशेष रहता जाता है।

२ दोष निराश्रित या निराश्रित माने जाने पर विधि के सम्बन्ध इन्हीं के समान हैं।

३ कर्म अवमर्षियों के कर्मों के समान हैं।

+ वस्तु दोष दोष के दोषों को वस्तु कहते हैं। वस्तु के दोष वस्तु दोष कहते हैं।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वस्तु श्रुत	६०१	६ ५	कर्म भा १ गा ७
वस्तु समास श्रुत	६०१	६ ५	कर्म भा. १ गा ७
वस्त्र के पाँच भेद	३७४	१ ३८६	ठा ५७ ३ सू. ४४६
वस्त्र पुण्य	६२७	३ १७२	ठा ६७ ३ सू. ६७६
चह्निदशा सूत्र के १२ अ० ७७७, ४ २३४,			} निर्यावत्तिका सूत्र
का संचिप्त विषय वर्णन	३८४	१ ४०५	
चाक् कौत्कुच्य	४०२	१ ४२६	उत्त अ ३६ गा २६ १, प्रव. द्वा ७३
चागतिशय	१२६ख	१ ६७	स्या का १ टी.
वाचना	३८१	१ ३६८	ठा ५७ ३ सू ४६४
वाचना के चार अपात्र	२०७	१ २८५	ठा ४७ ३ सू ३२६
वाचना के चार पात्र	२०६	१ २८५	ठा. ४७ ३ सू ३२६
वाचना देने के पाँच बोल	३८२	१ ३६८	ठा. ५७ ३ सू ४६८
१ वाचना सम्पदा	५७४	३ १४	दशा द ४, ठा ८७ ३ सू. ६०१
वाणी के पैतीस अतिशय	६७६	७ ७१	सम ३६ टी, रा सू ४ टी, उव. सू. १० टी.
२ वात्सल्य दर्शनाचार	५६६	३ ८	पत्र ०१ १ सू ३७ गा. १२८, उत्त. अ २८ गा ३१
वाद के दस दोष	७२२	३ ४०६	ठा १०७ ३ सू ७४३
वादी के चार भेद	१६१	१ १४४	भ श ३०७ १ सू ८२४ टी, आचा अ १७ १ सू ३ टी, सूय अ. १२
वादी चार	१६२	१ १४६	आचा अ १७ १ सू ६
३ वामन संस्थान	४६८	२ ६८	ठा. ६ सू ४६६, कर्म भा १ गा. ४०

१ गणि की एक सम्पदा, जिद्यों को शास्त्र पढाने की योग्यता ।

२ अपने धर्म से तथा स्वधर्मियो से प्रेम रखना । ३ जिग जरीर मे ज्ञाती, पेट पीठ आदि अवयव पूरे हों किन्तु हाथ पैर आदि अवयव छोटे हों ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
विगत मिश्रितासत्यामृषा	६६६	३ ३७०	ठा १०सू ७४१, पत्र १ ११सू. १६६, घ अग्नि ३श्लो ४१पृ १२०
विगय दस	७०६	३ ३८२	आवह अ ६गा १६०१ पृ ८६३
विगय नौ	६३०	३ १७५	ठा ६८ ३सू-६७४, आवह अ ६गा १६०१ पृ. ८६३ टी.
विग्रहगति नारकी जीवों की	५६०	२ ३४०	भश १४८ १सू ६०२
१ विचिकित्सा	२८५	१ २६५	उपा अ. १सू ७, आवह अ ६
विच्छिन्न बोल दस	६८२	३ २६२	विशे० गा २६६३
विजयकेविषयमें ८गाथाएं	६६४	७ १६८	
विजय वत्तीस	६७१	७ ४३	जं वज ४सू ६३-१०२, लोक भा २ स १७
विज्ञ (जीव का एक नाम)	१३०	१ ६८	भश २८.१ सू ८८
विणीया (वैनयिकी) बुद्धि	२०१	१ १५६	नसू २६गा ६१, ठा. ४सू. ३६४
विदेह, विदेहदिन्न (महावीर)	७७०	४ ४	जैनविद्याबोल्थुम १ न १
विद्यमान्पदार्थ की अनु- पलब्धि के इकीस कारण	६१४	६ ७१	विशे गा. १६८३ टी
२ विद्या दोष	८६६	५ १६५	प्रवद्वा ६७गा ५६८, घ अग्नि ३ श्लो ०२टी. पृ ४०, पि नि गा ४०६, पि वि गा ६६, पचा. १३गा १६
३ विद्याधर	४३८	२ ४३	ठा ६सू ४६१, पत्र १ १सू. ३७
विद्युत्कुमारोंकेदसअधिपति	७३४	३ ४१८	भश. ३८८ स १६६

१ आगम तथा युक्ति संगत क्रिया विषय में फल के प्रति संदेह करना।

२ स्त्री रूप देवता अविष्टित जप होमादि से सिद्ध होने वाली विद्या का प्रयोग परके आहारादि लेना। ३ श्रैताञ्च पर्वत अविचारी प्रज्ञति आदि विद्याओं को धारण करने वाले विशिष्ट शक्ति सम्पन्न व्यक्ति।

विषय	बौल भाग पृष्ठ	प्रमाण
विनय	४७८ २ ८६	उपसू २०, उल्लस ३०गा.३०, प्रवदा.ईगा २७१,टा.ईसू.५११
विनय के तेरह भेद	८१३ ४ ३६१	दश.स्र ६ उ १नि गा ३०८- ३२६,प्रवदा.ईईगा.४६०-६१
विनय के चानन भेद	१००६ ७ २७२	पवदा ६६गा ६४१,म.स्रधि ३ श्लो ४४पृ १४१
विनय के मूल भेद सात और १३४ अवान्तर भेद	६३३ ३ १६३	उपसू २०, म न २४ उ.७ सू ८०२
विनय के विषयमें ११ गाथाएं	६६४ ७ १६५	
विनय के सात भेद	४६८ २ २२६	उपसू २०, म न २४ उ ७ सू ८०२, टा उ उ ३सू ४८४.म. स्रधि ३ श्लो ४४टी पृ.४१
विनय प्रतिपत्तिके ४ प्रकार	०३४ १ २१६	दश.२.६
विनय प्रतिपत्ति चार	२२६ १ २१३	दश.२.६
विनयवार्दी की व्याख्या और उसके वचीग भेद	१६१ १ १४७	म न ३० उ.१ सू.८० ४टी., नारा.पु १अ १उ १सू ३टी, सूय सु.१म १०
विनय शृद्ध प्रत्याख्यान	३२८ १ ३३७	उपसू २०, म न २४ उ.७ सू ८०२
विनय समाधि अध्ययन की चौदास गाथाएं	६३३ ६ २०१	दश.स्र ३.२
विनय समाधिसंकीर्णगाथा	७३५ ५ १२७	दश.स्र ३.३
विनय समाधिसंकीर्णगाथा	७३७ ५ ३७७	दश.स्र ३.३
विनय समाधिसंकीर्णगाथा	७३७ २ २६३	दश.स्र ३.३
विनय समाधि के चार भेद	७३७ २ २६३	दश.स्र ३.३
विनय समाधि के चार भेद	७३७ २ २६४	दश.स्र ३.३

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ विनयाचार	५६८	३ ६	ध अधि १श्लो. १६टी पृ १८
विनीत के पन्द्रह लक्षण	८५२	५ १२५	उत्तउ ११गा १०-१३
२ विपन्न पद नाम	७१६	३ ३६६	अनुसू १३०
विपरीत स्वप्न दर्शन	४२१	१ ४४५	भ श १६उ ६ सू. ५७७
विपर्यय	१२१	१ ८६	रत्ना परि १, न्यायप्र ऋध्या. ३
विपाक विचय धर्मध्यान	२२०	१ २०४	ठा ४उ १सू २४७
विपाकसूत्र की बीस कथाएं १०	६	२६	वि
विपाक सूत्र के दोनों श्रुत-७७६	४	२१३	
स्कन्धों का संक्षिप्त विषयवर्णन			
विपुलमति मनःपर्ययज्ञान	१४	१ १२	ठा २उ. १सू ६७१
विपुलमति लब्धि	६५४	६ २६१	प्रव द्वा २७० गा १४६२
विप्रुहौषधिलब्धि	६५४	६ २६०	प्रव द्वा २७० गा १४६२
विभंगज्ञान साकारोपयोग ७८६	४	२६८	पन्न प २६सू ३१२
विभंगज्ञान सात	५५८	२ ३०१	ठा ७उ ३सू ५४२
विभक्तियाँ आठ	५६५	३ १०५	सि कारकप्रकरण, अनुसू १२८, ठा ८उ ३ सू ६०६
विमान दस बारह देवलोक ७४४	३	४२१	ठा १०उ ३सू ७६६
के दस इन्द्रों के			
विमानों के तीन आधार ११४	१ ८१		ठा ३उ ३ सू १८०
विरसाहार	३५६	१ ३७१	ठा ४उ. १ सू ३६६
विराधना की व्याख्या, भेद ८७	१ ६३		मम ३
विरुद्ध हेत्वाभाम	७२२	३ ४१०	ठा १०उ. ३सू ७४३टी
विरुद्धोपलब्धि हेतुके ७भेद ५५५	२ २६६		रत्ना परि. ३सू ८३-६२

१ ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानदाता गुरु का विनय रत्ना विनयाचार है ।

२ विवक्षित वस्तु में जो धर्म है उसमें विपरीत धर्म बनाने वाला पद ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
विशेष दोष	५६४	३	१०३	प्र.मी. मन्वा. १भा. १सू. ३३
विवाद के लक्ष्य प्रकार	४६३	२	१०३	टा. ६उ. ३ सू. ५१२
विचिक्तचर्या की १६ गाथा	८६१	५	१४७	दश. नृ. २
विविधगुण विशिष्ट श्रावक ८३	७	११४	उप. म. ४१	
अन्त समय आलोचना प्रति- क्रमण कर संधारा पूर्वक काल कर कहाँ उत्पन्न होते हैं?				
विविध गुण सम्पन्न अन-	६८३	७	११५	उप. म. ४१
गार महान्मा इस भवकी स्थिति पूरी कर कहाँ उत्पन्न होते हैं?				
विवृतयोनि	६७	१	४८	मन्वार्थ मन्वा. २, टा. ३ सू. १४०
विशेष	४१	१	२६	मन्वा. परि. ४ सू. १, २, ३, ४, ५, ६
विशेषण चाईस धर्म के	६१६	६	१५६	५ भा. १. ३ मन्वा. २, ३ टी. सु. १
विशेषण १६ द्रव्यावयव के ८७२	५	१७६	वि. ग. ८४१-४७, उप. म. १३	
विशेष दोष दस	७२३	३	४१०	टा. १०३. ३ सू. ७४३
विशुद्धि दस	६६६	३	२५७	टा. १-३ उप. म. ३३८
विश्राम चार	१८७	१	१४१	टा. ४३३ सू. ३१४
विश्राम चार श्रावक के	१८८	१	१४२	टा. ४३३ सू. ३१४
विष परिणाम लक्ष्य	४८७	२	१००	टा. ४३३ सू. ४३३
विष भक्षण परमा	७६८	४	२६६	मन्वा. २. १ सू. २१
विषय तेषम पांच उन्दिमोके ६२६	६	१७५	उप. म. ४१, ३३०, ४४३, ४४६, ५१५, ५३३ उप. म. २६३, ५, ५५५ १-२ मन्वार्थ मन्वा. २ सू. २१	
विषय प्रमाद	२६१	१	२७२	टा. ४३ सू. २०२, ५ भा. १ मन्वा. ३६३ सू. २०२, ५ भा. १ मन्वा. २ टी. १-२ मन्वा. १ टी. मन्वा. १ व-
विषय कुमार का दृष्टान्त ८२१	४	४८५	वि. ग. ८४१-४७, उप. म. १३	
सम्यक्त्व की प्रभावना केलिये				

विषय बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
विसंभोगीकरणेके नौस्थान ६३२	३ १७६ ठा ६३ ३ सू ६६१
विस वाणिज्जे कर्मादान ८६०	५ १४५ उपा.अ. १मू ७, भ.श.८उ. ५सू. ३३०, आव ह अ ६ पृ ८२८
विस्तार नरकावासों का	५६० २ ३३६ जी.प्रति ३सू ८४
विस्तार रुचि	६६३ ३ ३६३ उत अ २८ गा. २४
विहरमान वीस	६०३ ६ ८ त्रिलोक, विहर, ठा. ८सू ६३७
विहायोगति के सत्रह भेद	८२२ ५ ३८६ पत्र प १६ सू २०५
वीर कृष्णा रानी	६८६ ३ ३४५ अंत व. ८ अ ७
वीर रस	६३६ ३ २०७ अनु.सू १२६गा ६४-६६
वीरस्तुति अ०की २६गाथा ६५५	६ २६६ सूय अ ६
१ वीरासनिक	३५७ १ ३७२ ठा ६७ १सू ३६६
२ वीर्याचार	३२४ १ ३३३ ठा. ६७ २सू ४३२, ध अधि ३ श्लो ४४ पृ १४०
वीर्यात्मा	५६३ ३ ६६ भग १२ उ १०सू ४६७
वीर्यान्तराय के तीन भेद	३८८ १ ४११ कर्म भा १गा ६२, पत्र प २३
वृत्त की कथा औत्पत्तिकी	६४६ ६ २५७ नसू. २७ गा ६३ टी
वृद्धि पर	
वृत्त संस्थान	४६६ २ ६६ भश २६उ ३सू ७२४, पत्र प. १
वृत्तिकान्तार आगार	४५५ २ ५६ उपा अ. १मू ८, आव ह अ. ६पृ. ८१०, ध अधि २श्लो २२पृ ४१
वृद्धि छः प्रकार की	४२५ २ २४ आगन.
वृषभ स्वर	५४० २ २७१ अनुसू १२७गा २६, ठा ७सू ६६६

१ पैर जमीन पर रख कर सिंहासन पर बैठे हुए पुरुष के नाँचे से सिंहासन निकाल लेने पर जो अवस्था रहती है उस अवस्था से बैठने वाला साधु ।

२ धर्म कार्यों में यथाशक्ति मन वचन काया द्वारा प्रवृत्ति करना वीर्याचार है ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण.
वेसालिय(महावीर)	७७० ४ ६	जैनविद्या बोल्यूस १ न १
वैकुर्विक देह लब्धि	६५४ ६ २६७	प्रव.द्वा २७० गा १४६५
वैक्रिय काययोग	५४७ २ २८६	भ.ज २५७ १सू ७१६, कर्म भा. ४गा २५, द्रव्यलो स ३पृ ३५८
वैक्रिय मिश्रकाययोग	५४७ २ २८७	भ.ज २५७ १सू ७१६, कर्म भा. ४गा २४, द्रव्यलो स ३पृ ३५८
वैक्रिय शरीर	३८६ १ ४१३	ठा. ५७ १ सू ३६५, पत्र.प. २१ सू-२६७, कर्म भा १गा ३३
वैक्रियशरीरबंधननामकर्म	३६० १ ४१६	कर्म भा १गा ३५, प्रव द्वा २१६
वैक्रिय समुद्घात	५४८ २ २८६	पत्र प ३६सू ३३१, ठा ७७ ३सू ५८६, द्रव्यलो स ३ पृ. १२८, प्रव द्वा २३१ गा. १३११
वैदारिणी (वेयारणिघा) क्रिया	२६५ १ २८१	ठा २३ १सू ६०, ठा ५७ २सू. ८१६, आव ह अ ४पृ ६१३
वैदिक दर्शनों की सत्रह वातों से परस्पर तुलना	४६७ २ २१४	
वैनयिकी (विणीया) बुद्धि	२०१ १ १५६	न०सू. २६, ठा ८७ ४सू. ३६८
वैभाविक गुण	५५ १ ३३	द्रव्य.त अध्या १००लो ८
वैमानिक इन्द्रों के दस विमान	७४४ ३ ४२१	ठा १०३ ३ सू. ७६६
वैमानिक देवों के छव्वीस	६४४ ६ २२७	पत्र प १सू ३८, उत्त अ. ३६गा. २०७-२१४, भ.ज ८७ १सू ३१०
भेद		
वैमानिक देवों के दस इन्द्र	७४१ ३ ४२०	ठा १०३ २सू ७६६
वैयधिकरण्य दोष	५६४ ३ १०३	प्र.सी.अध्या १आ १सू ३३
वैयावृत्त्य	४७८ २ ८६	उचसू २०, उत्त य ३० गा ३०, प्रव द्वा ६गा २७१, ठा ६सू ५११

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	ममाण
वैयाचृत्य के दस बोल	३६०	१	३७४	टा १ उ १ मु ३२७
वैयाचृत्य के दस बोल	३६१	१	३७४	टा. १ उ १ मु. ३२७
वैयाचृत्य के दस भेद	६३३	३	१६५	उपमु २०, मज. २५३ उमु ८०२
वैयाचृत्य दस	७०७	३	३८२	मज. २१३ उमु ८०२
वैराग्य की व्याख्या और भेद	६०	१	६५	कभा २८०, ११२-११६
वैराग्य पर बारह गाथाएं	६६४	७	२२८	
वैशेषिक दर्शन	४६७	२	१४४	
वैश्रमणकुमारकी कथा	६१०	६	५६	वि अ १६
* वैदानस मरण	७६८	४	२६६	मज २३१ मु ६१
* वैहायस मरण	८७६	५	३८४	मज १७, पा डा १४ उभा. १००३
व्यक्तस्त्रीगीरण परकी पृथ्वी	७७५	४	३६	विं गी १६८-१७१, १७६
आदि भूतों के अस्मिन्त्वनिपयमें				
शंका और उमका समाधान				
१ व्यञ्जनाचार	५६८	३	६	मजवि. १७०, १८०-१८१ मु १८
व्यञ्जनावग्रह	५८	१	४०	मज २८, मजि मा १ मा २-६
व्यतिकर दोष	५६४	३	१०४	मजी मा का १ मा १ मु ३१
व्यतिक्रम	२४४	१	२२१	वि वि मा १८२, मज वि. ३७० ५३ टी ११२५
व्यन्तर देव शाठ	६१४	३	१३०	{ मजप म् १००, मजप २ म् (३) ४६, मा ८३, २ मु ६४६, श्री. मजि. ३ मु १२१ }
व्यन्तर देवों का स्थान और	६१४	३	१३१	
उनकी स्थिति				
व्यन्तर देवों के उन्द्र	६१४	३	१३१	जो. प्रति ३ मु १२१
व्यय	६४	१	४५	मजपि कथा. ६ मु २०

१. ये जैन वेदों के अन्तर्गत हैं जो कि वेदों के अन्तर्गत नहीं हैं।
 २. इनमें से कुछ वेदों के अन्तर्गत हैं जो कि वेदों के अन्तर्गत नहीं हैं।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
१ व्यवशमित वचन	४५६ २ ६२	ठा.६३ ३सू.६२७, प्रव.द्वा.२३६ गा.१३२१, घृ.(जी.) व.६
व्यवसाय की व्याख्या, भेद ८५	१ ६२	ठा ३३३ सू.१८६
व्यवसाय सभा	३६७ १ ४२२	ठा ६३३ सू.४७२
व्यवहार	३६ १ २५	विशे.गा.३६८६, द्रव्य.त.अध्या.८
व्यवहार और निश्चय पर दो गाथाएं	६६४ ७ १६३	
व्यवहार नय और उसके दो भेद	५६२ २ ४१५	अनुसू.१६२ गा.१३७, द्रव्य.त. अध्या.६५७ १३
व्यवहार नय के असद्भूत, असद्भूत आदि भेद	५६२ २ ४२४	द्रव्य.त. अध्या.७
व्यवहार पाँच	३६३ १ ३७५	ठा ६सू.४२१, मश.८३ ८सू. ३४०, व्यव.पीठिकाभाष्य गा.१-२.
व्यवहार भाषा	२६६ १ २४६	पत्र १११सू.१६१
व्यवहार भाषा के वारह भेद ७८८	४ २७२	पत्र १११सू.१६६
व्यवहार राशि	६ १ ८	आगम.
व्यवहार राशि	४२५ २ २१	आगम
व्यवहार संख्यान	७२१ ३ ४०४	ठा १०३ ३सू.७४७
व्यवहार सत्य	६६८ ३ ३६६	ठा १०३ ३सू.७४१, पत्र १११सू. १६६, ध.अधि.३५७ ४१पृ.१२१
व्यवहार सम्यक्त्व	१० १ ६	कर्म भा.१गा.१६, प्रव.द्वा.१४६ गा.६४२टी
व्यवहार सूत्र का विषय वर्णन २०५	१ १८२	
व्यसन सात	६१८ ६ १५५	गौ.कु, ज्ञा.अ.१८ सू.१३७, घृ. उ१ गा.६४०

१ एक वक्त जान्त हुए कलह को फिर से उभाड़ने वाले वचन कहता ।

विषय	बाल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र के इक- ७७६	४	१३८		
नालीम शतक्रोंका विषयवर्णन				
व्याधि चार	२६५	१	२४७	डा. ४३ ४ मू ३४३
१ व्युत्सर्ग	४७८	२	८६	उपमू २०, उत्तम १० गा. ३०, प्रम १६ गा. २७१, डा. ६ मू ६११
व्युत्सर्ग तप के भेद, प्रभेद	६३३	३	१६६	उपमू २०, म. न. २७३, ७ मू ८०४
व्युत्सर्ग सात	५५७	२	३००	डा. मू. २०
२ व्युद्ग्राहित	७५	१	५४	डा. १३, ४ मू २०१
व्रत कच्चा	६६२	३	२३६	पत्रा १७ गा. २६-२८
व्रत धारण न करने वाले के ६१८	६	१४४		पत्रा ८ मू, ७ गा. १०७०-१०७१
निये भी क्या प्रतिक्रमण करना आवश्यक है?				४६८, पत्रा ५ (अदिना मू ५)
व्रतधारी नियोज्य विधिपूर्वक ६८३	७	११७		डा. मू ४१
काल कर कहीं उपासना होता है?				
ब्राह्मण रम	६३६	३	२०६	मनु मू १२४ गा. १२-१३

श

शंका (समर्पितका अतिचार) २८५	१	२६५	उपमू. १ मू १, गा. ६ मू १५८-१६०	
शंका प्रमाद प्रतिज्ञेखना	५२१	२	२५१	उपमू २६ गा. २०
शंख शीर्ष पोग्वली श्रावक	६२४	३	१६४	डा. मू ६०१, म. न. १४३१
शंख निधि	६५४	३	२२२	डा. ४३ ३ मू ६४३
शब्द कुमार की कथा	६१०	६	३६	वि. म. ४
शक्रन्ट की सेना तथा सेना-५४१	२	२७३		डा. ७३ १ मू ४८२
पति सात				

१ म. न. १०१२ म. प. १२२०। यह भाष्य, उक्त ना का भेद है।

२ उपमू ४५१। नियोज्य विधिपूर्वक समाप्त उपासना से विशेषतः प्रमाणित प्रमाणित है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शत सहस्र की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२८२	नसू २७गा ६५ टी
शनैश्वर संवत्सर	४००	१	४२८	ठा. ५३ ३सू ४६०, प्रवद्वा १४२
१ शवल दोष इक्कीस	६१३	६	६८	दशा. द २, सम २१
शब्द के दस प्रकार	७१३	३	३८८	ठा १०३ ३सू ७०५
शब्द नय	५६२	२	४१७	अनुसू १५२, रत्ना परि ७सू ३२
शब्द परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १०३ ३सू ७१३, पक्ष प. १३ सू १८४-१८५
शम्भ के साहस का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५२	आवह. नि गा १३४, धृ पीठिका नि गा १७२
२ शम्भूकावर्त्ता गोचरी	४४६	२	५२	ठा ६३ ३सू ५१४, उत्तम ३० गा १६, प्रवद्वा ६७गा ७४५, ध अधि ३श्लो २२ टी पृ ३७
शयन पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ६३ ३सू ६७६
शय्यातर पिण्ड कल्प	६६२	३	२३७	पचा १७ गा १७-१६
शय्यादाता अवग्रह	३३४	१	३४५	भश १६३ २सू ५७६, प्रवद्वा ८६गा ६८-६८४, आचा. धु २चू १म ७३ २सू १६२
शरट (गिरगिट)की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६२	नंसू २७गा ६३ टी
शरीर, आत्मा की भिन्नता	४६६	२	१०७	रासू ६३-७७
विषयक परदेशी राजा के छः प्रश्न				
शरीर की व्याख्या और उसके भेद	३८६	१	४१२	ठा. ५३. १सू ३६५, पत्र प २१सू २६७, कर्म भा १गा ३३

१ जिन कार्यों से चारित्र्य की निर्मलता नष्ट हो जाती है उन्हें शवलदोष कहते हैं।

२ नख के आवर्त की तरह घूम (गोल) गति वाली गोचरी।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शरीर के मन्त्रह द्वार	८८१	५	३८५	पृ. १०२ के आधार से
शरीर पर्याप्त	४७२	२	७७	पृ. १३०, पृ. १३१, भा. ३३ १ पृ. १३०, पृ. २३२ भा १३१७, कर्म भा. १ भा. २६
शरीर चक्रण	३६६	१	३८०	भा. ३३, पृ. १३१, भा. ३३ ३१ पृ. ७२१ टी
शरीर सम्पदा	५७४	३	१३	भा. २६, पृ. ३८३, भा. ३३
शरीरानुगत वायु	४६३	१	४३८	भा. ३३, पृ. १३१
शरीर पृथ्वी	४६५	२	६६	भा. ३३, पृ. १३१
शून्य तीन	१०४	१	७३	भा. ३३, पृ. ३३, पृ. १३२, पृ. भा. ३३, पृ. ७३
शून्य विषयक नौ गायार्प	६६४	४	२४४	
शून्य दम प्रकार का	६६६	३	३६४	भा. ३३, पृ. ७३
शून्यपादन परमा	७६८	४	२६६	भा. ३३, पृ. १३१
शून्य श्रमण	३७२	१	३८७	भा. ३३, पृ. ७३
शून्य प्राणायाम	५५६	२	३०३	भा. ३३, पृ. १३१, भा. ३३
शून्यकापिता श्रावक	६८५	३	३३२	भा. ३३
शून्य अनन्तक	४६८	२	४४२	भा. ३३, पृ. १३२
शून्यशून्यतानुयोग	७१८	३	३६४	भा. ३३, पृ. १३३
शून्य की कथार्थान्तिही	६४६	६	२७६	भा. ३३, पृ. १३३
शून्य पर				
शून्यमार्गमिवाचकप्रकारण	४२३	१	४४६	भा. ३३, पृ. १३३
शून्य व्रत चार	१८६	१	१४०	भा. ३३, पृ. १३३, भा. ३३ भा. ३३, पृ. २३३
शून्यव्रत चार	४६७	२	२०१	
शून्य शून्य के साट मूल	५८४	३	३८	भा. ३३, पृ. १३३

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शिल्प स्थावर काय	४१२	१ ४३८	ठा ५३ १सू ३६३
शिल्पाचार्य	१०३	१ ७२	रासू ७७
शिल्पार्य	७८५	४ २६६	वृउ १नि गा. ३२६३
शिवभूतिनामक ऽर्वेनिह्वय ५६१	२	३६६	विशे गा. २४५०-२६०६,
कामतशंकासमाधानसहित			ठा ७उ ३सू ६८७
शिवराजर्षि(लोकभावना)	८१२	४ ३८७	भश ११उ ६सू ४१७-४१८
शिवा सती	८७५	५ ३४६	भाव ह.अ नि गा १२८४
शीत योनि	६७	१ ४८	तत्त्वार्थ अध्या २, ठा. ३सू १४०
शीतलेश्या लब्धि	६५४	६ २६७	प्रवद्वा २७० गा १४६४
शीतोष्ण योनि	६७	१ ४८	तत्त्वार्थ अध्या २, ठा ३सू १४०
शील की नववाङ्	६२८	३ १७३	ठा ६उ ३सू ६६३, सम ६
शील की बत्तीस उपमा	६६४	७ १५	प्रग्न धर्मद्वार ४सू २७
शील के अठारह भेद	८६२	५ ४१०	सम १८, प्रवद्वा १६८ गा. १०६१
शील धर्म	१६६	१ १५५	ध अवि २श्लो २८, टी पृ ६६
शील पर सोलह गाथाएं	६६४	७ १७७	
शुक्लध्यान	२१५	१ १६६	सम ४, ठा ४ उ १ सू. २४७, आगम, क भा २श्लो २११
शुक्लध्यान के ४ आलम्बन	२२७	१ २११	ठा ४उ १सू २४७, भाव ह अ ४ ध्यानशतक गा ६६, उव सू २०
शुक्लध्यान के चार भेद	२२५	१ २०६	भाव ह अ ४ध्यानशतक गा ७७- ८२, ठा ४उ १सू २४७, ज्ञान प्रक. ४२, क भा २श्लो. २११-२१६
शुक्लध्यान के चार लिंग	२२६	१ २११	भाव ह अ. ४ ध्यानशतक गा ६० पृ. ६०६, ठा. ४ उ १सू २४७, भ.श २५ उ. ७ सू. ८०३

विषय	बाल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शुक्रध्यानी की ४ भावनाएं २२८	१	२१२	७	अ ४३, १ मू २७, आग २ म, ६ २ भासनातर गा. ८२ प ६, ०६, म. न २४३, अ मू २०३, उ मू २०
१ शुक्रध्यानी	८	१	७	म न १३३ १ मू, ४७०, अ, २ मू ३५
शुक्रनेत्रया	४७१	२	७४	आ म. २ इ गा. ३३, कर्म ना इ गा. १३
शुद्ध पृथ्वी	४६५	२	६६	श्री प्रति ३ मू १-१
शुद्धवागनुयोगकेद्रमप्रकार ६६७	३	३६५	७	अ १०३ अ मू १४४
शुद्धि पर कथा	५७८	३	३६	आ १४ म. ६ नि. गा ५० ६०
शुद्धि पांच	३२७	१	३३५	अ १२३ मू १६६
शुद्धि पाण्ड	३५४	१	३६६	अ १३१ मू ३०१
शुभकर्मवाचनेकेद्रमस्थान ७६३	३	४४४	४	अ १०३ ३ मू, ७२८
शुभदीर्घायु के तीन कारण १०७	१	७५	४	अ अ मू १२५, म न. १३६ मू २०१
शुभनामकर्म चौदह प्रकार ८३८	५	३३	५	म न. १०२ मू २२०
से भोगा जाना है				
शुभ भोग सूत्र	७६८	३	४५४	अ १०३, ३ मू, ३३१
शुभ पुरुष के चार प्रकार १६३	१	१५०	४	अ ६३, ३ मू ३११
शुभार रम	६३६	३	२०८	म न मू १२२ गा १६-६१
शुभक नानापि की कथा ६००	५	४३८	४	म. म ५
शुचि (श्रमण धर्म)	६६१	३	२३४	ना गा २३, म न. १००, आ भा १५१ २
शुचि पांच	३२७	१	३३५	अ १३, ३ मू ६४१
शुद्धा	१२७	१	६०	म न. १३६ मू ७१
शुद्धान शुद्ध प्रत्याग्यान ३२८	१	३३६	४	म न. ४६६, आ ग म म १५ २४१
शुभता (महारीर)	७७०	४	३	जैन विद्या ले मू ११ ११

विषय	बाल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रमण (समण, समन) की चार व्याख्याएं	१	१३१	दश अ. २ नि. गा १५४-१५७, अनुसू १५० गा. १२६-१३२
श्रमण की वारह उपमाएं	४	३०६	अनुसू १५० गा १३१
श्रमण के पाँच प्रकार	३७२	१ ३८७	प्रव द्वा ६४ गा ७३१
श्रमण को सर्प पर्वत आदि चारह बोलों की उपमा	१	१३१	दश अ २ नि. गा. १५४-१५७, अनुसू १५० गा १२६-१३२
श्रमण धर्म दस	६६१	३ २३	३ नव गा २३, सम १०, शा भा १ प्रक द
१ श्रमण बनीपक	३७३	१ ३८६	ठा ५३ अनुसू. ४५४
श्रमणोपासक श्रावक के तीन मनोरथ	८८	१ ६४	ठा. ३३ ४ सू २१०
श्रामण्यपूर्विका अध्ययन की व्याख्या गाथाएं	७७१	४ ११	दश अ २
श्रावक का सूत्र पढ़ना क्या शास्त्र सम्मत है ?	६१८	६ १५१	नसू ५२, सम. १४२, उक्त अ. २१ गा २, उक्त अ २२ गा ३२, शा अ १२ सू ६२, उव सू ४१, ठा ४३ ३ सू ३२१
श्रावक की आदर्श, पताका, स्थाणु, खरकण्टक से समानता	१८५	१ १३६	ठा ४३ ३ सू ३२१
श्रावक की ग्यारह पहिमाएं	७७४	४ १८	दशा द ६, सम ११
श्रावक के अणुव्रत पाँच	३००	१ २८८	श्रावक अ ६ पृ ८१७-८२६, ठा ५ सू ३८६, उपा अ. १ सू ६, ध अधि २ श्लो २३-२६ पृ ५७ ६७
श्रावक के अन्य चार प्रकार	१८५	१ १३६	ठा ४३ ३ सू ३२१
श्रावक के डक्कीस गुण	६११	६ ६१	प्रव द्वा २३६ गा १३४६-४८, ध अधि १ श्लो २० पृ २८

१ जो दाता श्रमणों का भक्त है उसका आगे प्रमाणदान की प्रशंसा कर भिक्षा लेने वाला श्रावक श्रमण बनीपक कहलाता है ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रावक के चार प्रकार	१८४	१	१३८	ठा ४३.३सू.३२१
श्रावक के चार विश्राम	१८८	१	१४२	ठा ४३.३सू.३१४
श्रावक के चार शिक्षाव्रत	१८६	१	१४०	श्रावह अ. ६पृ. ८३१-८३६, पंचा. १ गा. ७-३२
श्रावक के चौदह नियम	८३१	५	२३	जिजा., ध अधि २श्लो ३४पृ ७६
श्रावक के छः गुण	४५२	२	५६	ध०र गा ३३
श्रावक के तीन गुण व्रत	१२८क	१	६१	श्रावह अ ६पृ ८२६-८२६
श्रावक के तीन मनोरथ	८८	१	६४	ठा ३३ ४ सू २१०
श्रावक के दस लक्षण	६८४	३	२६२	भज २३.४सू १०७
श्रावक के पाँच अणुव्रत	३००	१	२८८	श्रावह अ. ६पृ ८१७-८२६, ठा ४ सू ३८६, उपा अ १सू ६, ध अधि २श्लो. २३-२६पृ. ४७ ६७
श्रावक के पाँच अभिगम	३१४	१	३१५	भज २३ ६सू १०६
श्रावक के पैंतीस गुण	६८०	७	७४	यो प्रका १श्लो ४७-४६
श्रावक के प्रत्याख्यान के उनचास भंग	१००३	७	२६७	भज ८३ ४सू ३२६
श्रावक के वारह भावव्रत निश्चय और व्यवहार से श्रावक के वारह व्रत	७६४	४	२८०	भागम
(तीन गुणव्रत)	१२८क	१	६१	श्रावह अ ६पृ ८१७-८३६, उपा. अ १सू ६, ध अधि. २श्लो. २३-४०पृ. ४३-६४, ठा ४ सू. ३८६, पंचा. १ गा ७-३२
(चार शिक्षा व्रत)	१८६	१	१४०	
(पाँच अणुव्रत)	३००	१	२८८	
श्रावक के वारह व्रत	४६७	२	२००	
श्रावक के वारह व्रतों के साठ अतिचार	३०१- ३१२	१	२६०- ३१४	उपा अ १सू ७, श्रावह अ ६ पृ ८१७, ध अधि २श्लो. ४३-४८पृ. १००-११६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रावक के सत्रह लक्षण	१८८३	५ ३६२	व.अधि २श्लो.२२ ती.पृ.४६
श्रावक के सातवें उपभोग	६४३	६ २२५	उपा अ १सू ६, अ.अधि. २श्लो.
परिभोग परिमाण व्रत में			३४ती पृ ८०, आ.प्रति.
मर्यादा के छव्वीस बोल			
श्रावकको माता पिता, भाई,	१८४	१ १३८	ठा ४उ.३सू ३२१
मित्र और सौत से उपमा			
श्रावक दस	६८५	३ २६४	उपा.अ १-१०
श्रावक भार्या का दृष्टान्त	७८०	४ २४५	भाव ह गा १३४, वृ.पीठिका
भाव अननुयोग पर			निं.गा १७२
श्रावक भार्या की पारिखा-	६१५	६ ८४	न सू २७गा ७०, आवे.ह.
मिकी बुद्धि की कथा			गा ६४६
श्रावकों के अप्पारंभा अप्प-	८६०	५ १४४	उवसू ४१, मुख्य अं. २अ. २सू ३६
परिगृह्य आदि विशेषण			
श्रुत ज्ञान	१५	१ १३	ठा २३ १सू.७१, भ.श ८४ २सू.
			३१८, कर्म भा १गा ४, नं.सू.१
श्रुतज्ञान	३७५	१ ३६०	ठा ४३ ३ सू.४६३, कर्म.भा १-
			गा ४, नसू १
श्रुतज्ञान के चौदह भेद	८२२	५ ३	नसू ८८-९९, विशेषे गा.४५४-५५२
श्रुतज्ञान के दो भेद	१६	१ १३	नसू ४४, ठा २३ १सू ७१
श्रुत ज्ञान के बीस भेद	६०१	६ ३	कर्म भा. १गा ७
श्रुतज्ञान साकारोपयोग	७८६	४ २६८	पत्र प २६ सू ३१२
श्रुतज्ञानावरणीय	३७८	१ ३६४	ठा ५सू ४६ ४, कर्म भा १गा. ३
श्रुत धर्म	१८	१ १५	ठा २४ १सू ५२
श्रुत धर्म	६६२	३ ३६१	ठा १०३ ३ सू ७६०
श्रुत धर्म के दो भेद	१६	१ १५	ठा २३.१ सू ७२

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रुत प्रत्यनीक	४४५	२	५०	भ.श.८३८ सू.३३६
श्रुत मद्	७०३	३	३७४	टा.१०सू.७१०, टा.८सू.६०६
श्रुत विनय के चार प्रकार	२३१	१	२१५	दशा०द.४
श्रुत व्यवहार	३६३	१	२७५	टा.४३ २सू.४२१, भ.श.८३८
श्रुत समाधि के चार भेद	५५३	२	२६४	दश.प्र.६३४
श्रुत सम्पदा	५७४	३	१२	दशा.द.४, टा.८३ ३सू.६०१
श्रुत सामायिक	१६०	१	१४४	विशे.गा.२६७३-२६७७
श्रुताज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पत्र प.२६सू.३१२
श्रेणिक की कथासम्यक्त्व ८२१ के उपवृंहणा आचार के लिए	४	४६५		नवपद गा.१८टी.सम्यक्त्वा- धिकार
श्रेणिक के कोप का दृष्टान्त भाव अथननुयोग पर	७८०	४	२५३	भाव ह नि.गा.१३४, वृ.पीठिका नि.गा.१७२
श्रेणिकराजाकीदसरानियाँ ६८६	३	३३३		अत व.८
श्रेणियाँ सात	५४४	२	२८२	टा.७३.३सू.६८१, भ.श.२४३ १
श्रेणी के दो भेद	५६	१	३३	कर्म भा.२गा.२, विशेष गा.१०८४- १३१३, द्वयलो स ३ग्लो ११६६- १२३४, भाव म.गा.११६-२३
श्रेणी तप	४७७	२	८७	उत्त.प्र.३०गा.१०
श्रेयांसकुमार कीसम्यक्त्व ८२१ प्राप्ति की कथा	४	४२३		नवपद गा.१२८ सम्यक्त्वा- धिकार
श्रोत्रेन्द्रिय	३६२	१	४१८	पत्र प.१५सू.१६१, टा.५३.३ सू.४४३टी., जै.प्र.
श्रृङ्खण पृथ्वी	४६५	२	६५	जी.प्रति.३ सू.१०१
श्रृङ्खणवाटरपृथ्वीके ७भेद	५४५	२	२८४	पत्र प.१सू.१४

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
श्वासोच्छ्वास पर्याप्त	४७२ २ ७७	पत्र.प १सू १२टी, भ.श ३उ १ सू १३०, प्रव.द्वा २३२ गा १३१७, कर्म भा १गा.४६
श्वावनीपक	३७३ १ ३८८	ठा.६उ ३ सू.४५४
श्वास तथा उच्छ्वास	५५१ २ २६२	जवच.२ सू १८
श्वासोच्छ्वास नारकियों का प्र६०	२ ३३७	जी.प्रति ३सू ८८

ष

पट्पुरिम नव स्फोटका प्रतिलेखना	४४८ २ ५३	ठा ६उ ३सू ६०३, उक्त.म २६ गा २५
* पड्जग्राम की सात मूर्च्छनाएं	५४० २ २७३	अनुसू १२७गा.३६, ठा.७उ ३ सू ५६३, सगीत
पड्ज स्वर	५४० २ २७१	अनुसू १२७गा २६, ठा ७सू ६६३
षाण्मासिकीभिकखु पट्टिमा ७६५	४ २८६	सम. १२, भ.श. २उ १ सू ६३ टी, दशा ६७

स

संकर दोष	५६४ ३ १०४	प्र मी अथ्या १आ १सू ३३
१ संकिय दोष	६६३ ३ २४२	प्रव द्वा ६७गा ६६८पृ १४८, पि निगा ६२०, ध अथि ३रलो- २२टी पृ ४१, पचा १३गा.२६

५ श्री जैनसिद्धान्त बोल सप्तह भाग ७ पृष्ठ २७३ पर पड्जग्राम की सात मूर्च्छ-
नाएं लक्ष्मी हैं वे सगीत शास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोग द्वार तथा स्थानाग
सूत्र में पड्जग्राम की मूर्च्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है—

मग्गी क्रोरविष्ठा हरिया, रयणी य सारकंता य ।

छट्टी य सारसी नाम, सुद्धसज्जा य सचमा ॥

अर्थ—मार्गी, कौरवी, हरिता, रत्ना, सारकाता, सारमी और शुद्ध पड्जा ।

१ आहारमें मायाकर्म आदि दोषों की शका होने पर भी उसे लेना नैकिय (अकित) दोष है।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संक्रम की व्याख्या और भेद	२५०	१	२३५	टा. ४५२, २६१, कर्म भा. २ गा १
संक्रमण कारण	५६२	३	६५	कर्म. गा २
१ संक्रामण दोष	७२२	३	४१०	टा १०३३ सू. ७४३
संक्लेश दस	७१४	३	३८८	टा १०३३ सू. ७२६
संक्षेप रुचि	६६३	३	३६३	कर्म भा. २ गा २६
२ संख्यात जीविकवनस्पति	७०	१	५०	टा ३३.१ सू १०१
संख्यादत्तिक	३५४	१	३६६	टा ५३.१ सू ३६६
संख्यान दस	७२१	३	४०४	टा १०३.३ सू. ७४७ - १
संख्या प्रमाण आठ	६१६	३	१४१	अनुसू १४६
संख्या या परिमाण	७२१	३	४०४	टा. १०३.३ सू. ७४७
जानने के दस बोल				
संख्येय के तीन भेद	६१६	३	१४४	अनु सू १४६
संगीत के आठ तथा अन्य	५४०	२	२७३	अनुसू १२७ गा १८, १९, टा ७३ सू ४४३
गुण				
संगीत के छः दोष	५४०	२	२७३	अनुसू १२७ गा १७, टा. ३३ सू ४४३
संग्रह दान	७६८	३	४५०	टा १०३.३ सू ७४७
संग्रह नय और उमके दो	५६२	२	४१४	स्वा. परि. ७ सू १३-२२, अनु. सू १४२ गा. १३७
भेद				
संग्रह परिज्ञा सम्पदा	५७४	३	१५	स्वा. १ सू. २३. ३ सू ६०१
संघ की आठ उपमाएं	६२३	३	१५६	नपीटिस गा. १-१०
संघ तीर्थ है या तीर्थद्वार	६१८	६	१३४	विजि गा १०३३-१०३७, अन २०८ सू ६८१
तीर्थ है ?				
संघ भव	६६२	३	३६१	टा १०३ सू. ७६०

१ व २ का एक दोष, प्रस्तुत विषय की दृष्टि से अग्रस्त विषय की रहना।

२ वि-२ परस्परि में संख्यात जीव हैं, जिनें जालि से लगा हुआ हूँ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संघातनामकर्म के पाँचभेद	३६१	१	४१६	कर्म भा १गा ३६, प्रव द्वा २१६
संघात श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा १गा.७
संघात समास श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा १गा.७
संज्ञा की व्याख्या और भेद	१४२	१	१०४	ठा ४उ ४सू ३६६, प्रव द्वा १४५
संज्ञा चार का अल्प बहुत्व	१४७	१	१०७	पत्र प १सू १४८
चार गति में				
संज्ञा दस	७१२	३	३८६	ठा १०उ ३सू ७५२, अश ७उ ८
संज्ञी श्रुत	८२२	५	४	नसू ४०, विशेष गा ५०४-५२६
संज्ञी	८	१	६	ठा २उ.२ सू ७६
संज्ञी के तीन भेद	८२२	५	५	नसू ४०, विशेष गा ५०४
संज्ञीमार्गणा और उसके भेद	८४६	५	६३	कर्म भा ४ गा १३
संज्वलन कपाय	१५८	१	११६	पत्र प १४सू १८८, ठा ४उ १सू २४६, कर्म भा १गा १७-१८
संठाण छः अजीव के	४६६	२	६६	अश २५उ ३सू ७२४, पत्र प १सू ४
संठाण छः जीव के	४६८	२	६७	ठा. ६सू. ४६५, कर्म भा १गा ४०
संथारग पड़ण्णा	६८६	३	३५४	दप
१ संभिन्न श्रोतो लब्धि	६५४	६	२६१	प्रव द्वा २७० गा १४६२
संभोगी को विसंभोगी	६३२	३	१७६	ठा ६उ ३सू ६६१
करने के नौ स्थान				
संभोगी साधुओं को अलग	३४५	१	३५६	ठा ५उ १सू ३६८
करने के पाँच बोल				
संयत	६६	१	५०	अश ६उ ३सू २३७
संयतासंयत	६६	१	५०	अश. ६उ ३सू २३७

विषय	घोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संयम	३५१	१	३६६	ठा. ५ सू. ३६६, प्रव. द्वा. ६६गा.
				५५४, ध. अधि. ३ श्लो ४६ टी. पृ. १२७
संयम (श्रमण धर्म)	६६१	३	२३४	नव. गा. २३, सम. १०, शा. भा. १
				प्र. क. संवरभावना
संयम आठ	५७३	३	११	तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू. ६
संयम की विराधना दस	६६६	३	२५२	म. ग. २. ५ उ. ७, ठा. १० सू. ७३३
संयम के चार प्रकार	१७६	१	१३४	ठा. ४ उ. २ सू. ३१०
संयम के सत्रह भेद	८८४	५	३६३	सम. १७, आव. द्व. अ. ४ पृ. ६५१,
				प्रव. द्वा. ६६गा. ५५६
संयम के सत्रह भेद	८८५	५	३६५	प्रव. द्वा. ६६गा. ५५५
संयम पाँच	२६८	१	२८४	ठा. ५ उ. २ सू. ४२६-४३०
संयम मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म भा. ४ गा. १२
संयोग नाम	७१६	३	३६६	अनुसू. १३०
१ संयोजना दोष	३३०	१	३३६	पि. नि. गा. ६३६-३७, ध. अधि. ३
				श्लो. ०३ पृ. ५५, उत. अ. २४ गा. १२ टी.
संयोजना प्रायश्चित्त	२४५ख	१	२२३	ठा. ४ उ. १ सू. ०६३
२ संरक्षणोपघात	६६८	३	२५७	ठा. १० उ. ३ सू. ७३८
संरम्भ	६४	१	६७	ठा. ३ उ. १ सू. १२४
संलेखना के पाँच अतिचार	३१३	१	३१४	उपा. अ. १ सू. ७, ध. अधि. २ श्लो.
				६६ टी. पृ. २३०
संवत्सर पाँच	४००	१	४२४	ठा. ५ सू. ४६०, प्रव. द्वा. १४२ गा. ६०१
संवर के बीस भेद	६०८	६	२५	{ नव. गा. २०, ठा. ५ सू. ४१८, ४२७, ठा. १० उ. ३ सू. ७०६, प्रश्ननगद्धार, सम. ५
संवर के सत्तावन भेद	१०१२	७	२८०	

१ मांडला का एक दोष, रसलोलुपता के कारण एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य के साथ संयोग करना । २ परिग्रह से निरुत्त माधु का वस्त्र पात्र तथा शरीरादि में ममत्व होना ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संवर तत्त्व के बीस और सत्तावन भेद	६३३	३	१८४
संवर दस	७१०	३	३८५ टा १०३ ३सू ७०६
संवर पाँच	२६६	१	२८५ टा.५ सू ४१८, ४२७, प्ररन. संवर द्वार ६,
संवर भावना	८१२	४	३६८, गा भा २प्रक ८, भावना, ज्ञान ३८६ प्रक २, प्रव.द्वा ६७ गा.६७२, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ७
संवृतवकुश	३६८	१	३८३ टा.६७ ३ सू ४४५
संवृत योनि	६७	१	४८
संवृत विवृत योनि	६७	१	४८
संवेग	२८३	१	२६४ ध.अधि २ श्लो २२टी पृ.४३
सवेगनीकथाकीव्याख्या, भेद	१५६	१	११४ टा ४७ २सू २८२
संशय	१२१	१	८५ रत्ना परि.२, न्यायप्र अध्या.३
संशय दोष	५६४	३	१०४ प्र.मी.अध्या १आ १ सू ३३
संशुद्ध ज्ञान दर्शनधारी	३७१	१	३८६ टा ६७ ३सू ४४६, भ.श. २४४६
अग्निहन्त जिन केवली			सू ७५१
संसक्त	३४७	१	३६२ भाव ह अ ३नि गा ११०७-११०८ पृ ६१६, प्रव.द्वा २गा ११६-१२०
संसक्त तप	४०५	१	४३२ उक्त अ ३६, प्रव.द्वा ७३गा ६४६
संसार की लवण समुद्र के साथ दस उपमा	६७६	३	२६६
संसार भावना	८१२	४	३६०, गा.भा.१ प्रक.३, भावना, ज्ञान. ३८० प्रक.२, प्रव.द्वा.६७, तत्त्वार्थ.अध्या.६

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संसार में आने वाले प्राणियों के दस भेद	७२८	३	४१५	टा. १०८. ३ सू. ७७१
संसारी	७(ख)	१	४	टा २सू. १०१, तत्त्वार्थ प्रव्या. २सू. १०
संसारी जीव के चार प्रकार	१३०	१	६७	टा ४८ २सू. ४३०, भ. श. २३. १सू. ८८
संसारी जीव के नौ प्रकार से दो दो भेद	८	१	४	
१ ससृष्ट कल्पक संस्थान छः अजीव के	३५३	१	३६८	टा ५८. १सू. ३६६
संस्थान छः जीव के	४६६	२	६६	भ. श. २५८ ३सू. ७२४, पत्र. प. १ सू. ४, जी. प्रति १
संस्थान नरकावासों का	५६०	२	३३४	टा ६सू. ८६६, कर्म भां. १गा. ४०
संस्थान नरकों में	५६०	२	३४१	जी. प्रति ३ सू. ८२
संस्थान नागकी जीवों का	५६०	२	३३७	भ. श. २५८ ३सू. ७२४
संस्थान परिणाम	७५०	३	४३३	जी. प्रति ३ सू. ८०
संस्थान विचयधर्मध्यान	२२०	१	२०४	टा १०८ ३सू. ७१३, पत्र. प. १३
संस्थान सात	५५२	२	२६३	टा ४८ १सू. २८७
संस्थानानुपूर्वी	७१७	३	३६१	टा १सू. ४७, टा ७३ ३सू. ४४८
संहनन (संघयण) छः	४७०	२	६६	अनु सू. ७१
संहनन नारकी जीवों का	५६०	२	३३७	पत्र. प. २३३ २६३, टा ६८. ३ सू. ४६८, कर्म भा. १गा ३८-३६
संहरण के अयोग्य सात	५३०	२	२६६	जी. प्रति. ३ सू. ८७
सकडाल(सहाल)पुत्रश्रावक	६८५	३	३१६	प्रव. द्वा. २६१ गा १०१६
सकाम मरण	५३	१	३१	उपा. अ. ७

१ गंसृष्ट अर्थात् स्वप्ने हुए हाथ या भाजन आदि में दिये जाने वाले आहार को ही ग्रहण करने का तात्पर्य ।

विषय	शूल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सचित्त योनि	६७	१ ४८	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू. ३३, ठा ३ उ. १ सू. १४०
सचित्ताचित्त योनि	६७	१ ४८	
सत्त्वे त्यागी का स्वरूप	६६४	७ १८८	
बताने वाली दो गाथाएँ			
सतियाँ सोलह	८७५	५ १८५- ३७५	ठा. ६ उ. ३ सू. ६६ १ टी., ज्ञा. अ. १६, त्रि. प्र. पर्व १, २, ७, ८, १०, पचा. १६ गा ३१, राज., चन्दन., भरत. गा ८-१०, भाव ह.
सतियों के लिये प्रमाण	८७६	५ ३७५	
भूत शास्त्र			
सत् असत् पक्ष द्रव्यों में	४२४	२ ६	प्रागम.
सत्ता	२५३	१ २३७	कर्म. भा. २ गा. १ व्याख्या
सत्ताईस कथा औत्पत्तिकी	६४६	६ २४२	नं सू. २७ गा. ६२-६६
बुद्धि पर			
सत्ताईस गाथा सूयगडांग	६४६	६ २३०	सूय. अ. १४
सूत्र के १४वें अध्ययन की			
सत्ताईस गाथा सूयगडांग	६४७	६ २३६	सूय अ. ५ उ. १
सूत्र के पाँचवें अ० के १ उ० की			
सत्ताईस गुण साधु के	६४५	६ २२८	सम. २७, भाव ह अ. ७ पृ. ६४६, उत्त. अ. ३१ गा १८
सत्ताईस नाम आकाश के	६४८	६ २४१	भ. श. २० उ. २ सू. ६६४
सत्ता का स्वरूप	६४	१ ४४	तत्त्वार्थ अध्या १ सू. २६
सत्ताधिकार कर्म प्रकृतियों	८४७	५ ६६	कर्म भा. २ गा. २६-३४
का गुणस्थानों में			
सत्तावन भेद संवर के	१०१२	७ २८०	नव गा २०
सत्त्व (जीव का एक नाम)	१३०	१ ६८	ठा. ४ सू. ४३०, भ. श. २ उ. १ सू. ८८

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सत्त्व गुण	४२५ २ २२	आगम
सत्य	३५१ १ ३६५	ठा ५सू ३६६, ध अवि ३श्लो ४६ टी पृ १२७, प्रव द्वा ६६गा. ४४४
सत्य (श्रमण धर्म)	६६१ ३ २३४	नव गा २३, सम १०, शा भा. १ प्रक ८
सत्य पर चौदह गाथाएं	६६४ ७ १७२	
सत्य भाषा	२६६ १ २४६	पत्र प ११सू १६१
सत्य महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१८ १ ३२५	आचाशु २चू ३अ. २४सू १७६, सम २५, आव ह अ ४पृ ६५८, प्रव द्वा. ७२गा ६३७, ध अवि. ३श्लो ४४ टी पृ १२४
सत्य वचन के दस प्रकार	६६८ ३ ३६८	अ १०८ ३सू ७४१, पत्र प ११सू. १६५, ध अवि ३श्लो. ४१टी पृ १२१
सत्य वचन में भी क्या विवेक होना चाहिए ?	६८३ ७ १०७	प्रश्न सवर द्वार २ सू २४, सूय. अ ६गा २३
सत्याख्यव्रत (स्थूल मृपा-वाद विगमण व्रत)	३०० १ २८८	आव ह. अ ६पृ ८००, ठा ५उ १सू ३८६, उपा अ. १सू. ६, ध. अवि २श्लो २६पृ ५८
सत्याख्यव्रत के पाँच अति-चार	३०२ १ २६४	उपा अ १सू ७, ध अवि २श्लो ४४पृ १०१, आव ह अ ६पृ ८२०
सत्यामृपा भाषा	२६६ १ २४६	पत्र प ११सू १६१
सत्यामृपा भाषा के दस प्रकार	६६६ ३ ३७७	ठा १०सू ७४१, पत्र. प. ११सू १६५, ध अवि ३श्लो ४१टी पृ १२२
सत्रह गाथाएं भगवानमहावीर की तपश्चर्या विषयक	८७८ ५ ३८०	आचाशु १अ ६३.४
सत्रह गाथाएं विनय समाधि अध्ययन की	८७७ ४ ३७७	दश अ ६३१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाणा
सत्रह द्वार शरीर के	८८१	५	३८५	पत्र प २१
सत्रह प्रकार का मरण	८७६	५	३८२	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा १००६
सत्रह प्रकार का संयम	८८४	५	३६३	सम १७, प्रव द्वा ६६ गा ५५६, आव ह प्र ४५ ६५१
सत्रह प्रकार का संयम	८८५	५	३६५	प्रव द्वा ६६ गा ५५५
सत्रह प्रकार की विहायोगति	८८२	५	३८६	पत्र प १६ मृ २०५
सत्रह बातें चरम शरीरी को प्राप्त होती हैं	८८६	५	३६५	ध वि अध्या = सू ४८४-४८६
सत्रह बातों की अपेक्षा अवै-	४६७	२	२२३	
दिक दर्शनों की परस्पर तुलना				
सत्रह बातों की अपेक्षा वैदिक दर्शनों की परस्पर तुलना	४६७	२	२१४	
सत्रह माया के नाम	८८०	५	३८५	सम ५२ (मोक्षनीय के ५ नामों में)
सत्रह लक्षण भाव श्राव रु के	८८३	५	३६२	व अधि २५ लो २२ टी पृ ४६
१ सदा विग्रहशीलता	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६ गा २६४, प्रव द्वा ७३ गा ६४५
सदृहणा चार	१८६	१	१४२	उत्त अ २८ गा २८, अधि २ ५ लो २२ टी पृ ४३
सद्दाल (सकडाल) पुत्र श्राव रु के	८८५	३	३१६	उपा अ ७
सनत्कुमार चक्रवर्ती	८१२	४	३८४	वि प पर्व ४ स ७
सनत्कुमार देव लोक कावर्णन	८०८	४	३२१	पत्र प २ मृ ४३
सन्तोष सुख	७६६	३	४५४	टा १० उ ३ मृ ७३७
सन्मति (महावीर)	७७०	४	८	जैन विद्या बोत्सूम १ न १

१ द्वापुर्ग भाषणा का एक भेद, हमेना लड़ाई मत्तों करते रहना, करने के बाद पश्चात्ताप न करना, दुःख के समाने पर भी प्रयत्न न होना और सदा विरोध भाव रहना ।

विषय	खोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सपर्यवसित श्रुत	८२२	५	८	नं सू ४३, विशेषे गा १३७-१४८
सप्तभंगी	५६३	२	४३५	सुयश्रु २अ.१०-१२ टी. आगम., रत्ना परि-४, स्था का. २३, सप्त.
सप्तमासिकी भिक्खुपडिमा ७६५	४	२८६		सम. १२, भ श. २७ १सू. ६३ टी, दशा द. ७
सप्त स्वर सीभर	५४०	२	२७४	अनुसू. १२७गा ४६-५०, डा. ७ उ ३ सू ५६३
सप्तदेशीअप्तदेशीके १४ खोल ८४१	५	३४		भ श ६उ. ४ सू. २३६
सभिक्खु अ०की २१ गाथा ६१६	५	१२६		दश अ. १०
सभिक्खु अ० की १६ गाथा ८६२	५	१५२		उत्त अ. १५
सप्त (सप्तकित का लक्षण)	२८३	१	२६३	ध अधि २श्लो २२टी. पृ. ४३
सप्तकित	२	१	२	प्रवद्वा. १४६गा. ६४२, तत्त्वार्थ. अध्या १, पंचा. १गा ३
सप्तकित की छः भावना	४५४	२	५८	प्रवद्वा. १४८गा ६४०, ध. अधि. २श्लो. २२टी. पृ. ४३
सप्तकित की तीन शुद्धियां	८२	१	६०	प्रवद्वा १४८गा ६३२
सप्तकित के छः आगार	४५५	२	५८	उपा अ १सू८, आव द. अ. ६पृ' ८१०, ध अधि. २श्लो २२टी पृ ४१
सप्तकित के छः स्थान	४५३	२	५७	ध अधि २श्लो २२टी. पृ. ४६, प्रवद्वा. १४८ गा. ६४१
सप्तकित के तीन लिंग	८१	१	५६	प्रवद्वा. १४८ गा. ६२६
सप्तकित के दो प्रकार से तीन भेद	८०	१	५८	त्रिणे गा २६७५, द्वायलो. स. ३ श्लो. ६६८-६७०, ध अधि २ श्लो २२ टी पृ. ३६, प्रवद्वा. १४६गा ६४३-६४४, कर्म. भा. १गा १४, प्रा. प्रगा. ४६-५०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
समकित के पाँच अतिचार	२८५	१	२६५	उपा अ १सू ७, आव.ह पृ ८१०
समकित के पाँच भूषण	२८४	१	२६४	ध अधि २श्लो २२टी पृ ४३
समकित के पाँच भेद	२८२	१	२६१	कर्म.भा १गा १५
समकित के पाँच लक्षण	२८३	१	२६३	ध अधि २श्लो २२टी पृ ४३
समचतुरस्र संस्थान	४६८	२	६७	ठा ६सू ४६६, कर्म भा १गा ४०
समपादयुता (निषद्या)	३५८	१	३७२	ठा ५सू ३६६टी, ठा ५सू ४००
समभिरूढ नय	५६२	२	४१७	अनुसू १५२गा १३६, रत्ना. परि ७सू ३६
‘समयं गोयममा पमायण’	६८४	७	१३३	उत्त अ १०
काउपदेशदेनेवाली	३७	गाथा		
समय	७३	१	५३	ठा ३उ २सू १६५
समय	५५१	२	२६२	जवत्त २सू १८
समयक्षेत्र के ३६ कुल पर्वत	६८६	७	१४४	सम ३६
समवतार	४२७	२	२७	अनुसू ७०
समवायांग सूत्र का संक्षिप्त	७७६	४	११४	
विषय वर्णन				
समवायी कारण	३५	१	२३	विशे गा २०६६
समाचारी दस	६६४	३	२४६	भश २५उ ७सू ८०१, ठा १० उ ३सू ७४६, उत्त.अ २६ गा २-७, प्रव'द्वा १०१गा ७६०
समाचार्यनुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनुसू ७१
समाधि	६०१	३	११८	यो, रा यो.
समाधि अ०की २४ गाथा	६३२	६	१६७	सूय.श्रु १अ १०
समाधिका फल	५५३	२	२६५	दशअ ६उ.४
समारम्भ	६४	१	६७	ठा ३उ १सू १२४

विषय	बाल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
समारोप कालक्षण और भेद	१२१	१	८५	रत्ना परि १, न्यायप्र. अथवा ३
समास के द्वन्द्व आदि सात भेद	७१६	३	४०१	अनुसू १३०
समिति	२२	१	१६	उत्त अ २४ गा २
समिति की व्याख्या और	३२३	१	३३०	पम ५, अ. ५ सू ४७, उत्त अ २०
उसके भेद				गा २, अ अवि ३ श्लो ४७ पृ. १३०
समुच्छिन्न क्रिया अप्रति-	२२५	१	२१०	अवि ह. अ ४ अध्यायगत रुगा. ८२.
पाती शुक्लध्यान				ठा ४३ १ सू २४७, ज्ञान. प्रक.
				४२, कभा २ श्लो २१७
समुच्छेदवादी	५६१	३	६४	ठा = उ ३ सू ६०७
समुद्धान कर्म	७६०	३	४४२	आचा. म २ उ १ नि गा १८३
समुद्घात नारकी जीवों में	५६०	२	३३८	जी प्रति ३ सू. ८८
समुद्घात सात	५४८	२	२८८	पत्र १ ३६ सू ३३१, ठा ७ सू.
				५८१, प्रवक्षा २३१ गा १३११
				१३१६, इत्यलो म ३ पृ १२४
१ समुद्देशानुज्ञाचार्य	३४१	१	३५२	व यधि ३ श्लो. १६ टी पृ १२
समुद्रपाल मुनि	८१२	४	३८५	उत्त अ. २१
समुद्रपालीय अ० की गाथाएं	७८१	४	२५५	उत्त अ. २१ गा १३-२४
समूह ग्रन्थनीक	४४५	२	५०	मश ८३ = सू ३३६
सम्पदा आठ	५७४	३	११	दशा द ६, ठा. ८३ ३ सू ६०१
सम्भोग बारह	७६६	४	२६२	निर्वा उ ५, मम १२, व्यव. म
				उ ६ भाष्य गा ४८-५०
सम्मत सत्य	६६८	३	३६८	ठा १० सू ७४१, पत्र १ ११
				१६५, अ अवि ३ श्लो ४१ पृ १

१ ध्रुव की वाचना देने वाले गुरु के न होने पर श्रुत को स्थिर परिचित करने

सम्पत्ति देने वाले आचार्य ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाणा
सम्पत्ति स्थावरकाय	४१२	१ ४३८	ठा ५७ १ सू ३६३
सम्पदा प्रतिलेखना	४४६	२ ५४	ठा ६सू ५०३, उक्त अ २६गा २६
सम्मूर्द्धिम जन्म	६६	१ ४७	तत्त्वार्थ अध्या. २सू ३२
सम्मूर्द्धिम मनुष्यों के उत्पत्ति स्थान चौदह	८२६	५ १८	पत्र प १सू ३७, अनुसू १३३
सम्मूर्द्धिम वनस्पति	४६६	२ ६६	दश अ ४ सू १
सम्मूर्द्धिम वायु	४१३	१ ४३६	ठा ५७ ३ सू ४४४
सम्गोही भावनाके प्रप्रकार	४०६	१ ४३२	उक्त अ ३६गा २६५टी, प्रव द्वा. ७३ गा ६४६
सम्यक्चारित्र	७६	१ ५७	उक्त अ २८गा ३०, तत्त्वार्थ अध्या. १
सम्यक्चारित्र	४६७	२ १८४	
सम्यक्त्व के उपबृंहणा आचार पर श्रेणिक की कथा	८२१	४ ४६५	नवपद गा १८टी सम्यक्त्वा-धिकार
सम्यक्त्व के कौत्सादोष के लिए कुशध्वज का दृष्टान्त	८२१	४ ४५५	नवपद गा. १८ टी सम्यक्त्वा-धिकार
सम्यक्त्व के चार प्रकार से दो दो भेद	१०	१ ८	प्रव द्वा १४६गा ६४२, कर्म भा. १गा. १५, तत्त्वार्थ अध्या १, पत्र प १ सू ३७, ठा २७ १सू ७०
सम्यक्त्व के जुगुप्सा दोष के लिये दुर्गन्धा का उदाहरण	८२१	४ ४५८	नवपद. गा १८ टी सम्यक्त्वा-धिकार
सम्यक्त्व के दो प्रकार से तीन भेद	८०	१ ५८	द्विशे गा. २६७५, द्रव्यलो. स श्लो ६८-७०, ध अधि. २श्लो २२टी पृ ३६, आप्र गा ४६-५०, प्रव द्वा १४६गा ६४३-६४५, कर्म भा. १ गा. १५, १७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सम्यक्त्वकेपरपापंडप्रशंसा ८२१	४	४६१	नवपद गा १८टी सम्यक्त्वा- धिकार
दोष पर सयडाल की कथा			
सम्यक्त्वके प्रभावना आ-८२१	४	४८५	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वा- धिकार
चारपरविष्णुकुमारकीकथा			
सम्यक्त्व के लिये १३ दृष्टान्त ८२१	४	४२२	नवपद ७ वां सम्यक्त्व द्वार
सम्यक्त्वकेवात्सल्य आचार ८२१	४	४८१	नवपद गा. १८टी सम्यक्त्वा- धिकार
केलिये वज्रस्वामी का दृष्टान्त			
सम्यक्त्व के विचिकित्सा ८२१	४	४५६	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वा- धिकार
दोष के लिये महेश्वरदत्त वणिक का दृष्टान्त			
सम्यक्त्व के शंका दोष के ८२१	४	४५३	नवपद गा. १८ टी सम्यक्त्वा- धिकार, ज्ञा अ ३
लिये मयूराण्ड, सार्थवाह की कथा			
सम्यक्त्व के स्थिरीकरण ८२१	४	४६६	नवपद. गा १८ टी सम्यक्त्वा- धिकार, उक्त अ. २ (कथा)
आचार के लिये आर्यापाढ़ आचार्य का दृष्टान्त			
सम्यक्त्वप्राप्तिके दसबोल ६६३	३	३६२	उक्त अ २८गा. १६-२७
सम्यक्त्व प्राप्तिके लिए ८२१	४	४३४	नवपद गा १४टी, ज्ञा अ १८
चिलाती पुत्र की कथा			
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये ८२१	४	४४६	नवपद. गा. १६ सम्यक्त्वाधिकार
धन सार्थवाह की कथा			
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये ८२१	४	४२३	नवपद गा १२८
श्रेयांसकुमार की कथा			
सम्यक्त्व भ्रष्ट होने पर ८२१	४	४४४	ज्ञा. अ. १३, नवपद गा १४
नन्द मणियार की कथा			

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सम्यक्त्व मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा १३
सम्यक्त्व सामायिक	१६०	१	१४४	विशे गा २६७३-२६७७
सम्यग्ज्ञान	७६	१	५७	उत्त अ २८, तत्त्वार्थ. अध्या. १ सू १
सम्यग्ज्ञान	४६७	२	१६८	
सम्यग्ज्ञान पर सात गाथा	६६४	७	१६०	
सम्यग्दर्शन	७७	५	५५	भ श ८ उ २ सू ३२०, अ ३ सू. १=४
सम्यग्दर्शन	७६	१	५७	उत्त अ. २८, तत्त्वार्थ. अध्या १ सू १
सम्यग्दर्शन	४६७	२	१६६	
सम्यग्दर्शन पर दस गाथा	६६४	७	१५८	
सम्यग्दर्शन सराग के दस प्रकार	६६४	३	३६४	अ १० सू. ७५१, पत्र प १ सू ३७
सम्यग्भिन्ध्यादृष्टिगुणस्थान	८४७	५	७३	कर्म भा २ गा २
सम्यक्श्रुत	८२२	५	७	न सू ४१, विशे गा ४२७ ५३६
सयहालकीकथापरपार्षद-	८२१	४	४६१	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वा-
प्रशंसा दोष के लिये				धिकार
सयोगी केवली गुणस्थान	८४७	५	८५	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
सरदहतलायसेसणया कर्मादान	८६०	५	१४६	उपा अ १ सू ७, भ श ८ उ ५ सू ३२०, आव ह अ ६ पृ ८२८
सराग सम्यग्दर्शन दस	६६४	३	३६४	अ १० सू ७५१, पत्र प १ सू ३७
सर्वअवसन्न (ओसन्ना माधु ३४७ का भेद)		१	३५८	आव ह अ ३ नि गा ११०७ पृ ५१७, प्रव द्वा २ गा १०६
सर्वचारी मच्छ	४१०	१	४३७	अ ४ उ ३ सू ४५३
सर्वदेशघाती प्रकृतियाँ	८०६	४	३४७	कर्म भा ५ गा १३, १४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सर्वप्राण भूतजीव सत्त्वकार २६८	१	२८५	७५	उ.२सू.४२६-४३०
समारंभ न करने से होने वाला पाँच प्रकारकासंयम				
सर्वप्राण भूतजीव सत्त्व के २६७	१	२८४	७५	उ.२सू.४२६-४३०
आरंभ से होने वाला पाँच प्रकार का असंयम				
सर्वबन्ध	५२	१	३०	कर्म भा १गा ३६ व्याख्या
सर्वरत्न निधि	६५४	३	२२१	उ.६उ.३सू.६७३
सर्व विरति रूप सामायिक ६८३	७	१०७		भ.श.१उ.३सू.३७ टी
वालेको पोरिसीआदिप्रत्या- ख्यानोकीक्या आवश्यकता है?				
सर्वविरतिसाधुके ३मनोरथ ८६	१	६४		उ.३उ.४सू.२१०
सर्व विरति सामायिक	१६०	१	१४४	विशे.गा २६७३-२६७७
सर्व विस्तार अनन्तक	४१८	१	४४२	उ.५उ.३सू.४६२
सर्वसमाधिप्रत्यय आगार ४८३	२	६८		भावह.अ.६पृ.८५२, प्रव.द्वा.४
(पोरिसी का आगार)				गा २०३
सर्व स्रोतचारी भिक्षु	४११	१	४३७	उ.५उ.३सू.४६३
सर्वापधि लब्धि	६५४	६	२६०	प्रव.द्वा.७० गा १४६२
सहसाकार आगार	४८३	२	६७	भावह.अ.६पृ.८५२, प्रव.द्वा.४
सहस्रारदेवलोककावर्णन ८०८	४	३२३		पत्रप.२सू.५३
सहायताविनयकेचारप्रकार २३६	१	२१७		दशा.६४
सांख्य दर्शन	४६७	२	१४४	
सांशयिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	कर्म भा ४गा ६१, घ.अधि.२
				श्लो.२२टी.पृ.३६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सांसारिकनिधिके ५ प्रकार	४०७	१	४३३	ठा ५उ ३ सू ४४८
सागरोपम	३२	१	२२	ठा २उ ४सू ६६
सागरोपम के तीन भेद	१०६	१	७८	अनु.सू १३८-१४०, प्रव. द्वा. १५६गा १७२७-१७३२
सागारियागार (एगट्टाण का आगार)	५१७	२	२४७	आव ह अ. ६पृ ८५३, प्रव. द्वा ४ गा २०४
सागारी (शय्यादाता) अवग्रह	३३४	१	३४५	भ श १६उ. २सू ५६७, प्रव. द्वा ८५ गा ६८१, आचा शु २चू १ अ. ७उ २ सू १६२
साठ नाम अहिंसा (दया) के	६२२	३	१५१	प्रश्न संवरद्वार १सू. २१
साडीकम्मे कर्मादान	८६०	५	१४४	उपा अ १सू ७, भ श ८उ. ५ सू ३३०, आव ह अ ६पृ ८२८
साहेपचीस आर्य क्षेत्र	६४२	६	२२३	प्रव. द्वा २७५गा. १५८७-६२, पत्र. प १सू ३७, वृ उ १निगा ३२६३
सात अवग्रह प्रतिमाएं	५१८	२	२४८	आचा शु २चू १अ ७उ २सू १६१
सात आगार एगट्टाण के	५१७	२	२४७	आव ह अ ६पृ ८५३, प्रव. द्वा ४
सात आगार पुरिमड्ड (दो पोरिसी) के	५१६	२	२४६	आव ह अ ६पृ ८५२, प्रव. द्वा ४ गा २०३
सात आयु भेद	५३१	२	२६६	ठा ७उ ३ सू ५६१
सात एकेंद्रियरत्नचक्रवर्ती के	५२६	२	२६५	ठा ७उ ३ सू ५५७
सात कर्मों का एकमाथ बन्ध होने पर बन्ध के विशेष कारण से विशेष कर्म का बन्ध होना कैसे संगत हो सकता है?	५६०	३	८३	तत्त्वार्थ (सु०) अध्या ६सू २६ व्याख्या.
सात का संहरण नहीं होता	५३०	२	२६६	प्रव. द्वा २६१गा. १४१६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात कुलकर आगामी उत्सर्पिणी के	५११	२	२३६	ठा ७उ.३ सू.६५६, सम १५६
सातकुलकरगतउत्सर्पिणीके	५१२	२	२३६	ठा ७उ ३सू.६५६,सम १५७
सात कुलकर वर्तमान अथसर्पिणी के	५०८	२	२३७	ठा ७उ ३सू.६५६, सम १५७ जै भा २पृ.२६२
सात गणापक्रमण	५१५	२	२४४	ठा ७ उ ३ सू ५४१
सात गाथा त्रिनयसमाधि	५५३	२	२६३	दज.अ ६उ.४
अध्ययन के चौथेउद्देशेकी				
सात नय	५६२	२	४११	अनुसू १५२, प्रव द्वा. १२४ गा. ८४७, ८४८, विशेषे. गा २१८०- २२७८, रत्ना परि ७, तत्त्वार्थ अध्या १, द्रव्य.त अध्या ५-८, न्यायप्र अध्या ५, आगम, नय, नयप्र, नयवि, नयो आलाप,
सात नरक	५६०	२	३१४	जी.प्रति.३ सू.६६-६५, प्रव द्वा १७२-१८४, भा.श. १.७, १४, १८, २५, ३०, पत्रप २०, ३४, प्रग्नम ४
सात निक्षेप अनुयोग के	५२६	२	२६२	विशे. गा. १३८५-१३६२
सात निह्व	५६१	२	३४२	विशे गा २३००-२६२०, आथ ह अ १ गा ७७८ ७८८, भा.श १ उ. १, भा.श. ६उ ३३, ठा ७सू.६८७
सातपंचेंद्रियरत्नचक्रवर्तीके	५२८	२	२६५	ठा ७ उ ३ सू ५५७
सात पञ्चाभास	५४६	२	२६१	रत्ना परि. ६ सू ३८-४६
सात षडवियाँ	५१३	२	२३६	ठा.३व.३सू.१७७ टी.
सात पानैपणा	५२०	२	२५०	भाचाशु २चू १अ १उ ११ सू ६०, ठा. ७उ ३सू ५४५, प्र अधि. ३श्लो २२टी पृ. ४५
सात पिण्डैपणा	५१६	२	२४६	

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात पुद्गलपरावर्तन	५४६	२ २८४	ठा.३सू.१६३टी, भ.श.१२उ४ सू.४४६, प्रव.द्वा.२गा.३६टी, कर्म भा.६गा.८७ ८८, प्रव.द्वा.१६२
सात पृथ्वी के नाम व गोत्र	५६०	२ ३१५	जी.प्रति.३सू.६७, प्रव.द्वा.१७२
सात प्रकार का अप्रशस्त काय विनय	५०४	२ २३३	भ.श.२५उ७ सू.८०२, ठा७ उ.३सू.५८५, उव.सू.२०
सात प्रकार का अप्रशस्त मन विनय	५००	२ २३१	भ.श.२५उ७ सू.८०२, ठा७ उ.३सू.५८५
सात प्रकार का अप्रशस्त वचन विनय	५०२	२ २३२	भ.श.२५उ७ सू.८०२, ठा७ उ.३सू.५८५
सात प्रकार का काययोग	५४७	२ २८६	भ.श.२५उ१सू.७१६, कर्म भा ४गा.२४, द्रव्यलो.स.३पृ.३५८
सात प्रकार का प्रशस्त काय विनय	५०३	२ २३२	भ.श.२५उ७ सू.८०२, ठा७ उ.३सू.५८५, उव.सू.२०
सात प्रकार का प्रशस्त मन विनय	४६६	२ २३१	भ.श.२५उ७ सू.८०२, ठा७ उ.३सू.५८५
सात प्रकार का प्रशस्त वचन विनय	५०१	२ २३२	भ.श.२५उ७ सू.८०२, ठा७ उ.३सू.५८५
सात प्रकार का लोकोपचार विनय	५०५	२ २३३	भ.श.२५उ७ सू.८०२, ठा७ उ.३सू.५८५, उव.सू.२०, ध. अधि.३श्लो.५४टी पृ.४१
सात प्रकार का विनय	४६८	२ २२६	
सात प्रकार की दण्डनीति	५१०	२ २३८	ठा७ उ.३सू.५५७
सात प्रकार के सब जीव	५५०	२ २६२	ठा७ उ.३सू.५६२
सात प्रकार श्लक्ष्ण वादर पृथ्वी काय के	५४५	२ २८४	पत्र.प.१सू.१०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्तम २६गा.२७
सात प्राणायाम	५५६	२	३०२	यो प्रका ६, रा यो , हठ, पी १
सात फल चिन्तन के	५०७	२	२३५	श्रा.प्र.गा.३६३
सातवातेछद्मस्थकेअविषय	५२५	२	२६१	ठा ७३ ३सू ६६७
सातवार्तो से केवली जाना	५२४	२	२६१	ठा.७३.३ सू ५५०
जा सकता है				
सात वार्तो से छद्मस्थ जाना	५२३	२	२६०	ठा ७३३ सू ६६०
जा सकता है				
सात बोल सूत्र सुनने के	५०६	२	२३४	विशे.गा ५६५, सम ७
सात भंग	५६३	२	४३५	सुय भ्र.२अ.५गा.१० १२टी., भागम ,सप्त ,रत्ना परि ४, स्या का २३
सात भयस्थान	५३३	२	२६८	ठा ७३.३ सू ६४६, सम ७
सात भेद अविरोद्धानुप लब्धि हेतु के	५५६	२	२६८	रत्ना परि.३सू ६४-१०२
सात भेद काल के	५५१	२	२६२	ज वन २ सू.१८
सातभेद विरोद्घोपज्ञब्धि के	५५५	२	२६६	रत्ना परि ३ सू ८३-६३
सात भेद व्युत्सर्ग के	५५७	२	३००	उवम २०
सात महानदियाँ	५३८	२	२७०	ठा ७३ ३सू.५६६
सात महानदियाँ	५३६	२	२७०	ठा ७३ ३ सू ५६५
सात मूलगोत्र	५४२	२	२७६	ठा.७३ ३ सू ६५१
सात लक्षणा द्रव्य के	५२७	२	२६३	विशे.गा २८
सात वचन विकल्प	५५४	२	२६५	ठा ७३ ३सू ६८४
सात वर्तमान अवसर्पिणी	५०६	२	२३८	ठा.७३ ३ सू ६६६,सम.१३७
के कुलकरों की भार्याओंकेनाम				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात वर्षधर पर्वत	५३७	२ २७०	ठा.७उ.३सू.५५५, सम.७
सातवादी (सुखवादी)	५६१	३ ६४	ठा.८उ ३सू.६०७
सात वास (क्षेत्र) जम्बू- द्वीप में	५३६	२ २६६	ठा ७उ ३सू.५५५, सम.७, तत्त्वार्थ अध्या ३सू.१०
सात विकथा	५३२	२ २६७	ठा.७उ ३ सू.५६६
सात विभंगज्ञान	५५८	२ ३०१	ठा ७उ.३ सू.५४२
सातव्यक्तियों(भ०मल्लिनाथ आदि)ने एकसाथ दीक्षा ली	५४३	२ २७७	ठा ७उ ३सू. ५६४
सात व्यसन	६१८	६ १५५	ज्ञा.अ १सू.१३७, वृ.उ १नि. गा ६४०, गौ.कु.
सात श्रेणी	५४४	२ २८२	ठा ७सू.५८१, भ.श २५सू.७३०
सात संग्रहस्थान आचार्य तथा उपाध्याय के	५१४	२ २४२	ठा.५उ १सू.३६६, ठा ७उ ३ सू.५४०
सात संस्थान	५५२	२ २६३	ठा १सू.४७, ठा ७उ ३सू.५४८
सात समुद्रघात	५४८	२ २८८	पत्र प २६ सू.३३१, ठा.७ सू ५८६, प्रव द्वा २३ १गा १३ ११- १३ १६, प्रथमो स ३पृ १२४
सात सेनापति शक्रेन्द्र के	५४१	२ २७६	ठा ७उ ३सू.५८२
सात स्थानदुपमाजाननेके	५३४	२ २६८	ठा ७उ ३ सू.५५६
सातस्थान सुपमाजाननेके	५३५	२ २६६	ठा ७उ ३ सू.५५६
सातस्थान स्थविरकल्पके	५२२	२ २५१	विशे गा ७
१ सात स्वर	५४०	२ २७०	ठा ७उ ३सू.५५३, अनुसू.१२७
साता औरअसाता वेदनीय	५६०	३ ६१	पत्र प २३सू.२६२
का अनुभाव आठ आठ प्रकार का			

१ इस बोल के अन्तर्गत जो इक्कीस मूर्च्छनाएँ, कृपी हैं उनके सम्बन्ध में पृष्ठ २६१ पर टिप्पणी देखो।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साता गौरव (गारव)	६८	१	७०	ठा ३३ ४५ २१४
साता वेदनीय	५१	१	३०	पत्र प २३ सू २६३, कर्म भा १ गा १२
साता वेदनीय कर्म बाँधने के दम वोल	७६१	३	४४३	भग ७३ ६ सू २८६
साता वेदनीय की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की या वारह मुहूर्त की ?	६१८	६	१३६	उत्त अ ३३ गा १६-२०, पत्र प २३ सू २६४
साता वेदनीय की जघन्य स्थिति दो तरह किस विवक्षा से कही गई है ?	६१८	६	१३६	उत्त अ ३३ गा १६-२०, पत्र प २३ सू २६४
सादिश्रुत	८२२	५	८	ने सू ४३, निशे गा ४३७-४४८
सादि संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६ सू ४६४, कर्म भा १ गा ४०
साधर्मिक अवग्रह	३३४	१	३४५	भग १६३ २ सू ४६७, प्रन द्वा ८४ गा ६८१, साचाधु २ सू १ अ ७३ २
साधु	२७४	१	२५६	भ मगलाचरण
साधु आलोचना करने योग्य के दम गुण	६७०	३	२५८	भग २५३ ७ सू ७६६, ठा १० उ ३ सू ७३३
साधु आलोचना देने योग्य के दम गुण	६७१	३	२५६	भग २५३ ७ सू ७६६, ठा १० उ ३ सू ७३३
साधुओं की सेवा भक्ति के परम्परा फल दस	७०८	३	३८३	ठा ३३ ३ सू १६०
साधु और सोने की आठ गुणों से समानता	५७१	३	६	पत्रा १० गा ३२-३४

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
साधु का पाँच कारणों से राजा के अन्तःपुर में प्रवेश	३३८ १ ३४८	ठा.प्र.२सू.४१६
साधु का स्वरूप बतानेवाली	८६२ ५ १५२	उत्त.अ.१६
सभिवखु अ०की १६ गाथाएं		
साधु का स्वरूप बतानेवाली	१६ ६ १२६	दश. अ १०
सभिवखु अ०की २१ गाथाएं		
१ साधु की अवग्रह प्रतिमा सात	५१८ २ २४८	आचा.श्रु.२चू.१अ.७उ.२
साधु की इकतीस उपमाएं	६६२ ७ ४	प्रश्न सवरद्वार.५सू.२६, उव.सू.१७
साधु की चारह उपमाएं	८०५ ४ ३०६	अनु.सू.१६० गा.१३१
साधु की चारह पडिमाएं	७६५ ४ २८५	सम.१२, भ.श.२उ.१, दशा.द.७
साधु की समाचारी दस	६६४ ३ २४६	भ.श.२६उ.७ सू.८०१, ठा.१० उ.३सू.७४६, उत्त.अ.२६ गा २-७, प्रव.द्वा.१०१ गा.७६०-६७
साधु के अठारह कल्प	८६० ५ ४०२	सम.१८, दश.अ.६ गा.८-६६
साधु के आहार ग्रहण करने के दस दोष	६६३ ३ २४२	प्रव.द्वा.६७ गा.६६८, पि.नि.गा ६२०, ध.अधि.३श्लो.२२ टी पृ.४२, पचा.१३ गा.२६
२ साधु के आहार संबंधी	१००० ७ २६५	पि.नि.गा.६६६
सैंतालीस दोष		
साधु के इक्कीस शबल दोष	६१३ ६ ६८	सम.२१, दशा.द.२
साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य स्थान	६२३ ६ १७०	आचा.श्रु.२चू.१अ.२उ.२

१ मकान, वस्त्र, पात्र आदि वस्तुएं लेने में विशेष प्रकार की मर्यादा धारण करना ।
 २ आहार के सैंतालीस दोषों में एक दायक दोष है । इसके चालीस भेद हैं ।
 वे ४० भेद श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के तीसरे भाग के बोल नं. ६६३ में दिये गये हैं ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु के चारित्र को दूषित करने वाले दस उपघात दोष	६६८	३	२५४	ठा. १०३ सू. ७३८
साधु के तीन मनोरथ	८६	१	६४	ठा ३३४ सू. २१०
साधु के दस कल्प	६६२	३	२३४	पचा १७ गा ६-४०
साधु के पाँच महाव्रत	३१६	१	३२१	दश. अ. ४, ठा. ५३ सू. ३८६, प्रव. द्वा ६६ गा ५५३, ५ अधि ३ ग्लो ३६-४४ पृ. १२०-१२४
साधु के बाईस परिपह	६२०	६	१६०	सम २०, उत्त अ २, प्रव. द्वा ८६ गा ६८५, तत्त्वार्य अध्या ६ सू. ६
साधु के वारह विशेषण	८०६	४	३१४	ध वि सू. ३६६
१ साधु के वारह सम्भोग	७६६	४	२६२	निसी उ ५, सम. १०, व्यव उ. ५ भाष्य गा ५०
साधु के वाचन अनाचीर्ण	१००७	७	२७२	दश अ ३
साधु के बीस कल्प	६०४	६	६	वृ ३१
साधु के मलादिपरठने के लिये दस विशेषण वाला स्थण्डिल	६७६	३	२६४	उत्त अ २४ गा १६-१८
साधु के लिये अकल्पनीय चौदह बातें	८३४	५	२६	पृ. ३ सू. १६-२१
साधु के लिये, आवश्यक आदि क्रिया के समय उनकी उपेक्षा कर क्या ध्यानादि करना उचित है?	६१८	६	१४३	दश अ ५३ गा ५, गुण ओ ३०
साधु के लिये आवश्यक बात	४६७	२	१६८	

१ नगान गमाचारी वाले साधुओं का सम्मिलित आहार आदि व्यवहार सम्भोग कृतज्ञता है ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	परमाणु
साधु के लिये ग्लान साधु की सेवा करना आवश्यक है या उसकी इच्छा पर निर्भर है ?	६८३	७	१०८ वृगा १८७१-१८७८, भसा २५ उ.७ सू ८०२, उत्त अ २६ गा. ८-१०, उत्त अ २६ प्रश्न ४३, श्री गा ४८, ४९, ६२, ६३, ३२-३३
साधु (स्थविरकल्पी) के लिये चौदह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८ पंच व गा ७७१-७७६
साधु (जिनकल्पी) के लिये बारह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८, पंच व गा ७७१-७७८
साधु के लिये वर्जनीय ८ दोष	५८३	३	३८ उत्त अ २४ गा ६
साधु के संयम की विशुद्धि दस	६६६	३	२५७, ठा १०३३ सू ७३६
साधु के संयम में संज्ञोभ (अशान्ति) होने के दस कारण	७१४	३	३८८ ठा १०३३ सू ७३६
साधु के सत्ताईस गुण	६४५	६	२२८ मम २७, आवह अ. ४४ ६४ ६५ उत्त अ ३१ गा १८
साधु के सत्य वचन में भी क्या विवेक होना चाहिये ?	६८३	७	१०७ प्रश्न मवरद्वार २ सू २४, सूय. श्रु. ६ गा २३
साधु को आहार की गवेषणा में लगने वाले १६ उद्गम दोष	६६५	५	१६१ प्रव द्वा ६७ गा ५६५-५६६ ध. अधि ३ श्लो २२ पृ ३६ पि नि गा ६२-६३, पि वि गा ३-४, पंचा १३ गा ५-६
साधु को आहार की गवेषणा में लगने वाले सोलह उत्पादना दोष	६६६	५	१६४ प्रव द्वा ६७ गा ५६७-५६८ ध अधि ३ श्लो २२ पृ ४०, पि नि गा ४०८-४०९, पि वि गा ५८-५९, पंचा १३ गा १८-१९

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु को कल्पनीयग्रामादि ८६७	५	१६६	वृ. १ सू. ६	
सोलह स्थान				
साधु को कौनसा वादकिस १८	६	१५७	अष्ट १२, उक्त (क) अ. १६ (कथा)	
के साथ करना चाहिये ?				
साधु ग्लान की सेवा करने ७६७	४	२६७	प्रव. द्वा. ७१ गा. ६२६-६३५,	
बालेवारह और अड़तालीस			नवपद. सलेखनाद्वारा गा. १०६	
साधु द्वारा आहार करने	४८४	२	६८	उक्त अ. २६. गा. ३२-३३, पि. नि.
के छः कारण				गा. ६६२
साधु द्वारा आहार त्याग	४८५	२	६८	उक्त. अ. २६ गा. ३४, पि. नि.
करने के छः कारण				गा. ६६६
साधु द्वारा साध्वी को ग्रहण ३४०	१	३५१	ठा. ५ उ. २ सू. ४३७	
करने या सहारा देने के प्रबोल				
साधु मंगलकारी लोको-	१२६	क	१ ६४	भाव. ह. अ. ४ पृ. ५६६
त्तम और शरण रूप है				
साधु योग्य १४ प्रकार का दान ८३२	५	२६	गिजा., भाव. ह. अ. ६ पृ. ८४६	
साधु वचन आगार	४८३	२	६८	भाव. ह. अ. ६ पृ. ८४२, प्रव. द्वा. ४
साधु साध्वी के एक जगह ३३६	१	३४६	ठा. ५ उ. २ सू. ४१७	
स्थान शय्या निपट्या के प्रकरण				
साधु साध्वी के साथ चार १८३	१	१३७	ठा. ५ उ. २ सू. २६०	
कारणों से आलाप संलाप				
करता हुआ निर्ग्रन्थाचार				
का अतिक्रमण नहीं करता				
साध्य	४२	१	२७	रत्नापरि ३ सू. १४
सानक वस्त्र	३७४	१	३८६	ठा. ५ उ. ३ सू. ४४६

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सान्निपातिक भाव छः	४७४ २ ८१	अनु सू १२६, ठा ६३ ३ सू ५३७, कर्म भा. ४गा ६४-६६
सान्निपातिक भाव के छब्बीस भंग	४७४ २ ८१	अनु सू १२६, ठा ६३ ३ सू ५३७, कर्म भा ४गा ६४ ६६
सान्निपातिक भाव के भंग २६ में से जीवों में पाये जाने वाले छः भंग	४७४ २ ८३	अनु सू १२६, ठा ६३.३ सू ५३७, कर्म भा ४गा ६४-६६
सापेक्ष यतिधर्म के विशेषण ८०६	४ ३१४	ध वि सू ३६६ पृ. ७५
साप्तपदिक व्रत का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८० ४ २४६	आव ह गा. १३४ वृ पीठिका नि गा १७२
सामन्तोपनिपातिकी (सामन्तोवर्णिया) क्रिया	२६४ १ २७६	ठा. २३ १ सू ६०, ठा ५३ २ सू ४१६ आव ह अ ४ पृ ६१२
सामानिक	७२६ ३ ४१५	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४
सामान्य	४१ १ २६	रत्ना परि ५ सू १, स्या का. ४
सामान्य के दो प्रकार से दो भेद	५६ १ ४१	रत्ना परि ५ सू ३-५, रत्ना परि ७ सू १५-१६
सामान्य गुण छः	४२५ २ १६	आगम, द्रव्य त अध्या ११ श्लो २-४
सामान्य विशेष	५६ १ ४१	रत्ना परि ५ सू ३-५
सामायिक आवश्यक	४७६ २ ६०	आव ह अ. १
सामायिक औग्घेनोपस्था- पनिक चाग्नि अलग अलग क्यों कहे गये हैं ?	६८३ ७ ११८	भ श १३ ३ सू ३७ टी पृ ६०
सामायिक कल्प स्थिति	४४३ २ ४५	ठा ३३ ४ सू २०६, ठा ६ ३.३ सू ५३०, वृ (जी) ठ ६

विषय	श्लोक	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सामायिक की व्याख्या और उसके भेद	१६०	१	१४३	धर, प्र. अवि. २४०, ३७३ पृ. ५३, विशेष गा. २६७३-२६७७
सामायिक के चार भेद	४३१	२	३८	विशेष गा. २७०८-२७१०
सामायिक के वृत्तीय दोष	६७०	७	४३	जिज्ञा
सामायिक चारित्र	३१५	१	३१६	ठा. उ. १ मू. ४३८, अनुसू. १४६, विशेष गा. १२६०-१२६७
सामायिक चारित्र के अन-व्यवस्थित कल्प	४४३	२	४५	ठा. उ. ४ मू. २६६ टी., ठा. ६
सामायिक चारित्र के व्यवस्थित कल्प चार	४४३	२	४५	ठा. उ. ४ मू. २६६ टी., ठा. ६
सामायिक में २२ कायादोष	७८६	४	२७३	शिक्षा.
सामायिक में दमन दोष	७६४	३	४४७	जिज्ञा
सामायिक में दमन दोष	७६५	३	४४८	जिज्ञा.
सामायिक व्रत	१८६	१	१४०	आवृ. अ. ६ पृ. ८३, पंचा. १ गा. १५
सामायिक व्रत के ५ अतिचार	३०६	१	३०६	उपा. अ. १, आवृ. अ. ६ पृ. ८३
सामायिक व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८४	भागम
सामायिक भाव प्रमाण नाम	७१६	३	४०१	अनुसू. १३०
सामाज्येदिक दृष्टि नामक चार्थ निहत्र का मत	५६१	२	३५८	विशेष गा. २३८६-२४३३
सामुदानिकी क्रिया	२६६	१	२८२	ठा. उ. १ मू. ६७, ठा. ५३ अनुसू. ४१६, आवृ. अ. ६ पृ. ९६, मूल प्र. अ. २ नि. गा. १६८ टी.
सान्यवाद	४६७	२	२१३	
सारीपथी ध्वज के श्लोक	११७	१	८२	ठा. उ. ४ मू. १६८

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साखादान समकित	२८२	१ ३६१	कर्म भा १ गा १५५।
साखादानसम्यग्दृष्टिगुण	०८४७	५ ७३	कर्म भा २ गा २ प्रयाख्या
साहसिय दोष (आहार का दोष)	६६३	३ २४३	प्रव द्वा ६७ गा ५६८ पृ. १४८, २।।। पिति गा. ५२६, पचा १३ गा. २६०, ४ अधि ३७ लो. २२, टी पृ ३७१ ठा. २३ ४ सू १०१, तत्त्वार्थ अध्या २
सिद्ध	७४	१ ४	ममंगलाचरण
सिद्ध	२७४	१ २५२	अनु सू १२६ पृ ११५, प्रव द्वा.
सिद्ध भगवान् के आठ गुण	५६७	३ ४	२७६ गा, १५६ वे-६४, सम. ३१ उत्त अ. ३१ गा. ३० टी, प्रव द्वा. २७६ गा १५६३-१५६४, सम ३१, आचा अ. ५३ ६ सू १००, आव. ह अ ४ पृ. ६६ र घान ह अ ४ पृ ५६६
सिद्ध भगवान् के इकतीस गुण दो प्रकार से	६६१	७ २	
सिद्ध मंगलकारी लोकोत्तम और शरण रूप है	१२६ क	१ ६४	म श १४३ ८ सू. ५२७ टी.
सिद्ध शिला और अर्लीक के बीच कितना अन्तर है?	६१८	६ ३३५	
सिद्ध शिला के आठ नाम	६०६	३ १२६	पत्र प २ सू ५४, ठा ८ उ ३ सू. ६४८, उत्त अ ३६ गा ५६-६२
सिद्धों का अल्पवहुत्व	८४६	५ १२१	पत्र प १ सू ७
सिद्धों के अल्पवहुत्व के ३३ बोल	६७६	७ ६६	नं सू २० टी पृ १२५
सिद्धों के पन्द्रह भेद	८४६	५ ११७	पत्र प १ सू ७
सीता सती	८७५	५ ३२१	त्रि प ११७
सुंभुमा, चिलावी पुत्र की कथा	६००	५ ४७०	ज्ञा अ १८
सुकाली रानी	६८६	३ ३३८	अत व ८ अ. २

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सुकृष्णा रानी	६८६	३	३४३	अंतव ८ अ ५
सुख दस	७६६	३	४५३	ठा. १०८ ३सू. ७३७
सुख विपाक की दस कथा १०	६	५३-६०		विअ ११-२०
सुख शय्या चार	२५६	१	२४१	ठा. ४३ ३सू. ३२५
सुजात कुमार की कथा	६१०	६	५८	विअ १३
* सुदुदिनं	८२४	५	१५	भाव ह अ ४ पृ ७३०
सुधर्मा सभा	३६७	१	४२१	ठा. ५३. ३सू. ४७२
सुधर्मास्वामी गणधर के, 'जो जैसा है, परभवमें वह वैसा ही रहता है' मतका समाधान	७७५	४	४०	विशे. गा. १७७०--१८०१
सुन्दरी (सती)	८७५	५	१६	• विप पर्व १-२, भाव ह. नि गा. ३४८
सुन्दरीनन्द की पारिणा- मिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	१०५	भाव ह गा. ६५०, न सू. २७ गा. ७३
सुपर्ण कुमारके दस अधिपति	७३३	३	४१८	भ श ३३. ८सू. १६६
सुप्रत्याख्यान	५४	१	३२	भ श ७३ २सू. २७१
सुवाहुकुमार की कथा	६१०	६	५३	विअ ११
सुबुद्धि व जितशत्रुकी कथा ६००	५	४५८		शा अ. १२
सुभद्रा सती	८७५	५	३४०	दश अ. १ नि. गा. ७३-७४
सुगदेव श्रावक	६८५	३	३१३	उपा अ ४
सुलभ बोधि	८	१	७	ठा. २८. २ सू ७६
सुलभ बोधि के पाँच बोल	२८७	१	२६६	ठा ५३ २ सू ४२६
सुलसा	६२४	३	१६६	ठा. ६३ ३सू. ६६१
सुलसा सती	८७५	५	३१३	भाव ह नि. गा १२. ८४, ठा ६३. ३ सू. ६६१ टी

विषय	चोले भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सुवासव कुमार की कथा	६१०	६	५८ वि.अ.१४
सुश्रामण्यता	७६३	३	४४६ ठा १०उ ३सू.७५८
सुषमदुषमा आरा अवस- पिणी का	४३०	२	३१ जं.वक्त २सू.२७-३३, ठा ६ उ ३सू.४६२
सुषमदुषमा आरा उत्स- पिणी का	४३१	२	३७ जं वक्त २सू.३७-४०, ठा ६ उ ३सू.४६२
सुषम सुषमा आरा अव- सपिणी का	४३०	२	३० जवक्त २सू.१६-२६, ठा ६ उ ३सू.४६२
सुषम सुषमा आरा उत्स- पिणी का	४३१	२	३८ ज वक्त २सू.३७-४०, ठा.६ उ ३सू.४६२
सुषमा आरा अवसपिणी का	४३०	२	३० जं वक्त.२सू.२६,ठा.६सू.४६२
सुषमा आरा उत्सपिणी का	४३१	२	३८ जं वक्त.२सू.३७-४०,ठा ६सू.४६२
सुषमा काल जाननेके उस्थान	५३५	२	२६६ ठा ७उ.३ सू.६५६
सूक्ष्म	८	१	५ ठा.२उ.१ सू.७३
सूक्ष्म क्रिया अनिवर्ती शुक्ल ध्यान	२२५	१	२१० आ.व.द्व.अ ४ ध्यानशतक गा. ८१,ठा.४उ.१ सू.२४७, ज्ञान. प्रक.४२,क भा २ श्लो २१६
सूक्ष्म जीव आठ	६११	३	१२८ दश.अ.८गा १५,ठा ८सू.६१५
सूक्ष्म दस	७४६	३	४२३ ठा १०उ ३ सू.७१६
सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५ दश अ ४भाष्य गा ६० टी.
सूक्ष्म वादर पुद्गल	४२६	२	२५ दश अ ४भाष्य गा.६० टी
सूक्ष्मसम्पराय गुणस्थान	८४७	५	८२ कर्म भा.२ गा २
सूक्ष्मसम्पराय चारित्र	३१५	१	३२० ठा ५उ ३सू.४२८,अनुसू १०४, विशे.गा १२६०-१२८०
सूक्ष्म सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५ दश अ ४भाष्य गा ६०टी.

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूत्र की वाचनादेनेके प्रबोल	३८२	१	३६८	ठा. ५३ ३ सू. ४६८
सूत्र के वत्तीस दोष तथा	६६७	७	२३	अनुसू. १५१टी., विज्ञे. गा. ६६६टी., आठ गुण
सूत्र के वारह भेद	७७८	४	२३५	वृ. पीठिका नि. गा. २७८-२८७
१ सूत्रधर पुरुष	८४	१	६१	वृ. १. नि. गा. १२२१
सूत्र पढ़ने के वत्तीस अस्त्रा-	६६८	७	२८	ठा. सू. २८५, ७१४, प्रव. द्वा. ध्याय
सूत्रपढ़ाने की मर्यादा और	१४	२	२४३	ठा. ५३ १ सू. ३६६, ठा. ७ सू. ५४४, दीक्षा पर्याय
सूत्र वत्तीस	६६६	७	२१	व्यव. भा. उ. १० सू. २१-३५
सूत्र रुचि	६६३	३	३६३	उत्त. अ. २८ गा. २१
सूत्र श्रुत धर्म	१६	१	१५	ठा. २३ १ सू. ७२
सूत्र सीखने के पाँच स्थान	३८३	१	३६६	ठा. ५३ ३ सू. ४६८
सूत्र सुनने के सात षोड	५०६	२	२३४	विज्ञे. गा. ६६६
२ सूत्र स्थविर	६१	१	६६	ठा. ३३ ३ सू. १५६
सूत्रागम	८३	१	६०	अनुसू. १४४
सूत्रगहांगसूत्र के ग्यारहवें	६८५	७	१३६	सूत्र अ. ११
मार्गाध्ययनकी ३८ गाथाएं				
सूत्रगहांगसूत्र के चौथे अ०	६६३	७	८	सूत्र अ. ४ उ. १
प्रथम उ० की ३१ गाथाएं				

१ सूत्र को धारण करने वाला शास्त्र पाठक पुरुष सूत्रधर कहलाता है ।

२ टागाग और नमश्चायग सूत्र के ज्ञाता सातु सूत्रस्थविर कहलाते हैं ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूयगडांग सूत्र के चौदहवें अध्ययनकी २७ गाथाएं	६४६	६ २३०	सूय अ १४
सूयगडांग सूत्र के तेईस अध्ययनों के नाम	६२४	६ १७३	
सूयगडांगसूत्र के दसवें समाधि अ०की २४गाथाएं	६३२	६ १६७	सूय अ १०
सूयगडांगसूत्रके दूसरे अ० केदूसरे उ०की ३२गाथाएं	६७४	७ ५६	सूय अ २३२
सूयगडांग सूत्र के नववें धर्मा- ध्ययन की छत्तीस गाथाएं	६८१	७ ८७	सूय अ ६
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभक्ति अ०के दूसरे उद्देशे की पचीस गाथाएं	६४१	६ २१६	सूय अ ४३२
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभक्ति अ०के पहले उ०की सत्ताईस गाथाएं	६४७	६ २३६	सूय अ ४३१
सूयगडांगसूत्रके प्रथमद्वितीय दोनों श्रुतस्कन्धों के तेईस अध्ययनों का विषय वर्णन	७७६	४ ७६	
सूयगडांगसूत्र के वीरस्तुति अध्ययन कीउनतीस गाथाएं	६५५	६ २६६	सूय अ ६
सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्रके वीसप्राभृती का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४ २३०	
सेठ (कालसेठ)की पारि- णामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६ ७८	न.मू. २७ गा ७२, आव ह गा ६४६

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सेवार्त्तक (खेवट्ट) संहनन	४७०	२	७०	पत्र.प.२३ सू.७६३, ठा.६७.३ सू.४६४, कर्म मा.१ गा.३६ पि.नि.गा.६६६
१ सैंतालीसदोपआहारके	१०००	७	२६५	उत्त.प्र.१०
सैंतीसगाथाएँ उत्तराध्ययन	६८४	७	१३३	
मूत्रकेदसवें अध्ययन की				
२ सोपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्त्वार्थ.अध्या.२ सू.५२, अ.अ. २० उ.१० सू.६८५
३ सोपक्रम कर्म	२७	१	१६	वि.प्र.३ सू.२० टी.
सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रव.द्वा.६७ गा.५६५-५६८, ध.अधि.३ श्लो.२२ टी.पृ.३८, पि.नि.गा.४०८, ४०९, ६२, ६३, पि.वि.गा.५८, ५९, ३४, पत्रा.१३ गा.१८-१९, ५-६
सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	
सोलहगाथाएँ उत्तराध्ययन	८६२	५	१५२	उत्त.प्र.१५
मूत्रकेपन्द्रहवें अध्ययन की				
सोलहगाथाएँ दशवैकालिक	८६१	५	१४७	दश. च.२
मूत्रकी दूसरी चूलिका की				
सोलहगाथाएँ बहुश्रुतसाधु	८६३	५	१५५	उत्त.प्र.११ गा.१४-३०
की उपमा की				
सोलहगाथाएँ भगवान् महा-	८७४	५	१८२	आचा.अ.६३ २
वीर की वसतिविषयक				
सोलहगुणदीप्तालेनेवालेके	८६४	५	१५८	ध.अधि.३ श्लो.७३-७८ पृ.१
सोलह नाम मेरु पर्वत के	८७०	५	१७१	सम.१६, जं.वच.अमृ.१०६
सोलह भंग आभवआदिके	८६८	५	१६८	अ.अ.१६ उ.४ सू.६४४

१ पृष्ठ ३२१ की टिप्पणी देखो। २ जो आयु पूरी भोगे विना आयु दृष्टने के नात कारणों में से किसी कारण से असमय में ही दृष्ट जाय। ३ जिन कर्म का फल उपदेना आदि से नात हो जाय।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सोलह भेद वचन के	८६६	५ १७०	पत्र प ११सू १७३, आचाश्रु २ चू १अ १३उ १
सोलह महायुगम	८७१	५ १७२	भश ३५उ १ सू ८५५
सोलहविशेषणद्रव्यावश्यकके	८७२	५ १७६	अनु सू १३, विशेषे गा ८५१-५७
सोलह सतियां	८७५	५ १८५- ३७५	ठा ६उ ३सू ६६१टी, ज्ञाअ १६, त्रिष पर्व १, २, ७, ८, १०, पचा १६ गा ३१, चन्दन, राज, भरत गा ८-१०, आव ह
सोलह सतियों के लिये	८७६	५ ३७५	
प्रमाण भूत शास्त्र			
सोलहस्थान(ग्रामादि)साधु	८६७	५ १६६	वृ उ १सू ६
के लिये कल्पनीय हैं			
सोलह स्वम चन्द्रगुप्तराजा	८७३	५ १७८	व्यव चू हस्तलिखित
के और उनका फल			
सौधर्म देवलोक का वर्णन	८०८	४ ३१६	पत्र प २सू. ४२
सौर्यदत्त की कथा	६१०	६ ४६	विअ ८
१ स्कन्ध बीज	४६६	२ ६६	दशअ ४
स्तनितकुमारकेदसअधिपति	७४०	३ ४२०	भश. ३उ ८सू १६६
स्तम्भ की कथा औत्पतिकी	६४६	६ २६६	नंसू २७ गा ६३ टी.
बुद्धि पर			
२ स्तिबुकसंकेत पञ्चक्खाण	५८६	३ ४३	आव ह अ ६गा १५७८, प्रव. द्वा ४
स्तूप की कथा पारिणा-	६१५	६ ११७	उत्त (क)अ १गा ३टी, निर., न.
मिकी बुद्धि पर			सू २७गा ७४, आव ह गा ६५१

१ जिस वनस्पति का स्कन्ध भाग बीज का काम देता है, जैसे शल्लकी आदि ।

२ पञ्चक्खाण करने में एक तरह का संकेत, पानी रखने के स्थान पर पड़ी हुई वृद्धे जब तक सूख न जाय अथवा जब तक भोस की वृद्धे न सूखें तब तक का पञ्चक्खाण ।

विषय	घात	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्तोक	५५१	२	२६३	जंबुज.२ सू.१८
स्नानगृद्धि निद्रा	४१६	१	४४३	पत्र प.२२, कर्म भा. १ गा. ११-१२
स्त्री कथा के चार भेद	१४६	१	१०७	टा १३२ सू. २८२ टी.
स्त्रीकथा से होनेवाली हानि	१४६	१	१०८	टा १३२ सू. २८२ टी.
स्त्री की कथा आत्मत्तिकी	६४६	६	२६८	न.ज.२७ गा. ६३ टी.
गुद्धि पर				
स्त्री के गर्भ में जीव उत्कृष्ट	६१८	६	१४१	भग २३ सू. १०१, प्रव द्वा.
कितने काल तक रहता है?				२४१-२४२ गा १३६०
स्त्रीनीर्यकर आश्रय	६८१	३	२७८	टा १०३ सू. ७७७, प्रव द्वा. १३८
स्त्रीलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र प १ सू. ७
स्त्री वेद	६८	१	४६	वृत्त ४, कर्म भा १ गा २२
स्थण्डिल के चार भागों	१८२	१	१३७	उत्त प्र २४ गा. १६
स्थण्डिल के दस विशेषण	६७६	३	२६४	उत्त प्र. २४ गा. १६-१८
स्थलचर	४०६	१	४३६	पत्र प. १ सू. ३२, उत्त प्र. ३६ गा. १७०
स्थविर कल्प का क्रम	५२२	२	२५१	विशे गा ७
स्थविरकल्प के १२ विशेषण	८०६	४	३१४	घ. वि सू. ३६६
स्थविर कल्पस्थिति	४४३	२	४७	टा ३३ सू. २०६, टा ६३ सू. ४३०, वृ. (जी) उ ६
स्थविरकल्पीयथालान्दिक	५२२	२	२६०	विशे गा ७
स्थविरकल्पी माधुओं के	८३३	५	२८	पत्र व गा ७०१-७०६
लिये १४ प्रकार के उपकरण				
स्थविर तीन	६१	१	६६	टा ३३ सू. १४६
स्थविर दस	६६०	३	२३२	टा. १०३ सू. ७६१
स्थविर पद्मी	५१३	२	२४०	टा. ३३ सू. १७७ टी

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थान तेईस साधु केंउतरने	६२३	६	१७०	आचाक्षु २०० १अ.२३ २
योग्य तथा अयोग्य				
स्थान परिहरणोपघात	६६८	३	२५६	ठा १०३ ३सू ७३८
१ स्थानातिग	३५७	१	३७१	ठा ५३ १सू ३६६
स्थापन दोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७गा ५६५, ध अधि ३ ग्लो २०टी पृ ३८, पि नि गा ६२, पि वि गा ३, पचा १३ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५३ ३सू ४६२
स्थापना कर्म	७६०	३	४४१	आचा अ २३ १ नि गा १८३
स्थापना दोष	३४७	१	३५६	आव ह अ ३नि गा ११०७ पृ. ५१७, प्रव द्वा २ गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०६	१	१८७	अनुस १५०, न्यायप्र अध्या ६
स्थापनानुपूर्वी	७१७	३	३६०	अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६	२	२६२	विशे गा १३६०
स्थापनाप्रमाणनामके ७भेद	७१६	३	४००	अनुसू १३० गा ८५
स्थापनार्थ	७८५	४	२६६	वृउ १नि गा ३२६३
२ स्थापना सत्य	६६८	३	३६६	ठा १०सू ७४१, पत्र ११ सू १६५, ध अधि ३श्लो ४१पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ५३ २ सू ४३३
स्थावर	८	१	५	ठा २३४ सू १०१
स्थावरकाय पाँच	४१२	१	४३७	ठा.५३ १सू ३६३

१ अतिशय रूप मे स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग बरने वाला साधु ।

२ सङ्ग या विसदश आकार वाली वस्तु में किपी की स्थापना करके उमे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है । जैसे गतरज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इम आकार विशेष को 'क' कहना ।

विषय	घोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्तोक	५५१	२	२६३	ज.वृत्त.२ सू.१८
स्थानशुद्धि निद्रा	४१६	१	४४३	पत्र प २३, कर्म भा १ गा. ११-१२
स्त्री कथा के चार भेद	१४६	१	१०७	ठा ४३ २ सू २८२ टी.
स्त्रीकथा से होनेवाली हानि	१४६	१	१०८	ठा ४३ २ सू २८२ टी.
स्त्री की कथा औत्पत्तिकी	६४६	६	२६८	नम.२ अगा ६३ टी
शुद्धि पर				
स्त्री के गर्भ में जीव उत्कृष्ट	६१८	६	१४१	भश २३.४ सू १०१, प्रवृत्त.
कितने काल तक रहता है?				२४१-२४२ गा १३६०
स्त्रीनीर्धकर आश्चर्य	६८१	३	२७८	ठा.१०३ ३ सू ७७७, प्रवृत्त. १३८
स्त्रीलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र प १ म. ७
स्त्री वेद	६८	१	४६	वृत्त ४, कर्म भा १ गा २२
स्थण्डिल के चार भांगे	१८२	१	१३७	उत्त अ २४ गा. १६
स्थण्डिल के दस विशेषण	६७६	३	२६४	उत्त अ २४ गा १६-१८
स्थलचर	४०६	१	४३६	पत्र प १ सू. ३२, उत्त अ ३६ गा. १७०
स्थविर कल्प का क्रम	५२२	२	२५१	शिंशे गा ७
स्थविरकल्प के १२ विशेषण	८०६	४	३१४	व वि सू ३६६
स्थविर कल्पस्थिति	४४३	२	४७	ठा ३३ ४ सू २०६, ठा ६३ ३ सू ५३०, च (जी) उ. ६
स्थविरकल्पीयथालन्दिक	५२२	२	२६०	शिंशे गा. ७
स्थविरकल्पी साधुओं के	८३३	५	२८	पंच त गा ७७३-७७६
लिये १४ प्रकार के उपकरण				
स्थविर तान	६१	१	६६	ठा ३३. ३ सू १४६
स्थविर दम्	६६०	३	२३२	ठा १०३ ३ सू ७६१
स्थविर पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३३. ३ सू १७७ टी.

विषय	बोल भाग पृष्ठ		प्रमाण
स्थान तेईस साधुके उतरने	६२३	६ १७०	आचाधु.२चू.१अ.२उ.२
योग्य तथा अयोग्य			
स्थान परिहरणोपघात	६६८	३ २५६	ठा.१०उ.३सू.७३८
१ स्थानातिग	३५७	१ ३७१	ठा.५उ.१सू.३६६
स्थापन दोष	८६५	५ १६२	प्रव.द्वा.६७गा.५६५, ध.अधि.३ जलो.२२टी.पृ.३८, पि.निगा.६२, पि.त्रिगा.३, पचा.१३ गा.५
स्थापना अनन्तक	४१७	१ ४४१	ठा.५उ.३सू.४६२
स्थापना कर्म	७६०	३ ४४१	आचा.अ.२उ.१ निगा.१८३
स्थापना दोष	३४७	१ ३५६	आव.ह.अ.३निगा.११०७ पृ. ५१७, प्रव.द्वा.२गा.१०६
स्थापना निक्षेप	२०६	१ १८७	अनुसू.१५०, न्यायप्र.अध्या.६
स्थापनानुपूर्वी	७१७	३ ३६०	अनुसू.७१
स्थापनानुयोग	५२६	२ २६२	विशे.गा.१३६०
स्थापनाप्रमाणनामके	७भेद	७१६ ३ ४००	अनुसू.१३० गा.८५
स्थापनार्य	७८५	४ २६६	वृ.उ.१निगा.३२६३
२ स्थापना सत्य	६६८	३ ३६६	ठा.१०सू.७४१, पत्र.प.११ सू. १६५, ध.अधि.३श्लो.४१पृ.१२१
स्थापिता आरोपणा	३२६	१ ३३५	ठा.५उ.२ सू.४३३
स्थावर	८	१ ५	ठा.२उ.४ सू.१०१
स्थावरकाय पाँच	४१२	१ ४३७	ठा.५उ.१सू.३६३

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु ।

२ सदृश या विसदृश आकार वाली वस्तु में कृषी की स्थापना करके उमे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है । जैसे गतरज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थावरजीवोंकीअवगाहना	६६५	७	२५२	भश १६उ ३ सू६५१
केअल्प बहुत्व के४४ वोल				
स्थिति आठ कर्मों की	५६०	३	५६- ८२	पत्र प २३ सू २६४, तत्त्वार्थ अध्या ८, उत्त अ ३३
स्थिति की व्याख्याऔरभेद	३१	१	२१	ठा २उ ३ सू ८६
स्थिति घात	८४७	५	७८	कर्म भा २गा.२
स्थिति नाम निश्चत्तायु	४७३	२	७६	भश ६उ ८ सू २५०, ठा.६ सू ५३
स्थिति नारकी जीवों की	५६०	२	३१६	जी प्रति. ३ सू ६० टी, प्रव. द्वा १७५ गा. १०७४-१०७६
स्थिति प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा ५उ १ सू ४०६
स्थिति बन्ध	२४७	१	२३२	ठा. ४ सू २६६, कर्म भा १गा २
स्थिरीकरण दर्शनाचार	५६६	३	८	पत्र प १ सू ३७गा १२८, उत्त अ २८गा ३१
स्थूल अदत्तादानका त्याग	३००	१	२८६	{ आब ह अ ६ पृ ८ १७-८२६ ठा ५उ १ सू ३८६, उपा अ सू ६, ध अधि २ श्री २४ पृ ५
स्थूल असत्य (मृषा) का त्याग	३००	१	२८८	
स्थूल प्राणातिपात का त्याग	३००	१	२८८	
स्थूल भद्र की पारिणामिकी	६१५	६	६५	आब ह गा. ६६०, जंमू २७गा ७
बुद्धि की कथा				
स्नातक	३६६	१	३८२	{ ठा ५उ ३ सू ४४५, भज. २ उ ६ सू. ७५१.
स्नानक के पाँच भेद	३७१	१	३८६	
स्पर्श आठ	५६७	३	१०८	ठा ८उ ३ सू. ४६६, पत्र प २
स्पर्श नारकी जीवों का	५६०	२	३३६	जी प्रति ३ सू. ८७
स्पर्शनेन्द्रिय	३६२	१	४१६	पत्र प. १५उ. १ सू १६१, ठा ५ उ. ३ सू ४४३, जै प्र.

ह

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
हरिकेशीष्टनि(संवरभावना)	८१२	४ ३८६	उत्त अ १२
हरिवंशकुलोत्पत्तिआश्चर्य	६८१	३ २८४	ठा १०उ ३सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८६
हस्ति शुण्डिका	३५८	१ ३७२	ठा ६सू ३६६टी, ठा ६सू ४००
हाड़ाहड़ा आरोपणा	३२६	१ ३३५	ठा ५उ २सू ४३३
हानि छः प्रकार की	४२५	२ २४	आगम
हायणी अवस्था	६७८	३ २६८	ठा १०उ ३सू ७७२
हासनिःसृत असत्य	७००	३ ३७२	ठा १०सू ४४१, पत्र प. ११सू १६५, ध अधि ३श्लो ४१७ १२२
हास्य की उत्पत्तिके ४ स्थान	२५७	१ २४३	ठा ४ उ. १ सू २६६
हास्य रस	६३६	३ २१०	अनुसू १२६ गा ७६-७७
हास्योत्पादन	४०२	१ ४२६	उत्त. अ ३६ गा २६१, प्रव द्वा ७३
हिंसा का स्वरूप	४६७	२ १६०	
हिंसा के छः कारण	४६१	२ ६३	आचा श्रु १ अ १ उ १सू ११
हीयमान अवधिज्ञान	४२८	२ २८	ठा ६उ ३सू ५२६, नसू १३
हीलित वचन	४५६	२ ६२	ठा ६उ ३सू ५२७, प्रव द्वा २३५ गा १३२१, वृ (जी) उ ६
हुंडक संस्थान	४६८	२ ६८	ठा ६सू ४६५, कर्म भा १ गा ४०
हेतु	४२	१ २७	रत्ना परि. ३ सू ११
हेतु	३८०	१ ३६७	रत्ना परि ३ सू ११
हेतुअविरुद्धानुपलब्धि के	५५६	२ २६८	रत्ना परि ३सू ६४-१०२
सात भेद			
हेतु अविरुद्धोपलब्धि के	४६५	२ १०४	रत्ना परि ३सू. ६८-८२
छः भेद			

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
हेतु दोष	७२२ ३ ४०६	ठा १०७ ३सू ७४३
हेतु विरुद्धोपलब्धिके ७ भेद ५५५	२ २६६	रत्ना परि ३सू ८३-६२
ह्रस्व संस्थान	५५२ २ २६३	ठा १सू ४७, ठा ७३ ३सू ४४८

न्यूननाधिकमशुद्धं वा, यद्वा स्याद्धीप्रमादितम् ।
दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु. क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः ॥

भावार्थ—श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों में तथा उनके विषयानुक्रममूचक इम आठवें भाग में बुद्धि प्रमाद से जो न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला पाप निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें ।

अन्तिम संगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च वृष्टि वितरतु सद्यवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्मिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां या स्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रसरतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥

भावार्थ—सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायें, दुर्मिक्ष (दुष्काल), चोरी और महामारी आदि दुःख ससार में कभी किसी भी प्राणी को न सतावें और रागद्वेष के विजेता श्रीजिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व मृग्वों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो ।

शान्ति !

शान्ति !!

शान्ति !!!

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्पर्श परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १०७ ३सू ७१३, पत्र प १३
स्मृति	३७६	१	३६५	रत्ना.परि.३ सू ३
स्याद्वाद	४६७	२	१७६, २११	
स्वदार सन्तोष व्रत	३००	१	२८६	आवह अ ६पृ ८२२, ठा ५३ १ सू ३८६, उपा अ. १सू. ६, ध. अधि २ श्लो २८ पृ ६६
स्वदार सन्तोष व्रत केषाँच	३०४	१	२६८	उपा.अ १सू ७ टी.
अतिचार				
स्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी	४२४	२	१२	आगम.
अपेक्षा छःद्रव्यों का वर्णन				
स्वद्रव्यादि की चौभंगी	४२४	२	१२	आगम.
जीवादि द्रव्यों में				
स्वप्न के नौ निमित्त	६३८	३	२०६	विशेषा १७०३
स्वप्न १४मोक्षगामी आत्माके	२२६	५	२०	भ.श १६७ ६ सू ५८०
स्वप्न (महास्वप्न) १४तीर्थङ्करके	३०	५	२२	भ.श १६७ ६सू ५७८, जा अ ८
चक्रवर्ती के जन्म सूचक				सू ६६, कल्पसू ४
स्वप्न दर्शन के पाँच भेद	४२१	१	४४४	भ.श. १६ उ ६सू ६७७
स्वप्न दस भगवान् महावीरके	५७	३	२२४	भ.श. १६ उ ६सू ५७६, ठा १०
के और उनका फल				उ ३सू ७५०
स्वप्न सोलह चद्रगुप्त राजाके	८७३	५	१७८	व्यव चू हस्तलिखित
के और उनका फल				
स्वभाव	२७६	१	२५७	आगम, कारणा, मम्मति भा ६ काण्ड ३ गा ६३
स्वयं बुद्ध सिद्ध	८४६	५	११७	पत्र प १सू ७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्वयंबुद्ध सिद्ध और प्रत्येक	८४६	५	११८	पत्र प. १ सू. ७ टी.
बुद्ध सिद्ध का अन्तर				
* स्वर सात	५४०	२	२७०	} अनु सू. १२७, गा. २६-४६- टा ७ उ. ३ सू. ५६३
स्वरो का फल	५४०	२	२७२	
स्वरो के उत्पत्ति स्थान	५४०	२	२७१	
स्वरो के तीन ग्राम	५४०	२	२७३	} अनु सू. १२७ गा. २६-४२, टा ७ उ. ३ सू. ५६३, संगीत.
* स्वरो के तीन ग्राम की मूर्धना	५४०	२	२७३	
स्वलिङ्ग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र प. १ सू. ७
स्ववचन निराकृतवस्तु दोष	७२३	३	४११	टा १० उ. ३ सू. ७४३ टी.
स्व वचन निराकृत साध्य-	५४६	२	२६१	रत्ना परि. ६ सू. ४५
धर्म विशेषण पक्षाभास				
स्वाध्याय	४७८	२	८६	स्व सू. २०, उत्त. अ. ३० गा. ३०, प्रथ द्वा. ६ गा. २७१, टा ६ सू. १११
स्वाध्याय का दृष्टान्त काल	७८०	४	६४०	भाव द्वा. नि. गा. १३३, वृ. पीठिका नि गा. १७१
अननुयोग पर				
स्वाध्याय की व्याख्या, भेद	३८१	१	३६८	टा ६ उ. ३ सू. ४६६
स्वाध्याय के पाँच भेद	६३३	३	१६५	उत्त सू. २०, म. गा. २४३ ७ सू. ८०२
स्वापनी अवस्था	६७८	३	२६८	टा. १० उ. ३ सू. ७७२
स्वाभाविक गुण	५५	१	३३	द्रव्य त अध्या. १२ श्लो ८
स्वार्थानुमान	३७६	१	३६६	रत्ना. परि. ३ सू. १०
स्वाहस्तिनी (साहत्पिया)	२६४	१	२७६	टा. २ उ. १ सू. ६०, टा ६ उ. २ सू. ४५६
क्रिया				
स्वेद संकेत पञ्चखाण	५८६	३	४३	भाव द्वा. अ. ६ नि गा. १६७८, प्रथ द्वा ४ गा. २००

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सुवासव कुमार की कथा	६१०	६	५८	वि.अ. १४
सुश्रामण्यता	७६३	३	४४६	अ. १०७ सू. ७५८
सुषमदुषमा आरा अचस-	४३०	२	३१	जं. वक्त २ सू. २७-३३, अ. ६.
पिंणी का				उ. ३ सू. ४६२
सुषमदुषमा आरा उत्स-	४३१	२	३७	जं. वक्त २ सू. ३७-४०, अ. ६
पिंणी का				उ. ३ सू. ४६३
सुषम सुषमा आरा अच-	४३०	२	३०	जं. वक्त २ सू. १६-२६, अ. ६
सपिंणी का				उ. ३ सू. ४६२
सुषम सुषमा आरा उत्स-	४३१	२	३८	जं. वक्त २ सू. ३७-४०, अ. ६
पिंणी का				उ. ३ सू. ४६२
सुषमा आस अत्रसपिंणीका	४३०	२	३०	जं. वक्त २ सू. २६, अ. ६ सू. ४६२
सुषमा आरा उत्सपिंणी का	४३१	२	३८	जं. वक्त २ सू. ३७-४०, अ. ६ सू. ४६२
सुषमा काल जानने के ७ स्थान	५३५	२	२६६	अ. ७ उ. ३ सू. ६६६
सूक्ष्म	८	१	५	अ. २ उ. १ सू. ७३
सूक्ष्म क्रिया अनिवर्ती	२२५	१	२१०	अ. व. ४ अ. ४ ध्यानशतक गा.
शुक्ल ध्यान				८१, अ. ४ उ. १ सू. २४७, ज्ञान.
				प्रक. ४२, क. भा. २ श्लो २१६
सूक्ष्म जीव आठ	६११	३	१२८	दश. अ. ८ गा. १६, अ. ८ सू. ६१६
सूक्ष्म दस	७४६	३	४२३	अ. १० उ. ३ सू. ७१६
सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ. ४ भाष्य गा. ६० टी.
सूक्ष्म बादर पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ. ४ भाष्य गा. ६० टी.
सूक्ष्मसम्पराय गुणस्थान	८४७	५	८२	कर्म भा. २ गा. २
सूक्ष्मसम्पराय चारित्र	३१५	१	३२०	अ. ५ उ. ३ सू. ४२८, अनुसू. १४४,
				विशे. गा. १२६०-१२८०
सूक्ष्म सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ. ४ भाष्य गा. ६० टी.

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूत्र की वाचना देने के प्रवोल	३८२	१	३६८ टा ५३३ सू ४६८
सूत्र के वत्तीस दोष तथा	६६७	७	२३ अनुसू १५१ टी., विशेषे. गा. ६६६ टी.,
आठ गुण			वृ. पीठिका नि गा २७८-२८७
सूत्र के चारह भेद	७७८	४	२३५ वृ. १ नि गा १२२१
१ सूत्र धर पुरुष	८४	१	६१ टा ३३३ सू १६६
सूत्र पढ़ने के वत्तीस अस्वा- ध्याय	६६८	७	२८ टा म २८५, ७१४, प्रव. द्वा २६८ गा १४६०-१४७१, व्यव. भा उ ७ नि गा २६६-३१६, आव ह अ. ४ नि गा १३२१-६०
सूत्र पढ़ाने की मर्यादा और टीका पर्याय	१४	२	२४३ टा ५३ १ सू ३६६, टा ७ सू ४४४, व्यव मा उ १० सू २१-३५
सूत्र वत्तीस	६६६	७	२१
सूत्र रुचि	६६३	३	३६३ उत अ २८ गा २१
सूत्र श्रुत धर्म	१६	१	१५ टा २३. १ सू. ७२
सूत्र सीखने के पाँच स्थान	३८३	१	३६६ टा. ५३ ३ सू ४६८
सूत्र सुनने के सात षोल	५०६	२	२३४ विणे गा ५६५
० सूत्र स्थविर	६१	१	६६ टा ३३. ३ सू. १५६
सूत्रागम	८३	१	६० अनुसू १४४
सूत्र गडांग सूत्र के ग्यारहवें	६८५	७	१३६ सू अ. ११
मार्गाध्ययन की ३८ गाथाएं			
सूत्र गडांग सूत्र के चौथे अंश	६६३	७	८ सू अ. ४ उ १
प्रथम उ० की ३१ गाथाएं			

१ सूत्र को धारण करने वाला नाम पाठक पुरुष सूत्र धर कहलाता है ।

२ टागांग और ममशायांग सूत्र के ज्ञाता मधु सूत्रस्थविर कहलाते हैं ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूयगडांग सूत्र के चौदहवें अध्ययनकी २७ गाथाएं	६४६	६ २३०	सूय अ १४
सूयगडांग सूत्र के तेईस अध्ययनों के नाम	६२४	६ १७३	
सूयगडांगसूत्र के दसवें समाधि अ०की २४गाथाएं	६३२	६ १६७	सूय अ १०
सूयगडांगसूत्रके दूसरे अ० केदूसरे उ०की ३२गाथाएं	६७४	७ ५६	सूय अ २३२
सूयगडांग सूत्र के नवें धर्मा- ध्ययन की छत्तीस गाथाएं	६८१	७ ८७	सूय अ ६
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभक्ति अ०के दूसरे उद्देशे की पचीस गाथाएं	६४१	६ २१६	सूय अ ४३२
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभक्ति अ०के पहले उ०की सत्ताईस गाथाएं	६४७	६ २३६	सूय अ ४३१
सूयगडांगसूत्रके प्रथमद्वितीय दोनों श्रुतस्कन्धों के तेईस अध्ययनों का विषय वर्णन	७७६	४ ७६	
सूयगडांगसूत्र के वीरस्तुति अध्ययन कीउनतीस गाथाएं	६५५	६ २६६	सूय अ ६
सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्रके वीस का संचित्त विषय वर्णन	७७७	४ २३०	
सेठ (कालसेठ) की पारि- णामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६ ७८	नसू २७ गा ७२, ब्राव ह गा ६४६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सेवार्चक (छेवट) संहनन	४७०	२	७०	पत्र.प २३ मू.२६३, टा.६८.३ मू.४६४, कर्म भा.१ गा.३६
१ सैंतालीसदोषआहारके	१०००	७	२६५	पि.नि.गा ६६६
सैंतीसगाथाएं उत्तराध्ययन	६८४	७	१३३	उत्त.अ.१०
मूत्र के दसवें अध्ययन की				
२ सोपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्त्वार्थ.अध्या २मू.५२, म.श. २० उ.१०.मू.६८५
३ सोपक्रम कर्म	२७	१	१६	वि.म ३मू.२० टी.
सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रव.द्रा ६७गा.५६५-५६८, ध.अधि ३ओ २२टी पृ ३८, पि.नि.गा ४०८, ४०९, ६२, ६३.पि.नि.गा ४८, ५६, ३-४, पंचा १३गा. १८-१९, ५-६
सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	
सोलहगाथाएं उत्तराध्ययन	८६२	५	१५२	उत्त.अ.१५
मूत्रकेपन्द्रहवें अध्ययन की				
सोलहगाथाएं दशवैकालिक	८६१	५	१४७	दग. चू २
मूत्र की दूसरी चूलिका की				
सोलहगाथाएं बहुश्रुतमाधु	८६३	५	१५५	उत्त.अ ११गा.१५-३०
की उपमा की				
सोलहगाथाएं भगवान् महा-	८७४	५	१८२	आचा.अ ६८ २
वीर की वसतिविषयक				
सोलहगुणदीक्षालेनेवालेके	८६४	५	१५८	ध.मधि.३ ग्लो.७३-७८पृ १
सोलह नाम मेरु पर्वत के	८७०	५	१७१	सम.१६, अं.अच. अमू.१०६
सोलह भंग आभवआदिके	८६८	५	१६८	भग.१६ उ.४ मू.६५४

१ पृष्ठ ३२१ की टिप्पणी देखो । २ जो आयु पूरी होगे बिना आयु दृष्टने के सान कारणों में से किसी कारण से समय में ही दृष्ट जाय । ३ जित्त कर्म का फल उपदेश प्रादि से नांत हो जाय ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सोलह भेद वचन के	८६६	५ १७०	पत्रप ११सू १७३, आचार्य २ चू १अ. १३उ १
सोलह महायुग	८७१	५ १७२	भश ३५उ १ सू ८५५
सोलहविशेषणद्रव्यावश्यकके	८७२	५ १७६	अनु सू १३, विशेष गा ८५१-५७
सोलह सतियां	८७५	५ १८५- ३७५	ठा ६उ ३सू ६६१टी, ज्ञा अ १६, त्रिष पर्व १, २, ७, ८, १०, पचा १६ गा ३१, चन्दन, राज, भरत. गा ८-१०, आव. ६
सोलह सतियों के लिये प्रमाण भूत शास्त्र	८७६	५ ३७५	
सोलहस्थान(ग्रामादि)साधु	८६७	५ १६६	वृ उ १सू ६
के लिये कल्पनीय हैं			
सोलह स्वप्न चन्द्रगुप्तराजा के और उनका फल	८७३	५ १७८	व्यव चू हस्तलिखित
सौधर्म देवलोक का वर्णन	८०८	४ ३१६	पत्रप २सू. ५२
सौर्यदत्त की कथा	६१०	६ ४६	वि अ ८
१ स्कन्ध बीज	४६६	२ ६६	दश अ ४
स्तनितकुमारकेदसअधिपति	७४०	३ ४२०	भश ३उ ८सू १६६
स्तम्भ की कथा और त्पतिकी	६४६	६ २६६	नसू २७ गा ६३ टी
बुद्धि पर			
२ स्तबुकसंकेत पञ्चक्खाण	५८६	३ ४३	आव ह अ ६गा. १५७८, प्रव. द्वा ४
स्तूप की कथा पारिणा- मिकी बुद्धि पर	६१५	६ ११७	उत्त (क) अ १गा ३टी, निर, न. सू २७गा ७४, आव ह. गा ६५१

१ जिस वनस्पति का स्कन्ध भाग बीज का काम देता है, जैसे शलकी आदि ।

२ पञ्चक्खाण करने में एक तरह का संकेत, पानी रखने के स्थान पर पड़ी हुई वृद्धें जब तक सूख न जाय अथवा जब तक ओस की वृद्धें न सूखें तब तक का पञ्चक्खाण ।

विषय	घोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्ताक	५५१	२	२६३	ज.व.ज.० सू १८
संन्यासगृद्धि निद्रा	४१६	१	४४३	पत्र प २३, कर्म भा १ गा ११-१०
स्त्री कथा के चार भेद	१४६	१	१०७	टा १८२ सू २८२ टी
स्त्रीकथा से होनेवाली हानि	१४६	१	१०८	टा १८० सू २८२ टी.
स्त्री की कथा औत्पत्तिकी	६४६	६	२६८	नंमू २७ गा. ६३ टी
वृद्धि पर				
स्त्री के गर्भ में जीव उत्कृष्ट	६१८	६	१४१	भग २८ ५ सू १०१, प्रव. द्वा.
कितने काल तक रहता है?				२४१ २४२ गा १३६०
स्त्रीनीर्धक आश्रय	६८१	३	२७८	टा १०३ ३ सू ७७७, प्रव. द्वा. १३८
स्त्रीलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र प. १ सू ७
स्त्री वेद	६८	१	४६	वृत् ४, कर्म भा १ गा. ००
स्थण्डिल के चार भांगे	१८२	१	१३७	उत्त. प्र २४ गा. १६
स्थण्डिल के दस विशेषण	६७६	३	२६४	उत्त. प्र २४ गा १६-१८
स्थलचर	४०६	१	४३६	पत्र प १ सू ३२, उत्त. प्र ३६ गा १७०
स्थविर कल्प का क्रम	५२२	२	२५१	विशे. गा ७
स्थविरकल्प के १२ विशेषण	८०६	४	३१४	ध वि सू ३३६
स्थविर कल्पस्थिति	४४३	२	४७	टा ३३ श्ल २०६, टा ६३. ३ सू ५३०, वृ (जी) उ ६
स्थविरकल्पीयथालन्दिक	५२२	२	२६०	विशे. गा ७
स्थविरकल्पी माधुओं के	८३३	५	२८	पत्र प गा ७७१-७७६
लिये १४ प्रकार के उपकरण				
स्थविर तान	६१	१	६६	टा ३८. ३ सू १४६
स्थविर दस	६६०	३	२३२	टा १०३. ३ सू १६१
स्थविर पद्मी	५१३	२	२४०	टा ३८ ३ सू. १७७ टी

विषय	बोल-भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थान तेईस साधु के उत्तरने	६२३	६	१७० आचाधु.२चू.१अ.२उ.२
योग्य तथा अयोग्य			
स्थान परिहरणोपघात	६६८	३	२५६ अ १०उ ३सू ७३८
१ स्थानातिग	३५७	१	३७१ अ ५उ १सू ३६६
स्थापन दोष	८६५	५	१६२ प्र. द्वा ६७गा ४६५, घ अघि ३ श्लो. २२टी पृ ३८, पि निगा ६२, पि विगा ३, पचा १३ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७	१	४४१ अ ५उ ३सू ४६२
स्थापना कर्म	७६०	३	४४१ आचा अ २उ १ निगा १८३
स्थापना दोष	३४७	१	३५६ आव ह अ ३निगा ११०७ पृ ५१७, प्रव. द्वा २ गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०६	१	१८७ अनुसू १५०, न्यायप्र अध्या ६
स्थापनानुपूर्वी	७१७	३	३६० अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६	२	२६२ विशेष गा १३६०
स्थापनाप्रमाणनामके ७ भेद	७१६	३	४०० अनुसू १३० गा ८५
स्थापनार्थ	७८५	४	२६६ वृउ १निगा ३२६३
२ स्थापना सत्य	६६८	३	३६६ अ १०सू ७४१, पन्नप ११ सू १६५, घ अघि ३श्लो ४१पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६	१	३३५ अ ५उ.२ सू ४३३
स्थावर	८	१	५ अ २उ ४ सू १०१
स्थावरकाय पाँच	४१२	१	४३७ अ ५उ १सू ३६३

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु ।

२ सदृश या विसदृश आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है । जैसे गतरज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थावरजीवोंकीअवगाहना	६६५	७	२५२	मश. १६उ ३ सू ६५१
केअन्य बहुत्व के४४ वोल				
स्थिति आठ कर्मों की	५६०	३	५६-	पत्र प २३ सू २६४, तत्त्वार्थ. ८२ मध्या ८, उत्त म. ३३
स्थिति की व्याख्या और भेद	३१	१	२१	ठा. २उ ३ सू ८५
स्थिति घात	८४७	५	७८	कर्म भा २गा. २
स्थिति नाम निधत्तायु	४७३	२	७६	मश ६उ ८ सू २५०, ठा ६ सू ५३६
स्थिति नारकी जीवों की	५६०	२	३१६	जी प्रति ३ सू ६० टी प्रव द्वा. १७५ गा. १०७५-१०७६
स्थिति प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा ५उ १ सू ४०६
स्थिति बन्ध	२४७	१	२३२	ठा ४ सू २६६, कर्म भा १गा ३
स्थिरीकरण दर्शनाचार	५६६	३	८	पत्र प १ सू ३७गा १२८, उत्त म २८गा. ३१
स्थूल अदत्तादानका त्याग	३००	१	२८६	{ भाव ह म ६ पृ ८१७-८२६, ठा. ५उ. १ सू ३८६, उपा म १ सू ६, ध. मधि. २. को २५ पृ ५७
स्थूल असत्य (मृपा) का त्याग	३००	१	२८८	
स्थूल प्राणातिपात का त्याग	३००	१	२८८	
स्थूल भद्र की पारिणामिकी	६१५	६	६५	भाव ह. गा. ६५०, जं सू २७गा. ७३
बुद्धि की कथा				
स्नातक	३६६	१	३८२	{ ठा ५उ. ३ सू ४४५, मश. २५ उ. ६ सू. ७५१
स्नातक के पाँच भेद	३७१	१	३८६	
स्पर्श आठ	५६७	३	१०८	ठा ८उ. ३ सू ५६६, पत्र प. ०३
स्पर्श नारकी जीवों का	५६०	२	३३६	जी. प्रति. ३ सू. ८७
स्पर्शनेन्द्रिय	३६२	१	४१६	पत्र प. १५उ. १ सू १६१, ठा. ५ उ. ३ सू. ४४३, जै प्र

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रकरण
स्पर्श परिणाम	७५०	३ ४३४	ठा १०उ ३सू ७१३, पत्र प १३
स्मृति	३७६	१ ३६५	रत्ना-पटि ३ सू ३
स्याद्वाद	४६७	२ १७६, २११	
स्वदार सन्तोष व्रत	३००	१ २८६	आवह अ ६पृ. २२२, ठा ५उ १ सू ३८६, उपा अ. १सू. ६, ध. अधि २ श्लो २८ पृ ६६
स्वदार सन्तोष व्रत के पाँच	३०४	१ २६८	उपा. अ. १सू ७ टी.
अतिचार			
स्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाविकी	४२४	२ १२	आगम.
अपेक्षा छः द्रव्यों का वर्णन			
स्व द्रव्यादि की चौभंगी	४२४	२ १३	आगम.
जीवादि द्रव्यों में			
स्वप्न के नौ निमित्त	६३८	३ २०६	विश्वे गा १७०३
स्वप्न १४ मोक्षगामी आत्मा के	२६	५ २०	भ.श १६उ. ६ सू ५८०
स्वप्न (महास्वप्न) १४ तीर्थङ्कर के	३०	५ २२	भ.श १६उ. ६सू ५७८, ज्ञा अ. ८ सू ६१, कल्प सू ४
चक्रवर्ती के जन्म सचक			
स्वप्न दर्शन के पाँच भेद	४२१	१ ४४४	भ.श. १६ उ ६सू ५७७
स्वप्न दस भगवान् महावीर के	६५७	३ २२४	भ.श. १६उ ६सू. ५७६, ठा १० उ. ३सू ७५०
के और उनका फल			
स्वप्न सोलह चद्रगुप्त राजा के	८७३	५ १७८	अथ च हस्तलिखित
के और उनका फल			
स्वभाव	२७६	१ २५७	आगम, कारण, मम्मति भा ६ काण्ड ३ गा ५३
स्वयं बुद्ध सिद्ध	८४६	५ ११७	पत्र प १सू ५

विषय	बाल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्वयंबुद्ध सिद्धि और प्रत्येक	८४६	५	११८ पत्र. प्र. १ मू. ७ टी.
बुद्ध सिद्धि का अन्तर			
* स्वर मात	५४०	२	२७०
स्वर्ग का फल	५४०	२	२७२
स्वर्ग के उत्पत्ति स्थान	५४०	२	२७१
स्वर्ग के तीन ग्राम	५४०	२	२७३
* स्वर्ग के तीन ग्राम की मूर्च्छना	५४०	२	२७३
स्वर्लिंग सिद्धि	८४६	५	११६ पत्र. प्र. १ मू. ७
स्ववचन निराकृत वस्तु दोष	७२३	३	४११ डा. १०३ अमू. ७४३ टी
स्व वचन निराकृत नाध्य-	५४६	२	२६१ रत्ना. परि. ३ मू. ४५
धर्म विशेषण पक्षाभास			
स्वाध्याय	४७८	२	८६ स्व. मू. २०, उक्त अ. ३० गा. ३०, प्र. द्वा. ६ गा. २०१, डा. ६ मू. ४१५
स्वाध्याय का दृष्टान्त काल	७८०	४	२४० भाव. द. नि. गा. १३३, मू. पी. टिका नि. गा. १७१
अननुयोग पर			
स्वाध्याय की व्याख्या, भेद	३८१	१	३६८ अ. ५३ अमू. ६६५
स्वाध्याय के पाँच भेद	६३३	३	१६५ उ. मू. २०, भ. ज. २५३ अमू. ८०२
स्वापनी अवस्था	६७८	३	२६८ डा. १०३ अमू. ७७२
स्वाभाविक गुण	५५	१	३३ द्रव्य. अ. अध्या. १२७ लो. ८
स्वाधीनुमान	३७६	१	३६६ रत्ना. परि. ३ मू. १०
स्वाहस्मिन्की (साहन्धिया)	२६४	१	२७६ डा. २३१ मू. ६०, डा. १३३.२ मू. ६१६
क्रिया			
स्वेद संकेत पचकवाण	५८६	३	४३ भाव. द. अ. ६ नि. गा. १४७८, प्र. द्वा. ४ गा. २००

ह

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
हरिकेशीमुनि(संवरभावना)	८१२	४ ३८६	उत्त अ १२
हरिवंश कुलोत्पत्ति आश्चर्य	६८१	३ २८४	ठा १०३ ३सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८६
हस्ति शुण्डिका	३५८	१ ३७२	ठा ५सू ३६६टी, ठा ५सू ४००
हाडाहाडा आरोपणा	३२६	१ ३३५	ठा ५उ. २सू ४३३
हानि छः प्रकार की	४२५	२ २४	आनम
हायणी अवस्था	६७८	३ २६८	ठा १०३ ३सू ७७२
हासनिःसृत असत्य	७००	३ ३७२	ठा १०सू ४४१, पत्र प. ११सू १६५, ध अधि ३ग्लो ४१५ १२२
हास्य की उत्पत्ति के ४ स्थान	२५७	१ २४३	ठा ४ उ १ सू २६६
हास्य रस	६३६	३ २१०	अनुसू १२६ गा ७६-७७
हास्योत्पादन	४०२	१ ४२६	उत्त. अ ३६ गा २६१, प्रव द्वा ७३
हिंसा का स्वरूप	४६७	२ १६०	
हिंसा के छः कारण	४६१	२ ६३	आचा श्रु १अ १उ १सू ११
हीयमान अवधिज्ञान	४२८	२ २८	ठा ६उ ३सू ५२६, नसू १३
हीलित वचन	४५६	२ ६२	ठा ६उ ३सू ५२७, प्रव द्वा २३५ गा १३२१, वृ (जी) उ ६
हंडक संस्थान	४६८	२ ६८	ठा ६सू ४६६, कर्म भा १ गा ४०
हेतु	४२	१ २७	रत्ना परि ३ सू ११
हेतु	३८०	१ ३६७	रत्ना परि ३ सू ११
हेतु अविरोद्धानुपलब्धि के	५५६	२ २६८	रत्ना परि ३सू ६४-१०२
सात भेद			
हेतु अविरोद्धोपलब्धि के	४६५	२ १०४	रत्ना परि ३सू. ६८-८२
छः भेद			

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
हेतु दोष	७२२ ३ ४०६	ठा १०३ ३सू ७८३
हेतु विरुद्धोपलब्धिके ७भेद ५५५	२ २६६	रत्ना.परि ३सू ८३-६२
ह्रस्व संस्थान	५५२ २ २६३	ठा. १मू ४७, ठा ७३ ३सू ४४८

न्यूनाधिकमशुद्धं वा, यद्वा स्याद्धीप्रमादितम् ।

दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु, क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः ॥

भावार्थ—श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सार में तथा उनके विषयानुक्रममूचक इस आठवें भाग में बुद्धि प्रमाद से जो न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला पाप निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें ।

अन्तिम संगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।

काले काले च वृष्टि वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥

दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां या स्म भृञ्जीवल्लोके ।

जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रसरतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥

भावार्थ—सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायें, दुर्भिक्ष (दुष्काल), चोरी और महामारी आदि दुःख संसार में कभी किसी भाँप्राणी को न सनावें और रागद्वेष के विजेता श्रीजिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व सृष्टियों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो ।

शान्ति !

शान्ति !!

शान्ति !!!

